

Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangotri STATE OF WITH PROPERTY STATES CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar 900

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक - वितरण की तिथि नीचे ग्रंकित है। इस तिथि सहित २०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस श्रा जानी चाहिए। ग्रन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब - दण्ड लगेगा।



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इाज्यर्व के त्यं तुसः

90 30824

শ্ৰীমন্তগৰদ্গীতা

(শ্রীমদ্ গুরুনাথ বিজ্ঞানিধি সম্পাদিভ)

বড় অক্ষরে মূল শ্লোক, অষয় শ্রীধরস্বামী রুত সম্পূর্ণ টীকা, বলান্থবাদ, প্রয়োজনীয় টিপ্লনী; গীতামাহাত্মা প্রভৃতি সহ সর্বোৎকৃষ্ট নবম সংস্করণ প্রকাশিত হইল। চমৎকার বাঁধাই। মূল্য ২॥॰ টাকা।

সারক্ত ব্যাকরণ

(সন্ধিও শদ প্রকরণ)

পণ্ডিত প্রবর শ্রীজগদীশ ভর্কতীর্থ সম্পাদিত

গুল, বৃত্তি ও বিস্তৃত বঙ্গান্তবাদ থুক্ত (পদসাধন প্রণালীসহ)
সারন্থত ব্যাকরণের সন্ধি ও শন্তপ্রকরণ প্রকাশিত হইল।
সারন্থত ব্যাকরণ আগু পরীক্ষা পাঠা।
বিশুদ্ধ ও অভিনব সংস্করণ। মূল্য ১ টাকা মাত্র।

প্রাপ্তিস্থান :

সংস্কৃত বুক ডিপে।

পৃতক বিক্রেতা ও প্রকাশক
২৮/১, কর্ণওয়ালিস খ্রীট, কলিকাতা—৬

শব্দিক্তিক

[অর্থাৎ অকারান্ত হইতে ক্ষকারান্ত পর্যান্ত শব্দসমূহের অতিকান্তাদিঘটিত প্রয়োগ ও নানাবিধ বিচার মীমাংসাদম্বলিত, টীকা-টিপ্লনী সহিত যথাক্রমে লিগতয়ে সাধিত

স্থবন্ত প্রয়োগসকলের

সংগ্ৰহ]

Of 68=3-48=1

र्वा अस्ति के तार किया है निष्य

সস্কলিত





প্রকাশক—জানকীনাথকাব্যতীর্থ এও ব্রাদার্স

গুরুপ্রাম

নিবেদিতা লেন, বাগবাজার কলিকাতা



[मल्य मः ऋंत्रण ; विक्ष्णणी-मःकास्तिः वक्षांक ३०००]

शोश्य ()
पुस्तक संख्या
पश्चिका संख्या 2069 व
पुस्तक पर सर्वं प्रकार की निशानियां लगाना
वर्जित है। कोई सज्जन पन्द्रहिन से श्राधिक देर तक 🛭
रखने के लिये पुनः ग्राज्ञा प्राप्त करती चाहिये

PRINTED BY P. K. PAL.

AT THE NEW ARYYA MISSION PRESS.

9 SHIBNARAIN DAS, LANE. CALCUTTA.

विख्वाश्रम।

-:(•):-

"অহঞ্চ ভাষ্যকারত কুশাগৈরক্ধিয়াব্রভী। বৈব শক্ষাত্বেঃ পারং কিমত্তে জড়ব্দ্ধয়ঃ।"

শব্দরূপ অতি জটিল, বিভিন্ন বিভিন্ন ব্যাকরণের বিভিন্ন বিভিন্ন মত; কোন একথানি ব্যাক্রণ সম্পূর্ণ পড়িলেও শব্দরূপে সম্যক্ ব্যুৎপত্তি লাভ করিতে অনেকেই অসমর্থ। আশা করি—বিত্তার্থিগণ এই ক্ষুত্র পুত্তকখানি षात्र। मसक्र भवार भिष्ठ विषय कि किश्र माहाया भारेत्वन । मिका खरको मृती, কলাপ, মুশ্ধবোধ,সংক্ষিপ্তদার ও তুপন্ম প্রভৃতি বিভিন্ন বিভিন্ন ব্যাকরণের বিভিন্ন বিভিন্ন মত সকল সফলনপূৰ্ব্যক সংস্কৃত ও বালালা উভন্ন ভাষায় এই "শব্দরপকল্পক্রক্রম" সম্পাদিত হইল। ইহাতে ধথাক্রমে অ-কারান্ত হইতে ক্ষ-কারান্ত পর্যান্ত শব্দমূহের স্থবন্তপ্রযোগদকল এবং অতিক্রান্ত, শোভনবাক্য, আচক্ষানবাক্য ও বছব্রীহি প্রভৃতি সমাদে যেরূপ বেরূপ ক্লণ হইরা থাকে, তাহাও যথাসম্ভব প্রদর্শিত হইয়াছে। ব্যাকরণ সম্বন্ধীয় নানাবিধ বিচার মীমাংসা প্রভৃতি ব্যুৎপাদক বিষয় এবং বিশেষ বিশেষ স্তাসকল মূল অংশের নিম্নে নিম্নে টীকাকারে সঙ্কলিত হইয়াছে। **जिकात अधिकारण छन कनाशास्त्राधी इहेला मृन-अरम नाधात्र** ব্যাকরণের মত সফলিত হওয়ায়, যে কোন ব্যাকরণব্যবসায়ীরই ইহা প্রয়েজনীয়। স্থলের সংস্কৃতাধ্যাপক এবং ছাত্রসপ্রদায় ও ইহা দারা यत्थेष्ठे छेशकात्र शाहेरवन ।

দ্বিতীয় বাবের বিজ্ঞাপন—এ সংস্করণে অনেক ন্তন ন্তন শব্দ স্ফলিত হইয়াছে। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri হৈতী বাভেল বিভাগেশন—এবারে ষট্কারক-কারিকা নামক একটা অভিরিক্ত বিষয় টীকার সহিত সন্নিবিষ্ট হইল। ইহাতে উক্তায়ক্ত কর্ত্তা কর্ম প্রভৃতি ষট্কারকের উদাহরণসহ নিয়মসমূহ বিষদরূপে বর্ণিত হইশ্বাছে।

বাজের বিজ্ঞাপন—পণ্ডিভণিরোমণি
অধ্যাপকপ্রবর গুরুনাথবিত্যানিধিভট্টাচার্য্যমহাশয়-সম্পাদিভপুস্তকাবলীর
ছাত্র সমাজে আশাভিরিক্ত সমাদর দেখিয়া পরশ্রীকাতর অমুকরণসম্বল
ক্ষুদ্রচেতা পুস্তকপ্রকাশকেরা লোভ সংবরণ করিতে পারে নাই, অত্যাত্য
পুস্তকের ত্যায় এ পুস্তকধানাও তাঁহাদের ইর্য্যানলে ইন্ধনস্বরূপ হইয়াছে।
কিছ তাহাদের নানারূপ আড়ম্বরের সহিত অলীক বিজ্ঞাপনের স্থমার্জ্ঞিত
ভাষা সভ্যপ্রিয় গুণগ্রাহী গ্রাহকবর্গকে বিচলিত করিতে পারে নাই।
তাঁহাদেরই অমুগ্রহে পূর্ব্ব সংস্করণের দ্বিসহন্দ্র পৃষ্টক ও অভ্যন্নকালমধ্যে
নিঃশেষ হওয়ায় পুন্ব্বার ইহা মৃদ্রিত হইল।

শ্বি সংক্ষরতার বক্তব্য—আধুনিক শিক্ষিত সমাজের ক্ষচি অন্ত্রপারে পুতকের আকার পরিবর্ত্তন এবং ম্থাসম্ভব মূজণাদির পারিপাট্যসাধন—ইহাই এবারের বিশেষত। বর্ত্তমান সংস্করণ প্রকাশ করিতে পূর্বাপেক্ষা বিশুণ অর্থব্যয় হইয়াছে এক্ষেত্রে যৎকিঞ্চিনাত্র মূল্যবৃদ্ধি অন্তগ্রাহক গ্রাহকবর্ণের প্রস্তৃত আনন্দবর্দ্ধনই করিবে, এক্ষপ আশা অসমীচীন নহে। ইতি—শম্—

গুরুধাম,
নিবেদিতা লেন কলিকাতা।
শকাঝা ১৮৪৪। দীপাবিতা।

আত্রৰ—প্রকাশক।

9		2	ाही ।		
भक		शृष्ट्री) अव		व्यक्त
-	স-কারান্ত		যতর		পৃষ্ঠা
রাম	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	٥	যত্ম	2 " TO	>.
দেব	es.	2	একতর		2.
শিব		2	The state of the s	•••	70
পদ		2	একতম	***	>0
মাস		2	ততর	•••	7.
পাদ	4 30 (20)	9	তত্ম		7.
यृष	April 2012		অগতম	•••	> >
मेख		9	ক্তর্ক্তম	•••	3.
मर्का	442	8	9	4	3.
পরমসর্ব	•••	8	८नग	***	
অ সর্বর	•	¢	म्म .	•••	22
সর্ক (নপুং)	•••	৬	भी भ	•••	22
বিশ্ব		9	পূর্ব	•••	22
অবিশ্ব		9	অপর অবর	•••	22
পরমবিশ্ব	•••	٩	দক্ষিণ, উত্তর	***	22
অতিবিশ্ব	•••	9	পর	•••	25
উভ		7	7		25
উভয়		1	অন্তর		25
	•••	b	এক		30
অগ্য	•••	b	অ তিবিশ্ব		20
অগুতর	•••	2	অতিপূ ৰ্ব্ব		20
ইতর		2	অতিশ্ব		20
কতর	•••	٦	অবিশ্ব		30
কতম CC-0	. In Public Domain.	Garuki	ul Collection,	Haridwar	
				•••	20

		ا بکرے	what		शृष्ठे!
শব্দ		4	अंक् अर्ज्यात्वर्थ	•••	39
অমুভয়	•••	20	পূর্কোত্তরা		59
পরমোভয়	•••	. 20	প্রাপ্তত্তরা		39
व्यत्नक		20	উত্তরপশ্চিমা		58
পর্থেক	•••	20	অম্বা		24
মাদপূর্ব	•••	20	অকা, অলা		36
অল	•••	30	জগদস্বা		24
প্রথম, চরম	•••	>8	অম্বিকা		76
ছিতীয়	•••	78	নাদিকা ়		34
ক তিপয়	•••	28		u .	30
অৰ্দ্ধ	•••	78	নিশা		36
বিভী য়	•••	28	নাসা		25
তৃতীয়	•••	>0	জরা		٦.
পটুজাতীয়	•••	20	অতিজ্বা		20
यं न	•••	20	হুজরা	•••	2.
অতিফ ল		20	উপদ্বা	•••	23
আসন		30	শ্ৰহা		2)
হাদয়	•••	20	মালা	•••	
উপকৃষ্ণ	••	39	লতা		2)
অতিব্র	*	2.	অতিশ্ৰহা	•••	
উপজরস	44	. 20	সূপ্রদা	•••	52.
0 1941	K.		অশ্রমা	•••	25
			কীলালপা	***	२२
			ক্ষীরপা		२२
অ	া-কারান্ত		সোমপা	•••	२२
সূৰ্ব্বা	10.		৬ বিশ্বপা	•••	22
উত্তরপূর্বা	414	3	৭ হাহা		20
দক্ষিণপূর্বা		2.		•••	२७
		>		•••	ર૦
भूक्त मिना CC-0. Ir	Public Domain		u Kan ori Quit ecti	on, Haridwar	રૂહ
পশ্চিমোত্তর					

Digitized by Arya Samaj Fou	undatio	n Chennai and eGangotri	
শব্দ	शृष्ट्री	ग न्स	शृ ष्ठे।
বিষধা	२०	মন্থি (মথিন)	ಅಲ
গোষা	२७	ঋভূফি (ঋভূক্ষিন্)	00
শ্বতা	२७	षि ।	98
		অতি ষি	98
ই-কারান্ত		ত্তি	98
অগ্নি	28	প্রিয়ত্তি	90
অভাগ্নি	₹8	<u> তি</u>	00
বৃদ্ধি	20	বারি	914
অতিবৃদ্ধি	20	ব্দতিবারি	99
অতিবৃদ্ধি '	२७	অস্থি	99
অ তিন্ত্ৰি	84	অত্যন্থি	99
পুষ্টি, তৃষ্টি, মজি, গতি	29	मिर्ध	99
ন্ততি, কৃতি, জাতি, রীতি রতি	, 29	অকি	৩৬
श्रानि, श्रानि	२१	স্ক্থি	96
षक्षीर्वान '	29	প্রিয়দ্ধি	99
স্থগিছি 😘	२१	অত্যন্থি	۱۹
ক্তি	२४	অতিদধি	99
প্রিয়কতি	२४	অ তিসক্থি	७१
য তি	दर्भ	অত্যক্ষি	وی
ভ তি	२२	অতিক্তি	62
স্ ৰি	52	অতিরি	96
স্থ স্থি	23	উপরি	હ
পতি	0.		
নরপতি	90	ঈ-কারান্ত	
ভূপতি	9.		
পন্থি (পথিন্)	03	অভ্যগ্নী	28
স্থান্থ	0)	व्यक्षायी	9
অপথিন -	७२	नमी	01

भक	পृष्ठी	শব্দ		পৃষ্ঠা
व्यक्तिमी	७१	टमनानी		80
লক্ষ্মী	৩৭	উন্নী	•••	80
ज्यी, भवी, भूत्री, नात्री मर	ही ७१	ञ्चशी		80
		হুতী		80
म्खी, ह्ली	৩৭	खडी, फनी	•••	80
षण्डिमची	৩৮	रुत्री, भिवी		80
वरी, ज्त्री, ज्ञ्जी	90	नूनी		88
<u>रश्रमी</u>	00	कामी		88
<u>त्थिय</u> मी	60	প্রস্থীমী		88
ऋत्व्ययमी	60	खी		88
ऋ(ध्रमी …	তম	পরমন্ত্রী		88
वह्दश्रमी	8 •	অভিস্রী		82
वह एवं बनी	8•	क्मात्री (श्रः)		86
অভিশ্যেসী	8 •	3	de de	86
বাতপ্রমী	8•	অভিনদী		09
ययी	87	অতিশ্রী		89
পत्री	87	हो इो		86
ञ्यो	85	नी		86
षौ	82	অভিকৰী		43
পী	82		ারান্ত।	9,
যবক্ৰী	82	পটু	•••	86
धी	8 2	মাহ, বিষ্ণু	•••	84
ভী	82	সাধু		85
क्षी	82	মধু	•••	83
छक्रभी	82	সাহ		8.9
व्यभौ	82	প্রিয় কোষ্ট		85
গ্রামণী	80	ধেছ		
मधी	٥.	অতিধে ম্	•••	4.
পথী	60	অতিবধু	•••	20

শব্দ '		शृष्ठे।	শব্দ		পृष्ठे।
অতিক্র	Agriculture .	08	वर्जक		ce
অভিগু		46	অভিকৰ্ম	•••	ee
অভিন্		49	কর্কন্		44
অতিত্ত		68	পরমলূ		cc
কোষ্ট্	M	60	नशर्		es
অতিকর্বনু		22	পুনভূ	•••	69
ড-	কারান্ত		খ-কা	রাস্ত।	
न्		e.	পিতৃ	•••	es.
অভিল্		60	লাতৃ, জামাতৃ ও	দের	60
इइ		es	न्		er
' অতিচম্		cs.	মাতৃ		en
থলপূ	W. 1.V.	62	যাতৃ	•••	e s
কটপ্ৰা		62	ननान्	•••	e9
মিত্ <u>র</u> ভূ	Carles	es	হৃহিত্	•••	49
বৰ্ষাভূ		62	কৰ্ত্ব		er
পুনভূ		es	দান্ত, মাতৃ, পাতৃ		63
मृ नज्		65	नश्रु, तिष्ठे	•••	(5)
नृ ख्		65	पृष्ठे, ऋतृ	•••	63.
করভূ	•••	CZ	হোতৃ		(a)
কারভূ	•••	42	পোতৃ, প্রশাস্থ	•••	63
अग्रङ्	•••	4	প্ৰস্থ	•••	62
á	•••	60	অতিশ্বস্	•••	(5
बध्		60	<u>অতিমাতৃ</u>	-	19.
অভিবধ্	•••	60	অভিধাতৃ	•••	62
७ न्		60	<u>অভিননান্দ</u>	•••	63
অ তিতন্		48	অতিকর্ত্		6)
জ		48	কোষ্ট		62
অতি জ		€8	অ তিস্তৃ	•••	6/2

भव	शृष्ट्री [শব্দ		পৃষ্ঠা
ৠ-কারান্ত।			কান্ত।	
**	७२	नूक्	er,	৬৭
		शृ थक्	•••	৬৭
৯-কারান্ত।		ধিক্	•••	৬৭
a · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	80			
গম্হ, শক্হ,	७७		খান্ত ৷	
		চিত্রলিধ্	याजः	৬৭
দীৰ্ঘি৯ কাৰাৰ	31	ाज्यागर्		
3	৬৪	N.		
			পাত্ত।	
একারান্ত।		অগ্		৬৮
त्त	&8		ঘান্ত ৷	Saut 1
দে	98	অঘ্		ওচ
			ভান্ত ৷	
ত্র-কারান্ত	1	षड्		<u>৬</u> ৮
देव	91		'ভান্ত ৷	
অভিরৈ	40			७२
		वह.		٠,٥
ও-কারান্ত	1	वाह.		50
গো	60	প্রভাচ্		90
তো	66			90
মহো ' · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	৬৬	डे न ह् डेन न्		9.
		नगान्ह	1.6	12
ুকারা ন্ত	1	ভিৰ্যাচ,	(নচ)	12
নৌ	હ		***	90
অতিনৌ ···	৬৭		Б	90
		अममन्ष		90
CC-0. În Public Doma	in. Guruku	ıl Kangri Col	lection, Haridwar	

अंक	शृष्ठी	শ रू	शृष्ठे1
च्यम जान्ह	98	আন্ত।	
ष्पम् छ। इ	98	मम्ख् अं	P0
গোঅচ্	96	া ভাৰ	
গোঅন্চ্	99	নঞ্	₽8
(लवखाह (नह)	۵.	े ভান্ত।	
বিশ্বস্ত্	46	অখাট	b8
স্ঞাচ্	92	ু প্রাপ্ত	
সপ্তান্চ্	ا د .		b8
७ र्कान् ठ ्	۹۶	মছপাঠ্	
গুৰ্ব্বচ	92	ডান্ত ৷	
ञ्च रूह्	ь	লপ্তড	P8
খৃত*চ্	b.	ভান্ত !	
		मानक ए	40
, — t = 1		ান্ত ৷	
ছান্ত ৷	. 67	অণ্	be
পুচ্চ্	b3	त्रग्	ье
গোবিছ	62	হুগণ্	6e
পথিপ্ৰাছ্			
জান্ত।		তান্ত।	
দেবেজ	P.2	মহৎ	PC
ঋথি জ ্	p 2	মহন্ত্	46
লোকস্জ্	७२	ভবন্ (জ্)	69
রজ্পদ	७२	ভবন্ত (৭)	69
উৰ্জ	45	वृद्ध (९)	64
यूक्,	७ २	वम्य (९)	69
विश्रयंष्	60	कूर्वछ (९)	৮৭
অশ্যুদ্	60	कौ वस् (९)	51
षरुष्	७७	পৃষন্ত্(ৎ)	৮৭
विश्वता ष .	60	वृहस्र	69
CC-0. In Public Domain.	Gurukul Ka	angri Collection, Haridwar	

10

*।य	शृष्ट्री	अ क्	
बगरु (९)	69		शृष्ठे ।
खग९	bb	মধ্	
यकुर १ क्यानिक र	bo		25
শরুং	bb	নান্ত ৷	
नम् (स्त्र)	64	. मृ भम्	35
मध् (स्रे)	ba	ा न्	25
চকাদন্ত (৭)	ba	् ष्	20.
ৰাগ্ৰন্ত (৭)	64	यम्	20
यक्ष (९)	64	অতিষদ্	ನಿಲ
मित्रिसंख् (९)	52	<u> অতিতদ্</u>	20.
भामख्(९)	נא	এতদ্	98
ब्लर (१)	64	व्य द्या अप	28
जूमछ (९)	64	यूभान	86
ভो स्ट (१)	P2	অতিযুদ্দ	36
यास्ट (९)	3.	ष श्राप्	26.
नारु.(९)	20	অত্যস্মদ্	24
भ ठ छ.(९)	3.	ত্ৰামাচক্ষালঃ	
मौवाख् (९)	20	ইত্যাদিবাক্যে	29
कत्रियास् (९)	. 30	ৰুবামাচক্ষাৰঃ	
उ ष्टिर	22	हे जामिवादका	24
त्यावि९ (९)	92	বুত্যানাচক্ষালঃ	
मक्रज्ञ (९)	57	हे जा निर्वारका	
গরুত্ত (৭)	27	মামাচক্ষালঃ	24
বিহাত্ত (৫)	97	रेणां मिर्गारका	
विष्युष् (९)			÷ P-
সমট্ত	57	আৰামাচক্ষাণঃ	
यह त्रि<	25.	रे ा मिर्वा रका	96 -
न्द्रावर मृश्यद	55	অস্থানাচক্ষাণঃ	
			25
CC-0. In Public Do	main. Gui	প্রমুদ্দদ rukul Kangri Collection, Haridwar	• 8

श्री व

শব্দ Digiti	zed by Arya Sar	naj Ęgu	ndation Chennai and eGangotri	
পরমাস্তাদ্		7 . 8		शृहे1
বিদ্		3.8	यावन्	225
অতিবিদ্			षयावन्	225
	ধান্ত।	7.8	(शामावन्	332
সমিধ্	7101	308	गामन्	225
অতিসমিধ		300	१र्कन्	225
ক্ষ		300	रूपर्यन्	775
মুগাবিধ্			পরমধর্ম ।	330
ক্র্থ		30€	२ थवन्	330
	নান্ত]।	200	भू व्याधवन् । भू व्याधवन्	330
রাজন্	110,1		वर्षन्	330
স্বাজন্		300	जनर्कन्	228
পঞ্ন ত		306	गघवन्	778
मक्षन् ।		209	य न्	278
नवन्		209	य्वन्	
ज=ान्		209	উপশুন্	276
প্রিয়পঞ্নু		209	वृश्वर्ग्	276
षष्टेन्		7.0		276
खियां हेन्		704	य र्व रन्	226
षश्न पश्न		209	भकरन्. भिकरन्	220
		200	भी हन्	>>6
मोधांश्न्		>>-	मछीन्	336
ट्यमन्		270	देवत्रिन्, श्विन्, धनिन्	339
निष्मन्		322		
পটিমন্	30.75 P	277	পান্ত ৷	
গরিমন্		222	नूभ्	110
मामन्		222	অতিলুপ	339
स्रामन्	E FEIT !	222	ष्पर	224
পীবন্		150	य भ	229
भी वन्			শুচাপ্, অত্যপ্	224
			(3 40).1	324

Digiti	zed by Arya Sar	naj Founda	tion Chennai and eGangotri	
শব্দ		शृष्ट्री	अ क	পृष्ठी
	হান্ত ৷		লান্ত ৷	n n
	7-10-1	336	इन्	254
বিরেফ ্		220	শুক	259
अष्			ৰাভ।	
	বান্ত।	222	मि व्	250
क्रीव्		3,30	অতিদির	254
	ভান্ত।		উপেষিব্	254
গৰ্ভ		272	म् नव्	254
করভ ্		2,5	ৰিজিহ্ব ্	253
ৰিভ ্		279	>শান্ত।	
	মান্ত।		য়ুভস্গ্	759
কম্		275	স্থবিশ্	259
প্রশাম্		666	উশ্	200
কিষ্		250	নশ্	>00
इतम्		252	তাদৃশ্, ষাদৃশ্, সদৃশ্, ক	गृन्,
	হান্ত ।		এতাদৃশ্, অমৃদৃশ্, ঈদৃশ	1, 20,
ध्यच्च र		250	ৰান্ত ৷	
			যধ্	700
	ৰান্ত ৷		পরমধ্য	>60
গির্		250	প্রিয়য়শ্	2007
ধুৰ		>58	বিপ্রাষ্	207
দ্বার্		758	ত্তিষ্	202
মূর্		> >58	সান্ত ৷	
পর্		. 258	ठ स्मम्	207
বাৰ্		258	স্প্ৰদ্ৰস্, অপ্ৰজন্	201
চতৃ ৰ্		254	বেধস্, হস্রোতস্	205
চতাৰ্		250	<u>कृष्टाब</u> म्	205
প্রিয়চতার		256	उ भनम्	205
পিয়চতুর্		256	ब ंदनहम्	705

अ	अंश	्र भ क	शृष्ठे।
क्नीयम् (न)	302	श्रम्	
শ্বেষ্দ্ (ন্)	308		309
क्यांत्रम् (क्य्)	300	रूপ्यनम् —	209
জগ্মিবস্	300	হান্ত	
विषम् (म्)	300	গোত্হ্	209
श्रविषम् (नम्)		म्र ्	704
শ্রেভিদ্	200	অন ড়াহ্	. 500
	708	স্থনডাহ্	200
স্থাত্স্	708	व्यष्ट्रे वा ह्	204
অপ্সরস্	708	বাৰ্কাহ্	202
উথাম্রস্	208	कानौवाह	جەر
व्यम्, ध्वम्, भर्गध्वम्	308	অগ্নিবাহ	دور
यनम्	206	খেতবাহ	502
२ भनम्	300	তুরা সাহ ্	
সর্পিস্	300		78.
ধহুস্	300	ब र्	787
८ नाम्	300	ক্ষান্ত।	
আশিস্	A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH	বিবিক্	287
म जूम्	200	তক্	282
	206	গোরক্	787
अ न्म्	200	মাংসপিপক্	785
অত্যদস্	200	বিবক্	>84

বিষয়সূচী।

3

বিষয়		•	शृष्ट्री
শব্দরপ			201
স্মাসান্ত বিধি	ক্রানিক।		285
স্টীক ষ্ট্কাক্ক্কারিক। গ্রন্থস্মাপন			286
प्रश्नागन			398

অধ্যাপক শ্রীমদ্গুরুনাথবিতানিধি-ভট্টাচার্য্য সম্পাদিত Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

অমরার্থকল্প (সিটাকার্বাদ অমরার্থচন্দ্রিকা) ১॥০, মৃগ্ধবোধ ব্যাকরণ ৬১, মৃলম্প্ধবোধ ॥৮০, আখ্যাতবৃত্তি ৩॥০, কর্ণাট-বর্ণন ১০, কলাপব্যাকরণ ১২১, কলাপ পূর্বাদ্ধি ৬১, কলাপ-পরাদ্ধি ৬১, কলাপত্ত্ব ।৮০, কাভন্ত্রগ্রালা ১০, কাভন্ত্রপরিশিষ্ট ২০০, ক্তম্ব ত্তি ৩১, ক্রমঞ্জরী ৮০, কোষসংগ্রহ ॥৮০, গণার্থকল্পজ্ম (গণপ্রাদীপ সহ) ॥০, চণ্ডী (তালপাতায়) ১০, চতুইয়বৃত্তি (নামপ্রকরণাস্ত) ১১, ব্রিবেদীয় নিভ্যকর্ম ।০, কালীর ককারাদি সহস্রনাম ১০, কবিবহুত্তা ।০, কবিকল্পজ্ম ১॥০ দেবার্চিন কল্পজ্ম বা বিশুদ্ধ সর্বাদেবদেবী পূজাবারিধি ২১, ধ্যান-কল্পজ্ম ॥০, প্রহেলিকা-সংগ্রহ ।০, ভাষাপরিচ্ছেদ ১১, রত্নপঞ্চক ৮১০, কল্পচণ্ডী ।৮০, বিদ্যাদেতর্দ্ধিণী ॥০, বিরাটপর্ব ১॥০, বৃহৎ প্রেট শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা ১১ বেদাস্থডিভিম ।০, শক্ষর্পকল্পজ্ম ৮২, শান্তিশুস্তায়ন কল্পজ্ম ২১, শৃলারভিলক ।০, সদ্বিবৃত্তি ।৮০, সংক্ষিপ্রবৃত্তা ।৮০, সংক্ষিপ্রতি ।৮০, সংক্ষিপ্রবৃত্তি ।৮০, সংক্ষিপ্রবৃত্তি ।৮০, সংক্ষিপ্রবৃত্তি ।৮০, হিতোপদেশীয় মিত্রলাভ ১০০, বিবাহদর্পণ ১০

निम्निविश्व श्रुक्छिन नागरी जक्रात मूर्पिछ।

उत्तररामचिरत ३।, जुमारसम्मव १॥, किरातार्ज्जुनीय ३)

कल्दोमचरी ॥॰, दमजुमारचरित १॥, धातुरूपकल्पद्धम ३),

पिष्कलकल्दःस्त्र १॥, भिट्ठकाव्य (१—८) ३॥, ऐ

(१॰—२२) ३),मालविकाग्निमित्र १॥, भीमांसा परिभाषा ।॰,

ऐ सटीकानुवाद ॥॰ मेघदूत १।०, रघुवंश ३), रचनानु
बादिश्चा १॥०, शिश्रपालब्ध ४),सारमच्चरी ॥०, श्रुतवोध ॥०,

साहित्यदपण, ४), हितोपदेशीय मित्रलाभ, १।०) सांख्यसार
॥० सांख्यकारिका ॥० काष्यचिन्ता १)

্ প্রাপ্তিস্থান— ছাত্র-পুস্তকালস্থ

নিবেদিতা লেন, বাগবাঞ্চার কলিকাতা CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

শব্দরাপ-কল্পদেনঃ

মাতাপিতৃপদাস্ভোজং প্রণংনম্যেক্টদিদ্ধিদম্। শব্দরূপং দিদৃক্ণৃণাং বিনোদায়েদমীহতে॥

অকারান্ত

রামশব্দ, পুংলিঙ্গ

রামঃ, রামে, রামাঃ। রামম্, রামৌ, রামান্। রামেণ, রামাভ্যাম্, রামিঃ (১)। রামায়, (২) রামাভ্যাম্, রামেভ্যঃ। রামাৎ, রামাভ্যাম্, রামেভ্যঃ। রামভ্য, (৩) রাময়োঃ, রামাণাম্। রামে, রাময়োঃ, রাময়ৄ। সম্বোধনে—হে রাম, হে রামৌ, হে রামাঃ।

আপত্তি।—'রামেভ্য:' "অকারো দীর্ঘং ঘোষবতি" বলিয়া দীর্ঘ হয় না কেন? উত্তর—''এষ্ বৃক্ষাভ্যামিত্যভয়োঃ সাবকাশতে পরস্বাং

⁽১) কলাপমতে আপত্তি।—'রাইমঃ' স্থলে ''ধুটি বছত্বে ত্বে'' বলিয়া এব হয় না কেন ? উত্তর—"ভিন্নবিষয়েহপি নিরবকাশতয়া ঐনা এবং বাধ্যতে।" যে স্থলে ঐস হওয়ার প্রাপ্তি নাই, সেস্থলেই (রামেভ্যঃ সর্কেষাম্ ইত্যাদি স্থলেই) এব হইবে। এব নামান্ত বিধি, ঐদ্ বিশেষ বিধি, ''নামান্তবিধিকৎদর্গঃ বিশেষবিধিরপবাদঃ। উৎদর্গাপবাদয়োরণ-বাদবিধির্কাবান্।" এই ভায়ামুদারে ঐদ্ এবকে বাধা করিল।

⁽২) কলাপমতে।—ভেনু ইতি সিদ্ধে ঘোষবদ্গ্রহণসামর্থ্যাৎ সন্নি-পাতলক্ষণপরিভাষাবাধ্যা অকারো দীর্ঘং ঘোষবতীতি দীর্ঘ:।

Digitized by Arya Samai Foundation Chennal and eGangotri সক্ষাম ও মাদ প্রভৃতি কতকগুলি শক্তিয় দমন্ত অকারান্ত শক্ষেরই পুংলিম্বে রামশন্দের তুল্য রূপ হইয়া থাকে, কিন্তু ষণ্ঠীর বহুবচনে ও তৃতীয়ার একবচনে কোন হলে ণত্ব হয়, কোন হলে হয় না। ণত্ব হয় অহসারে তাহা নিলীত হইবে। দন্ত্যনকারের হল—দেবানাম্, শিবানাম্, পদানাম্, দেবেন, শিবেন, পদেন—ইত্যাদি।

সম্বোধনে সকল অকারান্ত শব্দেরই একরূপ রূপ হয়।

মাদশব্দ, পুং। (8)

মাদঃ, মাদেী, মাদাঃ। মাদম, মাদেী, মাদান্, মাদা। (৫) মাদেন,
ধুটোত্বম্।' 'এমৃ' ইত্যাদি স্থলে এত্বের প্রাপ্তি, 'বৃক্ষাভ্যামৃ' ইত্যাদি
স্থলে দীর্ঘের প্রাপ্তি, অত এব "যত্র ছৌ প্রসন্থারতার্থাবেকিমিন্" ইত্যাদি
ভাষাত্রসারে পরত্ব ঘটিল; স্থতরাং "প্রস্বপরয়েঃ পরবিধির্ফালবান্" এই
ভাষাত্রসারে দীর্ঘকে বাধা করিয়া এত্ব হইল।

- (৩) কলাপমতে।—''ঙদ্ শুঃ'' ইত্যাদীনাং ব্যতিক্রমনির্দ্দেশাৎ কচিদকারান্তাদন্যতাপি ''ঙদ্ শুঃ'' প্রবর্ত্ততে, তথাচ—''নবং নবং পরিত্যক্ষ্য পুরাণমপকর্যতঃ। অতিজ্বস্থা ভিক্ষ্যা কন্থা বর্ষশতং গতা।'' এবম্ উদ্ধিষ্য ইত্যাদি প্রয়োগশ্চ সাধনীয়ঃ। ''উদ্ধিষ্যোত্তরে তীরে'' ইত্যাদি চ।
- (8) ''মৃদ্ধন্তান্তো মাধো মানে ত্রীহন্তরেহিপি নির্দিষ্টঃ। কালবিশেষে দন্ত্যান্তো মাঃশব্দক্রচৌরয়ো'' রিতি ত্রিকাণ্ডে।
- (৫) প্রীপতি-মতে।—"অঘুটি মাদনিশয়োর্যান্নিশোঁ" ইতি অঘুটি বিকল্পেন মাদাদেশ:। ছর্গমতে তু অঘুটি মাদ্ নিশ্ইতি প্রকৃত্যন্তরং ন মাদাদেশ ইতি। কিন্তুস মতে নিজ্ভ্যাং নিজ্ভিরিত্যাদয়ঃ প্রয়োগাঃ ম্যাঃ। স্ত্রকারমতে তু ধাতোরবয়বইশ্রব হশবছান্ত ইত্যাদিনা জ্বানিধানাং ঘোষবতি তৃতীয়ঃ অঘোষে চ প্রথম ইতিকৃতে নিজ্ভ্যান্নিচ্মুইত্যাদিরপ্রিতি ভেদঃ।

3

द

মালা; মালাভ্যাম, মাভ্যাম্ (৬): মালৈঃ, মাভিঃ। মালায়, মালে;
মালাভ্যাম্, মাভ্যাম্; মালেভঃ, মাভঃ। মালাং, মালং; মালাভ্যাম্,
মাভ্যাম্; মালেভঃ, মাভঃ। মালভ, মালঃ; মালেয়াঃ, মালোঃ;
মালানাম্ মালাম্। মালে, মালি; মালয়োঃ, মালোঃ; মালেষ্, মাংস্।
লখোধনে হে মাল ইত্যাদি।

পাদশব্দ, পুং। (१)

পानः, পांतो, পानाः। পानम्, भारतो, পानान्, भनः। (৮) भारतन, भनः। भानाः, भानाः। भानाः, भानाः, भानाः। भानाः, भानाः, भानाः। भानाः, भानाः। भानाः, भानाः। भानाः, भानाः। भारतः। भ

य्यभाक, श्रः।

य्दः, यूर्वो, य्याः । यूषः, यूर्वो, य्वान्, यूकः । य्रवन, यूकः ; य्या-ভाग्न, य्यजाम् ; यूरेवः; य्यज्ञः । य्याम्, य्रकः ; य्याजाम्, य्यजाम् ; य्रवजाः, य्यजाः । य्यार, यूकः ; य्याजाम्, य्यजाम् ; य्रवजाः य्यजाः ।

- (৬) ঘোষবতি বিদর্গে কতে তম্ম লোপঃ। মাসনিশয়োলোঁপে ইতি কতে প্রক্ততেরস্তাপহারী লোপ ইতি আয়াদস্তলোপেনৈব সিধ্যতি কিন্তৃ-সিদ্ধবদ্ভাবাং ঘোষবতি স্থপি চ বিসর্গো ন ভবিতৃমইতি ইত্যাদেশ-বিধানমিতি।
 - (৭) "পাদা রশ্মাজ্য তুর্যাংশা:" ইতামর:।
- (৮) হুর্গিংহমতে (শন্মাদি) অঘুট প্রত্যয়ে পাদশন্তানে পদ্ আদেশের সূত্র না থাকায় 'পদ্' ইত্যাকার পাদশন্বের স্মানার্থক স্বতম্ত্র শন্দ স্বীকার।

⁻CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

्यूषचा, यूक्षः ; यूषाः , यूक्षाः ; यूषानाम्, यूक्षाम् । यूक्ष, यूक्षि, यूवि ; यूष्याः ; यूक्षाः, यूक्षः, यूष्यः । नावाधान— एवं यूष । नावाधान— एवं यूष । नावाधान— एवं यूष ।

मुख, शूः।

দন্তঃ, দন্তৌ, দন্তাঃ। দন্তং, দন্তৌ, দন্তান্, দন্তঃ। দন্তেন, দতা; দন্তান্ত্যাং, দন্তাম ; দক্তিং, দন্তিরিত্যাদি। দিতীয়ার বহুবচন হইতে সকল বিভক্তি পরেই পক্ষে দৎ আদেশ হয়। (১)

नर्वनाग। (नर्वािष) (১०)

नर्सनाम संकल्पनि जिन निष्ट्रहे अयुक्त रहेया थारक।

मर्का, शूः।

नर्सः, नर्स्सो, नर्स्स । नर्स्सम्, नर्स्सो, नर्स्सान् । नर्स्सन्, नर्स्सथा (১১) नर्साच्याम्, नर्देसः । नर्सरेष, नर्स्साच्याम्, नर्स्सच्याः । नर्सयाः, नर्सचः

শ্রীপতিমতে— "পাদহদয়যুষদোষাম্ পদ্রদ্যুষন্দোষণঃ" এই ত্তা বলিয়া অঘুট্প্রত্যয় পরে পাদশব্দের ত্থানে বিকল্পে পদ্ আদেশ হয়। ঐ ত্ত্তের অর্থ—ঘুট্ ভিন্ন প্রত্যয় পরে থাকিলে পাদ, হয়য়য়, য়ৄয় এবং দোষ শব্দের ত্থানে পদ্ য়দ্ য়ৄয়য় এবং দোষন্ আদেশ হয় য়থাসংখ্যে বিকল্পে।

- (२) "मनांति वा नवम्भनाम्ङ्जिम्, यूयन्ति। वनः"। अभन्रक्षम्।
- (১০) সর্কাদি যথা—সর্কা, বিশ্ব, উভ, উভয়, অন্ত, অন্তর, ইতর, ডতরপ্রতায়ান্ত, ডতমপ্রতায়ান্ত, ড, নেম, সম, সীম, পূর্ব্ব, অপর, অবর, দক্ষিণ, উত্তর, পর, অধর, স্ব, অন্তর, তাদ, তদ, যদ, এতদ, অদস্, ইদম্ কিম্, এক, বি, যুমদ্, অস্মদ্, ভবন্ত (ভবস্তু)।

সর্বশব্দ সাকল্যবাচিত্তেহণি জাতাবেকবচনম্। যদা তু দেবদত্তাদিশব্দবদ্ব্যক্তিবচনগুদা বচনান্তরম্পি।

(১১) তৃতীয়াবিভক্তির সকল বচনেই থাপ্রত্যয়, পঞ্মী বিভক্তির CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

সর্বাভ্যাম্, সর্বেভ্যঃ। সর্বস্থে, সর্বেগ্যোঃ, সর্বেগ্যাম্। সর্ববিদ্, সর্ববিদ্, সর্ববিদ্, সর্ববিদ্, সর্ববিদ্, সর্ববিদ্, সর্ববিদ্, সর্ববিদ্, সর্ববিদ্,

পরমদর্বর, পুং।

(কর্মধারয়-সমাসে ১৩)

পরম্নর্কঃ, পরম্বর্কৌ, পরম্বর্কে ইত্যাদি সর্কশব্দের ভাষ।

ত

5:

9

3

াষ

[]

র,

ब्र,

Ą.

7-

ব

সকল বচনেই তস্প্রত্যয় এবং সপ্তমী বিভক্তির সকল বচনেই ত্রপ্রত্যয়, সকল লিজে সকল সর্কনামশব্দের উত্তর হইয়া থাকে, সকল স্থলে উক্ত উক্ত প্রত্যয়াস্ত পদসমূহ সকল বচনে লিখিত হইবে না।

- (১২) বর্ণাগম ইত্যাদি বলিয়া র্ব্ব, এই মধ্যস্থিত বর্ণের লোপ করিলে সপ্তমীতে 'সদা' ইত্যাকার রূপও হয়।
- (১৩) 'সর্ক্রমতিক্রান্তঃ কশ্চিং' কোনও ব্যক্তি সর্ক্রহে (সকলকে)
 অতিক্রম করিয়াছে—এই অর্থে অতিসর্ক্রশন্তেরও রামশন্তের তুলা রূপ
 হইবে, সর্ক্রনামোক্ত কার্য্য হইবে না, কিন্তু যথন "সর্ক্রমতিক্রান্তঃ সর্ক্রঃ"
 সকলই সর্ক্রকে (সকলকে) অতিক্রম করিয়াছে, এইরূপ সাকলা অর্থে
 অতিসর্ক্রশন্ত হইবে, তথন সর্ক্রশন্তের তুলাই রূপ হইবে, অর্থাৎ সার্ক্রনামিক কার্য্য হইবে। তুর্গসিংহের বৃত্তিতে 'বিশ্বো নাম কশ্চিং' এই
 কশ্বিৎপদোল্লেথহেতু উক্ত মীমাংসা গোপীনাথ তর্কাচার্য্য করেন,
 কিন্তু কবিরাজ বলেন যে, 'কশ্বিং' এই পদটী যে বৃত্তিতে উপগ্রন্ত
 হইয়াছে, উহা কেবল বিশেষণীভূত বিশ্বশন্তের বিশেষ্যপদ দেখাইবার
 জন্ম, বিশ্বো নাম কশ্বিং অর্থাৎ বিশ্বনামে কোন এক মন্ত্র্যা। বস্তুতঃ
 অন্ত কোন অর্থ-বাচী হইলেই সর্ক্রনাম বলিয়া গ্রাহ্য হইবে না। 'সর্ক্রনান্ত বিশ্বেও সাকল্যার্থক হইন
 মাত্রেনান্ত: সর্ক্রঃ' এই স্থলে অতিসর্ক্রশন্ত অতিক্রান্তেও সাকল্যার্থক হইন
 যাছে বটে, কিন্তু তথাপিও অন্তার্থক হইয়াছে, কারণ যেরূপ সাকল্যার্থ
 পুরস্কারে সর্ক্রশন্ত সর্ক্রনামসংজ্ঞা লাভ করিয়াছে, অতিসর্ক্রশন্ত সেইরূপ

অসর্ব্ব, পুং।

(নঞ তৎপুরুষসমাদে)

षमर्खः, षमर्खा, षमर्ख। (मर्खनकवर)

5

मर्का, नशूः।

সর্বাম্, সর্বোণি। সর্বাম্, সর্বোণি। অতঃপর পুংবং। সর্ববা, স্ত্রী।

নর্বশব্দের উত্তর স্ত্রীলিলে আ (আপ্) প্রত্যুয় হওয়ায়, আকারান্ত শব্দ হয়, যথা—

সর্বা, সর্বে, সর্বাঃ। সর্বাম্, সর্বে, সর্বাঃ। সর্বয়া, সর্বাভ্যাম্, সর্ব্বাভিঃ। সর্ববিষ্ণ, (১৪) সর্ব্বাভ্যাম্, সর্ব্বাভ্যা:। সর্ববিষ্ণাঃ (সর্ব্বভঃ) সর্ব্বাভ্যাম্, (সর্ববিভঃ) সর্ব্বাভ্যঃ (সর্ববিভঃ)। (১৫) সর্ববিষ্ণাঃ সর্ব্বায়াঃ

সাকল্যার্থের গ্রহণ করে নাই, অতএব এইরপ অতিসর্কশক্রের সর্কানামাক্ত কার্য হইবে না। শ্রীপতিরও ইহাই অভিমত। শ্রীপতিহত্ত যথা—"অসংজ্ঞোপদর্জনং সর্কাদিঃ"। তুর্গদিংহও বলিয়াছেন—"ন গৌণে সার্কানামিকম্"—গৌণস্থলে সার্কানামিক কার্য্য হইবে না। কর্মধারয় সমাদে উত্তরপদের অর্থ প্রধান হয় বলিয়া, উক্তরূপ অর্থহ্বলে সর্কানাম কার্য্য হইবে, যথা পরমশ্চাদৌ সর্কাশ্চেতি বাক্যে পরম্বর্ম ইত্যাদি।

কোন কোন ব্যাকরণের মতে সর্ব্ধথা, সর্ব্বতঃ, সর্ব্বত্ত, সর্ব্বদা, সদা, বিশ্বতঃ বিশ্বথা, বিশ্বত্ত ইন্ত্যাদি শক্তুলি অব্যয়গণে পঠিত্যাত্র, প্রকৃতিপ্রত্যম্ব বিভাগপূর্বক সাধিত হয় না।

(১৪) কলাপমতে।—স্বাগমশু প্রত্যয়াদিত্বে রেফশু প্রত্যয়ানাদি-ভূতশু সাহচর্য্যাৎ রেফদোর্ব্বিসর্জ্জনীয় ইতি বিসর্গাভাবঃ। তথা সকৃদ্গত ইত্যাদি স্থায়াৎ ঘোষবতি ন তৃতীয়ঃ।

সর্কাদাম্। দর্বজাম্, (সর্বত) দর্বয়োঃ, (দর্বত] দর্বাস্থ, (দর্বত)। দিছোধনে।—হে দর্বে, হে দর্বে, হে দর্বাঃ।

পূর্বলিথিত পরমদর্ব এবং অসর্ব শব্দ নপুংসক লিঙ্গেও সর্বশব্দের তুল্য। স্ত্রীলিঙ্গে পরমসর্বা এবং অসর্বা ইত্যাকার শব্দ হইবে, ইহাদেরও সর্বা শব্দের তুল্য রূপ হইয়া থাকে।

विश्व, शूः। (मांकलार्रार्थ)

বিশ্বং, বিশ্বে। ইত্যাদি সর্বাশব্দের তুলা প্রয়োগ হয়। বিশ্বশব্দের উত্তর কেবল দা প্রত্যেয় হয় না, আর সমন্ত কার্যাই সর্বাশব্দের হয় এবং অবিশ্ব পরম্বিশ্ব প্রভৃতিও পূর্ববিৎ সর্বাশব্দের তুলা সার্বানামিক (সর্বাদি সম্বন্ধী) কার্যাভাগী হইবে।

ক্লীবলিঙ্গে ও স্ত্রীলিঙ্গে সর্ব্ব এবং সর্ব্বা শব্দের তায়। অতিবিশ্ব শব্দের অতিসর্ব্বশন্ধবং ব্যবস্থা।

উভ, পুং।

উভৌ, উভৌ, উভাভ্যাম, (উভয়থা) উভাভ্যাম, উভাভ্যাম, (উভয়ত:) উভয়ো:, উভয়ো:, (উভয়ত্র) (১৬) হে উভৌ। উভ শব্দের উত্তর কেবল দ্বিচনই হয়। বৈয়প্রভৃতি সার্ব্বনামিক (সর্বাদি শব্দনী) কার্য্যের অসন্তব হইলেও সর্ব্বনামগণৈ পাঠের ফল এই মে,

সকল সমাসেই সর্ক্রনামশব্দের পুংবদ্ভাব হইয়া থাকে, অতএব জীলিন্দেও 'সর্ব্বত্র' ইত্যাকারই পদ হইবে, 'সর্ব্বাত্র' ইত্যাকার হইবে না। "পদানাং প্রত্যাহ্যুর্যোগঃ সমাসশ্চেহ বৃত্তমঃ'' ইতি শ্রীপতিঃ।

(১৬) উভত্র, উভতঃ, উভথা ইত্যাদি প্রয়োগ ভাষাতে প্রযুক্ত দেখা যায় নাম Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

⁽১৫) সর্ব্বনামে বৃত্তিমাত্রে পুংবদ্ভাব ইতি। হুর্গস্ত স্ত্রীত্বস্থাবিবক্ষা বুতাবিতি ত্রতে।

হেতুশব্দের প্রয়োগবোগে সকল বিভক্তিরই দ্বিচন জন্মিবে। যথা—উভেই হেতু। উভাভ্যাং হেতুভ্যাম্ ইত্যাদি। (১৭) সমাস (বৃত্তি) স্থলে উভশব্দ-স্থানে উভয়াদেশ হইয়া থাকে, অভএব উভয়থা ইত্যাদি প্রয়োগই শিষ্ট।

নপুংসকলিজে—উভে, উভে। ততঃ পুংবৎ।
ন্ত্রীলিন্দে—উভা ইত্যাকার হইবে, রূপ নপুংসকলিদ্বৎ।

উভয়, পুং।

উভয়শব্দের উত্তর একবচন ও বহুবচনমাত্র জ্বনে। উভয়ং, উভয়ে। উভয়ম্, উভয়ান্। উভয়েন. উভয়থা, উভগ্নৈ: উভয়থা। উভয়ব্ন, উভয়েভ্যা:। উভয়স্থাৎ, (উভয়তঃ) উভয়েভ্যাং, (উভয়তঃ)। উভয়স্থা, উভয়েঘাম্। উভয়স্থান্, (উভয়ত্র, উভয়েহ্যাং, উভয়হ্যাং) উভয়েঘ্, (উভয়ত্র, উভয়েহ্যাং, উভয়হ্যাং)। হে উভয়, হে উভয়ে।

ত্রীলিঙ্গে— ঈ (ঈপ্) প্রত্যের হইয়া 'উভয়ী' ইত্যাকার শব্দ হয়, উভয়ী, উভয়াঃ ইত্যাদি নদীশব্দের তুল্য দ্বিচনে ও বছবচনে রূপ হয়। পঞ্মীতে ও সপ্তমীতে উভয়তঃ এবং উভয়ত্র ইত্যাকারই হইবে।

नश्रामक निष्म—উভয়म्, উভয়ानि, উভয়म्, উভয়ানি। ততঃ পুংবং।

সর্বনামান্তর্গত অন্যানি। (১৮) অন্য, ভিন্নার্থক (পুং)।

অতঃ, অত্তো। অত্যম্, অত্যো, অত্যান্। অত্যেন,

⁽১৭) নিমিত্তকারণহেতৃভির্যোগে স্ক্রনায়: প্রথমা-তৃতীয়া-পঞ্চমীষষ্ঠ্যো ভবন্তীতি শ্রীপতিমতম্। তক্ত স্ত্রঞ্— "স্ক্রনায়ো হেতাদিন।
প্রথমা-তৃতীয়া-পঞ্চমী-ষ্ঠ্যঃ। স্ক্রবিভক্তীনাং প্রয়োগদর্শনমিতি জয়াদিত্যা। দ্বিতীয়াবর্জ্ঞং স্ক্রা বিভক্তর ইতি টীকাবিদঃ।

⁽১৮) **অন্তা**দি—অন্ত, অন্তর, ইতর, ডতরপ্রত্যেয়াস্ত এবং ডতম-প্রত্যায়াস্ত।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(অনুথা) অন্তাভ্যান্। (অনুথা) অন্তঃ, (অনুথা)। অনুধ্যা, অন্তাভ্যান্, অন্তভ্যঃ। অনুসাৎ, (অনুভঃ) অন্তাভ্যান্, (অনুভঃ) অনুভঃ। (অনুভঃ)। অনুসাং, অনুষান্। অনুষ্মিন্, (অনুভঃ, অনুদা, অনুষ্, অনুষ্যা, (অনুষ্, অনুষ্, (অনুষ্, অনুষ্, (অনুষ্, অনুষ্, (অনুষ্, অনুষ্, (হ অনু, হে অনু), হে অনু, নুধ্ং—অনুং, অনু, অনুন। অনুং, অনু, অনুন। অনুংবং। সংখাধনে—হে অনুং, হে অনু, হে অনুন।

ন্ত্ৰী—সভা, অন্তে, অভা:। অভাম, অন্তে, অভা:। অভয়া, অভাভাাম, অভাভি:। অভতৈ, অভাভাাম, অভাভা:। অভভা: (অভত:) অভাভা:, (অভত:)। অভভা: অভয়ো:, অভাসাম্। অভভাম, (অভত) অভয়ো:, (অভত) অভায়া, (অভত) অভায়, (অভত)। সংখাধনে—হে, অন্তে, হে অন্তে, হে অভা:।

অন্যতর ও ইতর, ভিন্নার্থক।

অন্যতর ও ইতরশক তিন লিলেই অন্তশকের তুল্য। বিশেষ—দা এবং হি প্রতায় হয় না।

ডতর ও ডতমপ্রত্যয়ান্ত শব্দ। (১৯)

কতর:, কতরৌ, কতরে। ইত্যাদি বিশ্ববং।
নপুংসকলিন্ধে—কতরং ইত্যাদি। অগতরবং। গ্রীলিঙ্গে—কতরা
ইত্যাদি অগতরাবং।

⁽১৯) "যত্তদেকেভ্যো দ্বোরেকতা নিদ্ধারণে ডতরো বা বহুনাং জাতৌ তৃ ডতম:" ইতি "তৌ কিম:" ইতি চ তমাদির্বাৎ যত্তদেক-কিম্-শব্দেড্যো ডতর্গভন্মপ্রত্যয়ৌ ভবতঃ। ডতর্গভ্যপ্রত্যয়ান্ত শব্দ—যতর, যতম, তুতুর্গাক্ষিয়াল প্রক্রান্ত্রা, প্রক্রান্ত্রা, ক্রোভ্রান্তনা, Haridwar

কতমঃ, কৃতমৌ, কতমে ইত্যাদি বিশ্বাং । নপুংসকলিদে ও ত্রালিদে অক্তরবং ।

যতর্যতমপ্রভৃতি সমস্ত ডতর্ডত্মপ্রত্যয়ান্ত শব্দের অগতরশব্দবং রূপ হয়, একতর শব্দের কেবল ক্লীবলিঙ্গে প্রথমা ও দ্বিজীয়ার একবচনে একতরম্ ইত্যাকার বিভিন্ন রূপ হয়, অগু সকল বিভক্তিতে সকল লিঙ্গেই অগ্যতরশব্দের তুল্য রূপ হইয়া থাকে।

কতরকতমশব্দ, পুং। (২০)

কতরকতমে), কতরকতমে, কতরকতমাঃ। প্রথমার বহুবচনভিন্ন বিভক্তিতে দেবশর্ষের তুল্য।

নপুং—কতরকতমং। ইহাই বিশেষ। স্ত্রী—কতরকতমা। লতাশব্দং।

ত্ব, অন্তার্থ।

পুং—ত্বঃ, ত্বৌ, ত্বে। তিন লিঙ্গেই বিশ্ববৎ।
নেম, খণ্ডার্থ।

তিন লিজেই বিশ্বশব্দের তুলা, কেবল প্রথমার বহুবচনে—নেমে, নেমাং, ইত্যাকার রূপ হয়।

কোনও বৈয়াকরণ অন্ততম শব্দও সর্কানাম বলিয়া স্বীকার করেন; অনেকেরই তাহা অমত।

"অগতনন্থিই গণে ন পঠাতে। অগতনিশ্বন্ধিতি চ শিক্ষায়ুর্বেদাদিয়ু দুখতে" ইতি শ্রীপতিঃ।

(২•) 'কত্র*চ কতমশ্চ' এবং 'কতরে চ কত্মে চ' এইরূপ হস্তমাদে কতরকতম শব্দ নিষ্পার।

কলাপমতে।—কতরকতমাদীনান্ত ঘল্তহাচ্চেতি বিকল্পে জন্ ইকারো-হুলুত্র চু নান্তৎ সার্কনামিকমিতি নিষেধেন দেবশন্ত্বৎ প্রয়োগঃ। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मम, मांकलांर्थ। (२১)

সমশন সাকল্যার্থবাচী হইলেই সর্কানাম (সর্কাদি) বলিয়া গৃহীত হয়, তিন লিলেই বিশ্বশন্দের তুল্য। তুল্যার্থে—দেবশন্দবং।

দীম, দর্কার্থ। (২২)

मोमः मौरमो, मौरम। তिन निस्कृष्टे विश्ववर।

পূর্ব্ব— দিক্, দেশ ও কালার্থক।

পৃং—পৃর্বা: (পুরঃ পুরস্তাৎ), পৃর্বো, পৃর্ব্বো: । পৃর্বাম, পৃর্বোরী পৃর্বান । পৃর্বানা । পৃর্বানা । পৃর্বানা । পৃর্বানা । প্রবানা । প্র

নপুং—পূর্বাং, পূর্বে, পূর্বাণি। দিতীয়াতেও এরপ। তত: পুংবং।
ন্ত্রী—পূর্বা, পূর্বে, পূর্বাঃ ইত্যাদি বিশ্বশন্ধবং।

অপর, অবর, দক্ষিণ এবং উত্তর শব্দেরও তিন লিঙ্গেই পূর্ব্বশব্দের

⁽২১) সমশব্দ সর্কার্থ হৈন্তব সর্ব্বনামসংজ্ঞা ন সমানার্থক্য অক্তার্থক্তাভাবাং। যত্র চ,উভাদৌ সর্ব্বার্থতা নান্তি তত্র গণপাঠসামর্থ্যাদেব সর্ব্বনামত্বম্। অতঃ সমানার্থক্য দেবশব্দবং প্রয়োগঃ।

⁽২২) "তেহমী দীমে বিশ্বিতা:।" ইতি ভোজচরিতম।

⁽২৩) সপ্তমীর দ্বিচনে এবং বহুবচনেও পূর্বক্র প্রভৃতি পদগুলি তিন লিঙ্গেই হইবে। প্রথমা, পঞ্চমী ও সপ্তমীর দ্বিচনে এবং বহু-বচনেও তিন লিঙ্গেই 'পুরং' এবং 'পুরস্থাং' হইয়া থাকে। সকল লিঙ্গেই ,পুরস্থাং' ইত্যাদি অতিবিক্ত পদ্ধেলি হয়। Collection দ্বান্ত্র্যাণ্ডার

তুল্য রূপ হয়, কিন্তু পুরস্তাং ইত্যাদি প্রয়োগগুলি হয় না, থা এবং ত্রপ্রত্যয় হইয়া থাকে, অপর্থা, অপর্ত্ত ইত্যাদি।

প্রশ্বনে—দিক্, দেশ, কাল, শ্রেষ্ঠ, অন্ত এবং শক্রবাচক।
পুং—পরং, পরৌ, পরে, পরাং ইত্যাদি। তিন লিলেই অপরশব্বৎ (২৪)!

স্বশব্দ—জ্ঞাতি ও ধন ভিন্ন অর্থে।

পুং—স্বঃ, স্বৌ, স্বে, স্বাঃ। তিন লিছেই অপর শব্দের তুল্য। (২৫) জ্ঞাতি অর্থে দেবশব্দবং। ধনার্থে ফলশব্দবং।

অন্তরশক্—পুরভিন্ন বহির্দেশ ও উপসংব্যান (আচ্ছাদন) অর্থে (২৬)।

পুং—অন্তর: অন্তরৌ, অন্তরে, অন্তরা:। তিন লিদেই অপরশব্দের তুল্য। উক্তার্থভিন্ন স্থলে সর্বনাম বলিন্না গণ্য হয় না।

"পূর্বশ্বাদিগ্দেশকালবাচকাৎ সপ্তমাপঞ্চমীপ্রথমান্তাৎ অন্তাতারতি পুরন্তাদিতি। পূর্বাপরয়ো: পর উদারী চ। পরুৎ, পরারি।" দিগ্দেশ ও কাল অর্থে সংজ্ঞাভিন্নস্থলে ব্যবস্থা গম্যমান হইলে, পূর্বাদিশক সর্বনাম (সর্বাদি) বলিয়া ক্থিত হয়।

- (২৪) শ্রেষা ক্রমান ক্রমান ক্রমান ক্রমান করা নাম নাম করা নাম করা নাম করা নাম করা নাম নাম করা নাম নাম করা নাম
- (২৫) যদা তু আত্মীয়ত্বপুরস্কারেণ জ্ঞাতিধনার্থয়োর্বর্ততে তদাপি স্বশন্দোহয়ং সর্বনামসংজ্ঞাং লভত এব। (স্বমজ্ঞাতিধনাধ্যাদ্বামিত্যত্র আধ্যাগ্রহণাৎ ইতি কালাপাঃ) যথা—স্বশ্বৈ—জ্ঞাতয়ে, স্বশ্বৈ—ধনায়। জ্ঞাত্যর্থে তু স্বায় জ্ঞাতয়ে এবং ধনার্থে চ। ''স্বো জ্ঞাতাবাত্মনি স্বং ত্রিদাত্মীয়ে স্বোহয়্রিয়াং ধনে' ইত্যমরঃ।

বেহু বিশ্বন প্রধান, অন্ত, অসহায়, সংখ্যা ও কেবল অর্থে।
পুং—এক:, একৌ, একে ইত্যাদি। তিন লিঙ্গেই বিশ্বশন্ধবং, কিন্তু
সপ্তমীতে দাপ্রতায় বিশেষ। একশন্দের উত্তর সংখ্যার্থে একবচন নাত্র জ্বিয়া থাকে, প্রধানাদি অর্থে দ্বিচন এবং বছ্বচনও হয়। (২৭)

অভিক্রান্তপ্রভৃতি গৌণস্থলে অভিসর্বশ্বের ন্থায়, অভিবিশ্ব, অভিপূর্ব্ব, অভিন্ধ, অভান্ত, অভ্যেক ইত্যাদি শব্দেরও দার্ব্বনামিক (সর্বাদি সম্বন্ধী) কার্যা হয় না! নঞ্তৎপুরুষ ও কর্মধারয় সমাদে অসর্ব্ব ও পরমসর্বশ্বের ন্থায়, অবিশ্ব, পরমবিশ্ব, অন্থভন্ন, পরমোভয়, অনেক এবং পরমৈক ইত্যাদি দর্ব্বনামান্ত সকল শব্দেরই সার্ব্বনামিক কার্যা হইয়া থাকে, (সর্ব্ব দেখ)। তৃতীয়াসমাস্থোগ্য বাক্যে অথবা তৃতীয়াস্মান্ত সার্ব্বনামিক কার্যা হয় না। অতএব মাদেন পূর্ব্ব অথবা মানপূর্ব্ব ইত্যাদি শব্দের সকল বিভক্তিতেই রামশব্দের তুল্য রূপ হয়।

ত্যদ্প্রভৃতি অবশিষ্ট সর্বনাম (সর্বাদি) শব্দগুলির রূপ পরে লিখিত হইবে।

অল্পক, পুং।

অল্ল:, অল্লে, অল্লা:। পরে দেববং। নপুংসকলিঞ্

⁽২৬) "অন্তরম্পসংব্যানে বহিরপুরি।" ইতি শ্রীপতিস্তম্।

⁽২৭) ''একশন্ত কর্ত্থাদ্যভিধানাং প্রযুক্তকবচনক্ত বিশ্বশন্ধবং কার্যান্তেন প্রয়োগ উল্লেম্ন' ইতি রমানাখঃ। 'প্রধানাক্তসহায়েষ্ সংখ্যামা-কৈক ইয়াভে'' ইতি কাত্যায়নঃ। ''একে ম্খ্যাক্তকেবলাঃ।'' ইতি, ''ভিন্নার্থকা অক্ততর একস্থোহ্যেতরাবপি।'' ইতি চামরঃ।

ত্যদাদিগণে পাঠাৎ "কর্ষণ্যপমানে ত্যদাদৌ দৃশন্তক্দকৌ চ' ইত্যনেন টক্প্রভূতিপ্রত্যায় শুটিংলান ইপ্লান্মধাক্ষাদুটা ওল্লিদ্রান্তা, ইম্ফ্রান্সিনা CC-0. নি Public Domain. ইপ্লান্মধাক্ষাদুটা ওল্লিদ্রান্তা, ইম্ফ্রান্সিনা

ফলবং। স্ত্রীলিকে—অল্লা ইত্যাকার রূপ হয়, শ্রদ্ধাবং রূপ।

প্রথম এবং চরমশন্দ তিন লিম্বেই অল্লশন্দবং। (২৮)

তমুচ্প্রত্যমান্ত এবং অমুচ্প্রত্যমান্তশব্দের পুংলিঙ্গে ও ক্লীবলিঙ্গে অল্লশব্দের ন্থান এবং স্ত্রীলিঙ্গে নদীশব্দের ন্থাম রূপ হয়। যথা—(পুং) দ্বিতয়, দ্বিতয়ে, দ্বিতয়াঃ ইত্যাদি। (নপুং) দ্বিতয়ম্ইত্যাদি। (স্ত্রী) দ্বিতয় ইত্যাদি। (২১)

কতিপয় এবং অর্দ্ধশব্দেরও তিন লিঙ্গেই অল্পন্দের স্থায় রূপ হয়। দ্বিতীয়, তীয়প্রত্যয়ান্ত। (৩০)

(পুং)— বিতীয়:, বিতীয়ো, বিতীয়া:। বিতীয়ম্, বিতীয়ো, বিতীয়ান্। বিতীয়াম, বিতীয়াম, বিতীয়াম, বিতীয়াম, বিতীয়াম, বিতীয়াম, বিতীয়াম, বিতীয়ামাং, বিতীয়ামাং, বিতীয়ামাং, বিতীয়ামাং, বিতীয়ামান্, বিতীয়ামান্ন,

নপুংদকলিঙ্গে—চতুর্থী, পঞ্চমী ও সপ্তমীর একবচনে পুংলিঙ্গবং অন্ত বিভক্তি ও অন্তবচনে কলশন্তবং।

পশ্চিমশব্দাপি কেচিৎ সর্বাদে পঠন্তি, পশ্চিমন্তাং দিশী'তি প্রয়োগঃ, যুক্তিস্ত প্রে কার্যানিমিত্তগোর্যতিক্রমনির্দেশাদিতি। পশ্চিমস্যামিতি CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

⁽২০) প্রথমশব্দ সর্বানামত্বে প্রথমবৈদ্ব ইত্যাদর ইতি বরফ্চি:,
তদনার্থমিতি গোপীনাথ:। বিখেদেবা ইতি সম্দায়ক্স সংজ্ঞাত্বাৎ
অত্রাবয়বে দাকল্যবাচিত্বাৎ সর্বানামত্বমবিক্লদ্ধমিতি।

⁽২৯) সর্বনামগণে দয়শন্দমণি কেচিৎ পঠন্ত: "বুথা দ্বেষ্যমণি খেদিনী— ভ্তাম্" ইতি মাঘপ্রয়োগং দাধু মন্তন্তে। বহবল্ত এতদমন্তমানা: 'বুথো— ভয়েষা' মিতি পঠন্তি, কেচিচ্চ মাঘ্যালিতমিতি বদন্তি। তয়ট্প্রত্যয়াত্ত— দিতয়, ত্রিতয়, চতুইয় এবং পঞ্চয়। অয়ঢ় প্রত্যয়াত্ত—য়য় এবং তয়। .

ন্ত্রীলিকে— বিতীয়া, বিতীরে, বিতীয়া:। বিতীয়াম্, বিতীয়ে, বিতীয়া:। বিতীয়াম্, বিতীয়া । বিতীয়াম্, বিতীয়ালা । বিতীয়ালি:। বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:); বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালা:, বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্, বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্, বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্। বিতীয়ালাম্।

তৃতীয়, তীয়প্রত্যয়ান্ত। (৩০)

তিন লিঙ্গেই দ্বিতীয়শব্দের ভাষ রূপ হইবে।

প্রয়োগোহস্মংসংগৃহীতায়াং রাষবাচার্য্যক্বতগুদ্ধিদীপিকাটীকায়াং বছ্ষ্ স্থলেষ্ লক্ষিতোহস্মাভিঃ।

(৩০) কলাপমতে—"ত্র সপ্তম্যা" ইত্যত্র সর্বনায় ইত্যনেন সর্বনামাশ্রিতকার্যাস্য উপলক্ষণত্বাং ত্রপ্রতায়েন দিতীয়ত্রেতি প্রয়োগঃ। অত্যেষ্
বচনেষ্ রামশক্ষবিতি। কপ্রতায়ে দিতীয়কত্তীয়কশক্ষােরপ্যেবং, কিন্তু
কৈপ্রভাতিকং কার্যাং বিধায় দিতীয়িশ্রে ইত্যানিকং নিস্পাত্ত তত্র বহুলত্বাং
পশ্চাং কপ্রত্যয়ো যোজব্যঃ। নিমিত্তাভাব ইতি পরিভাষায়াশ্চানিত্যত্বম্হনীয়ম্। তহি প্র্রোদেং প্রাক্ বা তীয়ো ওবংশ্বিতি কথং ন কৃত্যম,
এবঞ্চ সতি দিতীয়াত্তীয়াভ্যাম্ বা ইত্যপ্যকরণীয়মিতি চেং প্র্রাদৌ
ভবংশ্বিত্যয়্রত্তৌ ওবংশ্বেব প্র্রাদেং সর্বনামত্বপ্রস্ক ইতি দোষং স্যাং,
আতা যথােপত্যাংসা যুক্তঃ। তহি বা তীয়ো ওবংশ্বিতি বচনমাচন্দাণেন
পরিশিষ্টকারেণাপি চ দিতীয়কশৈয়, তৃতীয়কশৈয়, কপ্রত্যয়ে চ ন শৈপ্রভ্রুভ্
তয়ং স্থারিত্যনেন দত্তাক্ষেপস্য নিরস্তত্বাং তলতে দিতীয়াতৃতীয়াভ্যাম্
বেতি বচনবৈফল্যমিতি দৌর্গাক্ষেপ্য রুল্লতে দিচাক্ষত্রমিত্যুণেক্ষিত্ম।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

১৬ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

পটুজাতীয়। (১)

পুংলিঙ্গে—দেবশন্ধবৎ, ক্লীবলিঙ্গে—ফলশন্ধবৎ, স্ত্ৰীলিঙ্গে—শ্ৰদ্ধাশন্ধবৎ।
ফলশন্দ, ক্লীবলিঙ্গ।

ফলং ফলে, ফলানি। ফলং, ফলে, ফলানি। পরে দেবশব্দবং।

'ফলমতিক্রান্তঃ পুরুষঃ' এইরূপ বাক্যে অতিফলশব্দ পুংলিন্দ হয়

দেবশব্দবং সাধ্য। 'ফলমতিক্রান্তা স্ত্রী' এইরূপ বাক্যে অতিফলশব্দ স্ত্রীলিন্দ হয়, শ্রদ্ধাশব্দবং সাধ্য।

অতিক্রান্ত ও বহুত্রীহিনমানে সকল শব্দই সকল লিন্দ হইয়া থাকে,
শব্দ ও লিন্দ অনুসারে রূপের পার্থক্য হয়।

वामन-क्रीविष्ण ।

আসনম্, আসনে, আসনানি। আসনম্, আসনে, আসনানি, আসানি (২)। আসনেন, আসা; আসনাভ্যাম্ আসভ্যাম্ ইত্যাদি।

क्षमग्र-क्रीविक्स ।

হৃদয়ম্, হৃদয়ে, হৃদয়ানি। হৃদয়ম্, হৃদয়ে, হৃদয়ানি, [হৃদি]। হৃদয়েন হৃদা; হৃদয়াভ্যাম্, হৃদ্যাম্; হৃদয়ৈ: হৃদ্ভি: ইত্যাদি। শ্লাদি সকল বিভক্তিতেই হৃদয়শন্তানে হৃদ্ আনেশ হয়, স্ত্তরাং ঐ সকল বিভক্তিতে তুইটী করিয়া রূপ হইয়া থাকে। মাস দেখ।

- (১) পটুজাতীয়শন্দদ্য তীয়াদ্বা বক্তবামিত্যস্যাৰ্থবদ্গ্ৰহণ ইত্যাদি-স্থায়েন প্ৰাপ্তেরভাবাৎ দেবশন্দবৎ প্ৰয়োগঃ।
- (২) "পাদদন্তযুষনিশা-পৃতনা-মাদা-সনসাহ্নাসিকো-দক্ষদয়া-স্ক্-যক্তংশক্তংশীর্ধদোষঃ পদদ্য্বলিশ পৃন্মাদা-সন্ স্ন্-স্কন্ হদ-সন্ যকন্-শকন্ শীর্ষন্ দোষণঃ শদাদিপৌ" ইতি ম্য়বোধস্ত্রেণ আসনদা স্থানে বিভাষয়া আসন্ জ্লেয়ঃ। শদাদিগ্রহণেন তৎপ্র্ববিভক্তেনিরাসাৎ ক্লীবে উকারসা পিত্তেহপি ভ্রু ন সাাৎ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

উপকুন্ত, ক্লীং।

('কুন্তস্ত সমীপং' এইরপ অর্থে অব্যয়ীভাবসমাসে নিপ্পন্ন)।

উপকুন্তম্, উপকুন্তম্ ইত্যাদি। তৃতীয়া—উপকুল্ভেন, উপকুস্তম্; উপকুস্তাভ্যাম্, উপকুস্তম্; উপকুস্তঃ, উপকুস্তম্। পঞ্চমী— উপকুস্তাৎ, উপকুস্তাভ্যাম্, উপকুস্তেভ্য:। সপ্তমী—উপকুস্তে, উপকুস্তম্; উপকুন্তয়োঃ, উপকুন্তম্। উপকুন্তেম্, উপকুন্তম্। হে উপকুন্তম্।

তৃতীয়া, পঞ্মী ও সপ্তমী ভিন্ন সকল বিভক্তিতেই 'উপকুন্তন্' ইত্যা-কার রূপ হয়। অব্যয়ীভাবসমাদে নিপান্ন সকল অকারান্ত শব্দেরই এক-রূপ রূপ হইয়া থাকে। অবায়ীভাবসমাদে নিপ্লন্ন শব্দগুলি ক্লাবলিক্সপে ব্যবহৃত হয়, এইজন্ত অব্যয়ীভাবসমাসে দীর্ঘম্বরান্ত কোন শব্দ হয় না।

আকারান্তশক উত্তরপূর্ব্বা, স্ত্রী।

("উত্তরস্থা" পূর্বেস্থা" দিশোর্যদন্তরালং সা উত্তরপূর্বা দিক্" এইরপ দিগ্বাচক বহুবাহিসমাদে নিপার)।

উত্তরপূর্বা, উত্তরপূর্বে, উত্তরপূর্বা:। উত্তরপূর্বাম্, উত্তরপূর্বে, উত্তরপূর্কা:। উত্তরপূর্কিয়া, উত্তরপূর্কাভ্যাম্, উত্তরপূর্কাভি:। উত্তর-প্রবিষ্ঠ, উত্তরপ্রবাহিঃ; উত্তরপ্রবাভ্যাম, উত্তরপ্রবাভাঃ। উত্তরপ্রবিষ্ঠাঃ উত্তরপ্রায়াঃ ; উত্তরপ্রাভ্যাম্, উত্তরপ্রাভ্যঃ। উত্তরপ্রভাঃ, উত্তর-প্রবায়া: ; উত্তরপ্রবেয়া:, উত্তরপ্রবাসাম্, উত্তরপ্রবাগাম্। উত্তরপূর্বসাম্ উভরপ্কায়াম্; উভরপ্কয়ো:, উভরপ্কায়। হে উভরপ্কে।

প্রভৃতি শন্দেরও উত্তরপূর্বাশন্দের তুল্য রূপ হয়, কিন্তু উত্তরপশ্চিমা প্রভৃতি পশ্চিমা শবান্ত শবের শ্রদাশবের তুলাই রূপ হইয়া থাকে। যাহার। সর্কনামগণে পশ্চিমশক পাঠ করেন, তাঁহাদের মতে উত্তরপূর্কা-শব্দের ত্লাই রূপ হয়। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ব

অম্বা স্ত্ৰী (অম্বার্থ—মাতৃবাচক)।

কেবল সম্বোধনে একবচনে হে অম্ব ইত্যাকার রূপ হইয়া থাকে, অন্তসকল বিভক্তিতে শ্রদ্ধাশব্দবং।

অকা, অলা প্রভৃতি দিস্বরবিশিষ্ট অন্ত অম্বার্থশব্দেরও অম্বাশব্দের তুল্য রূপ হইয়া থাকে।

জগদম্বা, অঘিকা, অত্যমা এবং অম্বাড়া প্রভৃতিশব্দের শ্রজাশব্দবং রূপ জ্ঞাতব্য। জগদম্বা শব্দের সম্বোধনে ''জগদম্ব' ইত্যাকার হইবে।

নালিকা—স্ত্রী, নাসাশব্দবৎ ঘুট্ ভিন্ন বিভক্তি নিমিত্তে পক্ষে নদ্
আদেশ হয়।

পৃতনা, স্ত্রী। সেনার্থে।

পৃতনা, পৃতনে, পৃতনা:। পৃতনাম, পৃতনে, পৃতঃ, পৃতনা:। পৃতা, পৃতনয়া; পৃদ্ভ্যাম, পৃতনাভ্যাম্ ইত্যাদি, পরে—শ্রদ্ধাবৎ। ঘুট্ভির বিভক্তি পরেই বিকল্পে—পৃৎ আদেশ হয়।

অতিক্রান্ত প্রভৃতি স্থলেও মাদ, নিশ্, রং, দং, য্যন্, দোষন্ এবং পংপ্রভৃতি আদেশগুলি বিকল্পে হইয়া থাকে।

निमा, खीलिङ। (७)

নিশা, নিশে, নিশা: । নিশাম, নিশে, নিশা:, নিশ: । নিশয়া, নিশা; নিশাভাম, নিজ্ভাম্ (নিজ্ভাম্), ; নিশাভি:, নিজ্ভি:, (নিজ্ভি:)। নিশায়ৈ নিশে; নিশাভাম্ নিজ্ভাম্, (নিজ্ভাম্); নিশাভা: নিজ্ভা: (নিজ্ভা:)। নিশায়া:, নিশ:, নিশাভাাম্, নিজ্ভা:ম্, (নিজ্ভা:)। নিশায়া: নিশ:, নিশয়া:, নিশায়া: নিশ:, নিশয়া:, নিশায়া:, নিশায়া: নিশ:, নিশয়া:, নিশায়া, নিশায়া, নিশায়া, নিশায়া, নিশায়া, নিশায়া, নিশায়া, নিশায়া, নিশায়ায়, নিজ্ভা, (নিজ্জ্, নিচ্তু, নিচ্তু, নিচ্তু, নিচ্তু, নিচ্তু,), (নিশ্ভ্তু)।

^{(%)-0.} क्षेत्रपुष्ठ निमामक्सान्त्रात्मित्र वास्त्राहरू । इर्ग-

नामा, खीलिन ।

নাসা, নাসে, নাসাঃ। নাসাম, নাসে, নাসাঃ, নসঃ। শ্রন্ধাশস্বং, কিন্তু দিতীয়ার বছবচন হইতে বিকল্পে নস্ আদেশ হয়। (৪)

জরা, স্ত্রীলিঙ্গ।

खता, खत्त, खत्राभी (खत्रमी) खताः, खतमः । खताम्, खतम् ; खत्त, खत्राभी, (खत्रमी) खताः, खतमः । खत्रा, खत्रमा, ; खताच्याम्, खताच्याम्, खत्रादेव, खत्रामः ; खताच्याम्, खताच्यः । खत्रात्राः, खत्रमः ; खताच्याम्, खताच्यः । खतावाः, खत्रमः ; खत्रावाः, खत्रमाः ; खताणाम्, खत्रमाम् । खतावाम्, खतिम ; खत्रायाः, खत्रामाः ; खताळ् । ८२ खत्त ।

বলেন, অঘুট্ প্রত্যয়-স্থলে 'নিশ্' ইত্যাকার স্বতন্ত্র শব্দ সীকার্য্য, ইহার মতে ব্যঞ্জনাদি প্রত্যয় পরে শস্থানে ড হইবে। আদেশপক্ষে—ভ্যাম, ভিদ্, ভাদ্ পরে শস্থানে জ এবং স্থপ, পরে শস্থানে চ হইবে। অতএব ফুর্গমতে—নিজ্ভ্যাম্য, নিজ্ভিঃ, নিজ্ভ্যঃ ইত্যাদি এবং স্থপ্ পরে নিট্স্থ ইত্যাকার পদ হইবে। 'নিট্স্থ' স্থলে প্রীপতির স্ক্রোম্থ সারে অনেকগুলি পদ হয় য়থা—নিট্স্থ, নিঠ্স্থ, নিট্ৎস্থ, নিট্থস্থ। "প্রথমশ্য শম্পর্য বিভিত্তিয়ং"। "টাচ্চ সন্তাদির্বা।" তুই একথানি শব্দরপদস্বদ্ধীয় পুস্তকে সকল বিভক্তিপরেই মাদ প্রভৃতি প্রদর্শিত হইয়াছে।

ইই ঘোষবতি শশু তৃতীয়োহ্ঘোষে চ প্রথম ইতি ব্যাখ্যাতমের।
ব্যঞ্জনে শশু চবর্গপরিণামঃ পারায়ণতন্ত্রপ্রদীপাদাবুক্তঃ। ধাত্ত্বয়বস্থৈত শশু
টবর্গপরিণামাৎ। যন্ত নিশ্—ইতি প্রকৃত্যন্তরং ত্রিকাণ্ডশেষাদৌ পঠাতে
তশু ভব্যের নিড্ভ্যামিত্যাদি। শ্রীপতিঃ।

স্পদ্মব্যাকরণে নিশ্ভ ইত্যেব প্রযুক্তম্। নিচ্ভ ইত্যত্র "চঞাভ্যাং সভা শঃ" ইতি শ্রীপতিস্তত্তেণ স্থপঃ সন্তা তালব্যত্তম্।

(8) CE मामार क्षेत्रम्थामा विश्वक्रियां ध्वाम्राविष्यक्षियां ध्वाम्राविष्यक्षियां प्रमान्याय

২° Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'জরামতিক্রান্ত: পুরুষ:' অথবা 'জরামতিক্রান্তং কুলম্' এইরূপ বাক্যে অতিজর ইত্যাকার শব্দ পুংলিঙ্গে হয়। রূপ যথা—

অতিজরং, অতিজরে, অতিজরদৌ; অতিজরাং, অতিজরদা।
অতিজরম্, অতিজরসম্; অতিজরে, অতিজরদৌ; অতিজরান্, অতিজরসা:। অতিজরেণ, অতিজরসা; [অতিজরসিনা] অতিজরাভ্যাম্,
অতিজরেং, অতিজরদৈং। অতিজরায়, অতিজরদে; অতিজরাভ্যাম্,
অতিজরেভাং অতিজরাং, অতিজরসা; [অতিজরসাং] অতিজরাভ্যাম্
অতিজরেভাং অতিজরস্থা, অতিজরসাং; অতিজরদাং অতিজরদাং;
অতিজরাণাম্ অতিজরসাম্। অতিজরে, অতিজরিদ; অতিজর্মোঃ;
অতিজরদাং অতিজরেষ্। হে অতিজর ইত্যাদি।

ক্লাবলিদ্বস্থলে যথা—অতিজৱম্, [অতিজরসম্] অতিজরে, অতিজরদা ; অতিজরাণি, অতিজরাংসি। এবং দ্বিতীয়া। পরে পুংবং। (৫)

'জরামতিক্রান্তা স্ত্রী' এইরূপ বাক্যে অতিজ্ঞরাশন্ধ, 'শোভনা চানৌ জরা চেতি' এইরূপ অর্থে—স্থজরাশন্ধ এবং 'ন জরা অজরা' এইরূপ নঞ্ তৎপুরুষ সমাসে নিপান্ন অজরা শন্ধও আকারান্তই হইয়া থাকে, অতএব ইহাদেরও জরাশন্দের ভাষ রূপ হইবে।

'জরায়াঃ সমীপম্' এইরূপ অব্যয়ীভাবসমাদে 'উপজ্বস' ইত্যাকার অকারান্ত শব্দ হয়, উপকুন্তশব্দের ন্থায় রূপ হইয়া থাকে।

⁽৫) মুগ্ধবোধমতে ক্লীবলিকস্ত অভিজৱ অজর প্রভৃতি শক্ষ্য "জরা-তোহম্বা" ইতি ১৬৬ হত্তেন স্তমোর্মস্ত বিভাষয়া অমি কতে অভি-জরসম্, অজরসম্ ইত্যাদিকং বৈকল্পিকং রূপং সম্পত্তেত। পক্ষে ধ্যম-শসাদেরিতি জ্ঞাপকাদমাদেশস্থাপ্যাদিলোপে অজরমিতি সৌ রূপম্। অমি তৃ আদৌ জরসাদেশে অমো লুগাপ্তি: স্থাদিতি বাশক্ষ্য ব্যবস্থ্যা CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Sarnal Foundation Chennai and eGangotri

P]

: 1

5-

य्,

म्,

14

;

5-

2)

नो

B

14

ার

11-

<u>5</u>-

ম-

ų I

म्

<u>- खन्ना, खोलिङ। (७)</u>

শ্রনা, শ্রেক, শ্রনাঃ। শ্রনাম্, শ্রেক, শ্রনাঃ। শ্রনারা, শ্রনাভ্যাম্, শ্রনাভিঃ। শ্রনারি, শ্রনাভ্যাম্, শ্রনাভ্যঃ। শ্রনারাঃ, শ্রনাভ্যাম্, শ্রনাভ্যঃ। শ্রনারাঃ, শ্রন্বাঃ, শ্রনানাম্। শ্রনারাম্, শ্রন্বায়ে, শ্রনার্য। হে শ্রেন।

মালা লতা প্রভৃতি ন্ত্রীলিঙ্গে আপ্রত্যয়াস্ত (আবন্ত) সাধারণ শব্দেরই শ্রদ্ধা শব্দের তুল্য রূপ হয়। 'শ্রদ্ধামতিক্রান্তঃ পুরুষঃ' ইত্যাদি রূপ অতিক্রান্তস্থলে এবং 'শোভনা শ্রদ্ধা যক্ত' ইত্যাদি রূপ বছরীহিসমাসম্থলে শ্রদ্ধাশন্দ অপ্রধান হওয়ায়, আকার হস্ব হয় (৭), অতিশ্রদ্ধ এবং স্প্রদ্ধাইত্যাকার পুংলিদ্ধ শব্দ হয়, ইহাদের দেবশব্দের তায় রূপ হইয়া থাকে। শ্রদ্ধামতিক্রান্তং কুলম্' এবং শোভনা শ্রদ্ধা যক্ত কুলক্ত তং' এইরূপ বাক্যে অতিশ্রদ্ধ ও স্থাদ্ধ ইত্যাকার নপুংসকলিদ্ধ শব্দ হয়, এই অবস্থায় ফলশব্দের তায় ইহাদের রূপ হইয়া থাকে। নপুংসকলিদ্ধে সকল শব্দেরই অন্তাম্বর হস্ব হয়।

'শ্রদামতিক্রান্তা' অথবা শোভনা শ্রদা যশ্তাং' এইরূপ বাক্যে নিপ্সর অতিশ্রদ্ধা এবং স্থশ্রদাশব্দের এবং 'ন শ্রদ্ধা অশ্রদ্ধা' এইরূপ নঞ্জং-পুরুষনিপ্সর অশ্রদ্ধা শব্দেরও শ্রদাশব্দের তুল্য রূপ হয়। (৮)

অন্তরন্ধ আদ্ বলবতোহপি জরসাদেশাৎ আদৌ অমো মকারে তত্ত জমা-দেশে অজরম্ অজরসমিতি, অক্তথা অমো নিতাত্বেহপীষ্টসিছে। বাগ্রহণত বৈষ্ণ্যাপতে:।

(৬) শ্রংপূর্বেশ্য ধাঞ: "যাত্বরভিনাদিভাস্বঙ্" ইতি অঙ্ প্রত্যায়ত্ত ব্রিয়ামাপ্রত্যয়ে শ্রন্ধেতি রূপম্। শ্রীপতিমতে—শ্রংপ্রায়ো ধাঞীত্যনেন শ্রংশবক্ত উপদর্গত্ম।

(१) ''গোন্ত্রী প্রত্যয়বেগাপদর্জনস্থান্তান্ত হুম্বং'' ইতি শ্রীপতিস্কুম্।

(৮) ন শ্রদ্ধা অশ্রদ্ধা ইতাত্রাপি শ্রদ্ধান্তর "তৎপুরুষস্থোত্তরপদবৎ ইতি শ্রপুতিসক্ষেত্রীত শ্রদ্ধানত্ত্ব শ্রদ্ধান্তর শ্রদ্ধান্তর শ্রদ্ধানত শ্রদ্ধান্তর শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান্ত শ্রদ্ধান্তর শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান্ত শ্রদ্ধান শ্রদ্ধান

पुस्तकालय

কীলালপা, পুংলিঙ্গে ও স্ত্রীলিঙ্গে। (৯)

कोनानभाः, कोनानभा, कोनानभाः। कोनानभाम्, कोनानभी, कोनानभी, कोनानभाः। कोनानभाः। कोनानभाः। कोनानभाः। कोनानभाः, कोनानभाःम्, कोनानभाःम्, कोनानभाःम्, कोनानभाःम्, कोनानभाःम्, कोनानभाःम्, कोनानभाः। कोनानभः, कोनानभाःम्। कोनानभि, कोनानभाः, कोनानभाःम्। द्वानानभाः

নপুংসকলিঙ্গে আকার ব্রম্ম হওয়ায়, কীলালপ ইত্যাকার হয়, অতএব ফলশন্দের তুল্য রূপ হইয়া থাকে, (কীলালপম্, কীলালপে, কীলালপানি ইত্যাদি)। (১০)

ক্ষীরপা, বিশ্বপা এবং গোপা প্রভৃতি শব্দেরও কীলালপাশব্দের তুল্য রূপ হয়।

ভদাপি অভিধয়া লক্ষণয়া বা প্রতিপাতং যদোপসজ্জনং তদৈব হ্রস্ব ইতি হ্রস্বস্থাভাবে শ্রদ্ধাশন্ধবদেব রূপমিতি।

ষদা চ শ্রদ্ধেবাচরতীতি বাক্যে আযাস্তাৎ (কাঙত্তাৎ) কিপ্ তশু চ লোপ: তদা স্ত্র্যাপ্যত্বোপচারাৎ শ্রদ্ধাশন্দবদিতি। তথাচ অভেদেপিচারাৎ আযি (কাঙ্) লোপাদ্বা শ্রদ্ধা পুরুষ ইতি টীকাকার:।

(२) কীলালপাদীনামন্ত্র্যাধ্য বাং প্রদানংজ্ঞা নান্তি ঈদ্ংস্থ্যাধ্যৌ নদীত্যতো নিত্যন্ত্রীবিষয়ভাধ্যাগ্রহণভাম্বর্জনাদিতি কালাপা:।

কীলাল-পা + বিচ্ = কীলালপা:। "আতো মন্ কনিব্ বনিব্ বিচ:।" যে সকল আকারান্ত শব্দ, আকারান্ত ধাতুর উত্তর কিপ্ বা বিচ্ প্রত্যয়ঘারা নিষ্পন্ন হয়, সে সকল শব্দ গ্রীলিঙ্গ হইলেও পুংলিঞ্চের তুলা রূপ গ্রহণ করে।

(১০) নপুংসকলিঙ্গে—''স্বরো হ্রন্থো নপুংসকে'' ইতি হ্রন্থতে অন্ত-রঙ্গতাদঘূট্ স্বরে লোপো ন বর্ত্ততে ইতি জ্ঞাতবামু।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

হাহা শব্দ।

(গন্ধবাচক) নিত্য পুংলিদ। (১১) হাহা:, হাহেী, হাহা:। কলাপমতে কীলালপাবং।*

h.

٩.

11-

বিট্ প্রত্যয়ান্ত।

অব্জা পৃংলিদে ও দ্রীলিদে। অব্জা: অব্জো, অব্জা:। কলাপ-মতে—কালালপাবং। ক্লীবে—অব্জং, অব্জে, অব্জানি। ফলবং। কলাপমতে অগ্রেগা, উদধিক্রা, বিষধা এবং গোষাপ্রভৃতি শব্দেরও উল্লিখিত বিট্প্রত্যয়ান্ত অব্জাশব্দের তুল্য রূপ হয়।

স্মৃতা, পুং।

(শুত: অঃ বিঞ্র্বেন এইরূপ সমাসে নিষ্পন্ন)। শুতা:, শুতো, শুতা:। কীলালপাবৎ। ক্লীবে—ফলবৎ। 'শুত: আঃ বিষ্ণ্র্যা' এইরূপ সমাসে শুতা শব্দের লতাশব্দের তুলা রূপ হয়।

(১১) হাহাশব্দা গছর্জবাচকত্বাৎ পুংশ্রেষ বর্ত্তে। হা ইতি শব্দং জহাতীতি হা—হা + বিচ্ — হাহা:। বিচ্প্রত্যয়েন বৃৎপাদিত হাহা-শব্দু স্থান বিচ্ লালাপান্ত হাহা-শব্দু স্থান বিচ্ লালাপান্ত হাহাশব্দু স্থান আকারলোপাে হত্ত্ব ইত্যুভয়পক্ষেকীলালপাবং। নয়, কথমবৃং-প্রপক্ষে আকারলােপ: ? সত্যুং ক্ত্বো যবিতি নির্দ্দেশং আধাতােরিতাত্র যােগবিভাগাং শ্রুদ্ধাভিরস্থাবাতারাকার লাপ ইতি হর্গমতম্। প্রীপতিস্ত ধাতুরহণমশ্রদ্ধাপলক্ষণমিত্যাচ্টে। অপোভ্যম্মতে গাঃ প্রেত্যাদি কথং ন আকারলােপঃ ? সত্যুং স্থাদিনিরপেক্ষিত হা শ্রুদ্ধাবার বর্জনাল্যস্থাপি তাদৃশ এবাকারলােপা গৃহত ইতি। এবং শ্রুদ্ধাবার ইতি বিগ্রহে শ্বুতাশব্দু স্থাপি প্রয়ােগা উর্লেতব্যা ইতি কালাপাঃ।

অব্যৎপন্নপক্ষে দিতীয়ার বহুবচনে হাহান্, অত অঘুট্যরেও
আকার লোপ হয় না, খরসদ্ধি মাত্র হয় (কৌম্দী)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ইকারান্ত

वार्य, श्रुशनिष्ठ ।

অগ্নি:, অগ্নী, অগ্নয়:। অগ্নিম্, অগ্নীন্। অগ্নিনা, অগ্নিভ্যাম্, অগ্নিভি:। অগ্নয়ে, অগ্নিভ্যাম্, অগ্নিভ্য:। অগ্নে:, অগ্নিভ্যাম্, অগ্নিভ্য:। অগ্নে:, অগ্নো:, অগ্নীনাম্। অগ্নে, অগ্নো:, অগ্নিষ্। হে অগ্নে।

"অগ্নিমতিক্রান্তঃ পুরুষঃ" ইত্যর্থে অত্যগ্নিশন্ত অগ্নিশন্বৎ।

"অগ্নিমতিক্রান্তং কুঁলম্" এই অর্থে অত্যগ্নিশন্ধ বারিশন্ধিৎ। বিশেষ, তৃতীয়াদিবিভক্তিম্বর পরে পুংবদ্ধাব হওয়ায় তৃইটী করিয়া রূপ হইবে, মথা—অত্যগ্নিনা, অত্যগ্নিনা। অত্যগ্রহা, অত্যগ্নিনা। অত্যগ্নিনা।

'অগ্নিমতিক্রাস্তা স্ত্রী' ইত্যর্থে 'অত্যগ্নি' এবং 'অত্যগ্নী' এই তুইপ্রকার শব্দ নিষ্পন্ন হয়। অত্যগ্নিশব্দের দ্বিতীয়ার বহুবচন ও তৃতীয়ার একবচন ভিন্ন বিভক্তিতে অগ্নিশব্দের তুল্য এবং অত্যগ্নীশব্দের নদীশব্দের তুল্য দ্বপ হইয়া থাকে।

বিজ্বিধৌ বিজ্গ্রহণমক্তবা ভা ইতি ক্বতে সিধ্যতি, 'বিজ্বনোরা' ইতাত্র যদ্বিজ্গ্রহণং তদ্বোধয়তি বিচি কৃতস্থাকারক্ত লোণো ন ভবতি ইতি কবিরাজমতং তত্ত্বিভি। সিদ্ধান্তকৌম্ভন্নগতায়াং ক্রণমালায়ামণি হাহাদীনাং আকারলোপো ন দৃশ্যতে।

ম্ধবোধ প্রভৃতি ব্যাকরণে অধাতৃ হাহাপ্রভৃতিশব্দের আকার লোপ হয় না। 'অগ্নেং স্ত্রী' ইত্যর্থে 'অগ্নায়ী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীশন্দের তুল্য ইহার রূপ হইবে। (১২)

वृिक, खीलिन ।

वृक्षिः वृक्षी, वृक्षयः । वृक्षिम्, वृक्षी, वृक्षीः । वृक्षा, वृक्षिणाम्, वृक्षिणः । वृक्षाः , वृक्षिणाम्, वृक्षिणाम्, वृक्षिणाम्, वृक्षिणाम्, वृक्षिणाम्, वृक्षिणाम्, वृक्षिणाम्, वृक्षिणाः । वृक्षाः , वृक्षाः ; वृक्षाः , वृक्षाः । वृक्षो, वृक्षाम् ; वृक्षाः , वृक्षिष् । दह वृक्ष । . . .

অতিবৃদ্ধি, পুং। (বৃদ্ধিমতিকান্ত: ইত্যাদি বাক্যে)

অতিবৃদ্ধিং, অতিবৃদ্ধী, অতিবৃদ্ধয়ং। অতিবৃদ্ধিম, অতিবৃদ্ধী, অতি-বৃদ্ধীন্। অতিবৃদ্ধিনা (১৩) অতিবৃদ্ধিভ্যাম্, অতিবৃদ্ধিভিং। অতিবৃদ্ধয়ে (১৪) অতিবৃদ্ধিভ্যাম্, অতিবৃদ্ধিভ্যং। অতিবৃদ্ধেং, অতিবৃদ্ধিভ্যাম্,

⁽১২) 'অগ্নিসতিকান্তা স্ত্রা' ইতার্থে অত্যগ্নিশক্ত "ইতশ্চ জিবজিতাদ্বা" ইতাত্র জিসাহচর্য্যেণ নিত্যন্ত্রীলিঙ্গাদীপ্রত্যম্ববিষম্বাদীপ্রত্যমাভাবেন শদ্টাবচনাতিরিক্তে বচনে অগ্নিশকবদিতি কেচিং। তন্ন, পন্থিনমন্থীতি স্ত্রে শোভন: পন্থা যন্ত্রা ইতি বাক্যে স্থপথী স্ত্রী ইত্যক্র প্রত্যমন্ত্র টীকাক্বতা দর্শিতবাং। তন্মাদ্ বিকল্পেন ঈপ্রত্যমন্ত্র বিষম্বাং অত্যগ্নী ইতি রূপন্বয়েন ভাব্যমিতি বোধ্যম্। অগ্নেঃ স্ত্রী ইত্যর্থে প্তক্রত্ব্রাকপ্যগ্রিকুসিতকুনীদানামে চেতি ঈপ্রতায়ে অন্তর্গ্রেকার চ অগ্নামীশক্ষো নদীশক্ষবদিতি। যদি অগ্নিরিবাচরতীতি আয়িঃ (কাঙ্কুং) ততঃ কিপ্ ক্রিয়তে, তদা তল্লোপে অগ্নিশক্ষায়েঃ প্রত্যমলোপলক্ষণবাং প্রনঃ কতদীর্যন্ত অনেকাক্ষরয়োরিত্যাদিনা ধাত্বয়বর্ষবংযোগপরত্বাদীকারত্ব ষ্বাভাবে ঈদ্তোরিত্যাদিনা স্বরে ইয়াদেশেন ভাব্যমিতি।

⁽३७) C को भ्रः मञ्चारव ह्वा वांचा च्रिष्ठ स्मिनिक त्र्वा स्मिनिक वांचा च्रा वांच

২৬ Digitized by Arya Sama দির্ঘারিক দিনী hai and eGangotri

অতিবৃদ্ধিভা:। অতিবৃদ্ধে, অতিবৃদ্ধাঃ, অতিবৃদ্ধীনাম্। অতিবৃদ্ধে, অতিবৃদ্ধাঃ, অতিবৃদ্ধিয়। হে অতিবৃদ্ধে।

অতিবুদ্ধি, ক্লী।

(বুদ্ধিমতিক্রান্তং কুলমিত্যাদি বাক্যে)।

অতিবৃদ্ধি, অতিবৃদ্ধিনী, অতিবৃদ্ধীনি। এবং দ্বিতীয়া। তৃতীয়াদি—
অতিবৃদ্ধিনা, অতিবৃদ্ধিনা; (১৫) অতিবৃদ্ধিভ্যাম্, অতিবৃদ্ধিভঃ। অতিবৃদ্ধিল, অতিবৃদ্ধিলায়, অতিবৃদ্ধিভ্যাম্, অতিবৃদ্ধিলঃ। অতিবৃদ্ধিলঃ; অতিবৃদ্ধিলায়, অতিবৃদ্ধিলাঃ; অতিবৃদ্ধিলাঃ তিতৃদ্ধিলাঃ অতিবৃদ্ধিলাঃ; অতিবৃদ্ধিলাঃ তিতৃদ্ধিলাঃ তিতৃদ্ধিলাঃ অতিবৃদ্ধিলাঃ অতিবৃ

অতিবৃদ্ধি, স্ত্রী। 'বৃদ্ধিমতিকান্তা স্ত্রী' ইত্যাদি বাক্যে। অতিবৃদ্ধি: ইত্যাদি বৃদ্ধিশন্ধবং।

অন্ত্রিয়ামিতি প্রতিধেধাভাবঃ, অত্রাপ্যতিবৃদ্ধীঃ অতিবৃদ্ধা। ইতি কেষাঞ্চিন্নতম্।

⁽১৪) অবয়বশ্ব স্ত্রাধ্যতে সম্দারশ্ব স্ত্রাধ্যত্বোপচারাৎ নদীবদ্ভাবং।
অত্র সমাসেই প্রীবচন এব আম্ভবদাশ্রমা বিভাষা ইত্যেকং মতম্, সমাসে
স্ত্রীবচন এব আম্ভবদাশ্রমা বিভাষা ইতি ভাষ্যমতম্, উভয়মেব হুর্গঃ
ফাকরোতি স্ত্র্যাধ্যাবিষুবাবিত্যত্র। তথাচ—অতিশ্রীণাম্, অতিশ্রিয়াম্;
অতিজ্রণাম্, অতিজ্রবাং, স্ত্রীণাং পুরুষাণাং বা এবম্ত্তরত্রাপীতি টীকায়া
মৃক্তবাং। কুলচন্দ্রস্ত মতান্তরমেতং ইহ তু সমাসে স্ত্রীবচন এব আম্ভবদাশ্রমা বিভাষা ইতি মন্ততে। শ্রীপতিস্ত ভাষ্যমতং স্বীকৃত্য 'ন সমাসে
পুংসি হ্রস্বেষ্ব্নদী' ইতি স্ত্রমাচেই, অত্মাতে অতিবৃদ্ধয়ে পুরুষায়
ইত্যেক্ষের পদম।

⁽১৫) কলাপমতে টাদৌ স্বরে ভাষিতপুংস্কমিত্যাদিনা পুংবদ্ভাব:। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'বৃদ্ধিমিচ্ছতি অথবা বৃদ্ধিরিবাচরতি' এই বাক্যে বিন্ (কাচ্) কিংবা আধি (কাঙ্) প্রত্যয়ের পর কিবন্ত—

वृक्ती, श्रः वशदा खी।

বৃদ্ধীঃ, বৃদ্ধিয়ে, বৃদ্ধিয়ঃ ইত্যাদি স্থধীশন্তবং। বিশেষ—স্ত্রীলিঙ্গে তৃত্থীর একবচনে—বৃদ্ধিয়ঃ বৃদ্ধিয়াঃ, বৃদ্ধীরা একবচনে—বৃদ্ধিয়ঃ বৃদ্ধিয়াঃ, বৃদ্ধীরা একবচনে—বৃদ্ধিয়ায়, বৃদ্ধীনাম্। সপ্তমীর একবচনে—বৃদ্ধিয়, বৃদ্ধিয়াম্। (পুংলিঙ্গে আম্ ও ওবত্তবচনে কেবল ত্র্গমতেই নদীবভাবনিবন্ধন তৃইটী করিয়া রূপ হইবে। (১২ টীকা ত্রেইব্য)।

5-

<u>-</u>

<u>-</u>

₹-

ন্ত:

18 I

र्गः

٦;

য়া-

14-

17

वार्

পুষ্টি, তৃষ্টি, মতি, গতি, স্ততি, ক্বতি, জাতি, ব্বতি প্রভৃতি জিপ্রত্যয়ান্ত সকল শব্দেরই বৃদ্ধিশব্দের তুল্য রূপ হইবে। (১৬) কিন্তু বিন্ (ক্যচ্) বা আঘি (ক্যঙ্) প্রত্যায়ে নিষ্পন্ন পুষ্টী, মতী প্রভৃতি দীর্ঘ উকারান্ত শব্দের সংযোগ ও অসংযোগপূর্বক ভেনে ইকারস্থানে ইষ্ এবং যন্ত হইয়া থাকে।

হানি, গ্লানি, জ্যানি, এবং অজীবনিশব্বেরও বৃদ্ধিশদ্বের অত্রূপ রূপ হইবে। (ক)

স্থান্ধি, পুং।

("শোভনো গন্ধো যশু পুংদঃ" ইত্যাদি বাক্যে)। (১৭)

(১৬) "শ্রুদ্ধে পুষ্টি স্বধে ধ্রুবে" ইতি দেবীমাহাত্মে পুষ্টীতি তিক্ কতৌ সংজ্ঞায়ামাশিষীতি তিক্প্রত্যয়ান্তাং বিকল্পেন ঈ (ঈপ্) প্রত্যয়ে কতে সাধু। বৃদ্ধিপ্রভৃতীনাং জিপ্রত্যয়ান্তানাম্ ঈ (ঈপ্)প্রত্যয়ো নান্তি।

(ক) হানিয়ানিপ্রভৃতীনামপি ''ইত*চ জিবজিতাদ্বা" ইত্যত্র জিপদেন জ্যর্থস্থোপলক্ষণত্বাৎ ঈপ্রতায়াভাব:।

(১৭) সুৎস্বরভিপ্তিভা। গন্ধস্রেত্যাদিনা ক্লীবে পুংসি ব্রিয়াঞ্ ইদাদেশ: জেরনাদেশস্থ বজ্জনাদনাদিষ্টস্থেতো গ্রহণেন ব্রিয়ামীপ্রত্যয়া-ভাব:।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

স্থানি: স্থানী, স্থান্ধয়: ইত্যাদি অগ্নিশন্বৰ ।

স্থান্ধি, স্ত্রী। ("শোভনো গন্ধো বস্তাঃ" ইত্যাদি বাক্যে)। স্থানিঃ, স্থান্ধী, স্থান্ধয়ঃ ইত্যাদি বৃদ্ধিশন্দবং।

স্থান্দি ক্লী। ("শোভনো গন্ধো যশু ক্লীবস্থা" ইত্যাদি বাক্যে)। স্থাদি, স্থান্দিনী, স্থান্ধীনি। তৃতীয়াদি বিভক্তি স্বরে বিকল্পে পুংবং।

কতি অলিঙ্গক, বহুবচনান্ত। (১৮)

কতি। কতি। কতিভি:। কতিভা:। কতিভা:। কতীনাম্। কতিয়ু। হে কতি।

প্রিয়কতি, পুং।

(প্রিয়া: কতি যস্ত পুংস: ইত্যাদি বাক্যে)
প্রিয়কতিং, প্রিয়কতী, প্রিয়কতয়: ইত্যাদি অয়িশন্দবং।
প্রিয়কতি, নপুং। (প্রিয়া: কতি যস্ত ক্লীবস্ত ইত্যাদি বাক্যে)।
প্রিয়কতি, প্রিয়কতিনী, প্রিয়কতীনি, ইত্যাদি প্র্বালিখিত ক্লীবলিক্ষ
অতিবৃদ্ধিশন্দবং।

প্রেয়কতি, স্ত্রী।

(প্রিয়া: কতি যুস্তা ইত্যাদি বাক্যে)।

প্রিয়কতি:, প্রিয়কতী, প্রিয়কতয়: ইত্যাদি। কতি শব্দ সমাস-নিবন্ধন গুণীভূত হইলেও ইহার উত্তর ঈপ্রত্যয় এবং নদীবস্তাব হয় না, আর সমস্ত কার্যাই বৃদ্ধিশব্দের তায় হইবে (ধ)।

⁽১৮) কা সংখ্যা এষামিত্যর্থে সংখ্যাবৃত্তে: কিমো ডতিরিতি ডতি-প্রত্যয়ে নিপ্পন্নতা কতিশব্দতা বছবচনান্ততা ফান্তা: সংখ্যা হালিদকা: কত্যব্যয়যুম্মশুদশ্চেতি ভাত্যোক্তে: প্রিয়ামপি ঈপ্রত্যয়াভাবেন লিসত্ত্যে সাম্যামিন্তি In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

কোন কোন বৈয়াকরণ, যদ ও তদ্ শব্দের উত্তর ডতি প্রত্যয় করিয়া যতি এবং ততি ইত্যাকার শব্দ সাধিয়া কতিশব্দের স্থায় রূপ করেন, ধর্থা—

যভি—অলিঙ্গক, বহুবচনান্ত।

যতি। যতি। যতিভিঃ। ইত্যাদি কতিবং।

ততি—অলিঙ্গক, বহুবচনান্ত।

ততি। ততিভিঃ ইত্যাদি কতিবং (গ)।

স্থি—পুং ।

স্থা, স্থান্নে, স্থান্ন: । স্থান্ন্, স্থান্নে, স্থান্ন্ স্থান্ন্ৰিভ্যান্ স্থিভিঃ। স্থাে, স্থিভ্যান্, স্থিভ্যঃ। স্থাঃ স্থিভ্যান্, স্থিভ্যান্, স্থাঃ স্থাাে, স্থীনান্। স্থাে, স্থােঃ, স্থিন্। হে স্থে।

ত্রীলিদে সধিশদের উত্তর নিত্য ঈ (ঈপ ্) প্রত্যয় হয়, যথা—সধী, সংখ্যা, সংখ্যা ইত্যাদি নদীশদের ত্রায় রূপ হইবে। (১৯)

শোভনঃ দথা যশু পুরুষশু ইতি বাক্যে স্থাবিশক্ষের স্বিশক্ষের তুল্য রূপ হয়। (ঘ)

- (খ) উপসর্জ্জনেহপ্যলিম্বত্বশীকারাৎ ঈপ্রত্যয়াভাবেন নদীবদ্ভাবভিন্নত্বন

 চ বৃদ্ধিশন্দবৎ। প্রিয়কতানীত্যাদি নপুংসকত্বন্ত উৎসর্গতয়া প্রবর্ত্তব্যে প্রিয়পঞ্চানীতিবং। অত্র "ইতোহক্ত্যুর্থাদনাদেশাদ্বা কতেঃ" ইতি শ্রীপতিঃ।
- (গ) যন্তনোর্ডভিন্তাভ্যামপি জন্শনোল্নিত্যক্তে, তথাচ—''ষতি তে নাগ! শীর্ষাণি ততি তে নাগ বেদনাঃ।'' ইতি প্রয়োগঃ।
- (১৯) ব্রিয়ামীপ্রত্যয়বিধৌ সবিগ্রহণাৎ নিত্যমীপ্রত্যয়ে স্থারিতি
 রূপপ্রধাননির্দ্দেশাৎ লিকগ্রহণে লিকবিশিষ্টস্থাপি গ্রহণং স্থাদিত্যস্থানিত্যত্বাৎ অনাদেরভাবাৎ স্থীশব্দো নদীশক্বং।

B

(ছ) . ন শ্বনাশ্রম নেগ্রান মধ্যানার হারা ক্রীন্তি নামান, মরিরক্ত কার্যা মৃ।

সুস্থি—ক্লী (শোভনঃ সথা যস্ত কুলন্ত ইত্যাদি বাব্যে)।
স্থাধি, স্থাধিনী, স্থাধিনী। স্থাধি, স্থাধিনী, স্থাধিনি। তৃতীয়াদি
বিভক্তিস্বরে বিকল্পে পুংবং। সম্বোধনে—হে স্থাধি, হে স্থাধে। (ঙ)
স্থী—পুং।

'স্থায়মিচ্ছতি' কিংবা 'স্থেবাচরতি' ইত্যাদি বাক্যে যিনন্ত (ক্যজন্ত) অথবা আযান্ত (কাঙন্ত) এবং পরে কিবন্ত স্থীশন্দ দীর্ঘ ঈকারান্ত হয়, রূপ যথা—

স্থী:, স্থ্যো, স্থ্যঃ। ইত্যাদি। পঞ্চমী ও ষ্টার একবচনে 'স্থাু:' এবং স্থ্যমীর একবচনে—স্থ্যি, ইত্যাকার রূপ হইবে। (চ) প্রতি—পুং (পাধাতুর উত্তর ডতিপ্রত্যয়ে নিষ্পান্ন)

পতিং, পতী, পতরং। পতিম, পতী, পতীন্। পরে স্থীবং।
নরপতি, ভূপতি প্রভৃতি শব্দের অগ্নিশব্দের তুল্য রূপ হয়। (২০)

'সখিন। বানরেন্দ্রেণে'ত্যাদি প্রয়োগস্ত নঞোহনিত্যত্বাং রুচ্তাং মিত্রার্থকা গ্রহণাদ্বা সাধীয়ানিতি। "অর্জুনকা সধা কৃষ্ণ: কৃষ্ণকা স্থি-র্জ্জুন" ইতি প্রয়োগস্ত স্থ্যুন্চেতি প্র্রেণক্যোগাকরণাদিত্যবধেয়ম্।

(२०)८-मतानं श्विभक्षिण जिल्लाक जिल्ला कार्याक व्यापन विकास विकास कार्याक विकास कार्याक विकास कार्याक विकास कर विकास कार्याक विकास कार्याक विकास कार्याक विकास कर विकास कर विकास कार्याक विकास कार्याक विकास कर वित

⁽৩) তত্ত্বপ্রতিষেধাদন্ ন ভবতি। নামান্তচতুরাং বা তত্ত্বমিত্যনেন বিভাষয়া নাম্যয়ানাং তত্ত্বং ভবং নাম্যয়মেব কার্যান্তবিতি
ক্রুত্বাদিতি ব্যাঝানার ভবতি সম্বোধনে বিভাষয়া তত্ত্বকং শ্রীপতিমতে গুণোহপথ্যাদেরিত্যনেন। ত্র্গমতে নপুংসকাৎ স্থানালু গিতি
কৃতে লুগ্লোপে ন প্রতায়কৃত্যিত্যনেনৈব সিদ্ধেং ন চ তত্ত্বগ্রহণাৎ
নাম্যয়ানাং চতুরশ্চ পক্ষে তত্ত্ত্বতীতি।

⁽চ) অন্ ন ভবতি রুঢ্যাশ্রয়ণাৎ এবমৃত্তরত্রাণীতি টীকাক্কতোক্তরাং। ভিন্তি স্বাধ্যালিক স্বাধ্

পন্থি—(পথিন্) পুং।

পন্থা:, পন্থানৌ, পন্থান:। পন্থানম্, পন্থানৌ, পথ:। পথা, পথিভ্যাম্, পথিভি:। পথে, পথিভ্যাম্, পথিভ্য:। পথ:, পথিভ্যাম্, পথিভ্য:। পথ:, পথো:, পথাম্। পথি, পথো:, পথিষ্। হে পন্থা:। (২১)

'শোভন: পন্থা যশ্ম পুংস:' এই রূপ বিগ্রহে স্থপন্থিশব্দের পন্থিশব্দের: ভাষ রূপ হয়।

টাদৌ নরপতিনেত্যাদি। ঙদিঙদোক্ষম ইতি বিশেষবচনমপি টাঙ্গো-রিতি পূর্ববি ক্বতে দিদ্ধে আদিগ্রহণাদসমাদ এব পতিষ্টাদাবগ্নিন ভবতি, সমাদে তু ভবত্যেব ইতি নিয়মেন বাধিতা অগ্নিকার্যং প্রবর্ততে। এবং ভাবপি। 'দীতায়াং পতয়ে নমং' ইতি প্রয়োগস্ত নঞোহনিত্যত্তাদলুক্দমাদেন বা সাধুজ্ঞাতব্যঃ। পতের্ডতিরিতি ডতিপ্রত্যেমেন বাংপাদিতস্থামার্থস্থ গ্রহণাৎ পতেঃ কিপ্রত্যেমেন সাধিতস্থাগ্নিকার্যাং স্থাৎ, ষধা—পতিনা ধাতুনেত্যাদি।

(২১) আমি তু আগমাদেশয়েরাগমবিধির্বলবানিতি ন্যায়াৎ স্থাপমি পথীনামিতি কেচিদ্ ক্রবতে তং প্রলাপমাত্রম্ । পরত্বাৎ বিশেষবিধিত্বাৎ সর্ববিধিভ্যো লোপবিধির্বলবানিতি ন্যায়াৎ অন্তরঙ্গতাচান্তলোপে পথামিত্যেব স্যাৎ। সম্বোধনে হে পহাং ইতি। অথাত্র ভূতপূর্ব্বগতিমাশ্রিত্য হয়াৎ দিলোপঃ কথং ন স্থাৎ নৈবম্, অত্র হেমকরঃ—হত্র সম্বৃদ্ধিমাশ্রিত্য হয়বিকারঃ ক্রিয়তে তত্রৈব দিলোপ ইতি। তন্নতি কবিরাজঃ, সহ ইনা বর্ত্ততে সেঃ, তন্ম সম্বোধনে হে সে ইত্যক্র টীকার্কতা ভূতপূর্ব্বাৎ দিলোপশ্র দর্শিতত্বাৎ। আ চন সম্ব্রুবিত্যতঃ পঞ্চমান্তত্ব্যা আকারাহ্বর্ত্তনাৎ আকারাৎ ন ভবতীতি কুলচন্দ্রঃ। উমাপতিস্ত্র— 'শ্রুবিকারে ভবতীহ নামী, নদীবিকারে চল এব দৃষ্টঃ। হুম্বে বিকারে কিল সান্তিন্তানি হৃত্যাধ্যেশাক্ষ্যা কুল্ডাধ্যেদিলানাঃ মুধানিত্ত্যানিষ্ট্রপ্রথাক্তমেতি

ত্ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'শোভন: পদ্ধা যদ্যাঃ' এইরপ বিগ্রহে বিকল্পে ঈপ্রত্যায় হওয়ায় স্থপথী ইত্যাকার শব্দ হয়, ইহার নদীশব্দবৎ রূপ হইয়া থাকে। ঈপ্রত্যয়াভাব-পক্ষে স্থপন্থি ইত্যাকারই শব্দ হইরা থাকে, পদ্মিশব্দের ভায়ে ইহার রূপ হয়। (২২)

"শোভনঃ পন্থা যদ্য কুলদ্য" ইত্যাদি বাক্যে—স্থপন্থি (স্থপন্থিন্) শক্ষের নপুঃসকলিন্দে রূপ যথা—

স্থাধনে—হে স্থাথি। (হে স্থাথিন)। (২৩)

'পস্থানমিচ্ছতি' এবং পস্থা ইব আচরতি, ইত্যাদি অর্থে ধিনন্ত (ক্যদ্রন্ত) অথবা আঘান্ত (ক্যাওন্ত) তৎপর কিবন্ত—

কবিরাজ:। হেঅম্ব ইত্যত্র প্রদাবিকারস্যানামিনোংপি দৃষ্টবাং। তরেতি রামচন্দ্রচক্রবর্তী কারিকায়ামিহপদোপাদানাদিহ প্রদেষ ইত্যাদৌ ইত্যাচষ্টে। হে অম্ব ইত্যত্র তু হ্রমাদেব সের্লোপ ইতি। নচ নদীপ্রদ্ধাত্যাং সাহচর্যাং হ্রমাদপি ভূতপূর্বাদেব সের্লোপ ইতি ত্রিলোচনোক্রেরেভদপি অসমত-মিতি বাচ্যম। যতঃ হে অয়ে হে ধেনো ইত্যত্র নিত্যবাং স্বরাদেশবাচ্চ গুণে কতে হ্রমাভাবাং কথং সের্লোপ ইতি পূর্ব্বপক্ষম সাহচর্য্যেণ সিদ্ধান্তিতং, তত্মাং ন সর্বত্র অত এবোক্তং হ্রম্বগ্রহণবলাং প্রাগ্রাদ্দান্তিবতং, তত্মাং ন সর্বত্র অত এবোক্তং হ্রম্বগ্রহণবলাং প্রাগ্রেদাণ ইতি বক্তুংন শক্যতে, তস্যাকারে চরিতার্থবাং, অতএব নদীপ্রদ্ধাভাগি সাহচর্য্যাৎ ইকারোকারাদপি ভূতপূর্ব্বাদ্ ভবতীতি টীকায়ামবিরোধঃ।

- (২২) পদ্বিমন্ত্রীতি স্থাত্তে সনকারনির্দ্দেশাৎ নকারযুক্তস্য গ্রহণাৎ লিম্বগ্রহণে লিম্ববিশিষ্টস্থাপি গ্রহণমিত্যস্যানিত্যত্বাচ্চ পদ্বিশব্দাশ্রিত-কার্য্যাভাবাৎ স্থপথীশব্দস্য নদীশব্দবৎ রূপম্।
- (৩) স্থপথি কুলমিত্যত্র পক্ষে তত্ত্তকার্য্যং নাস্তোব, সূত্ত্বে সনকার-নির্দ্দেশাং। সৌ ঘুটিতি সম্বন্ধাদিতি গোপীনাথং। নাম্যস্তানাং তত্ত্ত্তন্তবং নাম্যস্তকার্য্যমেব শ্রুত্বাদিতি কেচিং, অন্তন্ত নাম্যস্তানাং চতুর্ন্চ পক্ষে CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

পথि- পুংলিঙ্গে অথবা দ্রীলিঙ্গে।

পथीः, পথ্যৌ, পথ্য ইত্যাদি গ্রামণীবং। (२४)

ক্লীবলিদ্বস্থলে ঈকার ব্রম্ব হওয়ায় পথি ইত্যাকার শব্দ হয়, রূপ—
পথি, পথিনী, পথীনি ইত্যাদি।

তৃতীয়াদি বিভক্তিস্বরে বিকল্পে পুংবং হওয়ায় পধ্যা পথিনাইত্যাদি।

मथि—(मथिन्) পूः निष्ठ ।

পস্থি (পথিন্) শব্দের ন্যায় রূপ হইয়া থাকে।

ल

<u></u>

7

খাভুক্ষি—(ঋভুক্ষিন্) পুংলিঙ্গ।

ঝতুক্মা:, ঝতুক্মাণো, ঝতুক্ষাণা:। ঝতুক্ষাণম্, ঝতুক্ষাণে), ঝতুক্ষঃ
ইত্যাদি, পন্থি (পথিন্) শব্দবৎ রূপ। ঘিনন্ত (ক্যজন্ত) কিংবা আয়ন্ত (ক্যজন্ত) করিয়া কিবন্ত করিলে ঝতুক্ষী ইত্যাকার দীর্ঘ ইকারান্ত শব্দ হয়, রূপ—ঝতুক্ষী:, ঝতুক্ষিয়ো, ঝতুক্ষিয়ঃ ইত্যাদি। (ক)

তহক্তমিত্যত্র তদিতি ভিন্নং পদং তেন পক্ষে উক্তং তন্নামৃত্তিমিতি ক্রতে।
স্থপথি, স্থপহানি পরত্বাৎ অনা কুর্বাধ্যতে ইতি টীকা। এবং বিভীন্নান্নাং
টাদৌ ন বিশেষ:। সম্বোধনে হে স্থপথি কুলমিত্যত্র এবং ন ভবক্তি
"সক্তদ্পত ''ইত্যাদি আয়াদিতি—শিবরামচক্রবর্তী। রাজ্ঞ: পহা ইতি
তৎপুক্ষবে অংপ্রত্যয়ে রাজপথ ইত্যদন্তঃ, শস্করপন্ত দেবশস্ববং।

- (২৪) ঘিরাষ্যোদ্দীর্ঘে ক্লিপি তলোপে নিমিন্তাভাবে নৈমিন্তিকস্তাপ্য-ভাবে প্রত্যয়লোপলক্ষণভায়েন পুনদ্দীর্ঘে ক্লতে পথীরিতি।
- (ক) পরিমন্থিসইচরিতত্ত ঝভূক্ষিশকতাপি রূপত্বপ্রধাননির্দ্দেশা-দিতি টাকোক্তেরাত্বং ন ভবতীতি। যিরায্যোদীর্ঘান্তত ঝভ্ক্যাদিশকত ধাত্বয়বসংযোগপরতাৎ স্বরে ইয়াদেশো বিশেষঃ।

কেচিৎ পন্থিন্ মন্থিন্ ঋভূক্ষিন্ ইতি নাস্তাং প্রকৃতিমাশ্রয়ন্তি, তক্মতে পন্থিমন্থিত ক্ষীণান্ত্রিন ইতার্ম্নি প্র্রোতি স্বাধিনান্ত্রালি এবামিনভাগস্থাকার CC-5. মিণ্টান্তিন ইতার্মি প্রের্জিড স্বাধিনান্ত্রালি এবামিনভাগস্থাকার षि-शूः। (षिव6नान्छ) সর্কানান (ত্যুদাদি, সর্কাদি)।
(षो। (षो। षाञ्याम्। षाञ्याम्। षाञ्याम्। पर्याः। पर्याः। (र त्यो।

षि-खी।

ছে। ছে। ছাভ্যাম্, ইত্যাদি পরে পুংবং। ছে ছে।

षि-क्री, खोलिश्रवए।

অতিদ্বি—পুং। (দাবতিক্রান্ত: ইত্যাদি বাক্যে)
অতিদ্বিং, অতিদ্বী, অতিদ্বয়: ইত্যাদি মৃনিশন্ববং।

অতিদ্বি—ক্লী। (দাবতিক্রান্তং কুলম্ ইত্যাদি বাক্যে) অতিদ্বি, অতিদ্বিনী, অতিদ্বীন ইত্যাদি।

অতিদ্বি—স্ত্রী (দাবতিক্রান্তা স্ত্রী ইত্যাদি বাক্যে)। অতিদ্বিং, অতিদ্বী, অতিদ্বয়ং ইত্যাদি বৃদ্ধিবং। (২৫)

ত্রি-পুং। (বহুবচনান্ত)

जमः। जोन्। जिভिः। जिভाः। जिভाः। जमानाम्। जिष्। হে जमः। স্ত্ৰীলিঙ্গে—ভিষা। ভিষা। ভিত্তভা। ভিত্তভা। ভিত্তণাম্। ভিত্তম্। হে ভিষা।

ইতার্থে পয়া ইতি। অনস্তো ঘুটি ইত্যত্র চ ন অন্ত: অনন্ত: ইতি বিগ্রহে অনস্তা বা আকারো ভবতীতার্থে—পয়ানাবিত্যাদি। অঘুট্ য়য়ে লোপমিত্যত্রাপি অনন্ত ইত্যক্রেড়ী অনস্তো বর্ণো লোপমাপছতে ইতার্থে ব্যঞ্জনে চৈয়াং নিরিত্যত্র চ এয়াং গ্রহণশু ব্যাপ্ত্যর্থত্বাৎ ব্যবহিতশুণি নকারশু লোপে পথং ইত্যাদয়ঃ, কিন্তু নপুংসকে হে স্কুপ্থিন, হে স্কুথিন, হে স্কুপ্থিন, হে

(২৫) দ্বিত্রিকতিপ্রভূতীনাং গৌণে মুখ্যে চ স্ত্রীত্বনিবন্ধন ইত্রু জ্বিব্ৰুতাদ্বা ইতি ঈ প্রত্যয়োন ভবতি।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

প্রিয়তি, পুং (প্রিয়াস্ত্রয়ো যক্ত পুংস: ইত্যাদি বাক্যে)। প্রিয়তিঃ, প্রিয়তী, প্রিয়ত্তয়ঃ ইত্যাদি অগ্নিশন্ববং।

সারমতেও ঐ)।

) 1

हो।

বি.

1: 1

7: 1

र्य

द्र

रर्थ

9

(\$

5

আম-প্রিয়ত্রীণাম্। (প্রিয়ত্ত্যাণাম্, কৌ-গাচাৎতা সংক্রিপ্ত

প্রিয়তি, পুং, (প্রিয়ান্তিশ্রো যস্ত পুংস: ইত্যাদি বাকো)।

প্রিয়তিদা, প্রিয়তিশ্রে, প্রিয়তিশ্রঃ ইত্যাদি। ওদিঙ্গোরপি— প্রিয়তিম্র:, আমি-প্রিয়তিস্পাম্। ঙৌ-প্রিয়তিস্ত্রি, (প্রিয়তিস্ত্রি মুগ্ধবোধটীকা) সম্বো—হে প্রিম্বতিস:।

क्रीरा—(প্রিয়ান্ডিলো ষশ্ম কুলস্থ ইত্যাদি বাক্যে)। প্রিমতিফ, প্রিয়তি; প্রিয়তিফ্ণী, প্রিমৃতিসূণি ইত্যাদি। 🛾 তৃতীয়াদিষরে বিকল্পেপুংবৎ । প্রিয়তিস্রা, প্রিয়তিস্থা ; প্রিয়তিস্রে, প্রিয়তিফণে; প্রিয়তিঅ:, প্রিয়তিফণ: ইত্যাদি। হে প্রিয়তিম:, হে প্রিয়তি । হে প্রিয়তো: হে প্রিয়তি।

लोलिएक-(প্রিয়ান্তিলো মন্তা: ইত্যাদি বাকো)। প্রিয়তিসা, প্রিয়তিশ্রে প্রিয়তিশ্র:। ইত্যাদি পুংবং। প্রিমতি—স্ত্রী। (প্রিমান্ত্রেমা মস্তা: ইত্যাদি বাক্যে।) (২৬) প্রিয়ত্ত্রী, প্রিয়ত্ত্রয়: ইত্যাদি, বুদ্ধিবং। (আম্-প্রিয়-बद्यानाम्, (को ७। ८। ८)

প্রিম্বরি, ক্লা (প্রিমান্ত্রয়ো যশু কুলশু ইত্যাদি বাক্যে।) প্রিমৃতি, প্রিমৃত্রিণী, প্রিমৃত্রীণি ইত্যাদি। টাদিমরে বিকরে পুংবং।

जि-को।

ত্রীণি। ত্রীণি। ত্রিভিরিত্যাদি পুংবং।

(२७) "ব্রিয়াং স্থাতাং ত্রিচতুরী সমাসঃ প্ংনপুংসকে। Cott । स्टिभ्रेमं इस्मान्त्र स्माप्त प्रमान्त्र विभिन्न स्मान्य ।

वाति-क्री।

বারি, বারিণী, বারীণি। ঐরপ দিতীয়া। বারিণা, বারিভ্যান, বারিভি:। বারিণে, বারিভ্যান, বারিভ্য:। বারিণঃ—। বারিণঃ, বারিণোঃ, বারিণাঃ, বারিণাঃ, বারিণাঃ, বারিণাঃ, বারিণাঃ, অবিবারি, কারিণাঃ, বারিণাঃ, বারিণাঃ, অভিবারিয়ঃ ইত্যাদি বাক্যে)। অভিবারিঃ, অভিবারী, অভিবারয়ঃ ইত্যাদি হরিশক্ষবং। অভিবারি, অভিবারী, —স্ত্রী। (বার্যাভিক্রান্তা স্ত্রী ইভ্যাদি বাক্যে) অভিবারিঃ, বৃদ্ধিবং। অভিবারী, নদীবং।

অহি-ক্লী।

অন্থি, অন্থিনী, অন্থীনি। এবং দ্বিতীয়া। অসু, অন্থিভ্যাম,
অন্থিভি:। অন্থে, অন্থিভ্যাম্ অন্থিভ্যা:। অসু:—। অসু:, অন্থো:,
অস্থাম্। অন্থি, অস্থানি,—অন্থিম্। হে অন্থি, হে অন্থে।
অত্যন্ধি—পুং, (অস্থাতিক্রান্তঃ ইত্যাদি বাক্যে)

è

অতাস্থিং, অত্যস্থী, অত্যস্থয়ঃ ইত্যাদি অগ্নিবৎ, তৃতীয়াদি বিভক্তিতে ক্লীবলিদ অন্থিবৎ।

অত্যস্থি—স্ত্রী। (অস্থাতিক্রান্তা স্ত্রী ইত্যাদি বাক্যে) অত্যস্থিঃ, অত্যস্থী, ইত্যাদি বৃদ্ধিবং। তৃতীয়াদিবিভক্তিতে ক্লীবনিদ অস্থিবং।

দিধি, সক্থি এবং অক্ষিশক ক্লীবলিন্ধ, ইহাদেরও অন্থিশব্দের তুলা রূপ হয় এবং অতিক্রান্ত প্রভৃতিস্থলে পুংলিন্ধ বা স্ত্রীলিন্ধ হইলেও পূর্বোন্ধ অত্যন্থি শব্দের ন্থায় রূপ হইয়া থাকে। অতিক্রান্তাদিস্থলে স্ত্রীলিন্ধ হইলে এই সকল শব্দের উত্তর ঈ (ঈপ্) প্রত্যয় হয় না।

পাণিনিমতে বহুত্রীহিসমাসে দধিশব্দের উত্তর নিত্য কপ্রত্যের হয়। অন্ত সকলমতে প্রিয়দরা ছাত্রেণ, প্রিয়দরে স্ত্রিটের ইত্যাদি রূপ হয়। কোন কোন মতে প্রিয়দরা স্থিয়া ইত্যাকার ক্রিপ্রেধারার war CC-0. In Public Domain. Guruku Karighi বিক্রার ক্রিপ্রেধারার war শক্রপ-কল্লড়েমঃ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

অস্থি, দিনি, সক্থি অফি অতিক্রান্তেন কুলেন ইত্যাদি বাক্যে
তৃতীয়াদি বিভক্তিতে বিকল্পে পুংবং হইলেও অত্যস্থা, অত্যস্থে,
ইত্যাদি একরপই রূপ হয়।

পদাক্ষ প্রিয়দক্ধ প্রভৃতি সমাদান্ত অদন্তন্থলে অকারান্ত শব্দের ন্যায়ই ব্রপ হয়, অস্থ্যাদিশব্দদম্মীয় অন্ (অনঙ্) হয় না।

ঈকারান্ত, দ্রীলিঙ্গ।

निन्दी।

निन, नर्लो, नलः । निन्नोम्, नर्र्लो, निनः । नला, निन्नोम्, निनिन्तः । नर्रेल, निन्नोम्, निनेल्यः । न्नाः, निन्नोस्, निन्नोन्। न्नाः, नर्लाः, निनेम्। न्नाम्, नर्लाः, निन्नेष् । ट्रनिन्। (२१)

नक्यी-द्वी।

नक्तीः, (२৮) नक्त्रीः, नक्ताः। नक्तीम्, नक्त्रीः, नक्तीः। नक्तां, नक्तीः।

(২৭) নদীমতিক্রান্তঃ পুমানিত্যর্থে অতিনদিং, অতিনদী, অতিনদয়ঃ।
অতিনদিম্, অতিনদী, অতিনদীন্, অতিনদীরিত্যপি মতম্, অতিনদিনা,
অতিনদা ইত্যপি। অতিনদয়ে, অতিনহৈ। শ্রীপতিমতে—অতিনদয়ে
ইত্যেবাক্তম্, বৃদ্ধিশঙ্কো দ্রষ্টব্যঃ।

^{যদা} অব্যূৎপন্নগুদ। ঈকারোহস্তো বিহিতে। ফ্যাদিত্যেতাদৃশশু সমা-স্খাশ্রমণাদিতি কালাপাঃ।

'নদীমতিক্রাস্তা স্ত্রা' ইত্যর্থে অতিনদীশক্ত নদীশক্বং রপম্। 'নদীমতিক্রান্তং কুল'মিত্যর্থে অতিনদি, অতিনদিনী, অতিনদীনি এবং বিতীয়ায়াম্। টাদৌ বরে বিভাষয়া পুংবং। সম্বোধনে—হে অতি-নদি, হে অতিনদে।

যিরাযান্তস্য অনেকাক্ষরাৎ যথং খরে বেদিতব্যমিতি। এবং ভ্যীপ্লবী-মহীনারীশূজীচণ্ডীপ্রভৃতীনামপি রূপাণি জ্ঞাতব্যানি।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ग्राम्, त्रिणः,

ক্য)

ग्राम्, स्राः,

লতে

निन

তুলা

ांक हल

ह्य ।

र्थ ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri निकालि:। লক্ষ্যে, লক্ষ্যাম, লক্ষ্যায়। লক্ষ্যাঃ...। লক্ষ্যাঃ, লক্ষ্যায়। লক্ষ্যাঃ, লক্ষ্যায়। বেং লক্ষ্যাঃ [হেং লক্ষ্মি] (১)। অতিলক্ষ্মী—পুং (লক্ষ্মীমজিকান্তঃ পুমান ইত্যাদি বাক্ষ্যে)।

অতিলক্ষী, অতিলক্ষ্যো, অতিলক্ষ্যঃ। অতিলক্ষ্মীম্, অতিলক্ষ্যো, অতিলক্ষ্মীন্। অতিলক্ষ্যা, অতিলক্ষ্মীভ্যাম্, অতিলক্ষ্মীভ্যাম্য অতিলক্ষ্মীভ্যাম্য অতিলক্ষ্মীভ্যাম্য অতিলক্ষ্মীভ্যাম্য অতিলক্ষ্মীভ্যাম্য অতিলক্ষ্মী আতিলক্ষ্মী আতিলক্ষমী আতিলক্ষ্মী আতিলক্ষমী আতিলক্ষ্মী আতিলক্ষ্মী আতিলক্ষ্মী আতিলক্ষ্মী আতিলক্ষ্মী আতিলক্

অভিলক্ষী—ন্ত্রী, (লক্ষীমতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে)। লক্ষীশন্ধবং।
অতিলক্ষি—ক্লী ('লক্ষীমতিক্রান্তং কুলম্' ইত্যাদি বাক্যে)।
অতিলক্ষি, অভিলক্ষিণী, অভিলক্ষ্মীণি ইত্যাদি। হে অভিলক্ষে, হে
অভিলক্ষি। টানিম্বরে বিকল্পে পুংবং।

"অবীতন্ত্রীলক্ষী শ্রীধীভ্যাদিশন্ধত:। অনীবন্ততয়া দেন লোগে গোণে ন ব্রন্থতা।" জৌমরাস্ত প্রিয়পপী: বছ্ষ্যীরিত্যুভ্যমপ্যত্র পঠন্তি। সমুদায়ক্ত স্ত্র্যাথ্যত্বেনাব্যবক্তাপি স্ত্র্যাধ্যতাৎ নদীসংজ্ঞা—লক্ষ্যৈ ইত্যাদি।

(১) ব্যবস্থিতবিভাষয়া ওণাদিকশু বিকল্পেন হ্রন্থ ইতি—কবিরাজ:। তথাচ—"মাতর্লন্ম ভজন্ব[ক্ষ]মান"ইতি, "হে কন্দ্রী: শু। দরিদ্রাণান্" ইতি চ। কৈশ্চিত্ত হ্রন্থ এব নেষ্যতে। কশ্চিত্ত ওণাদিকেকারাস্থাৎ স্ত্রীতে গোড্যে সত্যপি পুনরীপ্রত্যয়ং কৃত্য লক্ষীয়মিতি স্বীকরোতি। তথাচ প্রসিতি:—

কশ্চিৎ কুদীকারাদীমিচ্ছন্ লক্ষীয়মিতি মন্ততে, "বালা নিদাঘলন্ত্ৰীৰ তাপয়ত্যেৰ কেবল' মিতি।

(২) লক্ষ্মীমতিক্রান্ত ইত্যর্থে অতিলক্ষ্মীশন্ধশু হ্রমো নান্তি, দ্রিয়ামান্ত্র CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

⁽২৮) লক্ষেরীর্মোহস্ত ইত্যানেন সাধ্যত্তাৎ ঈকারান্তাৎ সিরিত্যত্ত ঈকারঃ অন্ত: সমীপো যশু লিঙ্গশ্রেতি বছ্রীহেরাশ্রয়ণাৎ সিলোপাভার:।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
অবী তরী তন্ত্রী প্রভৃতি অন্ত উণাদিক ঈপ্রত্যন্নান্ত ন্ত্রীলিঙ্গান্দেরও
নদ্ধীশান্দের তুল্য রূপ হইবে। (৩)

প্রেয়সী এবং শ্রেয়সী—জী। (প্রিয় + ঈয়ন্স্ন (ঈয়স্ব) + ঈ। প্রশাসা + ঈয়ন্স্ন (ঈয়স্ব) + ঈ।)

প্রেয়সী, প্রেয়স্তো, প্রেয়স্তঃ ইত্যাদি। শ্রেয়সী, শ্রেয়স্তো, শ্রেয়স্তঃ ইত্যাদি, নদীশক্বং।

'শোভনা প্রেয়দী যক্ত পুংদাং' এবং 'শোভনা শ্রেয়দী যক্ত পুংদাং' ইত্যাদি বাক্যে দমাদান্ত ক এবং ব্রন্থ না হওয়ায়, রূপ যথা—

य्थायमी, य्यायमी-शूः।

ক্রেয়দী, স্থপ্রেয়শৌ, স্থপ্রেয়শী। স্থেয়দীম্, স্প্রেয়শীন্। স্প্রেয়শীভাম্, স্থেয়দীভাম্, স্প্রেয়শীভা স্থ্রেয়শীভা স্থ্রেয়শীভা নদীবং। হে স্প্রেয়শি। (৪)

স্থারের শবেরও উলিধিত স্থারের শবের ত্ল্য রূপ হইবে। স্থারের স্থারিক ক্ষেণার্যস্মানে অথবা 'শোভনা প্রের্মী মুখ্যাং, শোভনা শ্রেম্মী মুখ্যাঃ' ইত্যাদি বাক্যে স্মাসান্ত অনিত্য)

দিঘাভাবাৎ, অতিলক্ষীমিতি "অম্শসোরাদিলেণি'মিতাত নতা ইতানেন সমানসংজ্ঞকস্যোপলকণ্ডাদনদীত্তেহপাম্শসোরকারলোপঃ। অতিলক্ষীনিতি নিক্ষকলক্ষণঃ সৃস্য নং। অতিলক্ষ্যৈ ইত্যাদি ওবতি উপচারাল্লদীত্ম।

- (৬) পুরুষোত্তমস্ত ক্রতে—উণাদৌ তদ্ধিরিতি হ্রেকারাস্তোইন্তি তম্মানীপ্রত্যয়ে তদ্ধীত্যপি, অতএব তদ্ধীয়ং বীণেতি দৃষ্ণতে। তদ্ধতে-বিজ্ঞাদনস্তাদ্বা ঈপ্রতায়ে সাধুরিতি—টীকা।
- (৪) শোভনা প্রেয়সী যক্ত পুংস ইত্যর্থে নদীলক্ষণ: কপ্রতায় উপসর্জন-লক্ষণো হ্রম্বন্ড হাতি তুর্গোক্তে: কপ্রতায়হুম্বাভাবেন ইকারোহস্তো যম্মাদিতাক্ত গৌণোহত্র স্থপ্রেয়সীশব্দো ন প্রেয়:শব্দ ইত্যতোহ্বয়বা-বিহিতত্বমিতি টীকাক্কতোক্তে: সন্ত্রিবেশাৎ সিলোপে স্থপ্রেয়সী পুমান্ ইতি।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

न्यो.

भा:

टेन्ह्या न्यो-

व९ ।

হে

हाव ।:।

পো ন্ত ।

। বং। ভি

হৈ বাহ

गैव

HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri হবেরদী, হ্রপ্রেয়ন্সে, হ্রপ্রেয়ন্সা, হ্রপ্রেয়ন্সা,

স্থপ্রেরদি, স্থপ্রেরদিনী, স্থপ্রেরদীন। এবং দিতীয়া। তৃতীয়াপ্রভৃতি
অরাদি বিভক্তিতে বিকল্পে পুংবৎ হওয়ায় স্থপ্রেরদাা, স্থপ্রেরদিনা
ইত্যাদি। ওবতি—স্থপ্রেরদাা, স্থপ্রেরদিনে ইত্যাদি। স্থাপ্রেরদিশক্তের
রূপও এইরূপ। সংলাধনে—হে স্থপ্রেরদি, হে স্থপ্রেরদে, হে স্থাপ্রেরদি,
হে স্থাপ্রেরদ। (৫)

বহুশ্রেরদী এবং বহুপ্রেরদী প্রভৃতি শব্দেরও স্থপ্রেরদী—শব্দের তুনা রূপ হয়।

অভিশ্বেয়দি—পুং, (শ্রেয়দীমভিক্রান্তঃ ইত্যাদি বাক্যে)
অতিশ্বেয়দাঃ, অভিশ্বেয়দাঃ, অভিশ্বেয়দাঃ: ইত্যাদি অগ্নিবং।
বাতপ্রমী—পুং। (বাতং প্রমিমীতে, বাত-প্র-মা+কী, উণাদিক,
মৃগার্থক)

শ্রীপতিমতে— নেয়ন্দোর্বছরীহোঁ, নেয়ন্দোরিতি চ স্ত্রছয়েন কপ্রত্যাধ্র হম্বনিষেধেন ঈকারান্তাৎ দিরিতাত্র কারশব্দশ্র ব্যাপ্তার্থত্বাৎ দিলোপং। অস্থাব্যবস্থা স্ত্র্যাপ্যত্বেন সম্দায়স্থা স্ত্যাপ্যত্বোপচারান্দীত্মতো ওবতি স্থপ্রেয়ন্ত্রৈ ইত্যাদি। স্ত্রিয়াত্বেবমিতি। অম্শদোস্ত্র অম্শদোরকারলোপ ইত্যেব বিশেষং।

(৫) নপুংসকে "স্বরো হ্রন্থো নপুংসকে" ইতি হ্রন্থে স্থপ্রেম্নি, উপসর্জনলক্ষণহ্রন্থনিবেধাং নপুংসকলক্ষণহ্রন্থ: আদিত্যবধেয়ম্। প্রীপতিমতে—অত্রাপি উপসর্জনলক্ষণহ্রন্থাভাবো বোধ্য: নপুংসকলক্ষণহ্রন্থো ন ভবতি, অতন্তর্মতে স্থপ্রেম্নী ইত্যাদি রূপম্। টাদৌ স্বরে তু ভাষিতপুংস্ক-মিত্যাদিনা বিভাষয়া পুংবদ্ভাবে—স্থপ্রেম্ন্তা, স্থপ্রেম্নিনা ইত্যাদি রূপদ্বয়ং বেদিতব্যমিতি। এবং বহুপ্রেম্নীপ্রভৃতীনামপি রূপম্বস্তব্যম্।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

বাতপ্রমীঃ, বাতপ্রমাো, বাতপ্রমাঃ। বাতপ্রমীম্, বাতপ্রমোা, বাতপ্রমীন্। বাতপ্রমাা, বাতপ্রমীভ্যাম্, বাতপ্রমীভাঃ। বাতপ্রমো, বাতপ্রমীভ্যাম্, বাতপ্রমীভাঃ! বাতপ্রম্যাং, বাতপ্রমীভায়াম্, বাত-প্রমীভাঃ। বাতপ্রমাঃ, বাতপ্রমায়াঃ, বাতপ্রমাম্। বাতপ্রমাি, বাত-প্রমাোঃ, বাতপ্রমীয়্। হে বাতপ্রমীঃ।

ययी जवः भभी - भूः।

वाज्यभौगत्मत जूना क्र रम ।

বাতপ্রমীশন্ধ যথন কিপ্প্রত্যায়ে নিপার হয়, তথন পুংলিক প্রধীশন্দের তুল্য রূপ হইয়া থাকে। (৬)

স্থী—পূং (শোভনা ধীর্ঘস্য ইতি বিগ্রহে অথবা স্বষ্ঠ ধ্যায়তি ষঃ

শ ইত্যর্থে — স্থ ধ্যা + কিপ্)

স্থী: স্থিয়ে, স্থিয়:। স্থিয়ম্, স্থিয়ে, স্থিয়:। স্থিয়া, স্থী-ভ্যাম্, স্থীভ্যাম্, স্থীভ্যাম্, স্থীভ্যাম্, স্থীভ্যাম্, স্থীভ্যাম্, স্থীভ্যাম্, স্থীভ্যাম্, স্থীয়াম্। স্থিয়ি, স্থিয়োঃ, স্থীয়াম্। হে স্থী:। (৭)

- (৬) বাতোপপদে প্রপ্রবাৎ মীধাতোর্ষদা কিপ্ ক্রিয়তে তেদা তস্য ধাত্বয়বত্বাৎ যত্তম এবং দর্বত্ত।
- (१) স্বষ্ঠ ধীর্যস্যাঃ, স্বষ্ঠ ধ্যায়তি বা ইতি বিগ্রহে তু বৃত্তিমতে স্বধীঃ

 শীবং। মতান্তরে পুংবং। স্বষ্ঠ ধীরিতি বিগ্রহে তু শ্রীবদেব। (কৌ ১।
 ৪।৫) স্বষ্ঠ ধ্যায়তি ইতি কিপি চ ধ্যাপ্যোরিত্যনেন সম্প্রসারণে দীর্ঘে
 আত্যংপত্তেঃ প্রাক্ কিবন্তেন 'তশু তেনে'তি সমাসে কিপ্ সমাসস্থাং
 বত্বে প্রাপ্তে ইয়াদেশার্থং স্বধীরিতি বচনম্। যদা শোভনা ধীর্যন্ত ইতি
 বছত্রীহিঃ ক্রিয়তে তদাপ্যবিশেষাদিয়াদেশঃ প্রবর্ততে। অনেকাক্ষর্য়োরিত্যক্র যথা তুশক্ষাব্যয়ত্বেনানেকার্থবাদ্ব্যয়কারকাভ্যামেবেতি,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

এবং

ভূতি সিনা

ব্যেক্ত য়**সি**.

তুল্য

क्,

गुष्ठ-भुः ।

্ বৃতি

সি, ত-

न छ-

प्र

ম্কুপু-ক্রুড়েমঃ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

নিত্যন্ত্রীলিঙ্গভিন্ন ধী, পী প্রভৃতি শব্দেরও স্ত্রীলিঙ্গে ব। পুংলিঙ্গে উলিথিত স্থাশব্দের তুল্য রূপ হয়। সংযোগপূর্বক ধাত্বয়ব ঈকারান্ত যবক্রীপ্রভৃতি শব্দেরও স্থাশক্ষবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

বৃদ্ধিবাচক ধীশব্দের এবং ভয়বাচক ভীশব্দের প্রীশব্দের স্থায় রূপ হয়।
ক্রীবলিদস্থলে স্থাী প্রভৃতি শব্দের ঈকার হ্রন্থ হওয়ায়—স্থাধি, স্থাধিনী,
স্থানি; যবক্রি, যবক্রিণী, যবক্রীণি ইত্যাদি রূপ হয়। তৃতীয়াদি স্বর
পরে বিকল্পে পুংবৎ হওয়ায়—স্থাধিয়া, স্থাধিনা; যবক্রিয়া, যবক্রিণা ইত্যাদি
বিশেষ জ্ঞাতব্য। সম্বোধনে—হে স্থাধি, হে স্থাধে! হে যবক্রি, হে
ববক্রে। এইরূপ কুধীশব্দেরও রূপ জ্ঞাতব্য।

গতিকারকভিন্ন পূর্ব্বপদযুক্ত শুদ্ধধী প্রভৃতি শব্বেরও স্থীশব্বের তুল্য রূপ হয়। (৮)

স্থধী—স্ত্ৰী। (শোভনা ধীৰ্কুদ্ধিৱিত্যৰ্থে) স্থ^{ৰীঃ}, স্থধিয়ো, স্থধিয়ঃ ইত্যাদি শ্ৰীশব্দবং।

व्यशी-श्रः। *

ख्योः, खर्पा, ख्याः। ख्याम्, खर्पाः, ख्याः। ख्या, ख्योजाम्, ख्योजिः। खर्पा, ख्योजाम्, ख्योजाः। ख्याः, खरीजाम्, ख्योजाः। ख्याः, खर्पाः, ख्याम्। खर्पाः, खर्पाः, खरीव्। द् ख्योः।

তথা কিপ্সমাসস্থাসৈর একস্বরস্যেতি কবিরাজ্বনয়ম্। অত্যে তু অব্যয়কারকাভ্যামিতি ধাতোর্বিশেষণং তেন কিপ্সমাস এব পরিণত ইতি, অতএব স্থাহণনিয়মেহপি কুধিয়ৌ ইত্যাদিকং সিদ্ধা। অত্যে তু অপবাদবিষয়ে কচিত্ৎসর্গঃ প্রবর্তত ইত্যাচক্ষতে, এতেন কিপ্সমাসস্থাস্যে ধাতোরেকস্বরস্য যুাবিত্যনেন শ্রীপতিদ্ভাক্ষেপা নিরন্তঃ।

- (৮) যদা তুকু ধ্যায়তীতি কিপ্ ক্রিয়তে, তদা যথেন ভাব্যমিতি ধ্যেয়ম্।
 - * अधी नक्षमा वृज्जिका तानी नाः भए जन्मी तर क्रभः भना छतः विनाभि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri ্রামণী—পুং।

গ্রামণীঃ, গ্রামণ্টো, গ্রামণ্টা। গ্রামণ্টম্, গ্রামণ্টা, গ্রামণ্টা, গ্রামণ্টা, গ্রামণীভাগাম্, গ্রামণীভাগাম্, গ্রামণীভাগাম্, গ্রামণীভাগাম্, গ্রামণীভাগাম্, গ্রামণাশ্যাম্, গ্রামণ্টাং, গ্রামণাশ্যাম্, গ্রামণ্টাং, গ্রামণাশ্যাম্, গ্রামণ্টাং, গ্রামণীয়্যামণ্টাং।

সেনানী, উন্নী প্রভৃতি শব্দেরও গ্রামণীশব্দের তুল্য রূপ হয়। (১)
স্থখী—পূং অথবা স্ত্রী। স্থখিমছেতি ইত্যর্থে—ি দিন্ [(ক্যচ্)
পরে কিবস্ত ।]

স্থা:, স্থা:। স্থাম, স্থা:। তৎপর পুংলিক প্রধীশক্ষবৎ রপ। বিশেষ—গুলি ও ওদ বিভক্তিতে—স্থা:।

স্থতী পুং অথবা স্ত্রী। (স্থতমিচ্ছতীত্যাভর্ষে)। স্থতী:, স্থত্যো, স্থত্যঃ ইত্যাদি। বিশেষ—ঙদি ও ঙদ্ বিভক্তিতে

—স্ত্য:।

এরপে নামধাত্ দারা নিপার শুভী, ফলী, হরী এবং শিবী প্রভৃতি
শব্দেরও স্ত্রীলিক্ষে এবং পুংলিক্ষে প্রধীবং রূপ জ্ঞাতব্য।

ক্লীবলিদস্থলে 'স্থি' ইত্যাকার শব্দ হয়; স্থ্বি, স্থবিনী, স্থীনি ইত্যাদি রূপ হইয়া থাকে, তৃতীয়া প্রভৃতি শ্বরাদি বিভক্তিতে বিকল্লে

ন্ত্রিয়াং বর্ত্তমানত্তং নিত্যস্ত্রীত্তমিতি স্বীকারাৎ। লিন্নাস্তরানভিধায়কত্তং তদিতি কৈয়টমতে তু পুংবৎ রূপম্। প্রকৃষ্টা ধীরিতি বিগ্রহে তু লক্ষীবৎ, স্বিম শসি চ প্রধ্যং প্রধ্যঃ ইতি বিশেষঃ। (কৌ—১।৪।৪)

(२) 'দেনানীনামহং স্কলঃ' ইতি ছাল্দসন্থাৎ। ষশা তু নয়তীতি নীঃ শেনায়াঃ নীঃ দেনানীঃ ইত্যাদি নামসমাদক্ষপা সাধনপ্রণালী, তদা কিপ্শ্মাসাভাবাৎ যন্তাভাবত্বেন ইয়াদেশেন ভবিতব্যমিতি। এবনভোষামিপি
জ্ঞেয়য়।

পুংবন্তাবে—স্থানা, স্থ্যা, ইত্যাদি রূপ জ্ঞাতব্য। ওদি ও ওদ্ — স্থানঃ, স্থ্যঃ।

লুনমিচ্ছতি—লুনীং, ক্ষামমিচ্ছতি ক্ষামাং, প্রস্তীমমিচ্ছতি—প্রস্তীমীং। এইরূপে নিপ্রন্ধ লুনী, ক্ষামী এবং প্রস্তীমী শব্দেরও পূর্ব্বোক্ত স্থা শব্দের তায় রূপ হয়, ওিদ এবং ওদ্বিভক্তিতেও লৃন্ত্যাং, ক্ষাম্যাঃ এবং প্রস্তীম্যাঃ ইত্যাকার রূপ হইয়া থাকে। (কৌ—৬।৪।৫)

खी-खी।

बी, बिर्घो, खिषः। खिषम्, खोम्; खिरघो, खिषः, खोः। खिषा, बीन्गाम्, बोन्धिः। खिरेष, बोन्गाम्, बीन्धः। खिषाः, खोन्गाम्, खोन्धः। खिषाः, खिरषाः, खोनाम्। खिषाम्, खिरषाः, खोष्। ८२ खि।

পরমন্ত্রী — ক্র্রা ('পরমা চাসো স্ত্রী চ' এইরূপ কর্মধারয়সমাদে)। পরমন্ত্রী, পরমন্ত্রিয়ো, পরমন্ত্রিয়া ইত্যাদি স্ত্রীশন্ধবং। (১০)

অতিস্ত্রি—পুং (প্রিয়মতিক্রান্ত: ইত্যাদিবাক্যে)।

অভিস্ত্রিং, অভিস্ত্রিয়ৌ, অভিস্তর্য়ং। অভিস্তিম্, অভিস্তির্য়, অভিস্তির্য়ে, অভিস্তির্য়া, অভিস্তির্যান, অভিস্তিত্রান, অভিস্তিত্রান, অভিস্তিত্রান, অভিস্তিত্রান, অভিস্তিত্রান, অভিস্তিত্রান, অভিস্তিত্রান, অভিস্তিত্রানা, অভিস্তির্যানা, অভিস্তির্যা

গ্রামণীশলঃ স্বভাবতঃ পুংস্তেব বর্ত্ততে গ্রামনগ্রনস্তোৎসর্গঃ পুংধর্মতয়া পদান্তরং বিন। স্তিয়ামপ্রবৃত্তেঃ। এবং ধলপ্রাদেরপি পুংধর্মত্বমৌৎসর্গিকম্। (কৌ—১।৪।৫)।

(১০) তৃণাতে ছু ইতি কতে টকারশ্য নদাদিবিশেষণার্থবাৎ ব্রিয়ামাপ্রতায়ে নদীঘে সতাপি ইয়াদেশবিষয়দ্বেন আম্ভবতোর্বিভাষয়া প্রাপ্রে শুমশস্কপ্রতায়েষ্ নিত্যনদীঘস্যাপ্রসিদ্ধবে প্রাপ্তে স্ত্রীনদীবদিতি বিধীয়তে।

কর্মধারয়ে তদন্তবিধিনা পরমন্ত্রী প্রভৃতিশব্দ: নদীশব্দবং।

হে অতিস্ত্রে, হে অতিপ্রিয়ৌ, হে অতিস্তমঃ। (কৌমূ—৬।৪।৮০ স্ত্র দেখ)। (১১)

অতিস্ত্রি—ক্লী। (প্রিম্বনতিক্রান্তং কুলমিত্যাদি বাক্যে)।
অতিপ্রি, অতিপ্রিণী, অতিস্ত্রাণি। এবং দিলীয়া। টাদৌ স্বরে পক্ষে
পুংবং। অতিপ্রিণা ২। অতিপ্রিভ্যাম্ ইত্যাদি। অতিস্তরে, অতিপ্রিণে।
অতিস্ত্রিণা, অতিস্ত্রেং,—।—অতিস্ত্রিণোং, অতিস্তির্মোং; অতিস্ত্রাণাম্ ২।
অতিস্ত্রিণি, অতিস্ত্রো; অতিস্তিণোং, অতিস্তির্মোং; অতিস্তিম্ব্। হে
অতিস্ত্রি, হে অতিস্ত্রে।

অতিন্ত্রী—ক্র্রা। (স্ত্রিয়মতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে)।

শতিস্ত্রী, অতিস্ত্রিয়ো অতিস্তিয়ঃ ইত্যাদি স্ত্রীশন্দবং। (কলাপাদিমতে)

পাণিনিমতে—'স্ত্রিয়মতিক্রান্তা' ইত্যাদি বাক্যে 'অতিস্ত্রি' ইত্যাকার

(১১) "গুণনাভাবৌদ্বস্থুড্ ভি: পরস্থাৎ পুংসি বাধ্যতে। ক্লীবে স্থমা চ স্ত্রীশব্দসেয়ঙিত্যবধার্য্যতাম্॥" " ওস্যৌকারে চ নিত্যং শ্রাদম্শসোস্ত বিভাষয়া। ইয়াদেশোহচি নাম্মত্র স্থিয়াঃ পুংস্থ্যপসজ্জনে॥" (কৌ—৬। ৪।৮০।)

ছুর্গমতে তু স্ত্রামতিক্রান্ত ইত্যর্থেইপ্রধানস্থাপি অতিস্ত্রীশবস্থা 'স্বরো ইয়োনপুংসকে" ইত্যত্র যোগবিভাগদামর্থ্যস্থেইবিষয়ত্বাৎ ওদোতোনি ত্য-ত্বেন হুম্বাভাবোহম্শদোর্ব্যিকল্পেন স্বীকৃত ইতি।

শ্রীপতিমতে ত্—''ওদোদ্দিতীয়াস্থ ন প্রিয়াং'' ইত্যানেন উপসজ্জন-ইপনিষেধঃ।

এতহভরমতাত্মনারেণ রূপানি ষথা—অতিস্ত্রিং, অতিস্তির্য়ে অতিস্তরেঃ। (অতিস্তিয়ঃ ইতি কেচিৎ) অতিস্তিম, অতিস্তাম অতিস্তিয়ম । (শ্রীপতিমতে ছ অতিস্তাম অতিস্তির্য় ইত্যেবেতি বিশেষঃ) অতিস্তির্য়ে, অতিস্তাম, অতিস্তাম, অতিস্তাম, অতিস্তাম, অতিস্তাম, অতিস্তাম, অতিস্তাম, অতিস্তাম, তেওি স্তিমি স্থামানিক স্থামা

হুস্ব ইকারান্ত শব্দ হয়, রূপগুলি প্রায়ই পুংলিঙ্গ অতিস্ত্রিশব্দের তুলা, বিশেষ—শন্—অতিস্ত্রী:। টা—অতিস্তিয়া। ঙে—অতিস্তিইয়, অতিস্তর্য়ে। ঙদি—অতিস্ত্রে:, অতিস্তিয়া:। এবং ঙদ্। আম্—অতিস্ত্রীণাম্। ঙি—অভিস্তিয়াম্, অতিস্ত্রো। (১২)

কুমারী—পুং। [কুমারীমিচ্ছতি, কুমারীবাচরতি বা ইত্যর্থে— বিন্ (কাচ্) অথবা আধি (কাঙ্) পরে কিবন্ত:]।

क्मात्री, क्मार्या, क्मार्याः । क्मार्याः, क्मार्याः, क्मार्याः, क्मार्याः, क्मात्रीन्याम्, क्मात्रीन्यः । क्मार्याः, क्मात्रीन्याम्, क्मात्रीन्यः । क्मार्याः, क्मात्रीन्याम्, क्मात्रीन्यः । क्मार्याः, क्मार्याः, क्मात्रीन्यः । क्मार्याम्, — क्मात्रीत् । (क् क्मात्रीत् । (क् क्मात्रीत् । (क् क्मात्रीत् । (क् क्मात्रीत् । (क क्मात्रीत्))

बी-खी।

শ্রীঃ, শ্রিয়ো, শ্রিয়ঃ। শ্রিয়ন, শ্রিয়ো, শ্রিয়া। শ্রিয়া, শ্রীভ্যান্, শ্রীভাঃ। শ্রিয়ে, শ্রিয়ে; শ্রীভ্যান্, শ্রীভাঃ। শ্রিয়াং, শ্রিয়াং, শ্রিয়াং, শ্রিয়াং, শ্রিয়াং, শ্রিয়াং, শ্রিয়াং, শ্রীয়া। হে শ্রীঃ। (১৬)

বিশেষঃ) অতিস্ত্রিণা ইত্যাদি একদেশবিক্বতস্থানন্তবস্তাবেংপি নদীয়া নাস্তি তত্ত্ব বংকরণস্থা সাদৃষ্ঠার্থসাং।

(১২) ব্রিয়মতিক্রান্তা ইত্যাদি ব্রিয়ান্ত প্রায়েণ পুংবৎ। ভিতি ব্রম্ব ক্রেতি ব্রম্বান্তথ্যফুলো বিকল্প:। অন্তাতি তু ইয়ঙুবস্থানাবিতাকৈর পর্যা-দাসাৎ তৎসম্বদ্ধকৈরামুব্রেদীর্ঘক্তায়ং নিষেধে। ন তু ব্রম্বক্ত ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুক্তামজন্তন্ত্রীলিকে। (কৌ—৬॥৪।৮০)।

6

9

130

পাণিনিমতে-ঈবাদিপ্রত্যয়ান্তশব্দানাং স্ত্রিয়ামপি উপসর্জনলকণো ব্রুষো ভবতি। ব্রুষে ক্রতেংপি পুনরিবাদিপ্রত্যয়ো নেয়তে। এবকৈ-তন্মতে নদীমতিক্রান্ত। ইত্যাদিবাক্যেংগি অতিনদিরিত্যেব শবং সম্পত্তে, বৃদ্ধিবদক্ত রূপাণি ভবস্তীতি।

(১৩) উপু মানে মানে মানে মানে ভারনে ছিল্লা ক্রিয়া ক্রিয়ার প্রকার করা বিষয় ব

অতিপ্রিক্রা। (শ্রিষমতিকান্তঃ কুলমিত্যাদি বাক্যে)
অতিশ্রি, অতিশ্রিণী, অতিশ্রীণ। ইত্যাদি।
অতিশ্রী—স্ত্রী। (শ্রিষমতিকান্তা ইত্যাদি বাক্যে)
অতিশ্রী, অতিশ্রিয়ো, অতিশ্রিয়া। ইত্যাদি শ্রীশন্ধবং। (১৪)
অতিশ্রী—পুং। (শ্রিষমতিকান্তঃ ইত্যাদি বাক্যে)
অতিশ্রী: ইত্যাদি শ্রীশন্ধবং।

13/8/80

বিভ্যানত নিত্যনদী হল্ত ক্রম্শন্কপ্রতায়েষ্ নিরাক্কতরাৎ ন দিলোপ
য়য়ো। তর্হি কথং "বিমাননা শ্বক্র কুতঃ পিতৃপূর্হে" "জাতা

য়ক্র মনোরমা তদবশে'তাাদৌ হে শ্বক্র ইতি কালিদাস-ক্রমট-ভর্ত্
য়রিপ্রয়োগাঃ? সত্যঃ, সমাসেহস্তীবচন এব আম্ভবদাশ্রয়া বিভাষা

ইতি মতেহস্তীবচনবিধিঃ প্রবর্তমানজন্ব্যার্ভিরপ্রস্তীবচন এবেতি

টীকাক্রতিবোক্তম্। "ন সমাসে পুংসি হ্রেষ্ব্নদী"তি প্রকারমতে

সামাজোপক্রমশ্বীকার এবেতি। প্রিয়মতিক্রাস্ত ইত্যর্থে স্ত্রীপ্রতায়ভিরত্বা

ন রমঃ। আম্ভবতোশ্চোপচারেণ নদীবভাবাৎ প্র্বেবদিতি তুর্গমতে।

শ্বীপতিমতে তু আমি ভবতি চ পুংবচনে নদীত্বং নাস্তি "ন সমাসে পুংসি

রম্বেয্ব্নদী"তি নিষেধাৎ। অম্শদোস্ত "সমানোহগ্রিবদম্শসো"

রিভানেন অগ্রিবভাবো নান্তি, "ব্রাগ্রিবিধির দিন্ধো মত্র চাপবাদাপ্রসক্ষত্ব
আয়ং বিধি"রিতি শ্রীপতিনোক্তত্বাৎ। তুর্গমতেহিপি অম্শসোরিত্যত্র

উপলক্ষণং ধাতৃভিয়বেন বিধাতব্যম্। শ্রিয়মতিক্রান্তা ইত্যর্বেহিপি তবৈব।

তিব্যাক্রমণ্ড বিভাবেন বিধাতব্যম্। শ্রিয়মতিক্রান্তা ইত্যর্বেহিপি তবৈব।

স্বিত্র

(১৪) যিমায্ত্তয়োরপূ্যপচারেণ শ্রীশব্দবৃহনীয়ন্। কশ্চিত্ত লক্ষীশব্দবং শ্রীশবাদিপ স্ত্রীপ্রত্যয়ং করোতি, তনতে নদীশব্দবং। তথাচ ''তাং দৃষ্ট। ইনিবায়াস্ত্রীক্রাক্ষানেতাইতাকিন্দী'ভিনিতি। মানাক্ষানেতাভালে, Haridwar

হ্রাপ্রভৃতি নিজ্যস্ত্রীলিক ধাত্বয়ব ঈকারান্ত সকল শব্দেরই শ্রীশব্দবং ব্যবস্থা।

नी-श्रः व्यथवा खी। (नी+किन्)

नीः, निर्धा, निष्धः। निष्ठम्, निर्धा, निष्धः। निष्ठा नीष्ठाम्, नीष्ठिः। निर्देश, नीष्ठाम्, नीष्ठाः। निष्ठः, नीष्ठाम्, नीष्ठाः। निष्ठः, निर्धाः, निष्ठाम्, निष्याम्, निष्ठाम्, न

উকারান্ত।

বি

र्ष

(

(9

(1)

প্র

পটু—वाठानित्र ।

পুং—পট্:, পট্, পটব:। পট্ম, পট্, পট্ন্। পট্না, পট্ভ্যাম্ পট্ভি:। পটবে, পট্ভ্যাম, পট্ভ্য:। পটো:, পট্ভ্যাম, পট্ভ্য:। পটো:, পট্যো:, পট্নাম্। পটৌ, পট্যা:, পট্যু। হে পটো।

ন্ত্রীলিস্থে— ঈপ্রতায় বিকল্পে হওয়ায় 'পটী,'ও 'পট্' ইত্যাকার
শব্দ হয়, পট্শব্দের রূপ নদীবৎ, পট্শব্দের রূপ ধেরুবৎ। কিন্তু ঙবদ্বচনে কোন মতে বিকল্পে নদীবদ্ভাব হয়, কোন মতে হয় না। (১৫)

ক্লীবলিক্সে—মধুবৎ, টাদিন্বরে বিশেষ—বিকল্পে পুংবৎ হয়।
মন্ত্র, বিষ্ণু প্রভৃতি পুংলিন্দ সমন্ত উকারান্ত শব্দেরই পুংলিন্দ পটুশব্দের তায় রূপ হয়।

সাধু—वाठालिञ्च। शरूवर वावका।

(১৫) যদা তু গুণযোগাৎ দ্রিয়াং বর্ত্ততে তদা উতো গুণবচনাদিত্যনেন বিভাষয়া ঈপ্রত্যয়ে পট্টাশন্তবং প্রয়োগঃ, ঈপ্রত্যয়ভাবপক্ষে
পুংবদিতি। অত্র কেচিৎ হ্রমণ্ড গুবতীত্যক্র পান্ধিকনদীবভাবত্বন
গুবতি বচনে পটি পটবে ইত্যাদি রূপদ্মং মন্যস্তে। কলাপাদিমতে—
আথ্যাগ্রহণশু নিত্যন্ত্রীবিষয়ার্থতাৎ নদীবদ্ধাবো নান্তীতি।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यधू—क्री। (পूष्णंत्रमार्र्य)

मध्, मध्नी, मध्नि। धवः विजीया। मध्ना, मध्जाम्, मध्जिः।
प्रश्न, मध्जाम्, मध्जाः। मध्नः, मध्नाः, मध्नाः, मध्नाः, मध्नाः, मध्नाः, मध्नाम्। मध्नि, मध्नाः, मध्नाः, मध्नाम्। मध्नि, मध्नाः, मध्याः, मध्नाम्। मध्नि, मध्नाः, मध्याः, मध्नाम्।

সাত্—ক্লী।

সান্থ, সান্থনী, সান্নি। সান্থ, সান্থনী, সান্নি, স্নি। টাদিসবের বিকল্পে প্ংবং—সান্থনা ২, স্বুনা ২, সান্থভ্যাম্, স্ভ্যাম্; সান্থভিঃ, স্ভিঃ। সান্থনে; সানবে, স্বুনে, স্ববে এবং সর্ব্বিত্ত। হে সানো, হে সান্থ। (পাণিনি) শসাদি বিভক্তি পরে সান্থশক্ষের স্থানে স্কু আদেশ হয়। বিকল্পে। (১৬)

थियरकार्के - क्री। (क्नानमण्ड-श्रियकार्ह)

विषरकाष्ट्रे, विषरकाष्ट्रेनी, विषरकाष्ट्रेनि এবং विशेषा। विषरकाष्ट्री, विषरकाष्ट्रेना २, विषरकाष्ट्रेनाम्, विषरकाष्ट्रेन्छः। विषरकार्ष्ट्रे,
विषरकाष्ट्रेर्त्, विषरकाष्ट्रेर्द्र्नः विषरकाष्ट्रेन्छाम्, विषरकाष्ट्रेन्छः। विषरकाष्ट्रेनः, विषरकाष्ट्रेः, विषरकार्ष्ट्राः; विषरकाष्ट्रेन्छाम्, विषरकाष्ट्रेन्छः

...विषरकार्ष्ट्राः, विषरकार्ष्ट्राः, विषरकार्ष्ट्रेनाः, विषरकार्ष्ट्रेनाम् विषरकाष्ट्रेनाम्। विषरकाष्ट्रेति, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेः,
विषरकार्ष्ट्राः, विषरकार्ष्ट्रेतः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकारकार्यः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्यः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्ष्ट्रेनः, विषरकार्यः, विषरकार्यः,

⁽১৬) 'লু: প্রস্থ: সাম্বন্তিয়ামিত্যমরোক্তে: সাম্শবস্থ পুংবস্তারে। ^{ছর্ত্যের}, পাণিক্স্পতায়াং রূপমালায়ান্ত পুংবস্তারো ন দৃশুতে।

^{* -8}

ধেনু—স্ত্ৰী।

(थक्ः, ८४न्, ८४नवः। ८४क्रम्, ८४न्, ८४न्। ८४वा, ८४क्छाम्, ८४क्छा। ८४वाः, ८४न्। ८४वाः, ८४न्।

दुव

4

इ

46

99

অতিধেনু—পুং। (ধেরুমতিক্রান্ত: ইত্যাদি বাক্যে)
অতিধেনু: ইত্যাদি, পুংলিঙ্গ পটুশন্ববং।

অতিধেনু—ক্লী। (ধেনুমতিক্রান্তং কুলম্ ইত্যাদি বাক্যে)

অতিধেন্ন, অতিধেন্ননী, অতিধেন্নি। এবং দ্বিতীয়া। টাদিষরে বিকল্পে পুংবং—অতিধেন্ননা ২। অতিধেনবে, অতিধেন্ননে ইত্যাদি।

লূ—পুং, অথবা স্ত্রা। (লূ + কিপ্ কর্তরি)

न्ः, न्दो, न्दः। न्दम्, न्दो, न्दः। न्दो, न्छाम्, न्छः। न्दः न्छाम्, न्छाः। न्दः, न्छाम्, न्छाः। न्दः, न्दाः, न्दाम्। न्दि न्दाः, नृद्। ८१ न्ः।

অতিল্ — পুং। (ল্বমতিক্রান্ত: ইত্যাদি বাক্যে)

ব্দতিলু: ইত্যাদি লুশন্ধবং। পূ, ধৃ প্রভৃতি শন্ধেরও এই প্রকার রূপ জাতব্য।

অতিলূ—স্ত্রী। (ল্বমতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে)
অতিলৃ: ইত্যাদি ল্শস্ববং।

षािं जू - क्री। (न्वमिष्कान्तः क्नम् हेष्णाित वात्का)

অতিলু, অতিলুনী, অতিলুনি, ইত্যাদি। টাদিম্বরে বিকল্পে পুংবং— অতিলুবা, অতিলুনা; অতিলুবে, অতিলুনে ইত্যাদি।—হে অতিলো, হে অতিলু।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

হুহু-পুং। (গন্ধর্ববাচক, অব্যুৎপন্ন)

इर्ड, इस्सो, इसः। इर्म्। इस्सो, इर्न्। इस्तो, र्ट्जाम् देजानि

অতিচমূ—পুং।

শতিচমৃ:, অতিচধৌ, অতিচম্:। অতিচমৃম্, অতিচমে, অতিচমৃন্।
শতিচমা ইত্যাদি। ওবতি—অতিচধৈ, অতিচমা: ২। অতিচম্নাম্।
শতিচমান্। হে অতিচমৃ:।

थलপূ-পूर व्यथवा खी।

थनभूः, अन्तर्भी, अन्भुः। अन्भुम्, अन्तर्भी, अन्भुः। अन्भा, रेडामि।

কটপ্ৰা—পুং অথবা স্ত্ৰী

কটপ্রা:, কটপ্রবা, কটপ্রবা:। কটপ্রবম্, কটপ্রবা, কটপ্রবা:। কট্রপ্রবা কটপ্রবে ইত্যাদি।

মিত্রভূ-পুং (মিত্রভূ + কি,প্)

मिखण्डः, मिखण्डदो. मिखण्डाः। मिखण्डम्, मिखण्डदो, मिखण्डाः हैणामि।

বৰ্ষাভূ—পুং ভেকবাচী।

^{বর্ধান্ত্}, বর্ধান্ত), বর্ধান্ত: ইত্যাদি। ওবতি—বর্ধান্তে ইত্যাদি। (১১) পুনর্ভ্ —স্ত্রা। প্রব্বৎ (কিপি পুনর্ভ্যৌগিক: প্রংদি—(কৌ

^(১৭) অনেকাক্ষরত্বাদ্ বত্বে প্রাপ্তে ভ্রবর্ষাভ্রিত্যাদিনা উবাদেশ:।

^{এবং ক্}মাভূ অতিভূ দোষাভূ দিবাভূ স্বভূ প্রভৃতীনাং রূপং ক্সেম্ম।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

শব্দরপ্-কল্পড়েমঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

পুনভূশব্বেরও বর্ধাভূ শব্বের আয় রূপ হয়। (ভেক্যাং বর্ধাভীত। কেচিদ্ ভেক্যামপি বর্ধাভূরিতি বদন্তি)।

দৃম্ভূ-পুং। (দৃষ্ডতীতি जन् मृष् जय, कर्षन् कर्षम् निधिव-तिज्राना नियालन व्रथ्या निष्ः)।

मृङ्ः, मृरख्ो, मृखुः। मृङ्ग्, मृरखो, मृङ्न्। পরে इह्रदर। (को ७।८।४)।

वर

48

व

र्षा

如

जन्

विश्

দৃন্ভূ-পুং। (দৃন্ ইতি নান্তে হিংসার্থেহব্যয়ে ভ্ব: किপ্) मृन्ज्ः, मृन्ज्ी, मृनजः देजामि थनश्वर।

করভূ, কারভূ—পুং।

করভূ:, করভে । করভ ঃ ইত্যাদি। এবং কারভূ: ইত্যাদি। (四一岁18168)1 (24)1

সয়ভূ-পুং।

স্বয়ন্ত্র্, স্বয়ন্ত্রে, স্বয়ন্ত্রঃ ইত্যাদি। দৃগভে এবং কারাভূ শব্দেরও স্বয়ভু শব্দের তুল্য রূপ হয়। (তুর্গমতে)

(३৮) वर्षाष्-श्रूनार्ड्। ख वर्षाय छव् विर्धा निरम्धार । ধাত্বম্বত্ত তৃ নতা অনতাক্ষ অম্শলোধ তিবিধিরিতি শ্রীপত্যুক্ততাদ্ বত্তমেব বোদবাম্। এবং দৃন্ভ্করভোরপি বত্বং "পুনর্বাদৃন্করাভুবः" ইতি শ্ৰীপতিস্ত্ৰেণ প্নভূশকভৈৰ কাৰ্য্যাতিদেশাৎ। এবং কারশকাদপি ৰছ-মেকদেশবিষ্ণতশ্তানগুৰদ্ধাৰাং। তথাচ—বিষ্ণতাদপি কারভো, কারভ ইতি চেষ্যতে, তেনৈবাক্তম্ টীকায়ান্ত দুন্করাভ্যাং ভূব: প্রতিবেধ ইয়তে ইত্যাহাক্তা মতাম্বরমিতি ব্যাশ্বহার, তন্মাদেতরতে উবাদেশ ^{এব} প্রমাণমিতি।

ष्ट्र—शू^९ वश्ता खी।

3 1

1

()

8

13

14

5

٩

ड्ः, जूरतो, जूरः। जूरम्, जूरतो, जूरः। जूरा जूरत हेजानि।
तथ्—द्वी । (नशां कि मर्ता य्नाम्, तथ + के, छेगां निक)।
तथ्ः, तर्थ्यो, तथ्यः। तथ्या, तर्थ्यो, तथ्ः। तथ्या, तथ्जाम्, तथ्जिः।
तर्थ्यं, तथ्जाम्, तथ्जाः। तथ्याः, तथ्जाम्, तथ्जाः। तथ्याः, तर्थ्याः,
तथ्नाम्। तथ्याम्, तर्थ्याः, तथ्युः। रह तथु।

অতিবধূ — পুং। (বধ্মতিক্রান্ত: ইত্যাদি বাক্যে)।

অতিবধৃং, অভিবধ্বৌ, অভিবধ্ব:। অভিবধৃম্, অভিবধ্বৌ, অভিবধ্বা, অভিবধ্বা, অভিবধ্বাম, অভিবধৃভি:। অভিবধ্ব, অভিবধৃভাাম্ ইত্যাদি। হে অভিবধৃ (১৯)

অতিবধু — ক্লী। (বধ্মতিক্রান্তং কুলম্ ইত্যাদি বাকো)।

অতিবধু, অতিবধুনী, অতিবধুনি ইত্যাদি। টাদিসরে বিকল্পে প্ৰেং—অতিবধৈৰ, অতিবধুনে ইত্যাদি।

তন্— স্ত্রী। (ভন+উ, ঔণাদিক) জ্ব: ইত্যাদি, বধুবৎ। (২০)

ভেকজাতো নিত্যস্ত্রীত্বাভাবাৎ হে বর্ষাভূ: ইতি কৈয়টমতে, অপর
মতে তৃ হে বর্ষাভূ। পুনন বায়ান্ত হে বর্ষাভূ।

(১৯) বধুমতিক্রান্ত ইত্যর্থে ইম্বাভাবে অতিবধ্রিত্যাদয়:। অতিবধ্নিতি উজ্জোহশু সমাধি:। অতিবধ্রিতি যত্তোপসর্জ্ঞনং নদী তত্তাপি
বিধিরমুমিতি শ্রপ্তি:।

(২০) Cera In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar তানবাধিভা ভারতি ওণাদিক-উপ্রত্যাত্ত তন্শ্রত

অতিতনূ—পুং। ('তন্মতিক্রাস্ত:' ইত্যাদি বাক্যে)
অতিতন্ত্র, অতিত্রো, অতিতব্য ইত্যাদি অতিবধ্বং।

অতিত্র-ক্লী। ('তন্মতিক্রান্তং কুলম্' ইত্যাদি বাক্যে)

অতিতন্ত্র, অতিতন্ত্রী, অতিতন্ত্রি ইত্যাদি। টাদিস্বরে বিকল্পে পুংবং—অতিতন্ত্রী, অতিতন্ত্রা, অতিতন্ত্রে, অতিতবৈ ইত্যাদি।

क—्यी । (बम+ ७ ; खेनानिक)

कः, क्रात्रो, क्रवः । क्रवम् क्रात्रो, क्रवः । क्रवा, क्राण्याम्, क्रिष्टः । क्रित्, क्रात्व हेष्णानि । षाम्—क्राग्य, क्रवाम् । डि—क्रवाम् क्रवि । इक्षः ।

ष

श्र

পর

गरि

न्य

অতিজ্ঞা—পুং। (ক্রবমতিক্রান্তঃ ইত্যাদি বাক্যে)

অতিজ্ঞা, অতিজ্ঞাবা, অতিজ্ঞাবা ইত্যাদি জ্ঞাবং। জ্ঞাবং সর্বা বিভূগিমতে। ভাষ্য ও প্রীপতিমতে—নদীবদ্ভাব হয় না, অতিজ্ঞাবে ইত্যাদি একটা একটা পদই হয়।

অতিভ্রু -ক্লী। ('ক্রবমতিক্রান্তং কুলম্' ইতি বাক্যে)

অতিক্র, অতিক্রণী, অতিক্রণি। টাদিখরে বিকল্পে পুংবৎ—অতিক্রণা, অতিক্রণা ইত্যাদি। অতিক্রণে, অতিক্রবে ইত্যাদি। হে অতিলো, হে অতিক্রা, হে অতিক্র। তুর্গমতে আমৃ ও ওবছচনে পুংলিঞ্চেও বিকল্পে নদীবং হওয়ায় নপুংসকলিঞ্চলেও টাদিখরে বিকল্পে পুংবৎনিবন্ধন আম্ ও ওবছচনে ৩টা করিয়া রূপ হইবে।

বধ্বং উপদক্জনস্থলে হস্বোন ভবতি। যে তু তন্মকাং গ্রিমান্ট-প্রত্যায়মিচ্ছন্তি তন্মতে উপদক্জনস্থলে গোস্ত্রীত্যাদিনা হস্বো ভবিতি, ততক্ষ অতিতন্মরিতি শব্দঃ সম্পদ্ধতে অস্ত পুংসি পটুবং গ্রিমাং ধেমুবং ব্রপাণি ভবন্তীতি। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

অতিজ্ঞা—স্ত্রী। (ক্রবমতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে)

चिंदाः हेल्यानि क्ववर । (२১)

कर्कक् - पूर्। (कर्क + धा + छेड्, खेनानिक)

कर्तकः कर्वस्ता, कर्वकः। कर्वस्म्, कर्वस्ता, कर्वस्न्। कर्वस्ना, कर्वस्न्। कर्वस्ना, कर्वस्न्। कर्वस्ना, कर्वस्नाम् देखानि। दिक्कनः।

অতিকর্কন্ধূ—স্ত্রী। (কর্কন্মতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে)
অতিকর্কন্ধঃ ইত্যাদি কর্কন্বং।

অতিকর্কন্ধু —ক্লী। (কর্কনুমতিকান্তং কুলম্ ইত্যাদি বাক্যে)

ষতিকর্কর্, অতিকর্কর্নী, অতিকর্কর্নি। টাদিস্বরে বিকল্পে পুংবৎ
—অতিকর্কর্না, অতিকর্করা ইত্যাদি।

কর্কন্ধূ—স্ত্রী। (ওণাদিক উপ্রত্যয়ান্ত)

वर्षमुः हेजानि ।

Ø

1

1

ত্ৰ

11,

٦,

19

8

5-

ē,

15

পরমলৃঃ, পুং। ল्+ किপ्। (পরমশ্চাসো ল্শ্চতি বিগ্রহে)

পরমল্ং, পরমল্বো, পরমল্বং। পরমল্বম্, পরমল্বো, পরমল্বং।

পরমল্বা, পরমল্ভ্যাম্ ইত্যাদি। হে পরমল্ং।

পর্মলূ—ক্ত্রী । (পরমা চাদৌ লুম্চেডি বিগ্রহে)

পরমলুঃ, পরমলুবৌ, পরমলুবঃ। পরমলুবম্, পরমলুবৌ, পরমলুবঃ
^{পরমল্বা}, পরমল্ভিঃ।

⁽२১) জাশবস্থা প্রধানস্থাপ্রধানস্থা চ শ্রীশব্দবং সর্বত্ত ব্যবস্থা।

গতিকারকেতরপূর্ব্বপদস্থা যত্তং বত্বঞ্চন ভবতি।

[্] স্পদানতে বাতপ্রমীহুহ্বাদেধ তুবদ্বা ইতি বিধানম্। হুহ্বাদৌ নিগ্রুশক্রশকৌ পঠিতো। শক্র শন্বেরও লগ্নহু শব্বের ন্তায় রূপ হয়। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ল [ন] গ্রহু—পুং। (স্থপদামতে)

লগ্নহং, লগ্নহো, লগ্নহং। লগ্নহাম্, লগ্নহ্ম্; লগ্নহো, লগ্নহ্ন্, লগ্নহা বিভাগিন।

পুনর্ভ্-পুং। (পুনর্ভবতীতি পুনর্ভ্+ি কিণ্ং)

প्रज्रें, भ्रेनर्ज्रे, भ्रज्ः हेणाि । भूनर्ज्।, भूनर्ज्णाम्, भूनर्ज्छः। ८६—भूनर्ज्ः। आम्—भूनर्ज्यम्। ७६—भूनर्ज्। (১)

হ্রস ঋকারান্ত।

পিতৃ-পুং।

পিতা, পিতরৌ, পিতর:। পিতরম্, পিতরৌ পিতৃন্। পিত্রা, পিত্ভাাম্, পিতৃভি:। পিত্রে, পিতৃভাাম্, পিতৃভা:। পিতৃং, পিতৃভাাম্, পিতৃভা:। পিতৃং, পিত্রোং, পিতৃগাম্। পিতরি, পিত্রোং, পিতৃর্। সম্বোধনে হে পিতং, হে পিতরৌ, হে পিতরা:। ভ্রাতৃ, জামাতৃ, দের প্রভৃতি শব্দেরও পিতৃশক্বৎ রূপ জ্ঞাতব্য। (২)

⁽১) "পুনভূর্দিধিযুক্ত। দিওখা দিধিষ্ পতি" রিতামরোক্তের্যদি চ পুনভূশিকা নিত্যপ্রীলিঙ্গন্তথাচ পুনর্ভবতীতি পুনভূরিতি ক্রিয়াশকা পুংলিকোহপান্ত।

⁽২) কার্য্যী নিমিন্তমিত্যাদিন্তায়াৎ গ্রাবিত্যক্ত পূর্ব্বনির্দেশে প্রাথে অর: পূর্ববির্দেশে যোগবিভাগার্থ:, তেন অরিতি প্রথমেনৈব দিকে ছিতীয়বিধানাদন্তারাপি কচিদর, তেন পিতরস্তর্পয়ামাদেতি দিছম। হে পিতরিতি আ চ ন সমৃদ্ধাবিত্যাকারয়োর্নিষেধাৎ অর, হ্রমলক্ষণ-দিলোপেহপি অকারক্ত প্রাপ্তি:, যদি হ্রম্বলক্ষণ: দিলোপস্তদাপি চকারভাষাচয়শিষ্ট্রাদিতি টীকাকারোক্তে:। কলাপ।

गृ-शूः।

ना, नरतो, नतः। नत्रम्, नरतो नृन्। नृ।, नृভ্যাম্, नृভিः। न् नृভ্যাম্, নৃভ্য:। হুং, নৃভ্যাম্, নৃভ্য:। হুং নােুঃ, নৃণাম্, নৃণাম্। নির্, নােুঃ, নৃষ্। হে নঃ, হে নরৌ, হে নরঃ।

মাতৃ—স্ত্রী (মান + তৃন্, নিপাত, প্রস্থতিবাচক)
মাতা, মাতরৌ, মাতরঃ। মাতরম্, মাতরৌ, মাতৃঃ। পরে পিতৃবং।

যাতৃ—পুং। (যত + अन्)

ষাতা, যাতরৌ, যাতরঃ ইত্যাদি পিতৃবং।

नमान्न् — खी।

ননান্দা, ননান্দরৌ, ননান্দরঃ ইত্যাদি মাতৃবৎ। এইরূপ ছহিত্ শন্দের রূপ জ্ঞাতব্য। (৩)

(৩) শশুরিবত্বায়ো ন ভবতি, তত্রাস্ত্রিয়ামিতি প্রতিষেধাদিতি বৃত্তিকারোক্তে:, ঈপ্রত্যয়ো নাস্ত্যেব তদ্গোত্যস্ত্রীবৃত্ত সভাবাৎ শব্দেনিবাভিহিতত্বাৎ, অতএব ঈপ্রত্যয়েন বিনা স্ত্রীবাভিধানাদিতি বৃত্তি:। ন চাতিমাতেত্যাদৌ দোষ ইতি বাচ্যং স্বভাবাশ্রমণাৎ, "ন ষট্স্প্রাদিভ্যাক্তে"তি পরস্তা নিষেধস্ত্রম্। এবং ননান্দ্রপ্রভৃতীনাং স্ব্রাদীনাঞ্চ সিভিয়ে য়্টি স্ব্রাদীনাঞ্চেতি আর্ বিশেষঃ, ন চ বৃয়ৎপর্লক্ষে নীপ্রভৃতীনাং ছজস্তুক্তব্বে নপ্ত্রাদীনাং নিপাতনীয়্বাৎ আদিগ্রহণমনর্থক্মিতি স্ব্রুক্তেতি বিদ্যাৎ, সংজ্ঞাশকানাং নিপাতানাং মধ্যে নপ্ত্রাদীনামেবেতি নিয়মন পিরোদিষারাদেশশু সার্থক্বাৎ। অত্র নিপাতানামিতি বিশেষণাং বিধারাদাবনিয়ম:। "অ্থাভ্যক্তা বিধাতারম্" ইতি রঘুকাব্যে।

গাৰ্গী মাতা যশু পুংস ইত্যৰ্থে, নদ্যদন্তাদ্বন্ত্ৰীহাবিতি কপ্ৰত্যম্বে গাৰ্গীমাতৃকশব্দো দেবশব্দবং। সম্বোধনে তু গাৰ্গীমাত ইতি বহুলতাৎক-CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar Digitized by Arya Samal Foundation Chemnai and eGangotri

कर्न्, (वाष्ट्रालिञ्ज, क्र + क्ष्ट् वा क्न्)

পং—কর্তা, কর্তারৌ, কর্তার:। কর্তারম্, কর্তারৌ, কর্ত্ন্। পরে

স্ত্রীলিঙ্গে ঈপ্প্রতয়ে 'কর্ত্রী' ইত্যাকার শস্ব হয়, নদীশন্ববং রূপ জ্ঞাতব্য।

অতিকর্ত্ত্রি — পুং 'কর্ত্রী মন্তিক্রান্তঃ' (ইত্যাদি বাক্যে)

অগ্নিবং রূপ জ্ঞাতব্য। (তুর্গমতে শদ্ ও ওবদ্বচনে বৃদ্ধিবং)

কর্ত্তৃ—ক্লী।

কর্ত্, কর্ত্নী, কর্ত্নি। এবং দ্বিতীয়া। টাদিস্বরে বিকল্পে পুংবং—
কর্ত্রা, কর্ত্না। কর্ত্তে, কর্ত্নে। কর্ত্তু:, কর্ত্নঃ; কর্ত্রো:, কর্ত্নো:;
কর্ত্বাম্। কর্ত্তরি, কর্ত্নি। সম্বোধনে হে কর্ত্ত্, (হে কর্ত্ত:, এপিতিমতে)।*

প্রত্যয়ভাবে অর সমুদাবিত্যকরণাৎ আ চ ন সমুদাবিত্যক আ অস্
চেতি ব্যাধ্যয়া পুত্রস্ততে ঋকারস্য অকারো ভবতি। প্রীপতিমতেংপি
সমুদাবিপি মাতৃক্স্য ঝদাদেরৎ পুত্রস্ততে সমুদাবিতি ঝদাদেরবয়বস্যাকারং। এবং বাৎসীমাতৃকাদীনামিপি।

* নপুংসকে হে কর্ত্ব, প্রীপতিমতে গুণোহপথ্যাদেরিতি গুণ-বিধানাদাত্বং নান্তি, অক্ষরতে নাম্যস্তানাং চত্রশ্চ পক্ষে তত্ত্ত্ত্বিত্যুক্ত-ত্বাৎ কথ্যাত্বং ন ভবতীতি পক্ষো ন যুদ্ধাতে নাম্যস্তানাং তত্ত্ত্ত্ত্ত্বরা-ম্যস্তমেবেতি পূর্বোক্তশ্রুতব্যাখ্যান্স্য বিভ্যানত্বাং।

কর্ত্বীতি। আছুটো ঘ্টি হরিতি সিদ্ধে যন্নাগমবিধৌ স্বরগ্রহণং তেনান্তরঙ্গমপ্যারং বাধিতা প্রাঙ্গ:। বস্তুতস্ত স্বরগ্রহণম্জিবাধানিরা-সার্থং পরতান্নাগমস্য সিদ্ধতাং। ন চ স্বস্বীনি ইত্যত্র পরতাং ঘুটি তৈ ইতি এতে ক্বতে দোষ ইতি বাচ্যম্, এতে স্বরো হ্রম্ব ইত্যাদিনা হ্রম্বতে দাতৃ, পাতৃ, মাতৃ, প্রভৃতি তৃচ্ প্রত্যহান্ত (বৌগিক) শব্বেরও কর্ত্শব্বের আয় রূপ হইয়া থাকে।

đ

নপ্ত, নেষ্ট্, অষ্ট্ ক্ষত্, হোতৃ, পোতৃ এবং প্রশান্ত্শকেরও কর্তৃ শব্দের নায় রূপ হয়।

অতিকর্ত্ত্—পুং (বর্তারমতিক্রান্ত: ইত্যাদি বাক্যে) অতিকর্ত্তা ইত্যাদি কর্ত্ত্বং।

অতিকন্ত্রী—স্ত্রী—(কর্তারমতিকান্তা ইত্যাদি বাক্যে)
অতিকন্ত্রী, নদীবং।

স্বস্-স্ত্রা (নিপাত)

খনা, খনারৌ, খনার:। খনারম্, খনারৌ, খনু:। পরে পিত্বং। অতিস্বস্স্—পুং (খনারমতিক্রান্তঃ ইত্যাদি বাব্যে)

অতিস্বসা, অতিস্বসারো ইত্যাদি। শস্—অতিস্বসূন্। পরে
স্বস্বং। অতিমাতৃ, অতিযাতৃ এবং অতিননান্দৃ প্রভৃতি শব্দেরও কেবল
দিতীয়ার বহুবচনেই অতিমাতৃন্, অতিযাতৃন্, অতিননান্ন্ ইত্যাদি
রপের পার্থক্য হয়,অন্ত সকল বিভক্তিতেই স্ব স্ব মূল শব্দের আয় রপ
হইয়া থাকে।

(क्षां हे - पूर (क् म + पून)

কোষ্টা, কোষ্টারো, কোষ্টার:। কোষ্টারম্, কোষ্টারো, কোষ্টুন্। কোষ্টা, কোষ্টুনা; কোষ্টুভ্যাম্, কোষ্টুভি:। কোষ্ট্রে, কোষ্টবে; কোষ্টুভ্যাম্, কোষ্টুভ্য:। কোষ্টু;, কোষ্টো:; কোষ্টুভ্যাম্, কোষ্টুভ্য:।

শিদ্ধমেতৎ সর্বাং টীকাকৃতা প্রপঞ্চিতমিতি। সম্বোধনে, হে কর্তৃ ইতি পাণিনিসম্মত্যা তত্ত্ব হ্রমনদীতি স্ত্রে টীকাকৃত্দাহতবান্। শ্রীপতিমতে প্র্নোক্তস্ত্রেণ গুণে হে কর্ত্তবিত্যপি। কেচিত্ত অর্ডাবিতি যোগবিভাগাৎ CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangr Collection, Haridwar

क्लां हुं:, क्लारहाः; क्लारहाः, क्लारहाः; क्लां हुं नाम्। क्लां हेति, क्लारहाः; क्लारहाः; क्लारहाः क्लां हुं म्। दह क्लां हो, दह क्लां होति, दह क्लां होतः। (8)

হে কর্ত্তরিত্যক্তৃ শীপভিদত্তখ তুল্যভানাছ:, কর্ত্তারমাচটে ইতি কারয়তি ধাতোর্কিহিতখ তুশক্ষ লোপ ইত্যক্তে:। এবং হর্ত্পভৃতীনামপি।

'(৪) কুশধাতো: "দিতনী" ত্যাদিনা তৃজপবাদেন তুনা কুটু শব্দো
মুগবাচী স্ত্রীপুংলিক্তপ্ত তৃজং ক্রোষ্টু স্ত্রাসম্বিদ্ধে তিনিক্ত তৃজং ক্রোষ্টু স্ত্রাসম্বিদ্ধিত্যনেন রূপাতিদেশাৎ পাণিনিমতে তৃজাদেশ:। শ্রীপতিমতে তৃ 'ক্রেশস্তরাসম্বিদ্ধিনী' রিত্যনেন। হুর্গমতে তৃ ক্রেশস্তন্ ঘুটি স্তিয়াং নাস্ত্যোণাদিকত্মাদিত্যুক্তেঃ তৃজন্তপ্রকৃতি ত্রি স্তিয়াং বিষয়ে স্বভাবাম গাভিধায়িনী।
তৃতীয়াদিস্বরে তু বিভাষয়া "তৃতীয়াদিস্বিচি" 'বা টাদৌ স্বরে"
ইত্যেতাভাাং পাণিনি-শ্রীপত্যোশিতে বিভাষয়া তৃজাদেশ: অন্তর তুনন্তঃ।

ত্র্য তু শ্বাদে তু ত্জন্ত তুনন্ত চ প্রয়োগ ইত্যুক্তে:
"বাসরপোহস্তিয়া" মিতি ত্চি চোভয়ো: প্রকৃতি:। ন চ শ্বি ত্চঃ
প্রয়োগো দৃষ্ট:, পাণিনিশ্রীপড্যোরনঙ্গীকারাং। ভাষায়া বৃংপাদকস্য
চন্দ্রগোমিণ: স্বীকারস্য সন্থাং, কেচিত্রু শ্ব্ এবাদির্যন্ত ইতি বহুত্রীহিণা
অতদ্পুণ-সংবিজ্ঞানেন টাদেরভিহিতত্বাং তয়ো: সমান: মত্মিতি ক্রবতে,
তত্তু নাতিরম্যম্। যস্ত বিভাষয়া তৃতীয়াদিবচীত্যাহ, তয়তে শ্বি
নিতাং ক্রোষ্ট্রিতি টীকারুংপঞ্জীকৃতোরস্বর্বাদিতি লক্ষ্যতে। এতয়তে
ব্যক্তনেহপি তৃচ: প্রয়োগ ইতি মন্ততে।

যস্ত স্থাবাং তৃজন্তো মুগবাচী তশ্য ব্যঞ্জনেহপি কো নিবারন্ধিতে-ত্যাহ—শ্সাদাবিত্যাদীতি টীকান্ধাম্ক্তত্বাং। যতু স্বর ইত্যধ্যাহার্যামিতি তিলোচনেনোক্তং তদপি মতান্তর্মিতি, ক্রুশস্ত্রিত্যনেন সম্ব্রুবিপি বিষয়ে তৃচি প্রাপ্তে সমৃদ্ধৌ নপুংসকাং শুমোর্লোপে চ দৃশতে তুন্-প্রত্যন্ন ইতি বক্তব্যান্তরম্। ন চাত্র নপুংসকাং শুমোর্লোপে চ ইতি ব্যুর্থং ত্ত্রা-CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

1

শব্দরপ্-কল্পড়েমঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ক্রোষ্ট্ —পং (ছর্গিসিংহমতে) কুশ + ভূচ্)

ক্রোষ্টা, ক্রোষ্টারৌ ইত্যাদি। শদ্—ক্রোষ্ট্রন্, ক্রোষ্ট্রন্। টা—ক্রোষ্ট্রা জোষ্ট্রা। ভাাম্—ক্রেষ্ট্ ভাাম্, ক্রেষ্ট্ ভাাম্ ইত্যাদি। আম্—ক্রেষ্ট্ नाम् क्लाहे नाम्। इप्-क्लाहे म् क्लाहे म्।

গৃট্থাদেব তুনঃ সিদ্ধাবিতি দেশ্যম্ অন্তর্কর্তিনং ঘুটমাপ্রিত্য বহুকোই वनिम्लादि जृहः প্रारथः।

. নচৈবং বহুকোষ্টুভ্যামিত্যাদৌ দোষ ইতি। স্থিতাস্থিতয়ো: স্থিতো বিধিৰ্বলবানিতি ভায়েন তুন: প্রয়োগাৎ, বছক্রোষ্টু বনমিত্যাদৌ তু ষ্য়োরেবাবস্থিতত্বেন বিধিনিষেধয়োর্বিধের্বলবত্বেন তৃচ: প্রাপ্তৌ তুন্ দৃখত ইত্যক্তমিতি কবিরাজমতম্। সাগরস্ত চকারাদ্যাত্রাপি, তেন বহুজোষ্টুভ্যামিভ্যাদৌ তুনঃ প্রয়োগ এব। অথৈবং ''শৃগাল-বঞ্চক-জোষ্টু-ফেক্স-ফেরব-জম্ব্কা:" "জম্ব্কৌ ক্রোষ্ট্রবরুণা" বিত্যাদৌ তৃচ: প্রয়োগঃ স্যাৎ অন্তর্কর্তিঘুট্তাৎ। আদেশবাদিনান্ত মতে, প্রকৃতিশ্চ ষরান্তস্যেতি প্রকৃতিবদ্ধাবাৎ নান্তি দেখাম্ ? সত্যং তুনস্তপ্রকৃতিবাদিনে। মতমাপ্রিত্যামরেণোক্তম্। কেচিত্ত শৃগাল-বঞ্চেত্যাদৌ সমাহারং বিধায় নপুংসকে তুনং ক্বতা পশ্চাৎ সম্দায়ে ইতরেতরযোগ ইতি শ্মাদ্ধিরে। এতত্ত্বাতিপেশলং যতঃ 'প্রায়শো রূপভেদেন' ইত্যুক্তেন ^{অয়াণাং} নপুংসকযোগো তুর্নিবার:। কোটুবরুণাবিত্যত্ত দ্বণসন্ধাচ্চ ইতাস্মদ্গুরুচরণা:।

ষধ পঞ্জি: কোষ্ট্ভি: ক্রীতং পঞ্জোষ্টু ইত্যক ইকণ্ তদ্বিতস্য দিগোলুগণপড্যে স্বরাদেরিতি তদ্ধিতলুকি স্ত্রীপ্রতায়দ্য লুগনাদি-ণ্কাগোণীসচ্চোরিতি স্ত্রীপ্রত্যমন্কি নপুংসকাৎ স্যমোর্লোপেহিপি কথং ত্ন্ প্রতায়ঃ ? সতামত্রাশাদ্ভরবঃ সমুকৌ বিষয়ে ঘুড়্বিষয়ত্বমাশ্রিতা তৃচঃ থাথো তুন্ দৃশত ইত্যুক্তং, তৎসাহচর্যাৎ নপুংসকাৎ স্যমোর্লোপেইপি

मोर्च-श्ला-काजान्छ।

खू,-शूः।

खू, उद्यो, उद्दा। खूम्, उद्यो, खृन्। ज्ञाः, खृ छा। म् हे छा। नि। (०)

যত্র ঘুড় বিষয়ে তৃচঃ প্রাপ্তিযোগ্যতা, তত্ত্বৈর তুন্ মন্তত ইতি, অত্র তু স্ত্রীপ্রতায়মাশ্রিত্য ইত্যাচক্ষতে। অলং পল্লবিতেনেতি।

কোষ্টু নিতি। পাণিনিশ্রীপতিমতে কোষ্টু নেব তথাচ কোষ্টু নিতি
অপাণিনীয়ত্বাদশাকটায়নীয়ত্বাচ্চ নাদৃভমিতি। পাণিনিমতে ব্যঞ্জনে তৃ
কোষ্টু ভ্যামিত্যাত্মকমেব। আমি তৃ কোষ্টু নামিত্যেব ব্যঞ্জনবিষয়ত্বাং
তৌমক্তেতে। তথাচ কোষ্টু নামিত্যাদেশাদাগমবিধির্ম্বলবানিতি শ্রীপতি:।

ষদা তু ক্রোষ্টুযোগাৎ অরণ্যমপি তথোচ্যতে, তদা স্বরেহপি নপুং-সকলক্ষণবাগমে ব্যঞ্জনবিষয়ত্বাৎ তুনেবেতি।

বহব: ক্রোষ্টারো যদ্য পুংস ইত্যর্থে বহুক্রোষ্টা পুমানিত্যাদি পূর্ব্ববং।
বহুবীহার্নন্তলক্ষণ: কো নান্তি, তত্র বহুলত্বাদিতি ভাব্যম্। আদেশবাদিমতে অসিদ্ধবদ্ভাবাৎ স্তিয়ামপি পূর্ব্ববং দিদ্ধিঃ।

নপুংশকে প্রিয়কোষ্টু ইত্যাদি। তুর্গমতে জন্শদো: প্রিয়কোষ্ট্ শি ইতি অত্রাবয়বদম্দায়বৃড় বিষয়ে সম্দায়বৃড় বিষয় এবাদেশে। নাবয়বঘ্টি তত্র প্রতায়লোপলক্ষণদ্য প্রবৃত্তে য্বাবৈন্মঘবদর্ষৎস্বের প্রতায়বদিতি নিয়মেন বাধিত্যাদিতি তর্কাচার্যমতম্। দাগরস্ত বৈষয়িকে প্রতায়-লোপলক্ষণং নান্তি, যত্তকীক্রিয়তে তলা 'প্রকৃতিশ্চে'তি স্ত্রমনর্থকং দ্যাদিত্যাচষ্টে। গুরবস্ত য্বাবাদীনাং ব্যঞ্জনান্তপ্রকৃতিবাৎ তাদ্শেষেব নিয়মব্যার্ত্তিঃ স্বরান্ত্রোনিষ্ 'প্রকৃতিশ্চে'তি দার্থক্মিত্যান্তঃ। এবং দিতীয়ায়াং টাদৌ তু পুংবন্তাবাদ্ রূপদ্মমবগস্তব্যম্।

(৫) "সমানোহগ্রিবদ্যশদো' রিতি অমি শাসি চ অগ্রিবং। এব-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(ē

मतः भिर

ना दर

7(

TC

হে

श:

गम्

ा श्रम

হে

অতিস্কু কি (স্মৃতিকান্তং কুলমিজ্যাদিবাক্যে) অভিন্ত, অভিন্তৃণী, অভিন্তুণি। এবং দিতীয়া (৬)

৯কারান্ত।

৯-পুং

२:, (नो, न: । नम्, (नो, ३न् । ना. २७)। म हेजानि । (३ जन (इ নৌ, হে অল:। গম্ শক্ত প্রভৃতি শদেরও এর প রপ। সংঘাধনে অল विद्यव। (१)

गलियामि श्वानशानाः (छायम। युजकात्रमा व्यामाना निर्वा १५-মিতাত অমগ্রহণং মন্দমতিবোধনাথৈব, অন্তথা শসি তাবদস্ত অগ্নিবত্বং নান্তি, অভোহমাপি ন ভবিষ্যতীতি প্রতিপত্যেরন্নিতি, তথাগ্নিবচ্ছসীত্যাদি दनाभगिका।

- (৬) অতিস্ত কুলমতি "হরো হ্রো নপুংদকে ইতি" হ্র:। টাদৌ ষরে বিভাষয়া পুংবং। অভিন্তা, অভিন্তণ। ইত্যাদি।
- (१) এবং গমন শকন প্রভৃতীনামপি। সম্বোধনে "নতঃ সম্বৃদ্ধি জ্বসোরলি-गाउ" रेज़ारकः जन । यथा ८२ जन, ८२ तो, ८२ जनः। ८२ गमन, (र ग्राप्ती, ८र गमनः। ८२ मकन्, ८२ मह्मी, ८२ मकनः।

পাণিনিমতে—ঋ >কার্য্যোঃ সাবর্ণাৎ গম্ম শক্ষ্য অন্যোর্ত্তকরণে ৰহ্শনেতি অন্ত ভবতি। গমা। শকা। গুণবিষয়ে তুলপরতম্। गमलो, गमनः। गमलम्, गमलो, गमृन्। व्दर्शक मीर्घाणावार প্রথময়োরিতি যঃ পূর্কস্বর্ণীর্ঘ: স্ক্রবর্ণ স্থানে ঝকার এব। গ্রা। ^{গম্}ন্ত্যামিত্যাদি। ঙসিঙনোস্ত ঋত উদিত্যুত্তে লপরতে সংযোগাস্তস্থ লোপ:। গম্ল, শকুল ইত্যাদি। ভৌতু ঋতো ভীতি গুণো লপর:। गम्नि, गामाः, गम्न्य्। এवः भक्न्भारकश्राक्म्। मासाधान एक गमन्, ^{(হ্} গম্লে), হে গম্ল:। (৬,৪।৬। সি, কৌ,)। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीर्घः का बाख।

इ-श्

इ:, त्नी, न:। इस्, त्नी, इत्। ना, इन्डाम् हेजािम। (৮)

একারান্ত।

দে—পুং অথবা স্ত্রী।

রা

রা

द्र

व

भी

刑事

तः, नत्त्रो, नग्नः। नग्नम्, नत्त्रो, नग्नः। नग्ना, त्नाम् हेणानि। मत्त्राधत—त्हतन।

সে—পুং অথবা স্ত্ৰী

সেঃ, সংশ্বী, সন্ধঃ। সন্ধ্যু, সংশ্বী, সন্ধঃ। সন্ধা, সেভ্যাম্ ইত্যাদি।
সংখাধনে—হে সে। (১)

- (৮) এবং গম্ঃপ্রভ্তয়োহপি জ্বো:। পঠিত-শক্ঃ উচ্চারিত-শক্ঃ প্রভৃতীনাং বাচ্যলিদ্বেন স্ত্রীপুংসয়ো: পূর্ববং। প্রায়েণ নপুংসকে প্রয়োগঃ তক্র দীর্ঘস্থানে হ্রম্ব: সর্বক্র রাগমো বিশেষঃ, কেবলমামন্ত্রণে হ্রম্ব-কারস্য নতঃ সম্ব্রিজসোরল্" ইতি অল্। সক্ঃ ইতি দন্ত্যোহপি।
- (৯) দেবতে: দেবতেন্চ বিচি বলোপে দে সে ইতি রূপম্। সংখাধনে "এদোন্তাং লুক্ সমুদ্ধে" রিতি সিলোপ:। টীকাকারস্ত বাস্তান্ধাতোবিচ্ অপ্রমাণমিত্যুক্তা স্ত্রমিদং প্রত্যাচষ্টে। মহাংশ্চাসাবিশ্চেতি মহে: ইত্যাস্যাপি প্রবিৎ প্রয়োগ:। সমুদ্ধে: পূর্বেণেব লোপ ইতি প্রীপতিমতে। ফুগমতে তু ভূতপূর্ব্বগত্যাপ্রমণাৎ "হ্রম্বনদী" ত্যাদিনা সিলোপ:। কেচিৎ "গোশ্চ" ইত্যত্র গুণোপলক্ষণত্বাৎ এষাং ঙিসিঙসোরলোপে দেরিত্যাদিক-মান্তিম্বন্থে, নেদং ফুগপ্রীপত্যো: সম্মতম্। বাম্যেতি স্ত্রানর্থক্যভিয়া উপলক্ষণব্যাধ্যানানাদরাৎ। তথাচ টীকাকার:—"সর্ববর্মা তু বাম্যেতি স্ত্রং বিদ্ধত্পলক্ষণব্যাধ্যানং ন মন্ত্রতে" ইত্যুক্তবানিতি।

ঐকারান্ত।

देत-शूः।

রাং, রায়েঃ। রায়ম্, রায়েঃ, রায়ঃ। রায়া, রাভ্যাম্, রাভিঃ। রায়ে, রাভ্যাম্, রাভ্যঃ। রায়ঃ, রাভ্যাম্, রাভ্যঃ। রায়ঃ, রায়োম্। রায়ি, রায়োঃ, রাস্থ। হে রাঃ।

অতিরৈঃ—পুং অথবা স্ত্রী।

রাষ্মতিক্রান্তঃ অথবা রায়মতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে অতিরৈশক্ষের রৈশন্বৰৎ রূপ হয়।

অতি-ব্লি—ক্লী (রায়মতিক্রান্তং কুলমিত্যাদি বাক্যে) অতিরি অতিরিণী, অভিরীণি এবং দ্বিতীয়া। টাদিস্বরে পুংবদ্বা—অতিরায়া, অতিরিণা ইত্যাদি। অতিরাভ্যাম, অতিরাভি: ইত্যাদি।

উপ-ব্লি—ক্লী (রায়: সমীপমিত্যর্থে অব্যয়ীভাবে উপরি, উপরি, উপরি। এবং সর্বাত্ত। (১০)

ওকারান্ত।

গো—পুং, স্ত্রী (গম্+ডো)।

शीः, गारवो, गावः। नाम्, नारवो, नाः। नवा, त्नानाम् हेणानि।

⁽১০) একদেশবিক্বজন্তানন্তবস্তাবাদ্ ভ্যাম্প্রভৃতিষ্ আত্বং বোধ্যম্।

^{দাকাদ্}বিভক্ত্যভাবাৎ উপরিশব্দস্তাত্বং ন স্থাৎ। বৈশব্দো ধনার্থকঃ।

মাধবমতে অতিরিশব্দো ভাষিভপ্ংস্কো ন ভবতীতি দিদ্ধান্তকৌম্ম্যাক্ষ।

অতিরিণেত্যাদি টাদিস্বরে একৈকমেব রূপং প্রদর্শিতম্।

(<u>CC-0</u> In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

৬৬ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

অতিগু-পুং (গামতিক্রান্তঃ ইতি বাক্যে)

অতিগুঃ, অতিগৃ, অতিগবঃ। পটুবং। গামতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে ধেমুবং সাধ্য, কিন্তু নদীবদ্ভাব হয় নাও। নপুংসকে—-অতিগু,অতিগুনী, অতিগৃনি ইত্যাদি। টাদিস্বরে বিকল্পে পুংবং।

গো—স্ত্রী (হ্যুত+ডো)।

জো:, ভাবৌ, ভাব:। তাম্, ভাবৌ, ভা:। দ্যবা, ভোভাাম্ ইত্যাদি। (১১)

মহো—পুং (মহাংশ্চাসাবুশ্চেতি সমাদে)

মহো:, মহবৌ, মহবঃ। মহামৃ, মহবৌ, মহাঃ। মহবা, মহোভাামৃ, মহোভিঃ। মহবে, মহোভাামৃ, মহোভাঃ। মহোঃ, মহোভাাম্ ইত্যাদি। সম্বোধনে—হে মহো। স্বভো প্রভৃতি শব্দেরও এরপ রপ হয়। (১২)

ভট্টোজীদীক্ষিতমতে—মহোঃ, মহাবৌ, মহাবঃ। মহাম্, মহাবৌ,
মহাঃ ইত্যাদি গোশব্দের ভাষ।

প্রকারান্ত।

लि-खी।

त्नोः, नारवी, नावः। नावम्, नारवी, नावः। नावा, त्नीन्ताम् हेलामि।

- স্তিয়ামপি অতিগুরিত্যাদি ধেয়বদ্রপং, কিন্তু নদীবদ্তাবো নান্তি।
- ্রে (১১) ভৌরিতি গোরপলক্ষণতাদৌত্ম। তথাচ গোরপলক্ষণ ভোরেবেতি গোগুবোরিতি সংগ্রহকারবচনম্। ভোশবঃ স্বর্গার্থকঃ।
- (১২) শিদি মহাঃ ইতি তথাচাম্শদোরাত্বে ত্বোদস্তমাত্রোপলকণমাশ্রমীয়মিতি। মহোরিতি গোশ্চ ইত্যত্র গুণোপলকণমিতি। উপলকণব্যাখ্যানস্ক মতাস্তরমিতি। তুর্গশ্রীপত্যোর্যতে অমি—মহবম্, শিদি—
 মহব:। উদিউদোরপ্যেবম্। সম্বোধনে—হে মহো।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

7:

हेर

शांट

नूगं. क्रभ

र्य ।

চিত্ৰ

ইতি

श्रक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri অতিনো—পুং অথবা স্ত্রী (নাবমতিক্রান্তঃ স্পতিক্রান্তা বা ইত্যাদিবাক্যে)—অতিনোঃ ইত্যাদি নৌশস্ববং।

অতি মু — ক্লो (নাবমতিক্রান্তং কুলমিতি বাক্যে)— অতিহা, অতিহানী, অতিন্নি। এবং দিতীয়া। টাদিধরে বিকল্পে গুবং। অতিহানা, অতিনাবা ইত্যাদি।

79

t.

4

1

1

3 1

q:

9-

9-

মাধবমতে পুংবৎ হয় না, অতিহানা ইত্যাদি একটিনাত্ত পদ হইরা

কান্ত।

लूक्- शूः (लून ह् + किश्)

লুক্, লুগ ; লুকে), লুকঃ। লুকম্, লুকে) লুকঃ। লুকা, লুগ ভাাম,
নুগ ভিরিত্যাদি। স্থ — লুক্, লুথ বৃ। অভাভ কাত শ কেরও এরপ
রগ হয়। (১৩)

পৃথক্—(অব্যয়)

পৃথক্, পৃথকং। ধিক্ প্রভৃতি কান্ত অব্যয়শব্দের ঐপ্রকার রূপ ^{ইয়}। (১৪)

थांछ।

ठिळिलिथ्—वाठालिङ ।

খ্রং—চিত্রলিক্, চিত্রলিগ্; চিত্রলিপৌ, চিত্রলিখ: ইত্যাদি। ত্বিলিগ্ভ্যাম্, চিত্রলিগ্ভিরিত্যাদি। ত্বপ্—চিত্রলিক্ (চিত্রলিথ ষ্)

(১৩) गुक् रेजि ग्राकः किल ग्राह्मानियार कष्म।

(১৪) পৃথকৎ ইতি কান্তাব্যয়ানাং পক্ষে অক্ প্রত্যয়:, "কন্তোহকি" ইতি শ্রীপতিস্ত্রেণ কন্স তত্বম্। তুর্গমতেহিপি 'শ্রেসিধ্বসোশ্চে' ত্যনেন শ্রেধিক্যোগাকরণাৎ কন্স তকারত্বে পৃথকৎ পৃথক্ ইত্যাদি।

खोलिएम्-भूश्वर । क्रीनिट्न विराग्य, खे-िहज्जनियो । जम्, मम्-हिज्जनिन्धा

গান্ত।

অগ্—বাচ্যলিঙ্গ। (অগ্+ কিপ্)

পুং—ক্সী—অক্ অগ্; অগৌ, অগঃ। অগম্, অগৌ, অগঃ। অগা, অগ্ভ্যামিত্যাদি।

क्रीविलास्त्र विश्व - खे- ज्यो। जम् मम्- जिल्ला

যান্ত।

অঘ্—বাচ্যলিঙ্গ। (অঘং করোতি অঘ+ নিচ্+ কিপ্)।
পুৎ—ক্সী—অক্, অগ্; অঘৌ অঘা। অঘম্, অঘৌ, অঘা।
অগা, অগ্ভ্যামিত্যাদি।

क्री-७-वरी। जम्, गम्-विष्य।

ঙান্ত।

वाड्-श्रा

অঙ, অঙৌ, অঙঃ। অঙম, অঙৌ অঙঃ। অঙা, অঙ,ভ্যামিত্যাদি। স্থা—(অঙক্, অঙ্মৃ) অঙ্মৃ।(১৫)

⁽১৫) "ঙ্গোঃ কটাবস্তৌ" ইতি শ্রীপতিস্ত্রেণ বিভাষয়া ককারাগমঃ। "ভদ্বংপঞ্জস্থাস্তাঃ" ইতি শ্রীপতিস্ত্রেণ ষত্ম।

চান্ত।

वाह - शूर (खत्वा हो)।

অচ্, অচৌ, অচঃ। অচম্, অচৌ, অচঃ। অচা, অজ্ভাাম্ ইত্যাদি। ত্ব্---অচ.শু। (১৬)

वाठ्-छी (वठ्+किश्)।

বাক্, বাগ ; (বাক্, বাগ গ ু); বাচৌ, বাচঃ। বাচম্, বাচৌ, বাচঃ। বাচা, বাগ ভ্যাম্ ইত্যাদি। স্থপ — বাক্ (বাধ ্ৰু)।

প্রান্চ — (প্রাচ, মু) পুং। (প্র+অন্চ্+কিণ্, গতার্থ) প্রাঙ্, প্রাকৌ, প্রাকঃ। প্রাকম, প্রাকৌ,, প্রাচঃ। প্রাচা, প্রাগ্-ভাাম, প্রাগ্ভিঃ। প্রাচে, প্রাগ্ভ্যাম্ প্রাগ্ডাঃ। প্রাচঃ, প্রাপ্ভ্যাম্, প্রাগভাঃ। প্রাচঃ, প্রাচাম্। প্রাচি, প্রাচোঃ, প্রাক্ষ্। হে প্রাঙ্।

পূজার্থে—

প্রাঙ্, প্রাফৌ, প্রাক্ষঃ। প্রাক্ষম্, প্রাফো, প্রাক্ষঃ। প্রাক্ষা, প্রাঙ্ভাাম্, ভাাম্, প্রাঙ্ভিঃ। প্রাকে, প্রাঙ্ভাাম্, প্রাঙ্ভাঃ। প্রাক্ষঃ, প্রাঙ্ভাাম্, প্রাঙ্ভাঃ। প্রাকঃ, প্রাফোঃ, প্রাকাম্। প্রাকি—প্রাঙ্ক্। হে প্রাঙ্।

ক্লী—(গত্যর্থে) প্রাক্, প্রাগ্; প্রাচী, প্রাঞ্চ। ইত্যাদি

ক্লী—(পূজারে) প্রাঙ, প্রাঞ্চী, প্রাঞ্চি। এবং দিতীয়া। প্রাঞ্চী, প্রাঙ্ভ্যাম্ ইত্যাদি। স্থশ্—প্রাঙ্যু, প্রাঙ্কু। স্ত্রীলিকে (গত্যর্থে) প্রাচী (প্রার্থে) প্রাঞ্চী, ইত্যাকার শব্দ, নদীবং রূপ। (১৭)

⁽²⁶⁾CC-6.州博斯尼亚湖南省的, 爱顶家、斑 Kang即C机能纸tibn, Haridwar

প্রতান্চ — (প্রতাচ , মু) পুং (গতার্থ)
[প্রতি-অন্চ + কিণ]।

প্রতাঙ, প্রতাঞ্চী, প্রতাঞ্চ: । প্রতাঞ্চম প্রতাঞ্চী, প্রতীচ: । প্রতীচা, প্রতাগ্ভাগাম্, প্রতাগ্ভাগাম্, প্রতাগ্ভাগাম্, প্রতাগ্ভাগাম্, প্রতীচাম্। প্রতীচঃ, প্রতীচোঃ, প্রতীচাম্। প্রতীচি, প্রতীচোঃ, প্রতাক্ষ্। হে প্রতাঙ্ ।

পূজার্থে--

পুথ—প্রতাঙ্ইত্যাদি, ও পর্যান্ত গতার্থবং। শন্—প্রত্যক্ষ:।
টাদি—প্রতাঞ্চা, প্রতাঙ্জ্যান্ ইত্যাদি পূজার্থ প্রান্চবেং। স্থশ্—
প্রতাঙ্ধ্, প্রতাঙ্ক্।

প্রীলিকে (গতার্থ)—প্রতীচী, (পূজার্থ)—প্রত্যঞ্চী ইত্যাকার
শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য।

ক্লो—(গভার্থে) প্রভাক্, প্রভাগ্; প্রভীচী, প্রভাঞ্চি। এবং ২য়া। টাদি—প্রভীচা ইত্যাদি পুংবং।

ক্লী—(প্ৰাৰ্থে)—প্ৰত্যঙ্, প্ৰত্যঞ্চী, প্ৰত্যঞ্চি ইত্যাদি। পৰে পুংবং।

উদন্চ — (উদচ্মু) পূং, (গত্যর্থে) [উৎ—অন্চ.+ কিপ্]। উদঙ, উদঙো, উদগঃ। উদগংন, উদগংলা, উদীচা, উদগংভাম, উদগ্ভাঃ। উদীচা, উদগ্ভাম, উদগ্ভাঃ। উদীচা, উদগ্ভাম, উদগ্ভাঃ। উদীচা, উদগ্ভাম, উদগ্ভাঃ। উদীচা, উদগ্ভাম, উদগ্ভাঃ। উদীচা, উদীচাম। উদীচি, উদীচাা, উদক্ষাহে উদঙ্।

⁽১৭) গামঞ্চীতি কিপি গোঙ, ইতি। গোচ ইত্যাদি—"অনচের্থ পূর্ব্বসমান" মিত্যকরণাৎ চকারস্থান্নাচয়শিষ্টত্বেন পূর্বাদীর্ঘাভাবে২প্যন্টের্বলাপ ইত্যকারলোপোহস্থাস্কাল্রেফিদিত্যনেন নলোপঃ। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

পূজার্থে—

1)

Ы.

1:1

म् ।

3: 1

ার

বং

বে

1.-

4,

61

12

5-

পूर-छन्ड., छन्टको, छन्कः। छन्कम्, छन्टको, छन्कः। छन्का, हन्द् जाम्, উपट् जि:। উपटक, উपट् जाम्, উपट् जाः। উपकः, छन्ड जाम, छन्ड जाः । छन्यः, छन्दाः, छन्याम् । छन्यि, छन्द्याः, उत्दक्, उत्दव्। ८१ उत्द

क्की-(भणार्थ) छनक, छनभः, छनीही छनिक। छनक, छनीही, देनकि। देनीहा हेन्डानि शूर्वर।

क्की-(शृक्षार्थ) উन्दर, উन्की, উन्कि । উन्दर উन्की, উन्कि । उनका हेलानि भःवर।

কিপি অনিদত্বক ইত্যাদিনা নলোপো নান্তি সুত্রে কাত্রবন্ধপ্রতাবে-থহুবদ্লোপাভাবে। জ্ঞাপিত ইতি। যদি চ অচেরিতি নির্দেশে অচ্-শব্দ কথং ন গ্রহণমিতি দেশুং, তদা লোকোপচারাদিতি ধ্যেয়ম। এদাংপর ইত্যাদিনা অকারলোপে সিদ্ধে পরত্বাদনেন লোপস্ত "পদান্তস্ত গোরোতোহতি প্রকৃতি:" তথা "অব: স্বরে" ইত্যক্ত পদান্তশ্রুতিবিহিত-কার্যাবিষয়ত্বন প্রকুত্যবাদেশাভাবঃ ফলমিত্যবধাতবাম্। গোচা, গোগ-जागिजामि ।

প্ৰায়ান্ত "নান্চে ারহণে" "অশু চ" ইতি প্রীপতিস্তাভ্যাং তথা ছৰ্গমতে 'অন্চে: পূজায়াং ন ভবতী' তি টীকাকতো বক্তব্যেনাত্ৰক-লোপোইকারলোপশ্চ ন স্থাৎ। অন্চাশ্রিতাকারকোপনিষেধোইপি अत्मानाध्यमकात्रतनाथविषमञ्जन त्रार्थः, त्रां अवः, ग्रवांक रेजानिना ভাবামিতি লক্ষ্যতে। ব্যঞ্জনে চ অনর্জায়ামপি এদোদিত্যাদিন। লোপে প্রকৃত্যবাদেশে চ রূপত্রয়ম্, এবঞ্ ঘুটি কথং ন ভবতীতি ন দেশুম্ অঘুট্-^{স্বরে}ইনর্চায়াং প্রক্কত্যবাদেশভাদৃষ্টত্বেনাগুত্রাপি তথৈব কল্পনাদিত্যবধেয়ম্ परः (नर्स्यात्मक्षाति निर्मातिकारिक स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स्थापति स

জ্রী—(গত্যর্থে) উদীচী (পূজার্থে) উদঞ্চী ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য।

नगान् ह्—(नगाह) पूर्। (গভার্থ, नन्— অন্চ + ক্রিপ্) नगाङ, नगाङ, नगाङ। नगाङ।

পূজার্থে—

পুং — সমাঙ্, সমাঞা, সমাঞা। সমাঞ্ম, সমাঞা, সমাঞা।
সমাঞা সমাঙ্ভাাম্ ইত্যাদি প্লার্থে প্রতান্চ্বং।

ক্র্যী—(গতার্থে) সমাক্, সমাগ্; সমীচী, সমাঞ্চি। এবং দিতীয়া। টাদি—সমীচা ইত্যাদি পুংলিদ্ববং।

क्की—(পृकार्य) मगाड, मगाकी, मगाकि। है। हिन्ममग्रका इंडािन पृश्वर।

জ্রীলিভেং—(গতার্থে) সমীচী (পূজার্থে) সমাঞ্চী ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য।

তির্যান্চ্ — (তির্যাচ্ মু, তিরসন্চ্, পা) পুং।

(তিরস্—অন্চ্ + কিপ, নিপাত)

পুথ-গতার্থে-ডির্যাঙ্ক, তির্যাক্টো, তির্যাক্টা। তির্যাক্ট্রম, তির্যাক্টান, তির্যাগ্রাম, তির্যাক্ট্রাম, ত

পूर-পृकार्य- िर्गड, िर्गाको, िर्गङ:। िर्गक्रम्, िर्गाको, िर्गक्रम्, िर्गाको, िर्गक्रम्, िर्गाङ, िर्गक्रम्, िर्गाङ, िर्गक्रम्, िर्गाङ, िर्गाङ,

ক্লী—গতার্থে—তির্যাক্, তির্যাগ্; তিরন্টা, তির্যাঞ্চ। এবং বিতীয়া। টাদি—তিরশ্চা—ইত্যাদি পুংলিন্দবৎ।

र्यू,

()

ग.-ग.-

E 1

ক্লী—পূজার্থে—তির্যাঙ্, তির্যাঞ্চী, তির্যাঞ্চি। এবং দিতীয়া।
টাদি—তির্যাঞ্চা—ইত্যাদি পুংলিঙ্গবং।

ন্ত্রীলিঙ্গে (গত্যর্থে)—তিরশ্চী, (পূজার্থে)—তির্যঞ্চী ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য। (১৮)

কুন্চ্-পুং। (বকার্থ)

क्ड, क्रिं।, क्रिं। क्रिंग, क्रिं। क्रिं।

অতিক্র নৃচ্—ক্লী। (কুঞ্মতিক্রান্তং কুলমিত্যাদি বাক্যে)
অতিকুঙ, অতিকুঞ্চী, অতিকুঞ্চি। এবং দিতীয়া। পরে পুংলিদ্ববং।

অদসন্চ্—অদদ্রন্চ্ (কলাপ) পুং।
(অদস্—অনচ্+ির্কিপ্নিপাত)
গত্যথে।

)। अगृग्रङ, अगृग्रदको, अगृग्रकः। अगृग्रकम्, अगृग्रदको,

⁽১৮) কলাপমতে—তিরোহঞ্তীতি কিপি কতে 'সহসন্তিরসাং স্থিসমিতিরম্বঃ'' ইতি তিরিভাবে তির্যান্চ্ইতি শব্ধঃ। উদঞ্জীতি কিপি উদঙ্ইতি অর্চায়ামপি সাম্যম্। অর্চায়ামনয়োর্ জিনান্তীতি ক্তাচিন্নতম্, তংশীপত্যাদেরসম্ভম্। অনয়োরপার্চায়ামাদেশাভাব ইতি কেষাঞ্জিন্নতম্, তদা তির্যাঞ্জিত্যাদিভির্ভাবামিতি জেন্ম। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खम्मृत्रेटः (खम्क्षीटः)। अम्मृत्रेटा (अम्क्षीटा), अम्मृत्रग् जाम्, अम् मृत्रग् जिः। अम्मृत्रेटट (अमृक्षीटि), अम्मृत्रग् जाम्, अम्मृत्रग जाः। अम्मृत्रेटः (अम्क्षीटः), अम्मृत्रग जाम्, अम्मृत्रग जाः। अम्मृत्रेटः, (अमृक्षीटः), अम्मृत्रेटटाः, (अमृक्षीटिटाः), अम्मृत्रहाम् (अमृक्षीटाम्)। अमृम्त्रेटि (अमृक्षीटि), अमृमृत्रेटटाः, (अमृक्षीटिटाः) अमृमृत्रक्, अमृमृत्रथं मृ

०। यन छाड्, यन छाटको, यन छाकः। यन छाक्रम्, यन छाटको, यन छोठः। यन छोठा, यन छात्र् छात्र्, यन छात् छिः। यन छोट्ठ, यन छात् छात्र्, यन छात् छाः। यन छोठः यन छोट्ठाः, यन छोठाः, यन छोठां । यन छोठः यन छोट्ठाः, यन छोठां । यन छोठि, यन छोट्ठाः, यन छात्र्, यन छत्र्य् ।

১৪। অম্ব্রাঙ্ অম্ব্রাঞ্চী, অম্ব্রাঞ্চা। অম্ব্রাঞ্ম, অম্ব্রাঞ্চী, অম্ব্রাঞ্চান, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্ভান। অম্ব্রীচঃ, অম্ব্রাগ্ভানি, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্ভান, অম্ব্রাগ্রাশ্

অদ্ভ্ৰান্চ্—(অদ্ভাচ্মু)—ক্লী 1 অম্মঞ্তীতি অদৃ + অন্চ্ + কিপ্)। গত্যথেঁ—

১। अप्मूष्क, अप्मूष्का; अप्मूष्कि। अप्यूष्कि। अवश्विष्ठी। अप्यूष्कि। अवश्विष्ठी। अप्यूष्कि। अवश्विष्ठी। अवश्विष्ठी। अवश्विष्ठी।

২। অদম্য়ক্, অদম্য়৸ৢ; অদম্ঈচী (অদয়ীচী) অদম্য়িক। এবং
 বিতীয়া। পরে পুংলিয়বৎ।

म्-

1: |

Б:,

भू-:।

:)

7-

1:

ে। অদস্রাক্, অদস্রাণ ; অদস্রাচি, অদস্রাঞ্চি । এবং দ্বিতীয়া, পরে পৃংবং ।
৪। অমুদ্রাক্, অমুদ্রাগ্; অমুদ্রাচী, অমুদ্রাঞ্চি । এবং দ্বিতীয়া।
পরে পুংলিঙ্গবং ।

পূজার্থে—

>। অমুম্হঙ্, অমুম্হঞা, অমুম্মঞি।—এবং বিতীয়া পরে পুংবং।

২। অদম্য়ঙ্, অদম্য়ঞা, অদম্য়ঞ্চি—এবং বিতীয়া। পরে পুংবং।

৩। অদত্রাঙ্, অদত্রাঞা, অদত্রঞি।—এবং বিতীয়া। পরে পুংবং।

৪। অমুত্রাঙ্, অমুত্র্যঞা, অমুত্রাঞ্চি।—এবং বিতীয়া। পরে পুংবং।

স্ত্রীলিঙ্গে—'অদত্রীচী, অদ্মুস্টী, অমুত্রীচী, অমুম্স্টী, অমুম্বীচী' এবং
'অমুত্রীচী' ইত্যাকার শক হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য। (১৯)

(১৯) অদন্ত্রন্চ্ শবং। অমৃম্ঞতীতি কিপি বিষগ্দেবয়োরত্যাদিনা
অদ্দোরত্যপ্রাদেরন্দ্রাদেশে অদন্ত্রন্চ্ শব্দ পূর্বপরোভয়দকারাণাং মত্তে
উভয়দকারম্বাভাবে চ বক্ষামাণরূপাণি এবং বোধ্যানি। শ্রীপতিমতে চ
"পর্ত্যাদন্রীচো বা মো দক্ষে" ত্যুনেন পরদকারোভয়দকারয়োঃ পাক্ষিকমকারত্বেনাদাহর্ত্রবায়্ ভেদো মন্তব্যঃ। তুর্গমতে তু ম্বাভাবেন বোধ্যঃ।
অম্ব্রাঙ্ অদ্মৃয়ঙ্ অমৃমুয়ঙ্ অদন্ত্রাঙ্ইতি মতান্তরে, আদিভিয়য়য়ং
শ্রীপতিমতে। তথাচাম্ল্রাঙ্ইতি বহুনাং মতমপি ন মতং ন ইতিদত্তমহামহোপাধ্যায়ঃ। তুর্গমতে তু সর্বাইত্রব মকারো নোচ্যতে। এবং সর্ব্রত্ত।
অম্ব্রাঞ্জা, অদ্মৃয়ঙ্কা, অদ্ব্রাক্তা, অমুম্য়ঞ্জাইত্যাদি। শিল তু অমুলীচঃ,
অম্ব্রাক্তা, অদ্মৃরক্তা, অদ্বাতা, অমুম্য়েটাই আদ্লীচঃ। "উত্তোহ্রদ্রাচিঃ"
ইত্যানেন পুর্ক্ষে প্রাঞ্জিতি ohain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

সোঅচ্ (সোঅন্চ্ • ক্লী। (গামঞ্জীতি গো+ অন্চ্+ি কিপ্)

গত্যথে—

5

(5

ষ

(

C

১মা—গবাক্, গবাগ্; গোঅক্, গোঅগ্; গোক্, গোগ্; গোচী; গবাঞ্চি, গোঅঞ্চি, গোঅঞ্চি। ২য়—১মাবং। তয়—গোচা, গবাগ্ভাম্, গোঅগ্ভাম্, গোলগ্ভিঃ, গোঅগ্ভিঃ, গোলগ্ভিঃ, গোল ভিঃ। ৪য়ী—গোচে, গবাগ্ভাম্, গোঅগ্ভাম্ গোগ্ভাম্; গবাগ্ভাঃ, গোঅগ্ভাম্, গোঅগ্ভাম্; গোগ্ভাঃ। ৫মী—গোচঃ, গবাগ্ভাঃম্, গোঅগ্ভাম্ গোগ্ভাঃম্, গোলগ্ভাঃ, গোল্ভাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডাঃ, গোল্ডা

অচীয়ান্ত অকারনলোপাভাবে অমৃত্রঞঃ, অদম্য়ঞঃ, অমৃম্যঞঃ, অদত্র কাল হাজ ইতি রূপচতৃষ্ট্রম। এবং সর্বারাবৃষ্ট্রের। অমৃত্রাগ্ ভ্রাম, অদম্য়গ্ ভ্রাম, অদম্য়গ্ ভ্রাম, অদম্য়গ্ ভ্রাম, অদম্য়গ্ ক্, অমুম্য়গ্ অদম্য়ক্, অদম্য়ক্, অদম্য়ক্, অদম্য়ক্, অদম্য়ক্, অদম্য়ক্, অদম্য়ক্ কাল ভ্রাপ্ । "তদ্বংপঙন্তন্তাঃ" ইতি বহুম, "ও্ণোঃ" কটাবন্তৌ শ্বসেষ্" ইতি ককারাগ্মঃ, "প্রথমন্ত শ্বসেষ্ বা দিতীয়ঃ" ইতি পক্ষে কল প্রম্ম অদম্য়ঙ্গ, অদম্য়ঙ্গ, অদম্য়ঙ্গ, অদম্য়ঙ্গ, অমুম্য়ঙ্গ, অমুম্যুঙ্গ, অমুমুষ্ঠা, অমুমুষ

* ম্ধবোধমতে কেবলং গবাচ্। অত্র বাশলীয়ব্যবস্থা গামঞ্তীতি কিপি গবাঙ, অত্র অবো নিত্য ইতি ম্ধবোধস্ত 'গোৰ্বা' ইতি স্ত্তু তুৰ্গাদাদটীকা।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri পুজাৰ্থি—

স্মা—গবাঙ, গোলঙ, গোভ; গবাঞী, গোলঞী, গোলঞী; গ্রাঞ্চি, গোলঞ্চি, গোলিঃ। ২য়া—প্রথমাবং। এয়া—গবাঞা, গোলঞা, গোলঞা, গোলাঞা; গবাঙ্ভ্যাম্, গোলঙ্ভ্যাম্, গোভ্ভ্যাম্; গবাঙ্ভ্যাম্, গোলঙ্ভ্যাম্, গোলালভ্যাম্, গোলাল

٧,

গোঅন্চ্—পুং (কলাপমতে)।

গত্যর্থে—

গোঙ, গোঞ্চৌ, গোঞ্চা। গোঞ্ম, গোঞ্চৌ, গোচা। গোচা, গোগ্ভ্যাম, গোগ্ভিঃ। গোচে, গোগ্ভ্যাম, গোগ্ভ্যা। গোচঃ, গোগ্ভ্যাম, গোগ ভ্যঃ। গোচঃ, গোচোং, গোচাম্। সোচি, গোচোঃ, গোক্, গোঝ্য়।

পূজার্থে পুং—

গবাঙ, গোঅঙ, গোঙ; গবাঞো, গোঅঞী, গোঞো; গোঞ:, গবাঞ:, গোঅঞ:। গবাঞ্ম, গোঅঞ্ম গোঞ্ম; ততঃ প্রথমাদিবচন-ব্লবচনবং। গোঞা, গবাঞা, গোঅঞা; গবাঙ্ভ্যাম, গোঅঙ্ভ্যাম, গোঙ্ভ্যাম্ইত্যাদি। স্প্—গোচ্ছ, গোঙ্য্, গোঙ্থ্য়; গবাঙ্যু, গবাঙ্ছ, গবাঙ্যু, গোঅঙ্যু, গোঙফু, গোঅঙ্যু।

खोलित्व भजार्थ '(भाष्ठी' देजाकात भव रुम्न, नमीवर क्रभ खांच्या।

र्य, नमीवर क्रम छा छता।

গত্যথে ক্লী—

গোক্, গোগ্; গোচী; গোঞ্চি। এইরূপ দিভীয়া। গোচা; গোগ্ভ্যাম্ ইভ্যাদি পুংবং।

পূজার্থে ক্লী—

গবাঙ্, গোজঙ, গোঙ্, গবাঞ্চী, গোঅঞ্চী, গোঞ্চী; গবাঞ্চি, গোঅঞ্চি, গোঞ্চি। এবং দিতীয়া। পরে পূজার্থে পুংলিশ্বং।

विष्ठ । (विष्ठ छा । पूर ।

গত্যথে—

বিষদ্ৰ্যঙ্, বিষদ্ৰ্যক্ষো, বিষদ্ৰ্যক্ষঃ। বিষদ্ৰ্যক্ষম, বিষদ্ৰ্যক্ষো, বিষদ্ৰীচঃ। বিষদ্ৰীচা, বিষদ্ৰ্যগ্ভ্যাম্, বিষদ্ৰ্যগ্ভিঃ। বিষদ্ৰীচে, বিষদ্ৰ্যগ্ভ্যাম্, বিষদ্ৰ্যগ্ভ্যঃ। বিষদ্ৰীচঃ, বিষদ্ৰ্যগ্ভ্যাম্, বিষদ্ৰ্যক্ষ্য বিষদ্ৰীচঃ, বিষদ্ৰীচাঃ, বিষদ্ৰীচাঃ, বিষদ্ৰীচাঃ, বিষদ্ৰ্যক্ষ্য হে বিষদ্ৰাঙ্।

পূজার্থে—

विषयाङ्, विषयाङ्का, विषयाङः। विषयाक्षम्, विषयाङो, विषयाङः। विषयाङो, विषयाङो, विषयाङ्गाम्, विषयाङ्काम्, विषयाङ्काम्, विषयाङ्काम्, विषयाङ्काः। विषयाङः, विषयाङ्काम्, विषयाङ्काः। विषयाङः, विषयाङ्काम्, विषयाङ्कः। विषयाङ्कः, विषयाङ्कः, विषयाङ्कः, विषयाङ्कः, विषयाङ्कः, विषयाङ्कः, विषयाङ्कः, विषयाङ्कः। विषयाङ्कः। विषयाङ्कः। विषयाङ्कः।

স্বেদ্রেল্ড (—চ্) শব্দেরও বিষ্ট্রন্চ (—চ) শব্দের তুলা রূপ জ্ঞাতবা।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri বিষদ্ৰান্চ্ (বিষদ্ৰাচ্) ক্লী।

গত্যথে—

বিষদ্ৰাক্, বিষদ্ৰাগ্; বিষদ্ৰীচী, বিষদ্ৰাঞ্চি। এবং দ্বিতীয়া। তয়া— বিষদ্ৰীচা ইত্যাদি পুংবং।

পূজাতে ব্রী—বিষদ্রাঙ্, বিষদ্রাঞ্চী, বিষদ্রাঞ্চি। এবং বিভীয়া। পরে পুংলিঙ্গবং।

স্থ্যক্চ (চ) পুং, (সহ অঞ্জীতি, সহ—অন্চ + किপ)।
গত্যর্থে—

স্থ্যঙ্ স্থ্যঞো, স্থাঞ্চঃ। স্থ্যঞ্ম, স্থাঞো, স্থাচঃ স্থাচা, স্থাগ্ভাাম্ ইত্যানি, গতাৰ্থে প্ৰতান্চ্বং।

পূজার্থে—

ন্ধ্যঙ্ ইত্যাদি পূৰ্ববং। শন্—স্থ্যকঃ। তৃতীয়া—স্থ্যন্চা ইত্যাদি পূজার্থে প্রত্যন্চ্বং।

ক্লীবে—গত্যথে— নপ্ৰ্যক্, সপ্ৰাগ্; সপ্ৰীচী, সপ্ৰাঞ্চি। এবং দিতীয়া। টাদি—পুংবং।

পূজার্থে—সধ্যঙ্, সধ্যঞ্জী, সধ্যঞ্চি এবং দিতীয়া। টাদি—সধ্যঞ্চা, স্থ্যঙ্ভাম ইত্যাদি পুংবং।

ক্রীল্নিক্সে—গত্যর্থে—'সম্রীচী' পূজার্থে—'সম্রাঞ্চী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

छर्वन् (- र्) शूः,

(शुक्रमक्षे जी जि, शुक्र- अन्ह् + किश्)।

গুর্বাঙ্, গুর্বাঞ্চা, গুর্বাঞ্চা, গুর্বাঞ্চা, গুর্বাঞ্চাম্ ইত্যাদি। প্রতান্চ্বং।

৬ ॰ শ্বন্ধ প-কল্লড়মঃ । Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

প্জার্থে—গুর্বঙ্ ইত্যাদি। শন্—গুর্বঞ্চঃ ইত্যাদি। ভ্যাম্—গুর্বঙ্ । ভ্যামিত্যাদি।

ক্লীবে—গত্যর্থে—গুরুক্, গুরুগ্, গুরুচী, গুরুঞ্চি। এবং ২য়।

পূজার্থে—গুর্বাঙ, গুর্বাঞ্চ। এবং দিতীয়া। পরে পুংবং।
ক্রীলিভেক্ত—গত্যর্থে—'গুরুচী', পূজার্থে—'গুর্বাঞ্চী' ইত্যাকার
শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য। (২০)

য়्वर्*ह्,—शूर, खी।

স্বৃট্, স্বৃড্; স্বৃদ্টো, স্বৃদ্টা। স্বৃদ্টম্ স্বৃদ্টা, স্বৃদ্টা। স্বৃদ্টা, স্বৃদ্টা, স্বৃদ্টা, স্বৃদ্টা, স্বৃদ্টা, স্বৃদ্ট্লাম্, স্বৃদ্ভি: ইত্যাদি। স্বশ্—স্বৃট্স্, (স্বৃট্স্, স্বৃট্প্স, স্বৃচ্প্স,

য়ত*চ্, বাচ্যলিঙ্গ—(মৃতং শ্চোততীতি, মৃতশ্যুৎ, তমাচটে ইতীনি ণিচি কিপ্।

পুৎ দ্রী—য়তক, য়তগ্, য়তশ্চা, য়তশ্চা। য়তশ্চম্, য়তশ্চা,
য়তশ্চা। য়তশ্চা, য়তগ্ভ্যাম্ইত্যাদি। স্বগ্—য়তক্ষ্, য়তধ্রু।

(২০) চবর্গদ্গাদীনাঞ্ছ ইত্যত্ত চজদ্গাদীনামিতি দিছে বর্গগ্রহণাৎ অন্চিযুজিক নুনাং নিত্যমপি সংযোগাস্তলোপং বাধিতা প্রাগ্গত্তে পশ্চাৎ সংযোগাস্তলোপঃ ভাদেব। 'যং বিধিং প্রত্যুপদেশোহনর্থকঃ স বিধিবাধ্যতে, যন্ত তু বিধেনিমিত্তমন্তি নাসৌ বিধিবাধ্যতে" ইতি তায়াৎ সপ্রন্চ (চ্) সম্যন্চ (—চ্) প্রান্চ (—চ্) প্রভৃতীনাং রূপাণি অন্চিয়াং জ্ঞেয়ানি।

প্রাক্ ইতি কান্তশবন্ত প্রাচীশবাৎ সপ্তমীপঞ্চমীপ্রথমান্তাৎ অন্তাতিঃ, তত্মাঞ্তেরিতি তত্ম লোপে দ্বীপ্রত্যয়ক্ষেত্যাদিনা দ্বীপ্রত্যয়ক্ষ লোপে চ ন্যন্ধ দিবাৎ করে নিপানঃ, তচ্চ অব্যয়ম্। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ছান্ত।

পুচছ —বাচ্যলিন্স (পুচছয়তেঃ কিপ্)

11

1

র

পু ছৌ —পুট, পুড; পুচ্ছো, পুচ্ছ: ইত্যাদি। গোবিচ্ছ্বৎ। গোবিচ্ছ্, বাচ্যলিঙ্গ। (গাং বিচ্ছতীতি কিপ্)

পু হ্লা — গোবিট, গোবিড; গোবিচ্ছো, গোবিশো; গোবিচ্ছা, গোবিশ: ইত্যাদি। গোবিচ্ছম, গোবিশম; গোবিচ্ছো, গোবিশো। গোবিচ্ছা, গোবিশা; গোবিড ভ্যামিত্যাদি। স্বপ্—গোবিট্স্ক, গোবিঠ্স্ক, গোবিট্স্ক, গোবিট্স্ক, গোবিট্স্ক, গোবিট্স্ক, গোবিট্স্ক,

পথিপ্রাচ্ছ্ প্রভৃতি শব্দেরও এইরূপ রূপ হয়। (২১)

জান্ত।

(मरवज् — श्रुः।

দেবেট্, দেবেড্; দেবেজৌ, দেবেজ:। দেবেজম্, দেবেজৌ, দেবেজ:। দেবেজা, দেবেড্ভ্যাম্, দেবেড্ভি: ইত্যাদি। স্থণ,— দেবেট্স্ল, দেবেঠ্স্থ, দেবেট্ৎস্থ, দেবেঠ্থ্স্থ)। (২২) খাত্বিজ্—পুং। (ঋতৌষজ্ঞীতি, ঋতৃ—যজ + কিণ্)

⁽২১) গোবিড়িতি।—গাং বিচ্ছতীতি কিপি 'ছো: শূটা'বিত্যাদিন। ছত্ত শত্বে শগ্রহণদারেণ ডব্বে সিদ্ধে ছগ্রহণং শকারস্থানিত্যব্দ্ধাপনার্থং, তেন গোবিচ্ছো, গোবিশো ইত্যাদি। এবং পথিপ্রাচ্ছ্প্রভৃতীনাং রূপাণি বোধ্যানি।

⁽২২) দেবেভাো যদ্ধ তীতি কিপ্দেবেজ্শক:। অক্তৈবেজো ডত্তবিধৌ গ্রহণং, ন ত্তিজ গতাবিতি কিবস্তুত্ত, আদিশকত ব্যবস্থাবাচিত্বাৎ।

b্থ Digitized by Arya Samaj Foundation Cherinal and eGangotri

ঝবিক, ঝবিগ্; ঝবিজো, ঝবিজঃ ইত্যাদি। ঝবিগ ভ্যামিত্যাদি।
স্প্—ঝবিক্, (ঝবিগ্রু)।

কলাপাদি মতে বিশ্বস্জ্, লোকস্জ্প্রভৃতি শব্দের ঋত্বিজ্ঞ, শব্দবং রূপ হয়। (২৩)

द्रज्रू एष् - शूर खी।

রজ্ব্সট্, রজ্ব্সড্; রজ্ব্সন্তৌ, রজ্ব্সন্তঃ ইত্যাদি। স্থপ— রজ্ব্সট্স্ক (রজ্ব্সচ্স্ক, রজ্ব্সচ্থ্স্ক, রজ্ব্সচ্থ্স্ক)।

[*

রা

বি

नभू

হগা

উৰ্জ —বাচ্যলিন্ধ। (উৰ্জন্নতঃ কিপ্)।

পুং স্ত্রী—উক্, উর্গ ; উর্জো, উর্জ্ঞা । উর্জেম, উর্জ্ঞো, উর্জ্ঞা, উর্জ্ঞা, উর্গ্ ভাম, ইত্যাদি। স্বপ্—উর্কু (উর্ব্)।

क्रो—डेर्क्, डेर्ज् ; डेब्ब्री ; डेब्ब्रि, डेब्ब्रि। शदत श्रृक्तवर।

যুজ — বাচ্যলিঙ্গ। (যুজির্ যোগে—যুজ + किপ্)।

পুং দ্রী — य्ঙ, युक्षी, युक्ष:। युक्षम्, युक्षी, युक्षः। युक्षा, यूज्राम् ইত্যাদি বাচ শব্দবং। (২৪)

⁽২৩) ন চ বাচ্যং বিশ্বস্ঞাদীনাং কথং গ্রমিতি দৃগাদৌ অফ্ড্শব্দু কারাং স্ক্ অস্জ্ ইতি ব্যাখ্যানেন অকারপরভিন্নবিষয়স্ত স্ঞো
ভবিধো গ্রহণং বেদিতব্যম্, অকারাজু গ্রমেব ন স্ক্তীত্যস্ঞিতি
টীকালিখিতবেন ভদ্ব্যাখ্যানং বিক্লমিতি ধাতুগণপঠিতভাত্তভাত্তভাত্ত
শব্দু ব্যংপন্নবেন গণে প্র্নোক্তব্যাখ্যানেন নঞা ব্যংপাদিতভাকারপরবেন গ্রবিষয়স্চকার্থস্ত টীকাক্লদেশিতবেন ব্যাখ্যাতত্বাদিতি। কেচিভ্
বিশ্বস্জাদীনাং গরং ভাক্বাদিতামন্তত্ত। (কলাগ)

⁽২৪) যুক্ত সমাধাবিত্যস্থাৎ কিপি যুক্ ইত্যাদি গতেন রূপম্।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

তাপ্রস্থা স্থা প্রা (অংখন যুনজীতি, অখ—যুঞ্ + কিপ্
অথবা যুনজীতি ষ্ড, অংখন যুঙ্—অখযুক্)
অখযুক্, অখযুক্, অখযুক্ ইত্যাদি।

वरुष् -क्रो।

অসক, অসগ্ [অসক্, অসগ্গ] অসজী, অসজি। এবং দিতীয়া [শস্—অসানি, মু] অসজা, অসা; অসগ্ভাাম, অস্ভাাম্ ইত্যাদি।

विश्वतां क् - शूर।

বিশারাট্, বিশারাড্; বিশ্রাজো, বিশ্রাজ:। বিশ্রাজম্, বিশ্রাজী, বিশ্রাজ:। বিশ্রাজা, বিশ্রাড ভ্যামিত্যাদি। (২৫)

i

বিশ্বস্থজ্—পুং।

বিশ্বস্ক্, বিশ্বস্ত্; বিশ্বস্ট্, বিশ্বস্ত্; বিশ্বস্কো, বিশ্বস্ক: ।...
বিশ্বস্ত্তাম্, বিশ্বস্ত্ভাগম্ ইত্যাদি। মুগ্ধবোধাদিমতে। (২৬)

বান্ত।

সমুজ্বা, পুং অথবা দ্রী 2 (গমুজ্বয়তে: কিপ্)।

গম্ং, সমৃদ্; সমৃজ্বো, সমৃজ্বা:।

গম্জ্বা, সমৃদ্ভাাম্ ইত্যাদি। স্বপ্—সমৃৎস্থ ইত্যাদি।

⁽२৫) "বিশ্বরাজোহদা" ইতি মৃগ্ধবোধস্থত্তেণ বিশ্বরাজোহকার্ত্র আকার: বিরামে ব্যঞ্জনাদে চ। "বিশ্বস্ত বস্থরাটোঃ" ইতি কৌমুদী। কলাপমতে "কচিদ্ ব্রস্তু দীর্ঘতা" ইতি দীর্ঘঃ।

⁽२७) "বিশ্বস্জ: কুঙ্বা ফে ইতি বক্তব্যম্" ইতি মুগ্ধরে প্রাক্তির ক্রান্ত্রাক্তি বিশ্বস্থান বিশ্বস্থ

ঞান্ত।

नवा - शूर।

নঞ্ নঞো, নঞঃ ইত্যাদি। নঞ্ভ্যাম্ ইত্যাদি। স্বপ্—নঞ্ভ। (২৭)

টান্ত।

কা

3

यर

निर

बह

প্ৰব

न्।र

অশ্রাভ্—পুৎ অথকা দ্রী (অধ—অট্+িরুপ্)।
অধাট্, অধাড্; অধাটো, অধাটা ইত্যাদি। অধাড্ভ্যাম্ ইত্যাদি।
স্প্—অধাট্স্, (অধাট্ৎস্ক, অধাট্থ্স্)।

ठांख ।

মন্ত্ৰপাই ্-পুং অথবা দ্বী

(মন্ত্রপাঠমাচটে—মন্ত্রপাঠ + কিপ্)।

মন্ত্রপাত্; মন্ত্রপাঠো, মন্ত্রপাঠা ইত্যাদি। মন্ত্রপাত্ত্যাম্ ইত্যাদি। স্থপ্—মন্ত্রপাট্স ইত্যাদি।

ডান্ত।

লগুড় —পুৎ অথবা প্রী 2 (লগুড়য়তে: কিপ্)।
লগুট্, লগুড়; লগুড়ো, লগুড়: ইত্যাদি। লগুড়্ভ্যাম্ ইত্যাদি।
লগুট্স ইত্যাদি।

(২৭) নঞ্ভ ইতি "চঞাভ্যাং দশু শং" ইতি দশু শত্ম। কেচিজু বিরামব্যঞ্জনয়োঞ্জারশু ওকারং বিদধতি, তন্ত্র, শ্রীপতিনৈব দ্বিতত্বাং। গত্ত্ব ন প্রাপ্তোতি দৃগাদিসাহচর্যাং। এবং কুঞ্প্রভৃতীনামপি রুগাণি জ্ঞাতব্যানি।

ঢান্ত।

আলক্ত্—পুথ। (যানক্ত্মাচষ্টে—যানক্তি + কিপ্)। যানক্ত্, যানকড্; যানক্ত্ন, যানক্তঃ। যানক্ত্ম, যানক্ত্নে, যান-ক্তঃ। যানক্তা, যানকড্ভ্যাম্ ইত্যাদি। স্থপ্—যানকট্স্ইত্যাদি।

वान्छ।

অন — দ্রী, পুথ। (অন + ক্রিপ)।
অণ্ অণো, অণঃ। অণম্ অণো, অণঃ। অণা অণভ্যাম্ ইত্যাদি।
মুণ্—অণ্ট্স্ত (অণ্ঠ্স্ত অণ্ট্স্ত, অণ্ঠ্থস্)।
বণ, মুগণ্ প্রভৃতি শব্দেরও এরপ রপ হয়।

তান্ত।

মহন্ত, (মুপ্তাবোধাদিমতে মহথ) বাচ্যলিজ।

शू:— महान्, महारको, महान्यः। महान्यम्, महारको, महन्यः। महन्याम्, महन्याम्, महन्याम्, महन्याम्, महन्याम्, महन्याम्, महन्याम्, महन्याम्, महन्यः। महन्यः, महर्यः। महन्यः। महन्यः, महर्यः। महन्यः। महन्यः।

(২৮) মহৎ ইত্যাদি—অনুষদ্দোপসংযোগান্তলোপয়োর্বিরোধে
নিতাবাদন্তরঙ্গবাচনান্ত্যকলোপঃ। সংযোগান্তলোপশু তু নিতাবং নাস্তোব
সাবোগান্তলোপশ্যান্তভূতিশু অলুপ্তবদ্ভাবসাহচর্য্যাৎ মধ্যভূতনকারশ্যালপুরবদ্ভাবাদ্দীকারাং। একেচিত্র অনুষদ্ধাতে কার্য্যান্তরপ্রসক্তাবপি প্রাক্
প্রবর্ততে ইত্যন্ত্রবলাৎ ন সংযোগান্তলোপ ইতি ক্রবতে। তন্ন, নিরম্বন্ধসাজ্ঞাপক্ষে দোযাদ্যাথাসিদ্ধবাচ্চ ইতি টীকা (কলাপ)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ক্রীলিকে—'মহতী' ইত্যাকার শব্দ, নদীবৎ রূপ জ্ঞান্তব্য।

'মহান্তমিচ্ছতি' এই বাক্যে যিন্ (ক্যচ্) প্রত্যেয়, তৎপর কিপ্ করিয়াও
"মহন্ত" (মহৎ—মু) ইত্যাকার শব্দ হয়। রূপ—মহান্, মহান্তে ইত্যাদি।

মূলীভূত মহন্ত (মহৎ—মু) শব্দের স্থায় রূপ জ্ঞাতব্য। (২৯)

ভবন্ত [ভবন্ত] ভবৎ, মু) ভূ+ডবন্ত (ডবতু)। বাচ্যলিঙ্গ, সর্বনাম।

পুং—ভবান, ভবন্তৌ, ভবন্তঃ। ভবন্তম, ভবন্তৌ, ভবতঃ। ভবতা ভবদ্যাম, ভবদ্ভিঃ। ভবতে, ভবদ্যাম, ভবদ্তাঃ। ভবতঃ, ভবদ্যাম, ভবদ্যাঃ। ভবতঃ, ভবতোঃ, ভবতাম। ভবতি, ভবতোঃ, ভবংস্থ। হে ভবন, হে ভোঃ। (৩০)

3

Ą:

व

C

⁽২৯) মহত্যতীতি কিপি ক্তেঙ্পি মহচ্ছক্বৎ মহানিত্যাদি। মহতঃ সাহচর্ব্যাদিত্যত্র তু অনামধাতুত্বেন অকিবন্তস্তেতি বোধ্যম্।

⁽৩০) হে ভোঃ হে ভবন্ ইতি—অথ বাদেরবয়বশ্রোতেহন্তরদ্বাং সন্ধৌ ভ্তপ্র্রান্ন কথং সমৃদ্দেলে পি ইতি চেৎ সন্নিপাতলক্ষণত্বাদিতি চেৎ বর্ণগ্রহণেইনিমিত্তবাদিতি চেৎ অনিত্যোহ্মং ক্যায়:; অক্যথা ভবতো ভোঃ সমৃদ্দ্দি সল্পিতি কুর্য্যাৎ "প্রসিদ্ধে শাস্ত্রপ্রবিজ্ঞ্যায়সী" তি ক্যায়- তথ্বিধৌ অক্সৈব গ্রহণাৎ। ভবতেঃ শস্তু ভন্তস্তু হে ভবনিত্যেব। ন চ স্থাঃ পাট পাড়ক হে হৈ ভোরিত্যব্যয়ভোঃশক্ষ সন্ধাৎ, বহু চ হে ভোরাদ্দিণ হৈ ভোরাদ্দিণ ইতি তেন হে ভোঃ, ভবচ্ছন্দেন চ হে ভবন্ ইতি সিদ্ধে বচনমনর্থকমিতি বাচ্যং যতো ভোঃ যতো ভবন্ ইত্যাদির্ সার্থক্যাৎ। তথাচ ভবদ্বীর্যায়ুল্লদেবানাংপ্রিষ্টের্যেগে সর্ব্বনামভ্যঃ সর্ব্বিভক্ত্যন্তভান্তসাদ্যো ভবন্তীতি।

প্রালিভেল—'ভবতী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবৎ রূপ হইয়া ধাকে। সম্বোধনে বিশেষ—হে ভোঃ, হে ভবতি। (৩১)

ক্লী—ভবৎ, ভবদ; ভবতী, ভবন্তি। এবং দ্বিতীয়া। পরে প্ংবৎ।
ভবন্ত (ভবং—মু) বাচ্যালিক্স ভৃ+শন্ত ঙ্ (শত্)।
পূং—ভবন্, ভবন্তৌ, ভবন্তঃ। ভবন্তম্, ভবন্তৌ, ভবতঃ। ভবতা,
ভবন্ত্যাম ইত্যাদি। হে ভবন্।

ন্ত্রী—ভবন্তী, ভবন্ত্যো, ভবন্তা: ইত্যাদি নদীবং। ক্লী—ভবং, ভবদ, ; ভবতী, ভবন্তি।

রপ্রস্ত মুপ্রাবোধাদিমতে—রপ্রং। (বৃ+শভ্ঙ্শাছ)।
পুং—ব্ধন্, বৃধন্তৌ, বৃধন্তঃ। বৃধন্তম্, বৃধন্তৌ, বৃধন্তা,
বৃধন্তাম্ ইত্যাদি।

ন্ত্রী—'বুগতী' ইত্যাকার শব্দ, নদীবৎ রূপ।

क्री-रूब १ वृश्व ; वृश्व हो, वृश्व हि।

श्राष्ट

मि।

তা

4,

হে

5:

19

3

তা

গ ত

খদন্ত্—(খদৎ, মৃগ্ধ), কুর্বস্ত্—(কুর্বৎ, মৃগ্ধ), ক্রীণস্ত্—(ক্রীণৎ, মৃগ্ধ) প্রভৃতি শব্দেরও বৃগ্নন্ত্ (বৃগ্নং মৃগ্ধ) শব্দের ন্তায় রূপ হয়।

প্রস্ত্ — (পৃষৎ, মৃগ্ধ), বৃহস্ত্ — (বৃহৎ, মৃগ্ধ), জগন্ত — (জগং,মৃগ্ধ)
প্রত্তি শন্বের ও শন্ত ড [শতু] প্রত্যয়ান্ত ভবন্ত (ভবৎ) শন্বের তুল্য

ভগবচ্ছস্ত্র ভগবান্ইত্যাদি—সম্বোধনে হে ভগবন্। কেচিত্ত্র ভবতো বাদেকত্বং সমৃদ্ধাবিত্যত্র যোগবিভাগাৎ ভগবদ্ভবংতার্কাদেকত্বং বর্ণমন্তি তদত্যেষামসম্বতং ভাষায়ামদৃষ্টত্বাৎ, এবম্ অঘবদাদীনাং রূপাণি।

(৩১) স্ত্রিয়াং ভবতী-শব্দো নদীশস্ববং। সম্বোধনে তুহে ভবতি হে ভৌরিতি লিঙ্গগ্রহণে লিঙ্গবিশিষ্টস্থাপি গ্রহণমিতি টীকা। (কলাপ) CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar bb Digitized by Arya Samaj Foding ស្រាក់ ក្រសួច និង ក្រុង និង ប្រាក់ ក្រសួច និង ក្រុង ភាពី ក្រុង ភិង ក្រុ

রূপ হয়। স্ত্রীলিব্দে-পৃষ্তী, বৃহতী এবং জগতী ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য। (৩২)

জগৎ,—বাচ্যলিঙ্গ (গম+কিপ্)

পুথ —জগৎ, জগদ; জগতো, জগতঃ। জগতম্, জগতো, জগতঃ।

জগতা, জগভাাম্ ইত্যাদি।

ক্লিনী—(সাকল্যবাচক) জ্বগৎ, জ্বগদ্; জ্বগতী, জ্বগন্তি। এবং দিতীয়া। পরে—জ্বতা ইত্যাদি।

প্রী—জগতী, জগতা; ইত্যাদি, নদীবৎ রূপ। শক্তং—ক্লী।

ষকং, যক্কদ্; যক্কতী, যক্কন্তি। যক্কং যক্কদ্; যক্কতী, যক্কন্তি; যকানি। যক্কা, যক্কতা; যক্কদ্ভ্যাম্ ইত্যাদি।

मक्९-क्री।

শকং, শক্কতী, শক্কন্তি। শক্কং, শক্কতী, শক্কন্তি, শকানি। শক্কতা, শকা; শকভাাম, শক্কন্তাম্; শকভি:, শক্কন্তি:। শক্কতে শক্ষে: , শকভাাম, শক্কন্তাম্; শকভাাম, শক্কন্তাম্; শকভাঃ, শক্কন্তা:। শক্তঃ, শক্ষ্যায়; শকভাঃ, শক্কান্ শক্ষাম্। শক্কতি, শক্ষি, শকনি; শক্কান্ শক্ষাম্। শক্কতি, শক্ষি, শকনি; শক্কান্

विटाइः अभ् ४१ रेडामिना आय्येडारयर्थि जूमामिशाधीर वावधारनर्थि नकांत्रलार्थ विष्हायंडी विष्हायंखीं भारायिकाः

R

⁽৩২) এবং বৃগন্ত (—৭) প্রভৃতীনামপি রূপাণি। পৃষন্ত্—(৭) বৃহন্ত (—৭) জগন্ত (—৭) মহন্ত (—৭) ইতি সাত্মদ্ব এব প্রকৃত্য ইতি প্রিপতি:। পৃষন্, পৃষন্তে, পৃষন্ত ইত্যাদি। প্রিয়াং পৃষতীত্যাদি নদীশন্ব বং। নপুংসকে পৃষৎ, পৃষদ্ ; পৃষতী, পৃষন্তি ইত্যাদি। পৃষদাদীনাং নপুংসকে ঘৃটি বাগম ইতি কেষাঞ্জিন্মভমপান্তং দশিত্রপাসিন্তে:।

দদন্ত,—(দদেৎ) বাচ্যলিঙ্গ (দা+শন্ত , শত্)।

প্র — দদৎ, দদদ, দদতৌ, দদতঃ। দদতম্, দদতৌ, দদতঃ। मन्छा, मनखाम् देखामि।

स्वीक्निट्य — मण्डी रेजामि; नमीवः।

र्घ.

: 1

বং

ক্লী—দদৎ, দদদ্; দদতী; দদতি, দদস্তি। এবং দিতীয়া। পরে श्रानिष्ठवर ।

দধন্ত্ (দধং), চকাসন্ত্ (চকাসং) জাগ্ৰন্ত (জাগ্ৰং), ফকন্ত (বকং), দরিত্রন্ত্ (দরিত্রং), শাদস্ত্, (শাদং), এবং জুহরন্ত্ (জুহরং) প্রভৃতি শব্দেরও দদন্ত্ (দদৎ) শব্দের ন্যায় রূপ হয়।

তুদন্ত –(তুদেৎ) বাচ্যলিঙ্গ (তুদ+শস্ত ঙ, শত্)। পू ८ - जूमन, जूमत्को, जूमछः। जूमखम्, जूमत्वो, जूमछः। जूमछा, कृत्छाम् हेलाि जित्रभाषायः। ८२ कृत्न।

জ্বী—'তুদতী' এবং 'তুদন্তী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য। क्री-जूनर, जूमम् ; जूमजी जूमखी ; जूमखि। এবং विजीया। भरतः भूश्वर ।

ভান্ত — (মুগ্ধবোধাদিমতে ভাৎ) ভা + শন্ত ঙ্ (শত্)

পুৎ—ভান্, ভান্তৌ, ভান্তঃ। ভান্তম্, ভান্তৌ, ভাতঃ। जिन्छाम् हेछानि ज्वन्तर। (र जान्।

জ্বী—'ভাতী' এবং 'ভান্তী ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য। ক্লী—ভাৎ, ভাদ, ভাতী, ভান্তী; ভান্তি। এবং দিতীয়া। পরে

শাধ্যন্তি, অপরে তুদাদিপাঠসামর্থ্যাৎ আয়ুস্থানিতাবং, তেন বিচ্ছতী বিচ্ন্তুত্বী ইদমেব তত্ত্বং ক্লাস্শ্রীপ্তিসম্মতত্ত্বাৎ। . CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

পুংলিপ্বং। যান্ত, রাস্ত, এবং লাস্ত্ (যাৎ, রাৎ, লাৎ) প্রভৃতি শন্বেরও ভান্ত (ভাৎ) শন্ববং রূপ জ্ঞাতব্য।

প্তর (প্রত) পচ্+শন্ত (শত্)।

পুং—পচন্ পচন্তৌ, পচন্তঃ। পচন্তম্, পচন্তৌ, পচতঃ। পচতা, পচদ্ভাাম্ ইত্যাদি। হৈ পচন্। (৩৩)

জ্রী—'পচন্তী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

দীব্যন্ত্ (দীবাৎ) প্রভৃতি শব্দেরও পচন্ত্ (পচ্ৎ) শব্দবৎ রূপ
জ্ঞাতব্য।

করিষান্ত,—(করিষা) ক্র-(ভবিষ্যং অর্থ) সু, শন্ত ঙ্ (শত্)

পুৎ—করিষান্, করিষ্যন্তৌ, করিষ্যন্তঃ। ইত্যাদি পচন্ত্ (পচৎ) বং।

(৩৩) পচে: শন্ত ড্ (শত্) পচন্ পচন্তো ইত্যাদি। দ্রিয়াং পচন্তীশব্দো নদীবং। অথাত নিত্যমন্বদ্লোপঃ কথং ন স্থাৎ ? উচাতে
অভ্যন্তাদন্তিরদিতি সিদ্ধে যং পৃর্বাস্ত্রেইনকারগ্রহণং তদিহার্থং, তেন তুদভাদিভাঃ পর এবান্তিরনকারকো ভবতি অন্তেভাঃ পুনঃ সনকার এব ইতি
নিয়মাৎ নিত্যমপ্যন্ত্রদ্লোপং বাধতে। এবং দীব্যন্ত্রপ্রভৃতয়ো জ্ঞেয়াঃ।

অদে: শস্ত (শত্) অদন্ ইত্যাদি—স্ত্রিয়াম্ অদতীত্যাদি নদীবং রূপম্। তুদভাদয়ো হ্বর্ণাস্তান্তং অবর্ণাস্তমেব নিয়মো ব্যাবর্ত্তয়তি, তেনাত্র অহ্বন্ধলোপো নির্বিবাদ এবেতি। নহু কথং "ভূশং ক্ষান্তী মকরন্দবিন্দুনা" ইতি প্রয়োগ: ? সত্যং জ্ঞাপকজ্ঞাপিতা বিধয়ো হ্যনিত্যা ইতি তায়াং অনবর্ণাস্তেইপি ব্যাবৃত্তিরিতি কেচিং। বস্তুতস্তু ক্লেটা নাম্যুপধত্যাং কে আথে তল্লোপে শস্তুঙ্প্রত্যয়ে রুপমিতি।

27

দ্রী—'করিষ্যতী' এবং 'করিষ্যন্তী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং ক্লপ জাতব্য। (৩৪)

ক্লী—করিষ্যৎ, করিষ্যদ্; করিষ্যতী, করিষ্যন্তী; করিষ্যন্তি। এবং ভিতীয়া। পরে পুংলিঙ্গবৎ।

তড়িৎ—স্ত্ৰী।

্ডড়িৎ, তড়িদ্; তড়িতৌ, তড়িতঃ। তড়িতম, তড়িতৌ, তড়িতঃ। তড়িতা, তড়িদ্ভাাম্ ইত্যাদি।

যোষিৎপ্রভৃতি শব্দেরও তড়িৎ শব্দবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

মরুত্রত্ত —(মরুত্রত) পুং। মরুদ্বিদ্যতেহশু ইতি বাক্যে।
নক্তান্, মরুত্তৌ, মরুত্তঃ। মরুত্তম্, মরুত্তৌ, মরুত্তা।
নক্তা, মরুত্বভাগ্ ইত্যাদি।

গরুত্ত্ (গরুত্থ) বিহাত্ত (বিহাত্থ) প্রভৃতি শব্দেরও পূর্ববং
মক্তথ শব্দের ন্যায় রূপ জ্ঞাতব্য।

বিহুস্ত — (বিহুস্থ) বাচ্যলিঙ্গ।

(विषान् विमार्ज्ञ हेजामि वास्का)।

পুং—বিহুমান্, বিহুমন্তের, বিহুমন্তঃ । বিহুমন্তম্য, বিহুমন্তের, বিহুমন্তের,

ক্রী—বিহুমং (দ), বিহুমতী, বিহুমন্তি ইত্যাদি। (৩৫)

⁽৩৪) করিষ্যতীতি পক্ষে "ঈতি শুতো ন লোপো "বা" ইতি শ্রীপতি-শুত্রেণ নলোপ:। শুশনাদ্ বিভাষামিচ্ছস্তীস্তি টীকাক্বত:।

⁽ ৩৫) বিত্মস্ত শকঃ। অত্ত ভদ্ধিত্যকারবদ্ধাবাত্তং বৃদ্ধ উত্ববিধা মত্বৰ্ণীয়েহপি বক্তব্যমিতি হুৰ্গঃ। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ख्वी-विष्यणी, नमीवः क्रा

সমট্ৎ-পূং, छो। (সম্-অট্ৎ + किপ)

দমৎ, সমদ্; দমট্রো, সমট্রঃ। সমট্রম্, সমট্রো, সমট্রঃ। সমট্রা, সমদ্ভ্যামিত্যাদি।

ञ्हित्-क्री।

(শোভনা হরিৎ যশু কুলশু তৎ ইত্যাদি বাক্যে)।

স্থ্যিৎ, স্থ্যিদ্; স্থ্যিতী, স্থ্যিতি। এবং দিতীয়া। স্থ্রিতা, স্থ্যিদ্ভামিত্যাদি তড়িদ্বৎ।

সংযৎ, পরীতৎ প্রভৃতি শব্দেরও তড়িৎ শব্দের ন্থায় রূপ জ্ঞাতব্য।

থান্ত।

गथ् – शूर व्यथवा छी।

(মথাতীতি মন্+কিপ্)

मर, मन् ; मरथी, मथः। मथम्, मरथी, मथः। मथा, मन्डाम्, मन्डिः।

माञ ।

पृश्प-ञ्जी।

पृगंद, पृगंद, पृगंदनी, पृगंदा। पृगंदम, पृगंदनी पृगंदा। पृगंदा, पृगंदा, पृगंदा, पृगंदा, पृगंदा, पृगंदा, पृगंदा,

ত্যদ্—দৰ্কনাম।

পুথ—ভঃ, ত্যো, ত্যে। তাম্, ত্যো, তাান্। তোন, তাাভাাম্, তৈয়:। তালে, তাাভাাম্, তোভা:। তালাং, তাভাম্, তোভা:। তাল, তালোং, তোভা:। তাল, তালোং, তোল্।

ক্লী—তাৎ, তাদ ; তো, ত্যানি। এবং দিতীয়া। পরে পুংবং।
ন্ত্রী—ভা, ত্যে, তাাং,। ত্যাম্, ত্যে, ত্যাঃ। ত্যয়াইত্যাদি সর্বাবং।

তদ্—সর্বাম।

পুং—দঃ, তৌ তে। তম্, তৌ, তান্। দর্ববং। দপ্তমী—তিম্মিন্, তত্ত্ব, তদা, তদানীং, তহি; তয়োঃ তেষ্। দ্বিচন বহুবচনেও তত্ত্র প্রভৃতি প্রযোধ্য।

ক্লী—তৎ, তন্ব; তে, তানি। এবং দিতীয়া, পরে পুংলিঙ্গবং।
ক্রী—না, তে, তা:। তাম্ ইত্যাদি। তয়া, তাভ্যাম্, তাভিঃ। তস্তৈ,
তাভ্যাম্, তাভ্যঃ। তস্তাঃ, ততঃ; তাভ্যাম্, তাভ্যঃ। তস্তাঃ তয়োঃ,
তাসাম্। তস্তাম্, তত্র; তয়োঃ, তত্র; তাস্ক, তত্র (সর্বানামা বৃত্তিমাত্রে
পুংবছাব ইত্যুক্তমেব)।

যদ্-সর্বনাম।

পুং—য:, যৌ, যে। যম্, যৌ, যান্; যেন, যথা ইত্যাদি তদ্বং। বিশেষ—সপ্তমীতে 'দানীমৃ' প্রত্যন্ত নাই।

জী—যা, বে, যা:। याम, বে, যা:। यहा ইত্যাদি। তদ্বং।
ক্লী—যং, যদ; বে, যানি। এবং ২দ্না। ধেন যথা ইত্যাদি
সুংবং।

অতিযদ্ এবং অতিতদ্—পুং অথবা স্ত্রী।

অতিযৎ, অতিষদ্ ; অতিযদৌ, অতিযদঃ ইত্যাদি দৃশদ্বৎ। ক্লী—অতিযৎ, অতিযদ্ ; অতিযদী, অতিযদি ইত্যাদি। এই প্ৰকারে অতিতদ্ শব্দের রূপও আত্ব্য। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

এতদ্—সর্বনাম।

পূং—এয়:, এতৌ, এতে। এতম্, এতৌ, এতান্। এতেন, এতথা;
এতাভ্যাম্। এতৈঃ। (এবং থাপ্রত্যয়োহপি)। এতিম, এতাভ্যাম্,
এতেভ্য:। এতস্মাৎ, অতঃ; এতাভ্যাম্, এতেভ্য: (দিবচনবহুবচনয়োরপি
তদ্)। এতস্ত, এতয়োঃ, এতেবাম্। এতস্মিন্, অত; এতয়োঃ,
এতেয়্। (ওদ্মুপোরপি তঃ)।

নপুং—এতং, এতে, এতানি। এবং ২য়া। পরে পুংবং।(৩৬) স্ত্রী—এষা, এতে, এতাঃ। এতাম্, এতে, এতাঃ। এতয়া, এতাভ্যাম্, এতাভিঃ। এতিস্তৈ ইত্যাদি তদ্বং।

অত্যেতদ্— পুং অথবা স্ত্রী (এতমতিক্রান্তঃ এবং এতমতিক্রান্তা ইত্যাদি বাক্যে)।

অত্যেতৎ, অত্যেতদ্ ইত্যাদি দৃশদ্বৎ।

क्की—(এতমতিজান্তং কুলম্ ইত্যাদি বাক্যে)।

অত্যেতৎ, অত্যেতদ্; অত্যেতদী, অত্যেতদি। এবং দিতীয়া। পরে পুংবং।

0

9

3

4

यूश्चम्-मर्वनाय। विनिष्ट जुना।

चम, य्वाम, य्यम् । चाम, य्वाम्, य्यान् । चम्ना, य्वाज्याम, य्याजिः ।

(৩৬) নপুংসকে এতদানয় অথবা এতদ্ ভ্জ্তে তাদেশবিধী এত ইত্যেতচ্ছদ্বৈশুকদেশান্ত্করণং গৃহতে, তেন স্ত্রীপুংসয়োন্তাদাদানে এতবৈশনদেশ:। নপুংসকে ত্ নিত্যবাদমো লোপে তত্ত্বপ্রতিষেধাৎ ত্যদাদাবাভাবে বিতীয়ায়ামিতি বিষয়সপ্রমীবাদকারব্যবহিতে এতভাগ-বৈশ্বনাদেশ:।

তুভাম, যুবাভাাম, ষ্মভাম। জং, যুবাভাাম, যুমং। তব, যুবয়োঃ, যুমাকম। জয়ি, যুবয়োঃ, যুমাসং। হে ভুম্। (৩৪)

বামতিকান্তা, ত্বামতিকান্তো, ত্বামতিকান্তা: ইত্যাদি বাক্যে—

অতিত্বম, অতিত্বাম, অতিযুয়ন্। অতিত্বাম্, অতিত্বান্। অতিত্বাম্, অতিত্বান্। অতিত্বাম্, অতিত্বাভ্যাম্, অতিত্বভাম্। অতিত্বৎ, অতিত্বাভ্যাম্; অতিত্বৎ, অতিত্বদ্। অতিতব, অতিত্বয়োঃ
অতিত্বয়াম্ (অতিত্বাকম্, কৌ)। অতিত্বিয়, অতিত্বয়োঃ, অতিত্বাস্থ। (৩৮)

যুবামতিক্রান্তঃ, যুবামতিক্রান্তের, যুবামতিক্রান্তাঃ। ইত্যাদি বাক্যে—
অতিথ্য, অতিযুবাম্, অতিযুয়ম্। অতিযুবাম্, অতিযুবাম্, অতিযুবান্।
অতিযুবয়া, অতিযুবাভ্যাম্, অতিযুবাভিঃ। অতিযুবভাম্ অতিযুবাভ্যাম্
অতিযুবভাম্। অতিযুবং; অতিযুবাভ্যাম্; অতিযুবং; অতিযুবদ্।
অতিতব, অতিযুবয়োঃ; অতিযুবয়াম্, (অতিযুবাকম্, কৌ)। অতিযুবয়ি।
অতিযুবয়োঃ, অতিযুবায়।

"যুমানতিক্রান্তঃ" ইত্যাদি বাক্যে—

অতিত্ম, অতিযুখাম, অতিযুখম্। অতিযুখাম, অতিযুখাম, অতিযুখান্ অতিযুখমা, অতিযুখাভ্যাম, অতিযুখাভিঃ। অতিতৃভ্যম্, অতিযুখাভ্যাম্,

⁽৩৭) যুখ্যসিভ্যাং মদিরিতি মদিপ্রতায়ে যুমদস্মচ্চকৌ, অনয়ো:
প্রভাবাৎ লিককার্য্যাভাবেন লিকত্রে সাম্যং, তথাচ ফান্তাঃ সংখ্যা
অলিককা: কত্যব্যম্মদস্মদস্মেতি ভাষ্যম্।

⁽৩৮) ত্থামতিক্রান্তঃ মামতিক্রান্তঃ ইত্যাদে যুমদম্মদর্থক্তৈকত্বে ত্মদোরিত্যাদিনা তত্ত্রৈব তয়োনির্দ্দেশজ্ঞাপ্যত্বাত্তমদাদেশে ত্মহমিত্যাদিনা
ত্মহমাদেশে। যুমদম্মদর্থক্ত দ্বিত্বেহপি যুবাবাদেশে বাধিতা পরত্বাত্তমহমাদেশে এবমক্তব্রাপি সর্বাদেশো বোধ্য ইতি।

অতিযুমভ্যাম্। অতিযুমং, অতিযুমদ্; অতিযুমাভ্যাম্, অতিযুমং (দ)। অতিবৃদ্ধা ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত অতিযুম্বাম্ন, (অতিযুম্বাক্ম—কৌ) অতিযুম্বিদ্ধান্ত অতিযুম্বাম্নায় । (৩৯)

অস্মদ্—সর্ববনাম। (তিলিদে সমান)

वा

36

অহম্, আবাম্, বয়ম্। সাম্, আবাম্, অস্থান্। ময়া, আবাভাাম্, অস্থাভি:। মহম্, আবাভাাম্, অস্থভাম্। মৎ (দ্) আবাভাাম্, অস্থৎ (দ্) মম, আবয়োঃ, অস্থাকম্। ময়ি, আবয়োঃ, অস্থান্থ।

'মামতিক্রাস্তঃ' ইত্যাদি বাক্যে—

অত্যহম, অতিমান, অতিবয়ম্। অতিমান, অতিমান, অতিমান্। অতিময়া, অতিমান্ অতিময়া, অতিমান্ অতিময়া, অতিমান্ অতিময়াম্। অতিমৎ (দ্), অতিমাভ্যাম্, অতিমহ। অতিময়, অতিময়াম্ (অতিমাকম, কৌ)। অতিময়ি, অতিময়োঃ, অতিমান্ত (আবামতিক্রান্তঃ ইত্যাদি বাক্যে—

অত্যহম্, অত্যাবাম্, অভিবয়ম্। অত্যাবাম্, অত্যাবাম্, অত্যাবান্।

⁽৩৯) যুবামাবাং বা অতিক্রান্তমিত্যর্থে অতিযুবামত্যাবামিতি 'যুবাবৌ ছিবাচিয়্" ইত্যক্র শ্রুত্থাৎ ছিবাচিছিত্যনেন যুমদম্মনোঃ সম্বন্ধাং ছিবাচিষ্ বর্ত্তমানয়োর্মদম্মনোঃ স্থানে যুবাবৌ ভবত ইত্যর্থে সতি যুমদম্মনী যদা ছিত্তে বর্ত্তেতে সমাসপ্রকৃতিশ্চৈকতে বহুতে বা তদা যুবাবাদেনৌ ভবত এবেতি। প্রত্যাবলাপলন্দপভাষেন যুমদম্মনোর্ছিতে বর্ত্তমানত্থাৎ, প্রকৃতিশ্বর্ত্তানেন প্রকৃতিনান্তি অন্তলোপে তৎস্ক্রসামর্থ্যাৎ, অভ্যথা তৎস্থা লুকো বিভক্তর ইতি কতে সম্প্রিপ্তর্মান হালি লুগ্লোপে ন প্রত্যাবক্ত মিত্যনেনানাদীনাং নিষেধাৎ ব্যর্থন্তদিতি। যদা তু যুম্মদম্মনী বহুত্তিক্ত্র্যোব্র্তেতে সমাসপ্রকৃতির্দ্বিতে তদা ন যুবাবাদেশাবিতি। অত উক্তংশসমস্থেতে যদৈকতে বহুতে যুম্মদম্মনী। সমাদো বর্ত্ততে ছিত্তে ন যুবাবৌ, তদা তয়োঃ।" ইতি।

ৰত্যাবয়া, অত্যাবাভ্যাম, অত্যাবাভি:। অতিমহ্নম্, অত্যাবাভ্যাম্, ৰত্যাবভাম্। অত্যাবং (দ্), অত্যাবাভ্যাম্, অত্যাবং (দ্)। অতিমম, ৰত্যাবয়ো:, অত্যাবয়াম্ (অত্যাবাকম্, কৌ)। অত্যাবমি, অত্যাবয়ো:, ৰত্যাবাস্থ।

'অস্থানতিকান্তঃ, ইত্যাদি বাক্যে—

य,

()

5-

:,

[]

n

व्

3

5

81

j-|অত্যহম্, অত্যস্থাম্, অতিবয়ম্। অত্যস্থাম্, অত্যস্থাম্, অত্যস্থান্।
অত্যস্থা, অত্যস্থাভ্যাম্, অত্যস্থাভ্যাম্,
অত্যস্থভ্যম্। অত্যস্থং, অত্যস্থাভ্যাম্, অত্যস্থং, (দ্)। অতিমম,
অত্যস্থ্যোঃ, অত্যস্থ্যাম্ (অত্যস্থাকম্, কৌ)। অত্যস্থি, অত্যস্থায়েঃ,
অত্যস্থাস্থ (৪০)

'আমাচক্ষাণঃ, আমাচক্ষাণী, আমাচক্ষাণাঃ' ইত্যাদি অর্থে—দ্বিতীয়ার একবচনে সাধিত 'আম্' এই পদের উত্তর ণিচ্, (ঞি, ইন্) করিয়া কিপ্ করিলে 'ঘদা' ইত্যাকার শব্দ হয়, ইহার রূপ যথা—

থামাচকাণ: ইত্যাদি বাক্যে—১মা—থম্, থাম্, যুদ্ধ্। ২য়া—থাম্, থাম্, থান্; ওয়া—থেন (ওয়া ইতি দি, কৌ, টীকামতে) থাভ্যাম্, থৈ: (ছাভ্ডি:, ভায়)। ৪র্থী—তুভ্যম্ থাভ্যাম্, থভ্যম্। ৫মী—থং (দ্) খাভ্যাম্। থং। ৬টী—তব, থয়ো:, থানাম্ (ওয়াম্; ওয়াকম্ ইতি কেচিং)। ৭মী—থে। (ওয়ি, ভাষ্য), ওয়ো:, ওয়্ (ড়ায়, ভাষ্য)।

'য্বামাচক্ষাণ:, য্বামাচক্ষাণো, য্বামাচক্ষাণা:, ইত্যাদি অর্থে—বিতী
মার ছিবচনে সাধিত 'যুবাম্' এই পদের উত্তর পিচ্ (ঞি, ইন্) করিয়া কিপ্

করিলে 'যুমঃ' ইত্যাকার শব্দ হয়, ইহার সকল বিভক্তিতে রূপ যথা—

^(8•) উপসজ্জনতেংসর্বনামতাৎ স্বাগমাভাবঃ তদভাবতাচ্চ নাক্ষ্ ইতি ক্লাপ্মতৃষ্।

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

य्वामाठकानः हेजानि वात्का—>मा— चम्, य्वाम्, य्वम्। २म्नय्वाम्, य्वाम्, य्वान्। ७म्ना—य्वन (य्वम्ना, ज्ञाम्) य्वाजाम्, य्वैदः।
(य्वाजिः, जाया)। ४थी— ज्ञाम्, य्वाजाम्, य्वजाम्। ४मी— य्वर (ए),
य्वाजाम् य्वर (ए)। ७४ी— ज्व, य्वरम्नाः, य्वानाम्; (य्वम्नाम्, य्वाकम्)।
भी—य्वव (य्वम्नि, जाया,) य्वरमाः य्वय् (य्वाञ्च, जाया)।

23

व

ष

অ

(8

মি

भरः

र्य,

शाद

युवा

'যুমানাচক্ষাণ:, যুমানাচক্ষাণো ; যুমানাচক্ষাণা:' ইত্যাদি অর্থে ২য়ার বছবচনে সাধিত 'যুমান্' এই পদের উত্তর ণিচ্ (ঞি, ইন্) করিয়া কিপ্ করিলে 'যুম' ইত্যাকার শব্দ হয়, ইহার সকল বিভক্তিতে রূপ যথা—

এইরপ নিজন্ত (এগন্ত, ইনন্ত) পরে কিবন্ত অন্মদ্ শব্দের রূপ ষ্থা—
মানাচক্ষাণ: ইত্যাদি বাক্যে—১মা—অহম্, মাম্, বয়ম্। ২য়া—মাম্
মাম্, মান্। ৩য়া—মেন, মাভ্যাম্, মৈ: (মাভিরিতি ভাল্যে)। ৪য়ী—
মহাম্, মভ্যাম্, মভ্যম্। ৫মী—মৎ (দ্), মাভ্যাম্; মৎ (দ্) ৬৪ী—
মম্, মল্যোং, মানাম্ (ময়াকম্। ময়ামিতি ভাল্যমতম্)। ৭মী—মে, ময়োঃ,
মের্ (মাস্ল ইতি ভাল্যমতম্)।

'আবামাচকাণঃ' ইত্যাদি বাক্যে—১মা—অহম্, আবাম্, বয়ম্। ২য়া—আবাম্, আবাম্, আবান্। ৩য়া—আবেন (আবয়া ইতি ভাষ্যমতে) আবাভ্যাম্, আবৈ: (আবাভি:)। ৪য়ি—মহ্ম্, আবাভ্যাম্, আবভাম্। ৫মী—আবৎ, আবাভ্যাম্; আবৎ। ৬য়ৢ—মম; আবয়ো:, আবানাম্। শব্দর্গ-কল্লড়েমঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(আবাকম্। আবয়ামিতি ভাষ্যমতম্)। ৭মী—আবে, আবয়োঃ, আবেষ্, (আবাস্থ ইতি ভাষ্যমতম্)।

7),

) 1

র

भ

'बन्नानां क्लांशः' ইত্যাদি বাক্যে— ১মা— অহম; অসাম, অন্বাম্; वয়म् ।
३য়— অসাম, অন্বাম্; অসাম, অন্বাম্; অসান, অন্বান্। ৩য়— অসা,
অন্ধা; অস্ভ্যাম্, অন্ধ্যাম্; অস্ভি:, অন্ধ্তি:। ৪য়ি— মহম্; অস্ভ্যাম্, অন্থ্যাম্; অসভ্যম্। ৫মী— অসং, অন্ধ্য:, অসভ্যম্,
অন্ত্যাম্; অসৎ, অন্ধং। ৬য়ী— মম, অসোঃ, অন্ধাং, অসাম্,
অন্ধ্যাম্। १য়ী— অসি; অন্ধি; অসেঃ, অন্ধ্যা
য়িপ্তিমতে—ভাদে সাদে চি বিভক্তে ফ্লারন্ত্যাদ্বাম্বাদ্যামিত্যাদি)। (৪১)

(৪১) সমস্তমানে ঘ্যেক্ত্বাচিনী যুদ্দশ্বনী।
সমাসার্থোহন্তসংখ্যশ্চেই স্থো যুবাবৌ ত্বমাবলি॥১॥
স্কল্ডেঙদ্র পরত আদেশা: স্থা: সদৈব তে।
তাহৌ যুরবয়ৌ তুভামহৌ তব মমাবলি॥২॥
এতে পরতাদ্ বাধন্তে যুবাবৌ বিষয়ে স্বকে।
ত্মাবলি প্রবাধন্তে প্রবিপ্রতিষেধত:॥৩॥
ঘেকদংখা: সমাসার্থো ব্রর্থো যুদ্দশ্বনী।
তয়োরঘোকতার্থকাং ন যুবাবৌ সমৌ ন চ॥৪॥

ইনস্ত (ঞান্ত, ণিজন্ত) যুমদেশদেশ । বাং যুবাং যুমান্ বা আচকাণং ইত্যাদৌ কর্মভ্তাৎ 'বাম্ যুবাম্ যুমান্ বা' ইতি নাম্মং ইনি (ণিচি, ঞৌ) ক্রতে পদপ্রতায়াভিসম্বন্ধে "পদানাং প্রভ্যায়ের্যায়ায়ামান্তেই বৃত্তয়্মং" ইত্যক্তেন বৃত্তিরূপযুক্তার্থসন্ত্বন "তৎস্থাং" ইত্যক্ত হিতা লোপ্যা বিভক্তয় ইত্যকরণেন তদ্গ্রহণাৎ কার্যাজেন প্রধানভৃতক্ত নামাং যুক্তার্থ ইত্যক্ত সমাস রূপকৈ ক্রেণেল ভাগ্রহণাৎ কার্যাজেন প্রধানভৃতক্ত নামাং যুক্তার্থ ইত্যক্ত সমাস রূপকৈ ক্রেণেল ভাগ্রহণাৎ কার্যাজেন প্রধানভিত্ত বৃত্তার্থেন প্রামানভিত্ত ত্বাজেন হিহ যুক্তার্থোহমুক্তয়্মঃ প্রাণ্ বিপর্যায়াৎ" ইত্যক্তেন 'তৎস্থাং' ইত্যানেন বিভক্তিলাপে 'যা যক্ত্র' ইতি তার্যেন প্রামাগতক্ত যুম্মনং অন্ত্যাম্বরাদিলোপে কিব্ বিষয়্যাশ্রিত্য কার্রিতলোপে ততঃ ক্রিপি তক্ত চ লোপে যুম্ম ইতি শব্যঃ সম্পাততে। ক্রেচিজ্—ইনি ক্রতে 'যুম' ইতি স্থিতে পুনরেক্ত্রং বিদ্বং বা আশ্রিত্য বদাদেশে ব্রাদেশে বা ক্রতে পুনরন্ত্যম্বরাদিলোপে কারিতলোপে চ "বং, যুব্, যুম্" ইতি প্রকৃতিত্রয়ং সম্পাদমন্তি। তম্ব চাক্ষ্য ব্লাদেশে ক্রতেহনেকাকর্বাভাবাং অন্ত্যম্বরাদিলোপক্ত "তথা যুবাদেশক্ত

প্রত্যয়লোপলক্ষণেনান্তাদোপা" দিতি বৃত্ত্যুক্তেন্তথা "পূর্বতো বিভক্তি-বিতারবর্ততে ততো দিবে বর্তমানমোর্বাবৌ বিভক্তো ভবত:" ইতি নিকাকারোক্তেশ্চাপ্রাপ্তেরিতি। (একবচনাস্তাৎ ত্বাং মাং বা আচক্ষাণঃ ইতার্থে আং মাং বা ইতি পদাৎ ইনি কতে অদাদেশন্ত সর্বৈরেব সম্মতত্তাৎ তথাবিধস্বলে কিপি কারিতলোপে চ অদ্ মদ্ বা ইতি একবচনঘটিতা প্রকৃতি: সম্পত্তত এব। স্বদয়তি মদয়তীতি স্বন্মদোরিত্যাদিস্ততে চীকায়াং দশিতঞ ইত্যমদগুরব:)।

যুম্মানাচক্ষাণাবিত্যাদে ''একদেশবিক্বতস্থানম্বর্ত্তাবাৎ 'বাম্শদোঃ' ইত্যতো মণ্ড কপ্লতা। বাহুবৰ্ত্তনাৎ বিভাষয়ান্তলোপে" ইতি টীকাক্তাকে-"রেষা" মিত্যাদিনা বিকল্পেনান্তলোপাৎ, যুখাং যুধাম ইত্যাদি। অতএবোক্তম—'ইনন্তয়োস্ত তদ্বাচ্যং যতুক্তং যুম্মনম্মদোঃ। বৰ্জ্বিইত্ত্ব-মাৰ্ফ মান্তলোপো বিভাষয়া"॥ ইতি। এতাত্বৰ্জনপ্ৰকারত্ত বক্ষাম:।

যুবামিতি যুবাবাবিতি সংহিতায়াং নিশ্চয়াভাবেহপি আয়ায়াৎ य्वावारमा अवाखादवव देखि। जल्लाल कार्विनः अवाख्य मार्विगार তদাদেশোহপি তথেতি বক্তং ন যুজ্যতে অত্র ব্যঞ্জনান্তস্ত সম্ভবাৎ।

ষ্যান্ যুখানিতি ''আন্শদ্'' ইত্যস্ত প্রয়োজনমত্ত্রৈব ব্যঞ্জনাস্তা—''চ্ছিসি শক্ত চন'' ইত্যক্তাবিষয়ত্বাং অতথা আকারাতত্বাং বৃক্ষানিব যুমানিতি সিধাতি। ন চ ব্রিয়াং নপুংসকে চ দোষ ইতি বাচাম্ অলিঙ্গাং। ন চ "এত্বমস্থানিনী" ত্যেবং স্থাৎ তত্তাশসি ইতি বিশেষণাৎ।

(यन (यन हेजामि) अवितिधो वाम्यामिकाराज। वाधिकाराध ইনন্তরোর্ম্মদমদোরেবং ন ভবতি আত্ববিধাবপ্যেব্যতি টীকাক্বতাপ্যেবং লিখিতমিতি। কেচিত্র একারপ্র স্বরজাতীয়ত্বাৎ স্বরক্তৈব স্থানে প্রবর্তত-ইতি নৈজঃ তথাজমণীত্যকা যুষাং যুমাং যুষ,ভ্যাম্ যুম্ভ্যামিতাানৌ এডাতে নিরাকুর্বতে, তল ব্যল্জনন্থানে স্বরজাতে: প্রবৃত্তিদ্ ছাতে; 'দিব উন্ ব্যঞ্জনে'' ইত্যাদৌ । CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ভাষ্যমতে তু—"এ তু অম্ এত্ব" মিতি প্রশ্নেবাং এ একার: অম্
অকারস্থানং প্রাপ্রোতি ইতি ব্যাখ্যানাদ্ যত্রাকারস্থা বিভ্যানতা তত্ত্বির
এত্বাত্বে স্থাতামিতি তন্মতে ত্বা যুব্রা ইতি ভেদঃ।

ষাভ্যাং যুবাভ্যামিত্যাদৌ "আত্বং ব্যঞ্জনাদা" বিত্যক্ত নিষেধেহিদি "অকারো দীর্ঘং ঘোষবতী" তি দীর্ঘঃ স্থাদেব। ভাষ্যকারমতে তু—"আত্বং ব্যঞ্জনাদা" বিত্যনেনৈবাত্বম্ অকারক্ত সন্থবাং। শ্রীপতিমতে তু—যুষ্ভ্যামিত্যর যুড়ভ্যামিতি। ন চাক্ত মতেহপ্যন্তলোপে ষান্তহাং ভত্বং কর্বং ন ক্রাং, ন চ "ন সংযোগান্তা" বিভ্যাদিনা অনুপ্রবন্তাবাদিতি বাচ্যম্ তক্ত নকারলোপক্ত বিরামব্যঞ্জনাদৌ ক্বতক্ত সাহচর্য্যেণ বিরামব্যঞ্জনাদৌ ক্রডক্তংযোগান্তলোপং প্রত্যেব বিষয়ত্বাং। অত্র তু "এষা" মিত্যাদিনা বিভক্তাবেবান্তলোপ ইতি চেদ্সিদ্ধবদ্ভাবান্ন ডকার ইতি। শ্রীপতিমতে তু—"ন সন্ ডাদা"-বিত্যনেন তক্তাপি নিষেধাং ডত্বং ন বিহ্নত ইতি।

সাং যুবাং যুমান্ বা আচক্ষাণৈ: দহ ইত্যথে সৈ: যুবৈ: ; যুব্ভি: যুমভি: ; ভাষ্যমতে স্বাভি:, যুবাভি:, শ্রীপতিমতে যুড্ভিরিত্যপি।
যুমানাচক্ষাণাভ্যামিত্যথে যুষ্ভ্যাং যুমভ্যামিতি, শ্রীপতিমতে যুজ্ভ্যামিতি।

যুমানাচক্ষাণেভ্য ইত্যর্থে যুম্বভ্যং যুম্মভ্যমিতি। নমু "ভাসভ্যম্" ইত্যম্পাকারত অত্র প্রয়োজনসত্তাৎ অকারোচ্চারণমিতি বৃত্তিঃ কংং সঙ্গছত ইতি? সত্যং দর্শিতোদাহরণেষ্ ব্যর্থমিদমাশস্ক্য তেমপি সার্থকস্বমকারত্ত ব্যবস্থাপিতং বৃত্তিক্বভা, দর্শিতাদত্ত্ব প্রয়োজনং বিগত এবেতি বোধ্যম্। যেহপি ভকারাদিমাদিশন্তি তন্মতেইপি লিঙ্গর্ত্তঃ পুনর্ব্তাববিধিনিষ্টিতক্তেতি তামাৎ ধুট্যেত্বং ন ভবতি, অম্মনতে স্বনিত্যোহ্যং তাম ইতি।

যুধ্যু ইতাত্র নামিন: ষকারব্যবধানে ষত্বং ন চ ঘ্রকারগ্রহণতাত্র প্রব্যেজনার্থতাৎ কথন্তত্র ষ্রগ্রহণং পণ্ডিভমিতি বাচ্যং দভোদাহরণ-বিষয়ত্বাং।

व्यम् गायक्षि भूकंवर विरवहार विहार्याः मगारध्यकः।

वय

তৈৰ

रेशि

to:

जा-

॰ न

53

प्ती

ना

তু

<u>.</u>

51

13

5

অস্ভ্যামিত্যক্র প্রীপতিমতে অদ্ভ্যাম্। স্বমতে অস্ভ্যামিত্যক্র "ধুটা" স্তৃতীয়" ইতি ন ভবতি, অদিকবদ্ভাবাং। কস্ক-আদিত্যাং সকারস্ত সকার-বিধানাদ্ বা। নত্ন অস্ভ্যামিত্যক্র "সংযোগাদেধুটি" ইতি সলোপ: কথং ন স্থাং? সত্যমধুট্পরস্থ সংযোগাদেধুটো লোপো নান্তি ইতি ভান্তম্। অস্মাকমপি মতমেতদিতি কবিরাজ:। ন চৈতদসঙ্গতম্ অক্ষন্তদ ইতি "সংযোগাদেধুটি" ইতি সলোপ ইতি বৃত্তিক্বত্তেরৌপদেশিকাধুট্পস্তাবাদিপদেশিকাধুট্পর এবানিত্যবাভ্যপগ্যাং।

অস্ভ্যাম্ অস্ভি: ইত্যত্র অদ্ভ্যাম্ অদ্ভি: ইতি প্রীপতি:।

তুর্গাদাসকুতম্প্রবোধটীকায়াম্ এগ্রু হেলঃ, (ইনস্ত হো: নিজন্ত হো:)

কিবন্ত হো: যুম্মদম্মদশক যোরেবংবিধানি রূপাণি। যথা—

"आउकिवस्रसाय् भित्यातादक एवं नर्सव वनाते।" 'वामावकानः,— प्राप्त प्रम्। चार, चार, चान्। प्रम्ना, प्रचार, प्राचिः। प्रः, प्राच्याः, प्रचाम्। प्रः, प्राच्याः, प्रयः। प्रमाविकानः—मर, मार, मम्। मार्थः मान्। प्रमा, मान्याः, मान्यः, मान्याः, मान्याः, मान्याः, मान्याः, मान्याः, मान्याः, मान्याः,

আবামাচক্ষাণঃ—অহম, আবাম, বয়ম্। আবাম, আবাম, আবান্। আবরা, আবাভ্যাম, আবাভিঃ। মহাম্ আবাভ্যাম, আবভ্যম্। আবং, আবাভ্যাম্, আবং। মম, আবয়োঃ, আবয়াম্ (আবাকম্ ইতি জৌমরাঃ) আবিয়ি, আবয়োঃ, আবাহাঃ।

১ ও Digitized by Arya Samaj Foundation Chemia and eGangotri

পরমশ্রমশ্রেন (পরমশ্রাসে) তির বিশেষ ত্লা।

পরমত্বম, পরময্বাম, পরমযূহম্ ইত্যাদি দর্বত যুখদ্শন্ধবং।
শিক্তমাত্মত্—(পরম্ভাসে) অহঞ্চেত কর্মধারয়সমানে) তিন
লিক্ষেই তুল্য।

পরমাহম্, পরমাবাম, পরমবয়ম্ ইত্যাদি অম্মদ্শকবৎ।

विम्, - शूः व्यथवा खी। (विम् + किन्र्)

বিং, বিদ; বিদৌ, বিদঃ ইত্যাদি।
আতিবিদ্—ক্লী। (বিদমতিক্রান্তং কুলমিতি বাক্যে)।
অতিবিদ, অতিবিং.; অতিবিদী; অতিবিদি। এবং দ্বিতীয়া। পরে
পুংবং।

বহুত্বে তু সৌ—তাহৌ, জিস—যুষবদ্ধী, অমি, ওসৌ চ—ত্বাদৌ;
ভিবচনেযু—যুবাবৌ, সস্ভিস্কুপ্লু, যুযাসৌ, টাসহিত্যোঃ ত্বা, ম্যা, ; ঙি
সহিত্যোঃ ত্যি, মিয়। অশুৎ সর্কাং পূর্কবং। যথা—যুমানাচক্ষাণঃ তুং, যুবাং,
যুম্ম। তাং, যুবাং, যুমান। ত্যা, যুবাভ্যাং, যুমাভিঃ। তুভাং, যুবাভ্যাম্
যুমভাম (যুব্ভামিতি জৌমরাঃ, যুড্ভামিতি কাডলাঃ)। তুং, যুবাভ্যাম;
যুমং। তব, যুব্যোঃ, যুম্মাম (যুমাকং যুষাকমিতি জৌমরাঃ)। ত্যি,
যুব্যোঃ, যুষাস্থ।

অস্থানাচক্ষাণ:—অহম, আবাম, বয়ম। মাম, আবাম, অসান্। মা।, অবাভ্যাম, অস্থাভি:। মহাম, আবাভ্যাম্ অস্থভ্যম্ ('অসভ্যম্'ইতি জৌমরা:) মৎ আবাভ্যাম্, অস্থং। মম, আবয়ো:, অস্থাম্ (অস্থাকম্) অসাকম্ইতি জৌমরা:) মি, আবয়ো:, অসাহ্ ইতি।

ধান্ত।

তিয়

তিন

मिष्-छो। (मम्+इक्-िक्प्)

मित्रिः, निमित् ; निमित्रो, निमित्रः। निमित्रम्, निमित्रो, निमित्रां, निमित

অতিসমিশ্র—ক্লী (সমিধমতিক্রান্তং কুলমিত্যাদি বাক্যে)
অতিসমিৎ, অতিসমিধী; অতিসমিদ্ধি ইত্যাদি।

कृश्च — खो (कृश्च + किश्) कृष, कृतः, कृतः), कृषः। कृषम्, कृत्यो, कृतः। कृता, कृत्वाम् हेव्यानि। (১)

অগালিপ্র্—িতি। (মৃগং বিধ্যতীতি, মৃগ—ব্যধ্—ক্বিপ্.)। পুং—জ্রী—মৃগাবিং, মৃগাবিদ্; মৃগাবিধৌ, মৃগাবিধঃ ইত্যাদি। মৃগা-বিদ্ভ্যাম্; মৃগাবিদ্ভিঃ ইত্যাদি। (২)

⁽১) "ক্রুঞ্চাদিভ্যশ্চ" ইতি ঐপিতিস্তবেণ আ-প্রত্যায়ে স্থাশব্যঃ প্রদান শব্দবং। তুর্গমতেহিপি "ব্রিয়ামাদা" ইত্যত্র 'অ' ইতি ক্তে দিধ্যতি যদা-কারগ্রহণং তদ্বলাদ্ ব্যঞ্জনান্তাদিপি কচিদাপ্রত্যয়ঃ। ন চ "অকারে, লোপম্" ইতি অকারলোপঃ স্থাং বিভক্ত্যুপশ্লিষ্ট্রভাভাবাং অকারকরণাং 'সাস্ত দেবতে'তি নির্দ্দোচ্চ, অতএব "টাপঞ্চাপি হলস্তানাং স্ক্ধা বাচা নিশা গিরে"তি ভাগুরিঃ।

⁽২) মৃগং বিধ্যতীতি কিপি "নহিবৃতিবৃধী" ত্যাদিনা দীর্ঘে সম্প্রারণে চ মৃগাবিধ্ শব্দো বাচ্যলিন্ধ:। অথাস্থ বিরামে ব্যঞ্জনাদৌ চ হচতৃথান্তস্ত্রণাদিনা তৃতীম্বস্থ চতুর্থ: কথং ন স্থাৎ ? নৈবং বিবিশ্তুরিত্যাদৌ সম্প্রারণনিবেধেন বকারস্য সম্প্রসারণস্থানত্বেনান্তস্থাত্বাং। তথাচোক্তম্— "উদ্টো যত্র বিজ্ঞতে যো ব: প্রত্যম্বস্থিক্ষ:। অন্তর্থাং তাং বিজ্ঞানীমাং ভদক্ষো বর্গ্য উচ্যতে ॥" ইতি। তহি কথং বিভাৎসতীত্যাদৌ "তৃতীমাদের্ঘCC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ক্লী—মূগাবিধী, মূগাবিদ্ধি ইতি বিশেষ:। ক্রেধ ্—স্ত্রী। (ক্রেধ্—কিপ্)।

কুং কুদ; কুধো; কুধ: ইত্যাদি। অন্ত ধকারান্তও এরপ ভাতবা।

नांख।

রাজন্-পুং, দ্রা। (রন্জ+কনিন্)

পু থ — রাজা, রাজানৌ, রাজানঃ। রাজানম্, রাজানৌ, রাজঃ। রাজা, রাজভাম্ রাজভাম্ রাজভাঃ। রাজঃ, রাজভাম্ রাজভঃ। রাজঃ, রাজভাম্ রাজভঃ। রাজঃ, রাজাম্। রাজি, রাজনি; রাজোঃ, রাজম। হে রাজন্, হে রাজানা, হে রাজানঃ।

खोलिएन—'त्राखी' हे जाकात्र भक्त इस, नमीवर क्रम खाज्या।

य्रताजन - शूर।

(শোভনো রাজা যক্ত পুংস: ইত্যাদি বাক্যে)
স্থরাজা, স্থরাজানৌ, স্থরাজানঃ ই ত্যাদি রাজন্শন্বং।
স্থাক্তন্ ক্রানী, (শোভনো রাজা যদ্য কুলদ্য ইত্যাদি বাক্যে)
স্থরাজ, স্থরাজাী, স্থরাজানী; স্থরাজানি। এবং ২য়া। পরে পুংবং।
শোভনো রাজা যদ্যাঃ ইত্যাদি বাক্যে বছত্রীহিদমাদে 'স্থরাজ্ঞী' 'স্থরাজা'
এবং 'স্থরাজন্' এই ত্রিবিধ শন্ধ সাধিত হয়, 'স্থরাজ্ঞী' শব্দের নদীশন্ধবং,

ঢ়ধভান্তদা' ইত্যাদিনা চতুর্থ: ? সত্যম্, যত্রাভ্যাস এব সম্প্রসারণপ্রাথি: তদ্বকারসৈয়ব অন্তন্ত্র্বিং ন তৃ পরবকারস্যেতি অভশ্চতুর্ববং স্যাদেব। অভএবাভ্যাসাদেব অক্তনম্প্রসারণসৈয়ব ব্যধেরোষ্ঠোইয়ং বকার: অভ ত্রান্তস্থা এবেতি শ্রীপতি:। এবং মর্মবিধাদয়োইপি। ইতি কালাপাঃ।

'সুরাজা' শব্দের শ্রদ্ধাবং এবং 'স্থরাজন্' শব্দের রাজন্ শব্দবং রূপ হইয়া থাকে। (৩)

পঞ্ন্—বহুবচনান্ত, ত্রি। (ভিন লিঙ্গেই তুল্যরূপ)।

পঞ্চ। পঞ্চ। পঞ্জঃ। পঞ্জঃ। পঞ্জঃ। পঞ্চানাম্। পঞ্জ। হেপঞ্চ।

সপ্তন্, নবন্ দশন্ শব্বেরও পঞ্ন্ শব্বং রূপ জাতব্য।

11

(৩) রাজনু শব্দো দিলিকঃ। রাজা ইতি নিত্যত্বাৎ দিলোপ:। যত্তপ্য-বিন্নমানস্ত সংজ্ঞাভাবাৎ দীর্ঘো ন ভবিতৃমুহতীতি তথাপি "স্বরাদবগতং ঘুট্তং ব্যঞ্জনাদপি তদ্বৎ প্রত্যয়" ইতি টীকারুতোক্তত্বাৎ ঘুট্তব্যপদেশেন "ঘুটি চাদমুদ্ধা" বিতি দীর্ঘ:। রাজ্ঞি, রান্ধনি ইতি "ইঙাের্বা" ইতি পক্ষে অকারলোপ:। হে রাজন্ ইতি "ন সমুদ্ধৌ" ইতি নলোপনিষেধ:। ব্রিয়ান্ত নাস্তত্বাৎ ঈপ্রত্যয়ে "অবমদংযোগাৎ" ইত্যাদিনা নিত্যমনো লোপে রাজ্ঞীশব্দো নদীশব্দবং; তথাচ "ঙে: সাহচর্ঘ্যাৎ রাজ্ঞীতি নিত্য" মিতি বৃত্তি:। দেবানাং রাজা ইত্যাদিবিগ্রহে দেবরাজশন্দো দেবশন্দবং। শোভন*চাসৌ রাজা চেতি বিগ্রহে "রাজয়হন্দখি" ইতি অন্ নাতি "ষতিভ্যাং পূজায়া" মিতি নিষেধাং। স্থরাজন্শব্দা রাজন্শব্দবং। শোভনো রাজা যন্ত পুরুষতা ইত্যর্থে "প্রাপ্তকো বিধিতংপুরুষ এব" ইত্যক্তথাৎ অতোহভাবে পূর্ববং। শোভনো রাজা যক্ত কুলক্ত ইত্যাদি বাক্যে হুরাজ হুরাজনী ইত্যাদি। যুখা ইত্যর্থে খনো "বছব্রীহের্ধে' তি পক্ষে ঈপ্রতায়ে "বা মন্বছ্বীফ্নো ডে"তি ডাপ্রতায়ে চ স্বরাজ্ঞী স্বরাগ ষ্বাজন্ ইতি প্রকৃতিত্ত্যে নদীশ্রহারাজন্শস্বৎ প্রয়োগা:। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

প্রিয়পঞ্ন-পুং।

(প্রিয়াঃ পঞ্চ যুষ্ঠ পুংসঃ ইত্যাদি বাক্যে)।

6

6

6

প্রিয়পকা, প্রিয়পকানৌ, প্রিয়পকানঃ। প্রিয়পকানং, প্রিয়পকানৌ প্রিয়পক ্ঞা। প্রিয়পক ্ঞা প্রিয়পকভ্যাম্ ইত্যাদি।

थिय़ शक् न् खो।

(প্রিয়া: পঞ্চ যন্তা ইত্যাদি বাক্যে)। প্রিয়পঞ্চা ইত্যাদি পুংলিদ্বং। ক্রীবে—প্রিয়পঞ্চ; প্রিয়পঞ্চানী এবং বিতীয়া। পরে পুংলিদ্বং। (৪)

অফন্—বহুবচনান্ত, ত্রি।

जिन निष्मं ठूना।)

আটো, অট ; অটো, অট। অটাভি:, অটভি:। অটাভ্য:, আইভ্য:। আটাভ্য:, অটভ্য:। অটানাম্। অটাহ্ম, অটহ্ম। হে অট, হে আটো।

⁽৪) সংখ্যাবাচকা নাস্তা বহুবচনান্তাঃ স্বভাবাদলিক্ষকাঃ, তথাচ—
"ষট্সংজ্ঞকান্তির সমা যুম্মন্মতিঙব্যয়''মিতি অমরঃ। প্রেলিক্ড ভাষ্যমতক্ষ
পক্ষপ্রেতি স্ত্রীঘাভাবাদের ন ভবতীতি তুর্গঃ। অতঃ স্ত্রিয়ামিপি ঈপ্রত্যয়াভাবে লিক্তরেরে সামানাধিকরণ্যেইপি সাম্যম্। পঞ্চ পুরুষাঃ স্ত্রিয়ঃ কুলানি
বেতি। অত্র স্ত্রিয়ামীপ্রত্যয়নিষেধার্থং "ন ষট্ স্বম্রাদিভাস্চ" ইতি পরস্বত্রং
"ন সংখ্যায়াঃ" ইতি প্রীপতিনোক্তম্। প্রিয়পঞ্চান ইত্যাদৌ "কতেশ্চ জস্বশ্যালার্ক্" ইত্যত্র কৃতিফান্তর্নংখ্যাসম্বন্ধিনোর্জ্জন্পানাল্ গিতি ব্যাখ্যানাৎ
সমানসম্বন্ধিনোর্জ্জন্শানোর্ল্ নান্তি গৌণম্থ্যক্রায়ারা। অথোপসজ্ঞান
স্ত্রীলিক্ষে তুর্গমতে উপ্রত্যয়ঃ কথং ন স্থাৎ স্বভাবাদলিক্ষ্ বাদিতি চেৎ, প্রিয়্বপঞ্চানীতি কথং স্থাৎ। প্রিয়াঃ পঞ্চ নার্ম্যো ষ্ম্প পুরুষম্ম ইতি বিগ্রহে প্রিয়পঞ্চেত্যত্র চ পৃংবৎ কার্যঃং কথকেত্পসর্জনে সামান্তবান্ধুঃসকং প্রবর্ত্ত।

थियार्थेन्-शूः।

(প্রিয়া অষ্টো যক্ত পুংস: ইভ্যাদি বাক্যে)

প্রিয়ান্তা; প্রিয়ান্তা; প্রিয়ান্তানী, প্রিয়ান্তাই; প্রিয়ান্তাই; প্রিয়ান্তাই; প্রিয়ান্তাই, প্রিয়ান্তাইন, প্রিয়ান্তাইন, প্রিয়ান্ত্রি, প্রিয়ান্ত্রি, প্রিয়ান্তিই, প্রিয়ান্তিই, প্রিয়ান্তিই, প্রিয়ান্তিই, প্রিয়ান্তিই,

नो

छोनिष्टम—পুং निष्ठ वर । क्रोदि—প্রিয়াষ্ট ; প্রিয়াষ্টে, প্রিয়াষ্ট্ নী, প্রিয়া-हेনী ; প্রিয়াষ্টে প্রিয়াষ্টানি । এবং দিতীয়া । পরে পুং নিষ্ক বং । (৫)। আহ্——ক্লী । – (নঞ্—হা+কন্)।

षर: ; षकी, षरनी ; षरानि । এবং দিতীয়া । षका, षराভাম, षरां ভি: । षर्ट, षरां ভাম, षरां ভা: । षठः, षरां ভাম, षरां ভা: । षरः, पर्टाः, षट्यं । षटि, षटि ; षर्टाः, षरः ।

পরস্ত্রে তম্মাদ্গ্রহণাদ্ ব্যঞ্জননিবৃত্তী বিভক্তাধিকারে সিধ্যতি,
নর্কাষিতি বোধয়তি গোণেহপি ভবতীতি কেচিং। তয়, "ন শকাশ্রমে
গোণম্ধ্যব্যবহার" ইতি ফ্রায়াদেব সিদ্ধেং, তম্মাং সর্কাস্থগ্রহণাং বিভক্তিষ্
পরতো ভবতি নাবিভক্তিয়, তেনায়পুত্রা নারীতি টীকায়তোভাবিতমেব
ভক্তমিতি কবিরাকঃ।

^{এবঞ্চ} প্রিয়পঞ্চেত্যত্র চ অলিঙ্গকা ইত্যত্ত স্বগতসংস্থারং প্রতি অলিঙ্গকা: পরগতসংস্থারং প্রতি সলিঙ্গকা এব ইতি ব্যাধ্যানাৎ দোষাভাব:। তৎপুরুষে তু উত্তরপদপ্রধানত্বাৎ পঞ্চন্শন্ববং।

⁽৫) অষ্টানামিতি নিত্যখাদাখেহপি ''অন্তগ্রহণাভূতপূর্বনান্তায়া অপি' ইতি বৃত্তিক্তভোক্তখাৎ ''দংখ্যায়া" ইত্যাদিনা য়াগ্ম:।

১১ ° শব্দক্প-কল্লড়েমঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौर्घारन्-श्रः।

6

65

পু

E

हे

इंए

30

श्र

(नीर्घमरहा यच श्रुश हेजानि वारका)।

मीर्चाराः (नीर्चारः ইতি তুর্গমতে), দীর্ঘাহাণো, দীর্ঘাহাণঃ। দীর্ঘাহাণম্, দীর্ঘাহাণো, দীর্ঘাহ্রঃ। দীর্ঘাহ্রা, দীর্ঘাহোভ্যাম্ ইত্যাদি। (৬)

দীর্ঘমহো যতাম্ ইতি বাক্যে স্থরাজন্ শব্দবং দীর্ঘারী (ঈকারান্ত) দীর্ঘাহা (আকারান্ত) এবং দীর্ঘাহন্ (নকারান্ত) এই ত্রিবিধ শব্দ হয়, ক্রমেনদী, শ্রদ্ধা ও পুংলিঙ্গ দীর্ঘাহন্ শব্দের তায় রূপ জ্ঞাতব্য।

ক্লীবলিকে (দীর্ঘমহো যক্ত কুলস্ত ইত্যাদি বাক্যে)।

'দীর্ঘাহন্' ইত্যাকার শব্দের অহন্ শব্দের তুল্যই রূপ হইয়া থাকে। (१)

শ্রেমান্-পুথ 2—(প্রিয়+ইমন্)।

প্রেমা, প্রেমাণে), প্রেমাণঃ। প্রেমাণম্, প্রেমাণে), প্রেম্ণা। প্রেম্ণা, প্রেমভাাম্, প্রেমভিঃ। প্রেম্ণে, প্রেমভাাম্, প্রেমভাঃ। প্রেম্ণা, প্রেম-

⁽৬) নঞি জহাতে: কন্ অহনু শব্দো দিহীন:। অহোভ্যামিত্যাদৌ "অহো রেফে" ন ভবতি অপের্বহলার্থতাং। শ্রীপতিমতে—"স্তাদৌ চ" ইতি নিষেধাং।

⁽१) দীর্ঘমহো যশ্র কুলস্থেতি বিগ্রহে প্রবং। যশ্র পুংস ইত্যর্থেপি
সৌ "অস্বসন্তস্ত" ইত্যাদিনা দীর্ঘো নান্তি "উপদেশিকপ্রায়োগিকরোঃ"
ইত্যাদি স্থায়াং। অন্তগ্রহণপ্রয়োজনন্ত লিকমন্বতকেং ধাতৃসংজ্ঞায়ামপি
স্থাং, যথা গোমত্যতি ইতি কিপি গোমানিতি দুর্গমতম্। প্রীপতিমত্ত
অন্ত ইতি লুগুর্ঘীনির্দেশেন, সামিধ্যাদধাতোরিতি অসন্তবিশেষণাং ধাতৃসংজ্ঞায়ামপি গোমানিতি সিদ্ধাদন্তগ্রহণাদনোপদেশিকেইপি দীর্ঘঃ দীর্ঘায় ইতি। তথাচ—স্ত্রীপুংসয়োরহুঃ সৌ দীর্ঘমিচ্ছতীতি। প্রিয়ান্ত স্বরাজন্ শববং দীর্ঘায়ী দীর্ঘাহন্ দীর্ঘাহা ইতি প্রকৃতিত্রস্বমাপ্রিত্য প্রয়োগাঃ কর্ত্ব্যাঃ।

ভাাম্, প্রেমভা:। প্রেম্ণা:, প্রেম্ণাম্। প্রেম্ণা, প্রেম্ণা;

লঘিমন্, পটিমন্ পরিমন্ প্রভৃতি ইমন্প্রত্যয়ান্ত শব্দগুলির স্বভাবতঃ:
পুংলিঙ্গ প্রেমন্শব্দের মত রূপ হইয়া থাকে।

প্রেমন্ ক্লী-(প্রিয়+ইমন্)।

I

প্রেম; প্রেমণী, প্রেম্ণী; প্রেমাণি। এবং দিভীয়া। প্রেম্ণা, প্রেম-ভাাম্ ইত্যাদি পুংবৎ। হে প্রেম, হে প্রেমন্। (৮)

मायन्-क्री।

দাম, দামনী, দামী; দামানি। এবং দিতীয়া। দামা, দামভ্যাম্ ইত্যাদি প্রেমবং।

ञ्चनामन् -क्री।

(শোভনং দাম যশু ইত্যাদি বাক্যে)। স্থদাম, ইত্যাদি দামবং। পুং—(শোভনং দাম যশু স ইত্যাদি বাক্যে)।

स्नामा, स्नामात्नी, स्नामानः। स्नामानम् स्नामात्नी, स्नामः विज्ञानि व्यामवि । दह स्नामन्।

শোভনং দাম যন্তাঃ ইত্যাতর্থে—হুদায়ী, স্থদামা, স্থদামন্ এই ত্রিবিধ শব্দ হয়, ক্রমে নদী, শ্রদ্ধা ও পুংলিদ্ধ প্রেমন্ শব্দবং রূপ জ্ঞাতব্য। (১)

⁽৮) নপুংসকলিন্ধানান্ত সম্বোধনে রূপদয়ং 'পৃথক্করণাৎ নপুংসকস্ত বা'' ইত্যক্তবাং।

⁽a) যতা ইতার্থে "মনশ্চ" ইতি ঈপ্রতায়নিষেধেংপি "অনো বছরীহে-র্কা" ইতি ব্যক্তিনির্দ্দেশাং পক্ষে ঈপ্রতায়ে "বা মন্ বছরীহনো ডা" ইতানেন ডাপ্রতায়ে চ স্বদায়ী, স্বদামা, স্বদামন্, ইতি রূপত্রয়ম্। সংখ্যা-প্র্কাত্ত্ব "সংখ্যাদেদ্শিয়" ইতি নিতামীপ্রতায়ে বিদায়ীত্যাদি।

পীবন্— ত্রি (পা + ক্নিপ্)।

পুথ-পীবা, পীবানৌ, পীবান:। পীবানম্, পীবানৌ পীবু:। পীবু।, পীবভাাম্ ইত্যাদি। রাজন্বৎ রূপ।

क्की-शिव; शीवनी, शीवनी; शीवानि। धवः २য়। शीवन ইত্যাদি, बाजन्वर। भाषा— हि शीव, हि शीवन्।

ন্ত্রীলিন্দে ঈপ্—প্রত্যয়ে 'পীবরী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য। ধীবন্, ধাবন্, অবাবন্, গোদাবন্ প্রভৃতি শব্দেরও পীবন্ শব্দের স্থায় রূপ হইয়া থাকে। (১০)

সামন্-ক্লী-(সো+মন্)

সাম; সামী, সামনী; সামানি। এবং দ্বিতীয়া। সামা, সামভ্যাম্ ইত্যাদি রাজন্বং। সংখা—হে সাম, হে সামন্।

পৰ্বন্-ক্লী।

0

8

4:

म्

পর্ব্ব, পর্বাণী, পর্বাণি। এবং দিতীয়া। এই প্রকার বর্মন্ প্রভৃতি শব্দেরও রূপ জ্ঞাতব্য।

সুপ্রকান্-পুং-(শোভনো ধর্মো যশু ইত্যাদি বাকো)। স্বধর্মা, স্বধর্মাণো, স্বধর্মাণঃ।

সুপ্রস্মন্-স্ত্রী—(দেবদভাবাচক)। স্বর্ধনা, স্বধর্মাণৌ ইত্যাদি।

(>•) পাধাতো: কনিপ্ "দামাগায়তী" ত্যাদিনা ঈত্বে পীবন্শৰো বাচ্যলিক: । দ্বিষাস্ত "পম্বরাঘোষেভ্যো মনো র চ* ইত্যানেন ঈপ্রভ্যমে বাদেশে চ পীবরীশব্দো নদীশন্দবং। এবং ধীবন্ ধাবন্ অবাবন্ প্রভ্তমো-হপি। বছত্রীহো তু বছপীবরী বছপীবা স্থীবরী স্থীবা ইত্যাদি "বা বছত্রীহোঁ ইতি" শ্রীপতিস্ত্রেণ বিভাষয়া ঈপ্রত্যায়ে রক্ত।

শকরপ-ক্রুড্মঃ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(পরমো ধর্মো যস্ত ইত্যাদি বাক্যে) 'পরমধ্মন্' ইত্যাকার শক্ষ হুয়, সুধ্মন্শক্বৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

य्थर्भन्-क्रो।

(শোভনো ধর্মো বস্ত কুলস্ত ইত্যাদি বাক্যে) স্থধর্ম, স্থধর্মণী, স্থধর্মানি ইত্যাদি পর্বন্শক্বং। (১১)

9

সুপ্রভান-পুথ (শোভনো ধর্মেস্ত পুংস ইত্যাদি বাক্যে)। বুধবা, স্থাবানো, স্থাবানঃ ইত্যাদি। পুস্থাবন্ প্রভৃতি শব্দেরও এই প্রকার রূপ জ্ঞাতব্য। (১২)

वर्वन्-शूः।

অর্কা, অর্কন্তেটা, অর্কন্তঃ। অর্কন্তম্, অর্কন্তেটা, অর্কন্তঃ। অর্কন্তাম্, অর্কন্তিঃ। অর্কন্তেটাম্, অর্কন্তাম্, অর্কন্তিঃ। অর্কন্তিঃ, অর্কন্তাম্, অর্কন্তাই। অর্কন্তিঃ, অর্কন্তাই। অর্কন্তিঃ, অর্কন্তাই। অর্কন্তিঃ, অর্কন্তাই। অর্কন্তিঃ, অর্কন্তাই। তে অর্কন্।

জ্রীলৈভ্রে—'অর্মতী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

⁽১১) শোভনে। ধর্মো যত্তেতি বিগ্রহে ''গুদ্ধাৎ পূর্বপদাদেব নবা ধর্মস্ত নাস্ততা'' ইতি ধর্মন্ আদেশঃ পক্ষে। 'স্তাৎ স্থর্মা দেবসভা' ইতামরঃ।

⁽১২) শোভনং ধর্মস্তেত্যাদিবিগ্রহে বহুরীহে ধর্মো ধর্ম। ধরন্ ইত্যাকারক: শব্দোহপ্যন্তি "ধর্শ্চাপো ধর্শরাসনকোদ্ওকার্মুক্ম।" ইত্যমরোজে:। এবং পুস্পধরন্প্রভৃতীনামপি রপাণি জেয়ানি। বম-শংযোগপর্বাং অনোহকারলোপো নাস্ত্যের।

৮—শ্ব CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

অনর্বন — পুং। (ন অর্বা অনর্বা ইতি নঞ্তৎপুরুষে)। অনর্বা, অনর্বাণো, অনর্বাণঃ ইত্যাদি।

23

यूर

यू

व

বু

বু

7

অর্বন্তমতিক্রান্ত ইত্যর্থে—অত্যর্কন্ শব্দ অর্বন্ শব্দবং সাধা।
অর্বন্তমতিক্রান্তাইত্যর্থে—অত্যর্কতী শব্দ নদীবং সাধা। অর্বন্তমতিক্রান্তং
কুলমিত্যর্থে—অত্যর্কং,—দ্; অত্যর্কতী, অত্যর্কন্তি
ইত্যাদি। কোন কোন ব্যাকরণের মতে—প্রথমার একবচনে অত্যর্কং
(দ্) এই পদ হয় না, অত্যর্ক ইত্যাকার পদ হয়। (১৬)

गघवन - शूर।

भघता, भघतान्; भघतत्छो, भघतात्मो; भघतछः, भघतानः। भघतछ्यं, भघतान्मः, भघतरछो, भघतात्मो; भघत्रानः। भघत्रछो, भएवानाः; भघत्रहाम्, भवत्रहाम्, भवत्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्त्रहास्यक्रहास्त्रहास

यन - श्रा

या, यात्नी, यानः। यानम्, यात्नी, छनः। छना, यजाम्, यज्ञि हेजामि।

⁽১৩) অনর্কান্শস্বস্থ অর্কস্ত্যাদেশো ন স্থাৎ অনঞ্গ্রহণাং। "অর্কস্থিনিতার্থে সিলোপে ন চ তত্ত্তমিত্যানেন অসাবিতি নিষেধাৎ সাবিপি আদেশ ইতি কশ্চিং। বস্তুতস্ত্র "অর্কনর্কস্তি" ইত্যাদি সত্তে অর্কান্নিতি সনকারনির্দ্দেশাৎ সনকারস্থৈব আদেশ ইতি অর্কা কুল-মিত্যেব।

⁽১৪) স্ত্রিয়াং যদা বর্ততে তদা ঈপ্রত্যায়ে তদ্ধিতস্বরে যে চ স্ত্রীকারে চেত্যুক্তত্বাৎ পক্ষে মঘবভাদেশে মঘবতী মঘোনী ইত্যাদি নদীশন্ধবং। ইনি তুমঘবয়তি।

শব্রপ্-কল্লড়মঃ। ১১৫ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल्लोनट्न 'छनी' ইত্যাকার শব্দ হয়, नদীবৎ রূপ জ্ঞাতব্য। (১৫) 'শ্বন: সমীপম' এই বাক্যে অব্যয়ীভাবসমাদে 'উপশুন' ইত্যাকার শব্দ য়, উপকুন্তবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

यूवन - श्रः।

71

छः

ন্তি

ৰিৎ

₹,

यूवा, यूवारनो, यूवानः। यूवानम्, यूवारनो, यूनः। यूनां, यूवजाम्, युविः । यूरन, यूवजाम, यूवजाः । यूनः, यूवजाम, यूवजाः । यूनः, यूरनाः, यूनाम्। यूनि, यूनाः, यूवळ्। ८ यूवन्।

यूवन भरकत छोनिएन 'यूविं' 'यूविं' देव्याकांत भक निष्पन रय, ব্যাক্রমে বৃদ্ধি ও নদী শব্দের তুল্য রূপ জ্ঞাতব্য। (১৬)

বৃত্তহন —পুং (বৃত্ত—হন + কিপ্)

वृबरा, वृबर्ता, वृबर्तः । वृबर्तम्, वृबर्ता, वृबद्दा, वृबद्दा, वृबद्दा, वृबद्दा, रंखाम्, वृज्यरिः । वृज्यस्, वृज्यरंखाम्, वृज्यरंखाः । वृज्यः, वृज्यरंखाम्, বৃত্তহভ্য:। বৃত্তম:, বৃত্তমান্। বৃত্তমি, বৃত্তহণি; বৃত্তমো:, वृज्रुष्ठ । (र वृज्रुन् !

ञ्जूबर्ग्-र्रः।

(শোভনো বৃত্রহা যক্ত পুংসঃ ইত্যাদি বাক্যে।) स्वृज्ञा हेजामि वृज्ञन् भक्तर।

⁽১৫) দ্রিয়ামীপ্রত্যয়ে শুনীশকো নদীশক্ষবং। ইনি—খনয়তি।

⁽১৬) স্ত্রিয়াং "যুনন্তি"রৈতি ইপ্রত্যয়াপবাদ-তিপ্রত্যয়ে নলোপে য্বতিরিতি প্রকৃতি: বৃদ্ধিশন্বনশ্র। রূপম্। ওবতি চ যুবতৈ। যুবতয়ে रैं ि वा नमीवडावः। "अनवामविषयः किष्ट्रभर्त्ञानि नमादिनः" रेजि গায়াৎ ঈপ্রত্যম্বে যুনীতাপি প্রকৃতির্ভবতি। ইনি তু যুবমতি—সুনদূরে-তাদিনা অন্তস্থালোপো গুণশ্চ।

ক্লীবলিস্থে—স্বর্ত্তহ, স্বর্ত্তহণী, স্বর্ত্তহাণি। ছিতীমা-তেও এই প্রকার রূপ হইবে। পরে পুংলিদ্বরং।

RE

হে

(0

47

३र

वर्

नंद

इन

93

স্ত্রীলিসে— স্থর্ত্তমী, স্থর্ত্তহা, স্থর্ত্তহন্, এই ত্রিবিধ শব্দ হয়।

য়থাক্রমে নদী, শ্রদ্ধা ও বৃত্তহন্ শব্দবৎ রূপ জ্ঞাতব্য। (১৭)

মিত্তহন্, শক্রহন্ প্রভৃতি শব্দেরও বৃত্তহন্ শব্দবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

প্লীহন্—পুং (রোগবিশেষবাচক)।

श्रीरा. श्रीरात्नो, श्रीरानः। श्रीरात्मम्, श्रीरात्नो, श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः। श्रीरुः, श्रीरुः। श्रीरुः, श्रीरुः, श्रीरुः, श्रीरुः। हो श्रीरुः, श्रीरुः, श्रीरुः, श्रीरुः, श्रीरुः, श्रीरुः,

(मिखन्-पूर (मख+ हेन)।

দণ্ডী, দণ্ডিনৌ, দণ্ডিনঃ। দণ্ডিনম্, দণ্ডিনৌ, দণ্ডিনা, দণ্ডিনা, দণ্ডিভাম্, দণ্ডিভিঃ। দণ্ডিনো, দণ্ডিভাম্,

(১৭) বৃত্তহন্শল ই জবাচক:। বৃত্তং (বৃত্তনামানমন্থরং) হতবান্
ইতি কিপি "পঞ্চমোপধায়াঃ" ইত্যাদিনা দীর্ঘোন ভবতি "ইন্হন—"
ইত্যাদৌ হন উপাদানাৎ। বৃত্তহণাবিতি "নিত্যমেকস্বরকবর্গবত্যত্তরপদে"
ইতি পত্তম্। ইন্হনেত্যাদৌ "শৌ সাবেবে'তি নিয়মাৎ "ঘুটি চাসমুকৌ"
ইতি দীর্ঘোন ভবতি। নহু নপুংসকে শেরক্তস্তাঘুট্তাৎ কথং নিয়ম ইতি
চেদ্দন্ত্যসকারমাদায় নিয়মেন শৌ সাবেবেতাত্ত শাবিত্যনন্তরং বিধিরিত্যধ্যাহারাৎ। শোভনো বৃত্তহা মন্ত্রাইত্যাদিবিগ্রহে ক্রীলিঙ্গে স্বরাজ্যোক্তন্যাল্যা স্বৃত্তমী স্বৃত্তহন্ স্বৃত্তহা ইতি প্রকৃতিত্তয়ং ভবতি, নদীবৃত্তহন্
শ্রহাশক্তন্দ্ রূপাণি জ্রেয়ানি। এবং মিত্তহন্ শক্তহন্ প্রভৃতয়োহপি।

(১৮) প্রীহানাবিতি "অর্থবদ্গ্রহণেনানর্থকশ্রে"তি ন্যায়াৎ অনর্থকে ব্যার্ডেরযোগ: "ঘূটি চে"ত্যাদিনা দীর্ঘ:।

শব্দর্প-কল্লড়েমঃ। ১১৭ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिछिडाः। मिछिनः, मिछिताः, मिछिनाम्। मिछिनि, मिछिताः मिछिष्।
हि मिछिन्।

यां-

य ।

₹-

6)

3-

₹,

न्

"

3

F-

ন্ত্রীলিস্থে—"দণ্ডিনী" ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রপ জ্ঞাতব্য।
ক্লীবলিস্থে—দণ্ডি, দণ্ডিনী, দণ্ডীনি। এই প্রকার রূপ দ্বিতীয়াতেও হইবে। পরে পুংলিদ্ববং। হে দণ্ডিন্, হে দণ্ডি।

বৈরিন্, ধনিন্, গুণিন্ প্রভৃতি ইন্ভাগান্ত অপর শব্দেরও দণ্ডিন্ শব্দের আয় রূপ হয়। (১৯)

পকারান্ত।

लूश्-शूः (लूश्+िक्श्)।

न्भ, नृत्; नृत्भ, नृभः। नृभम, नृत्भी, नृभः। नृभा नृत्जाम् रेणामि।

অতিলুপ্ – ক্লী।

(লুপমতিক্রান্তং কুলমিত্যাদি বাক্যে)

অতিলুপ্, অতিলুব; অতিলুপী, অতিলুম্পি। বিতীয়া বিভক্তিতে ও এইরপ রপ হয়। পরে পুংলিজবং।

অপ্—স্ত্রী, বহুবচনান্ত।

ষাপ:। অপ:। অদ্র:। অদ্র:। অধ্য:। অপাম্। অপ্স্। হে আপ:।

(১৯) দেববৈশ্ববাচকোহ শ্বিন্শন্ত প্ংলিলে। দ্বিচনাত্থাইপি যুগপছভয়োপপন্নত্বে সতি অজ্প্রোভয়বাচকত্বাৎ প্রত্যেক মুভয়বাচকত্ববিক্লায়াম্
একবচনাত্থাইপি, দণ্ডিন্শন্ত্বৎ অভ্য রূপাণি স্থাঃ। বিন্প্রভায়ে প্রথিন্শব্দো বাচ্যলিলঃ, প্রথী, প্রথিণো ইত্যাদি দণ্ডিন্শন্ত্বং। বিন একদেশভা
ইনঃ অনর্থকত্বেইপি ইন্ প্রত্যয়বদিতান্ত নিত্যত্বেন নিয়মব্যায়্তিবলায় দীর্ঘঃ
এবং তেজ্বন্ধিন্ প্রস্থিন্ মায়াবিন্ প্রভৃতীনামপি। এবমত্যেইপি বোধ্যাঃ।

स्त्र-शूर।

(শোভনা আপো যত্র তড়াগে স ইত্যাদি বাক্যে)।
স্বাপ, স্বাব্; স্বাপৌ, স্বাপঃ। স্বাপম্, স্বাপৌ, স্বপঃ। স্বপা, স্বদ্ভ্যাম্
ইত্যাদি। (২০)

य्वर्-क्रो।

(শোভনা আপো যত্র সরসি তৎ ইত্যাদি বাক্যে)। স্বপ্, স্বব্; স্বপী, স্বাম্পি [স্বম্পি]। এবং ২য়া। পরে পুংলিদ্বং।

य्य - खी।

(শোভনা আপো যক্তাং দীর্ঘিকায়ামিত্যাদি বাক্যে)।
স্বাপ্, স্বাব্; স্বাপো, স্বাপঃ ইত্যাদি পুংলিঙ্গবং।
শুচাপ্, অত্যপ্ প্রভৃতি শব্দেরও অপ্শব্দের তাম রূপ জ্ঞাতব্য।

ফান্ত।

विदिशक् - श्रुः।

षित्रक्माठ्छि—[निष्ठ् (हेन्, ঞি) + किन्] बित्रक्, बित्रक्, बित्रक्, बित्रकः। बित्रक्, बित्रक्, बित्रकः। बित्रका, बित्रव्हाम्, बित्रव्हः हेन्छानि।

খক — পুং (খাফ ্ + কিপ্)।

ঝেশ, ঝব্; ঝফো, ঝফঃ। ঝফম্, ঝফো, ঝফা, ঝব্ভাম্, ঝব্ভিঃ ইত্যাদি।

⁽ २०) শোভনা আপো যত্তেত্যাদি বাক্যে স্বপ্ইতি শব্ধ: "প্রাপ্-পুর'' ইত্যৎ নান্তি 'স্বতিভ্যাং পুজায়ান্'' ইতি নিষেধাৎ।

14

31

7 1

Į,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

বকারান্ত।

क्रोव्-श्रः।

क्रोপ, क्रोव्; क्रीर्वा, क्रोवः। क्रोवम्, क्रीर्वा, क्रोवः। क्रोवा, क्रीव्-ভ্যাম্ইত্যাদি।

ভান্ত।

गर्मा — शूः।

গৰ্দপ্, গৰ্দব্, ; গৰ্দভৌ, গৰ্দভঃ। গৰ্দভম্, গৰ্দভৌ, গৰ্দভঃ। গৰ্দভা,

করভ — পুং।

করপ্, করব্; করভৌ, করভ:। করভম্, করভৌ, করভ:। করভা করব্ভাাম্ইত্যাদি।

দ্বিভ্-পুং।

विপ্, चित्; विखो, विखः। विख्य, विखो, विखः। विखा, वित्खाम् ইত্যাদি।

মান্ত।

कम्- श्रः (कम् + किश)।

क्म, करमी, कमः हेलानि।

প্রশাম্ (ন্) পুং (প্র—শম্+ কিপ)

প্রশান্, প্রশামা, প্রশামা। প্রশামম্, প্রশামা, প্রশামা। প্রশামা, প্রশান্ভ্যাম্, প্রশান্ভি:। প্রশামা, প্রশান্ভ্যাম্, প্রশান্ভ্যাম্, প্রশান্ভ্যাম্, প্রশান্ভ্যাম্, প্রশামাম্। প্রশামি, প্রশান্ভ্যাম্, প্রশান্ত্য। হে প্রশান্।

किम्- मर्क्वनाम।

পুথ—কঃ, কৌ, কে। কম্, কৌ, কান্। কেন, কথম্, কাভ্যাম্, কৈঃ। কলৈ, কাভ্যাম্, কেভ্যঃ। কলাং, কুতঃ; কাভ্যাম্, কেভ্যঃ। কল্য, করোঃ, কেষাম্। কল্মিন্ কুত্র, কুহ, ক, কর্হি, কদা; কয়োঃ, কেয়্। হে কঃ (২১)

জ্বী—কা, কে, কা:। কাম, কে, কা:। কয়া, কাভ্যাম্, কাভি:। কত্তা, কাভ্যাম্, কাভ্য:। কত্তা:, কাভ্যাম্, কাভ্য:। কত্তা:, কাহ্য। হে কে।

ক্লা - কিম্, কে, কানি। এবং ২য়া। কেন, কথং; কাভ্যাম্ ইভ্যাদি। পরে পুংবং।

বিভক্তান্ত কিম্ শব্দের উত্তর চিৎ এবং চন প্রত্যয় হয়। যথা—

পুত—কশ্চিৎ, কশ্চন; কোচিৎ, কোচন; কেচিং, কেচন। কঞ্চিং, কঞ্চন; কোচিৎ, কোচন; কাংশিচৎ, কাংশ্চন। কেনচিৎ, কেনচন; কাভাঞ্চিৎ, কাভাঞ্ঞন; কৈশিচৎ, কৈশ্চন, কথঞ্জিৎ, কথঞ্জন। কম্মাচিৎ, কম্মাচন, কৃত্তশ্চিৎ, কৃত্তশ্চন—। কম্মাচিৎ, কম্মাচন, কৃত্তশ্চিৎ, কেয়াশ্চন; কেয়াশিচৎ, কেয়াশ্চন; কেয়াশিচৎ, ক্রাশ্চন; কেয়াশিচৎ, ক্রাশ্চন; কেয়াশিচৎ, ক্রাশ্চন; কেয়াশিচৎ, ক্রাশ্চন; কেয়াশিচৎ, ক্রাশ্চন, ক্রাচিৎ, কর্ষিংশ্চন, ক্রাচিৎ, কর্ষিচন, কর্চিৎ, কর্ষিচন, কর্চিৎ, কর্ষিচন, কর্চিৎ, কর্ষিচন, কর্চিৎ, কর্ষিচন, কর্চিৎ, কর্ষিচন, কর্চিৎ, কর্মিচন, ক্রাচিৎ, কর্মাচন ইত্যাদি।

জ্বীলিভ্সে—কাচিৎ, কাচন; কেচিৎ, কেচন ইত্যাদি।

(২১) ভ্যাম্ভিসোরপি কথমিতি। ভ্যাম্ভ্যসোরপি কুত ইতি।
কুত্রেত্যাদি ওস্হপোরপি। কিমতিক্রাস্ত ইত্যাদিবাক্যে অতিকিম্শন্দশু
অতিকিম্ অতিকিমৌ অতিকিম ইত্যাদি কম্-শন্দবং রূপম্, এবং প্রিয়ামপি। ক্লীবে তু অতিকিম্ অতিকিমী অতিকিমি ইত্যাদি।

শক্রপ্-করুদ্দুমঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ক্লী—কিঞিৎ, কিঞ্ন, কেচিৎ, কেচন; কানিচিৎ, কানিচন।
এবং ২য়। পরে পুংলিঙ্গবং। (২২)

₹,

रेनग्-मर्वनाम।

ক্রী—ইয়ন্, ইমে, ইমা:। ইমান্, ইমে, ইমা:। জনয়া, আভ্যান্, আভি:। অস্ত্রৈ, আভ্যান্, আভ্য:। অস্তা:, ইত:; আভ্যান্, আভ্য:। অস্তা:, অনয়ো:, আসান্। অস্তান্, অনয়ো:, আহ্ন।

ह्मी-रेमग, रेटम, रेमानि। धवर रम्ना। भटत भूरवर। (२८)

⁽২২) কিমো বিভক্তান্তাৎ চিচ্চনৌ ইতি কালাপা:।

⁽২৩) এভিরিতি। তত্মাদ্গ্রহণমদ্বিধেরনিত্যতার্থং তেন ইনৈরিত্যপি।
তথাচ 'ইনৈত্ত দৈ: সপ্তর্বয়ঃ স্বর্গং গতাঃ' ইতি কেচিং। সর্ববর্মণস্ত
মতে ব্যবহিতস্ত ইদমোহসূর্ত্ত্যর্থং ভবং তত্মাদ্গ্রহণং কথমদ্বিধেরনিত্যতায়াঃ কারণং ভবিষ্যতি, অয়য়ৢ প্রয়োগো ভাষায়াং নান্ডীতি কালাপাঃ।
অস্মিন্ ইহেতি। ত্রাপ্বাদো হকার ইত্যুক্তবাং ত্রো ন ভবতি।

⁽২৪) ইদমিতি। নিত্যবাৎ সিলোপে তত্ত্বপ্রতিষেধাৎ ইয়ং ন
ভবতি। ন চ সাক্ষাদ্বিভক্তেরভাবাদেব ন ভবিষ্যতীতি বাচ্যম্, বিভক্তৌ
পরতো ভবতি নাক্তিম্মিন্ পরত ইত্যর্থে এব ব্যার্ভেন্তবৈবাক্তপ্র পরভূতপ্র
সম্ভবাৎ বিরামব্যঞ্জনাদাবিত্যাদিনা অভিদেশাৎ, "অদ্ব্যঞ্জন" ইত্যাদিনা
আদাদেশোহপি ন ভবতি অপিগ্রহণপ্র ব্যভিচারার্থবাৎ, অতঃ "ইদং
নিশুংসকে" ইতি বক্তব্যং ন ভবতি। ইমং ঘটমানয় অথো এনং চৈত্রং

প্রাপয় ইত্যাদিরপে প্রশ্নে টোসোর্বিতীয়ায়াঞ্চ ত্যদাঅস্থানস্তর "নেডস্ত চারাদেশ" ইত্যাদিনা এনাদেশে ইমমিত্যত্র এনমিতি প্রয়োগ:। অরাদেশস্ত্র কথিতস্ত পশ্চাৎ কথনম্, অনুশব্দত্ত পশ্চাদর্থতাৎ। ন চ চৈত্রং প্রবেশ্য ইমঞ্চ মৈত্রমিত্যত্র কথং ন স্থাদিতি বাচ্যং শ্রুতত্বাদিদমেতদ্ভ্যাং ক্থিতালু-কথনযোত্র হিত্তাৎ। অথৈবং "নক্তং ভীরুরয়ং অমেব তদিম' মিতি কথঞেং যদ্বিভক্তান্তেন কথনমন্ত্ৰ্থনমপি তদ্বিভক্তান্তেন চেৎ তদৈবায়াদেশ ইতি। তর্হি কথং "তঃথহেতুরয়মধর্মগুতো নৈনং সন্তঃ কর্ত্তু"মিত্যাদি চেৎ 'এন' ইতি প্রকৃত্যন্তরেণ, যক্ত চ "উবাচ চৈনং পরমার্থতো হরম্" ''বিভাষ্ট্রন''মিত্যাদি প্রয়োগাঃ। যভেবমেনাদেশেন কিম্ ? সত্যম্বাদেশে ইদনিম্মিত্যাদি প্রয়োগনিরাসার্থম্। টীকাকারস্ত—''অয়ং দভো হ্রানেন ইত্যত্র নায়মন্বাদেশ একবিধানাদয়মিত্যনেন দণ্ডস্ত স্বরূপক্থনমাত্রং কুত্যু, অনেনেত্যনেন হরণক্রিয়াং প্রতি দণ্ডশু করণত্বং ব্যপদিখতে ক্রমারু কথনয়েঃ কারকে বিধানাভাবাৎ" ইভ্যাহ। এতন্মতে "নক্ত" মিত্যাদৌ ত্রকীবিধানাৎ ন ভবতি কারকবিধানাভাবাদিত্যর্থ:। "তুঃধ-হেতৃ" রিত্যাদৌ অধর্মশন্ধাৎ পরং দৃখাতে ইত্যধ্যাহারেণ ভবতি। প্রীপতিমতে তৃ-"যত্রকর্মাদিকতয়া কিঞ্চিৎ প্রতিপাল পুনক্ষচ্যতে সোহলাদেশঃ'ইত্যুক্তরাং সর্বামনবভামিতি। এত ইত্যেকদেশান্ত্করণশু সাহচর্য্যাৎ ইদমোহিপি তংপ্রকারসাৈব গ্রহণম্। তেন নপুংসকে নিত্যত্বাদমাে লােপে তত্ত্ত-প্রতিষেধাৎ মকারশ্রভাগদৈরানাদেশে ইদং কুগুলং কুরু, অথে। এনং পখেতি। প্রীপতিমতে তু—এনো২পি নপুংসকমন্তাদৌ দ্রপ্তব্য ইতি। অথো এনদিতি প্রয়োগ ইতি ভেদ:। অপরে তু স্ত্ত্তে এনদিতি পঠন্তি; তন্মতে সমাসেহপি এনদাখিতানীত্যত্র তকারশ্রতিরিতি ভেদ:। অকি তু অথে। ইমকমিত্যের অনগধিকারাৎ অম্বাদেশোহক্যুক্তস্থাপি, স্থপি ভকারাদৌ ভাদৌ চ "সভোঃ ইদমন্বাদেশে" ইত্যন্তাদেশে ইমকাভাগি ব্যাকরণমধীতম্ আভ্যাং নিরুক্তমপীত্যাদি। তুর্গমতে তু নঞােহনিতার্থাং

যান্ত।

चन्धर्-रू ।

B

Į.

35

*

í

অশ্বৰ, অশ্বৰো, অশ্বৰ:। অশ্বৰ্য, অশ্বৰো, অশ্বৰ:। অশ্বৰা, অশ্বভ্যাম্, অশ্বভি:। অশ্বৰে, অশ্বভ্যাম্,অশ্বভ্য:। অশ্বৰ:, অশ্বভ্যাম্, অশ্বভ্য:। অশ্বৰ:, অশ্বৰো:, অশ্বাম্। অশ্বি, অশ্বৰো:, অশ্বৰ্। হে অশ্বৰ্। (২৫)

রান্ত।

গির,—স্ত্রী (গ্ + কিপ্)

গীং, গিরৌ, গির:। গিরম্, গিরৌ, গির:। গিরা, গীর্ভ্যাম্, গীর্ভি:। গিরে, গীর্ভ্যাম্, গীর্ভ্য:। গিরং, গীর্ভ্যাম্, গীর্ভ্য:। গিরং, গিরোম্। গিরি, গিরোং, গীর্ব। হে গীং। (২৬)

বাছল্যাদকোহনিত্যত্বেন বা সমাধানমিত্যলং বিস্তরেণ।

ইমমতিক্রান্ত ইত্যাদি বাক্যে অতীদম্ অতিদমৌ অতিদম:। এবং বিষাম্। ক্লীবে তু অতীদম্ অতীদমী অতীদমি ইত্যাদি।

- (২৫) অশ্বয় ইতি। অশ্বয় জমাচষ্টে ইত্যর্থে ণিচি (ইনি, ঞৌ)
 কিপি অন্যাম্বরাদিলোপে অশ্বয় ইতি শব্দো নিপ্লঃ। স্থপি "ত্বং
 খঙ্তস্থাভ্যঃ" ইতি ষত্ম। অশ্বভ্যামিত্যাদৌ "অবর্ণাৎ কিপোহনঘোষে
 প্রাকৃতিশ্চ" ইত্যানেন যলোপঃ প্রাকৃতিরিতি।
- (২৬) গির্শব্দো বাচি তদধিষ্ঠাতৃদেবতায়াঞ্চ বর্ত্ততে। "ইফরোরীররৌ" ইতি বিরামে ব্যঞ্জনাদে চ ঈরাদেশঃ। স্থপি তু "বাধিকারাদ্ বিভক্তি-CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

षाর्—স্ত্রী (দৃ + ণিচ্ইন্, ঞি, কিপ্)।

वाः, बादतो, बातः। बातम्, बादती, बातः। वाता, बार्छाम्, बार्छिः। बादत, बार्छाम्, बार्छाः। बातः, बार्छाम्, बार्छाः। बातः, बादताः, बाताम्। बाति, बादताः, बार्य्। ट्वाः।

धूत् (धूर्व + किल्)

ध्ः धूदतो, धूतः। धूत्रम्, धूदतो, धूतः। धूता, ध्र्डााम्, ध्र्डिः। धूद, ध्र्डााम्, ध्र्डाः। धूतः, धूदाः, धूताम्। धूति, धूदताः, धूर्याः। धूत्रं। १६ थ्राः। धूत्रं। १६ थ्राः। धूत्रं। १६ थ्राः।

गूत्—खो मृष्ट् + किल्।

মুং, মুরেরী, মুরঃ। মুরম্, মুরেরী, মুরঃ। মুরা, মুর্ভাম, মুর্ভি:। মুরে ইত্যাদি।

পর्—ञ्जो (পর्व + किপ्)।

পঃ, পরের, পরঃ। পরম্, পরের, পরঃ; পরা, পর্ত্যাম্ ইত্যাদি।

বার্-ক্লী।

বাং বারী, বারি। এবং দিতীয়ায়াম্। বারা, বার্ভ্যাম্, বার্ভিঃ। বারে ইত্যাদি।

ব্যঞ্জনে রেফস্ত ন স্থাং" ইতি ন বিদর্গ:। গীর্। শ্রীপতিমতে তু—
"স্থানি রঃ ষদোর্কিদর্জনীয়ঃ" ইতাস্ত ব্যাবৃত্তিবলাং। ধুর্শব্দেংপ্যেবং
ব্যবস্থা "বাষ্ট ভাগুরি" বিত্যাদিনা আপ্প্রত্যয়ে গিরা, ধ্রা ইত্যাদি
শব্দস্ত প্রাবাধ রূপাণি।

চত্বার্—(চতুর) সংখ্যাবাচক, বহুবচনান্ত।

পু

ত্রা

ত্

নপুং — চহারি। —। চহুর্ভি: ইন্ত্যাদি পুংলিম্ববং। (২৭)
প্রিয়চত্বার্—[চতুর্] পুং।

(প্রিয়াশ্চত্বারো যস্ত পুংস ইত্যাদি বাক্যে)।

প্রিয়চত্বাঃ, প্রিয়চত্বারে), প্রিয়চত্বারঃ। প্রিয়চত্বারম্, প্রিয়চত্বারা, প্রিয়চত্বা, প্রিয়চত্বাম, প্রিয়চত্বা,

প্রিয়চত্বার্—[চতুর্]—স্ত্রী।

প্রিয়াশ্রবারো যক্তা ইত্যাদি বাক্যে)। পূর্ববং।

প্রিয়চত্বার্—[চতুর্] क्रो।

(প্রিয়াশ্চত্বারো যক্ত কুলদ্য ইত্যাদি বাক্যে)।

প্রিয়চতৃঃ, প্রিয়চতৃরী, প্রিয়চতৃরি। এবং দিতীয়া। পরে পুংলিঙ্কবৎ। প্রিয়াণি চন্তারি ষশু পুংসঃ, যদ্যাঃ স্তিয়ঃ,যদ্য কুলশু বা ইত্যাদি বাক্যে পূর্ব্ব পূর্ববিৎ।

⁽২৭) চতস্র ইতি। ঈপ্রত্যয়ো নান্তি ঈপ্রত্যয়ং বিনাপ্যাদেশেনৈব বীঘবোধাৎ সন্নিপাতফায়াদা। যুমদম্মদী ইব ত্রিচতুরী অলিদকে ইতি

টীকাক্তবক্তে: পূর্বমিপি ত্রিশকাৎ ঈপ্রত্যয়ো নান্তি। গ্রীপতিমতে—''নঃ

শংখ্যায়া:" ইতি যোগবিভাগান্নিষেধা।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

প্রিয়াশতলো যত্ত পুংস ইত্যাদি বাক্যে—

প্রিয়চতসা, প্রিয়চতশ্রে [প্রিয়চতসরে], প্রিয়চতশ্র: [প্রিয়চতসর:]।
প্রিয়চতশ্রম্, [প্রিয়চতসরম্]—,—; প্রিয়চতশ্র:। প্রিয়চতশ্রাম্, প্রিয়চতশ্র:। প্রিয়চতশ্রে,—, প্রিয়চতশ্র:। প্রিয়চতশ্র:, প্রিয়চতশ্রাম্। প্রিয়চতশ্রে,
[প্রিয়চতসরি],—, প্রিয়চতশ্র্। হে প্রিয়চতসং। (২৮)

প্রিয়াশ্চতন্তে। যশা ইত্যাদি বাক্যে পূর্ববং।

8

3

0

বি

(হ

প্রা

M

ति

ना

ना

প্রিয়াশ্চতশ্রো যদ্য কুলদ্য ইত্যাদি বাক্যে। [প্রিয়চতক্য]। প্রিয়চত্ত্র, প্রিয়চতক্ষণী, প্রিয়চতক্ষণি। এবং দ্বিতীয়া। টাদ্যে পুংলিঙ্গবং বা—প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, প্রিয়চতক্ষণা, ব্রিয়চতক্ষণা, ব্রেয়চতক্ষণা, ব্রেয়চতক্ষণা, ব্রেয়চতক্ষণা, ব্রের্যাদি। হে প্রিয়চতক্ষণা, হে প্রিয়চতক্ষণা, ব্রের্যাদিতক্ষণা, ব্রের্যাদ

⁽২৮) প্রিয়াশ্চতশ্রে। ষশ্র পুংস ইত্যাদিবাক্যে চন্ধার্শক্সা স্তিয়াং বর্ত্তমানবাৎ চতপ্রাদেশেন ভাব্যম্। "বিচতুরোঃ স্তিয়া" মিত্যব্র শ্রুত্তবাং স্তিয়ামিতি বিচতুরোর্কিশেষণং, তেন যদা স্তিয়াং বিচতুরী বর্ত্তেতে সমাস-প্রকৃতিশ্চ পুংসি নপুংসকে স্তিয়াং বা, তদা তিস্চতপ্রৌ ভবতঃ। যদা তু বিচতুরী পুংসি নপুংসকে বা সমাসপ্রকৃতিশ্চ স্তিয়াং তদা তিস্চতশ্রৌ নভবত ইতি। প্রিয়চতসরৌ প্রিয়চতশ্রৌ ইতি ঘুটি ঙৌ চ "জ্বরা জ্বস্ বর্বে বা" ইত্যতো বাল্বর্ত্তনাং পক্ষে অর্। সিদ্ধান্তকৌম্দীম্মবোধপ্রভৃতিয়্ প্রিয়চতশ্রৌ ইত্যাদি একৈকমেব।

⁽২৯) প্রিয়াশ্চতশ্রো যক্ত কুলদ্য তৎ ইতি বাক্যে প্রিয়চত্রিত্যেকমেব মৃগ্ধবোধমতে, এতরতে চতপ্রাদেশো ন দ্যাৎ। দিদ্ধান্তকৌমূদীকলাপা-দীনাং মতে প্রিয়চত্ঃ প্রিয়চতত্ত ইতি রূপদ্মদেব ইষ্ট্রম্। ক্রমদীশ্রাদীনাং

লকারান্ত।

रल्-पूर (राक्षनराहक)।

हन्, रतनी, रनः। रनम्, रतनो, रनः। रना, रन्छाम् हेछािन। अभि—रन्यु। (७०)

ভক্-পুং (ভক্+ ণিচ্+ কিপ্-নামধাতু)

গুল্, শুক্লৌ, শুক্ল: ইত্যাদি। ব্যঞ্জনে—গুল্ভ্যামিত্যাদি। স্থপি— গুল্ধ্। অধুট্পরভা সংযোগাদেধুটো লোপো নান্তি ইতি মতে—শুকু, শুকু ভ্যামিত্যাদি ভেদ:।

বকারান্ত।

निव्—ञ्जो [निव् (निव्)+छिव्]

ছো:, मिरवी, मिवः। मिवम्, मिरवी, मिवः। मिवा, ছ্যাভাাম্, ছ্যাভি:।

মতে প্রিয়চতক্ ইত্যেক্ষেব। কলাপমতে "নামান্তচতুরাং বা" ইতি পক্ষেত্বক্তম। শ্রীপতিমতে "ন্ত্রীব্রিচতুরন্তক্ত শুমোন্তিক্চতক্তক্ত" ইতি ক্রেণ বিভাষয়া তিক্ চতক্ আদেশ:। সম্বোধনে তু তত্ত্বকার্যান্ত বৈক্লিক্ত্বেন হৈ প্রিয়চত্বা হৈ প্রিয়চতক্ব, প্রিয়চতক্ষ ইতি চন্তার এব প্রয়োগা: কৈশ্চিনান্তন্তে, কৈশ্চিচে—হে প্রিয়চতক্ব হৈ প্রিয়চতক্ব ইতি এতক্ষ্মমেব স্বীক্রিয়তে। হে প্রিয়চতক্ষা হে প্রিয়চতক্ব ইত্যব্র "গুণোহপথ্যাদে"
বিতি শ্রীপতিক্ত্রেণ বিভাষয়া গুণ:। প্রিয়চতক্বী প্রিয়চতক্বণীতি। "ন
নামি দীর্ঘ" মিত্যব্র নকারগ্রহণাৎ তিক্ষচতন্ত্রাদেশং প্রতি ব্রামীতি ব্যাধ্যানং
নান্তি; প্রিয়ব্রিশক্ষাপি এবং ব্যবস্থা, সাচ প্র্বমেব সমাসেনোদ্বেথি।

(७०) श्ल्यू इे जि "जन्तर" इंजामिना वज्य।

2

ğ

नित्व, ত্যভ্যাম, ছাভা:। निवः, ছাভ্যাম, ছাভা:। निवः, नित्वाम्। निवि, नित्वाः, ছাষু। হে ছো:। (৩১)

দিবমতিক্রান্ত ইত্যান্তর্থে স্তিয়াং পুংদি চ অতিছোঃ ইত্যাদি পূর্ব্ববং। (৩২)

দিবমতিক্রান্তং কুলমিত্যর্থে—অতিহ্না, অতিদিবী, অতিদিবি। এবং দিতীয়া। পরে পূর্ব্ববং। (৩৩)

উপেযিব — পুং,স্ত্রী। (উপেযিবাংসমাচটে ইত্যর্থে ণিচ্ + কিপ্)।
উপেযিব, উপেযিবৌ, উপেযিবঃ। উপেযিবম, উপেযিবৌ, উপেযিবঃ।
উপেযিবা, উপেযিব্ভ্যাম্ ইত্যাদি। (৩৪)

মূলব — পুং,ন্দ্রী। (মূলরুশ্চমাচটে ইত্যর্থে মূলরুশ্চ + ণিচ্ (ইন্
্ঞি) কিপ্)।

भूलव, भूलवी, भूलवा। भूलवभ, भूलवी, भूलवा। भूलवा, भूलভा। भूलि भूलि भूलविष् । (৩৫)

- (৩১) হাভামিতি উত্তেহসিদ্ধবদ্ভাবস্থ স্বরানন্তর্য্য ইতি নিষেধাৎ যথং তক্ষাৎ কর্মধারয়পক্ষে "স্বরাদেশে" ইত্যাদিনা স্থানিবভাবোহপি নান্তি, অসিদ্ধবদ্ভাবপ্রতিষেধেন তস্থাপি নিরাক্বতথাৎ। এবমাত্বাত্বে অপি বোধ্যে।
- (৩২) অতিভোরিতি। "বাম্যা" ইত্যত্রাকারপ্রয়োজনমত্রৈব পুংগি "ব্রিয়ামাদা" ইত্যস্থাভাবাৎ। অতিক্রান্তা ইত্যর্থেহপি এবম্।
- (৩৩) অতিতা ইতি। বিরামব্যঞ্জনাদাবিত্যতিদেশাং ব্যঞ্জনকার্যাম। অতিদিবি ইতি মুরাগমো নান্তি বকারতা দক্ষ্যোষ্ঠাত্বাং।
- (৩৪) উপেথিবাংসমাচ ট ইতি ইনি বস্ত উত্বং নান্তি "প্রকরণস্থ প্রকরণমেব নিয়ামকং ন তু প্রকরণান্তরস্তা" ইতি টাকায়ামৃক্তবাং, ভাব-প্রতায়নির্দেশস্ত স্থাবহ ইতি চ তত্তােক্তম্।
- (৩1) মূলভ্যামিত্যাদি।—"অবর্ণাৎ কিপোহনঘোষে প্রকৃতিত" ইতি বলোপ: প্রকৃতিত। মূলব্যু ইতি "তদ্বং" ইত্যাদিনা মন্ত্রু। এক-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri দ্বিজিক্ত — পুণ্ । (দ্বিজিন্ত নাচটে – নিচ্) (ইন্, ঞি)+
কিপ্)। বিজিট্—ড্; দ্বিজিন্তো, দ্বিজিন্তা। দ্বিজিন্তা, দ্বিজিন্তা। বিজিন্তা, দ্বিজিন্তা। বিজিন্তা। (৩৬)

4 1

२) वः

: |

4

শকারান্ত।

দ্রতস্পূত্র –পুৎ, দ্রী। (গ্বত-পৃশ্+ किপ্)।

স্বতম্পৃক্, স্বতম্পৃণ্, স্বতম্পৃশো, স্বতম্পৃশং। স্বতম্পৃশা, স্বতম্পৃশো, স্বতম্পৃশা, স্বতম্পৃগাৰ, স্বতম্পৃগাৰ, স্বতম্পৃগাৰ, স্বতম্পৃগাৰ, স্বতম্পৃগ্ৰাণা, স্বতম্পৃগ্ৰাণা, স্বতম্পৃগ্ৰাণা, স্বতম্পৃগ্ৰাণা, স্বতম্পৃগ্ৰাণা, স্বতম্পৃগ্ৰাণা, স্বতম্পৃশাৰ, স্বতম্পৃশাৰ, স্বতম্পৃশোং স্বতম্পৃশাৰ, স্বতম্পৃশাৰ, স্বতম্পৃশোং স্বতম্পৃশাৰ, স্বতম্পৃশ্ৰাণা, স্বতম্পৃশাৰ, স্বতম্পুশাৰ, স্বতম্বিক্তম্পুশাৰ, স্বতম্পুশাৰ, স্বতম্পুশাৰ, স্বতম্পুশাৰ, স্বতম্পুশাৰ, স্বতম্পুশাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্পুশাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বত্যমন্তম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বত্যমন, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বতম্বাৰ, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্বতম্বাৰ, স্বত্যমন, স্বতম্বাৰ, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্বত্যমন, স্

न्त्रू चिन्नं - पूर, ह्वी १ (य-विम् + किन्)

স্থবিট্, স্থবিড ্; স্থবিশোঁ, স্থবিশা । স্থবিশা, স্থবিশা, স্থবিশা, স্থবিজ্ভ্যামিত্যাদি । স্থপি—স্থবিট্সু, স্থবিটংস্থ ।

ক্লীত্রে—স্বিট, স্বিড্; স্বিণী, স্বীংশি। এবং দিতীয়া।
পরে পূর্ববং।

ধাতোরন্তাবকারত্য অন্তস্থাত্বং "তত্যান্তত্ত্ব" ইত্যত্র উদাহ্বতত্বাং। অনন্তাত্ত তু ওঠাত্বং ''হচতুর্বান্তত্ত্ব'' ইত্যত্র মূলবৃড়িতি হ্বয়তীতি টীকায়ামূক্তবাং।

(৩৬) দিজিহ্বমাচটে ইতি ণিচি (ইনি, এে) কিপি চ 'দিজিহ্ব,' ইতি শব্দ: । দিজিড্ভামিত্যাদি—"ন সন্ডাদে।" ইতি অনুপ্তবদ্ভাবনিষেধাৎ ডব্বম্। তুর্গমতে ব্যবস্থিতবিভাষয়া নামকারিতাস্তানাং ডব্বাদয়ঃ স্থারিতি। মজেবম্ভয়মতে চতুর্থ: কথং ন স্থাৎ ? নৈবং তৃতীয়াদেরিত্যবয়বস্থা বিশেষণাৎ ন জন্ত ব্যবস্থিতবিভাষয়া "অজকারাদেং" ইতি তৃতীয়ন্ত বিশেষণাৎ ন জন্ত ব্যবস্থিতবিভাষয়া গ্রাহ্বাহাঃ।

১৩০ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

উশ्-श्रः (वर्ग्+िकश्)।

146

উট, উড ; উশো উশः ইত্যাদি।

न्यं - पूर। (नम् + किन्)।*

নট্, নড্, নক্,, নগ্,; নশো, নশা। নশা, নশা, নশা। নশা, নগ্ভাাম, নড্ভাাম্ ইত্যাদি। স্পি—নট্যু, নট্স্ নক্।

তাতৃশা — পুথ। (স ইব দৃশাতে—তদ্—দৃশ + কিপ্।
তাদৃক, তাদৃগ; তাদৃশৌ তাদৃশঃ। তাদৃশম, তাদৃশৌ, তাদৃশঃ।
তাদৃশা, তাদৃগ্ভাম, তাদৃগ ভিঃ। তাদৃশো, তাদৃগভাম তাদৃগ্ভাঃ।
তাদৃশা, তাদৃগ্ভাম, তাদৃগ্ভাঃ। তাদৃশা, তাদৃশাম, তাদৃশাম। তাদৃশি,
তাদ্শোং, তাদৃক্। স্বোধনে—হে তাদৃক্, তাদৃগ্; হে তাদৃশৌ,
হে তাদৃশাঃ।

যাদৃশ্, সদৃশ্, কীদৃশ্, এতাদৃশ্, অমৃদৃশ্ ও ঈদৃশ্ প্রভৃতি শরের রূপ 'তাদৃশ্' শরের অহুরূপ জ্ঞাতব্য।

ষকারান্ত।

ষষ — সংখ্যাবাচক, বহুবচনান্ত।

^{*} नग्भारका म्हानिः।

⁽৩৭) বড়িত্যাদি—"ঝবর্ণ টবর্গরষা মৃদ্ধন্তাঃ" ইতি ন্তায়াৎ "বা বিরামে, ধুটান্ত তীয়া, অংঘাবে প্রথমঃ" ইত্যেতৈঃ সিদ্ধে "হশ্ব—"ইত্যাদৌ বকারগ্রহণং বোধমতি—বর্ণবিধৌ লাক্ষণিকপরিভাষা প্রায়েণানিত্যা

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri
পান্ত্রি আইন্—তি, (পরমাশ্চ তে যট্চেডি সমাসে) পরমষ্ট ;
পরমষ্ড ইত্যাদি ষ্য্শক্বং রূপ হইবে।

थिययर्- शूर, खो।

*11.

: 1

₫.

(প্রিয়া: ষট, যদ্য মস্তা বা ইত্যাদি বাক্যে)।
প্রিয়েষট্ প্রিয়েষড্; প্রিয়েষমৌ প্রিয়েষমঃ। প্রিয়েষম্ ইত্যাদি। (৩৮)
প্রিপ্রত্ত্তিক — স্ত্রী। (বি—প্রুষ + ক্রিপ্)।
বিপ্রত্তি, বিপ্রুড; বিপ্রুষে, বিপ্রুষঃ ইত্যাদি।

विष्-ञ्जी। (विष्+िक्श्)

থিট, থিড্; থিষো, থিষঃ। থিষম, থিষো, থিষঃ। থিষা, থিড্ভ্যাম্, থিড্ভিঃ। থিষে, থিড্ভ্যাম্, থিড্ভ্যান্ থিড্ভাঃ। থিষঃ থিবোঃ, থিষাম্। থিষি থিষোঃ, থিট্স্থ; থিট্ৎস্থ। সংস্থাধনে—হে থিট্, থিড্; হে থিষো থিষঃ।

সকারান্ত।

हल्प्रम्—शूः। [हल्य—मा+ अञ्चन्)

हक्ष्याः, हक्ष्यत्मो, हक्ष्यमः । हक्ष्यमम्, हक्ष्यत्मो, हक्ष्यमः । हक्ष्यमा हक्ष्याञ्चाम्, हक्ष्याञ्चः इञ्जानि ।

তেন বৃক্ষাংশ্চরতীত্যাদি সর্পিষ্ ইতি চ সিদ্ধং ভবতি। শ্রীপতিমতে ধাতবয়ববকারতা যজাদিসাহচর্ষ্যেণ ভত্তাৎ সর্পিষ্থিত্যতাবিষয়ত্বন ব্যাহণং স্থপ্রতিপত্যর্থমেব পর্যাবস্থাতীতি।

(৬৮) প্রিয়্রবড়িতি—বছরীরেরগুপদার্থপ্রধানতাৎ গৌণম্থ্যগ্রায়েন

শংখ্যাসম্বন্ধিতা বিভক্তেরভাবেন বা ন ধকারাস্ত্রসংখ্যাসম্বন্ধি কার্য্যমিতি।

্ট Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

স্প্রজন, তুপ্রজন, অপ্রজন, বেধন, স্থোতন্ প্রভৃতি শব্দেরও চন্দ্র-মন্শলবৎ রূপ হয়।

উশনস্-পুং। (বশ্+কনস্)

উশনা, উশনসো উশনসং, উশনসম্। উশনসো, উশনসং। উশনসা, উশনোভ্যাম, উশনোভিঃ ইত্যাদি।

সম্বোধনে—হে উশন, হে উশনন্,(উশনসৌ) হে উশনঃ (উশনসঃ) (৩৯)

C

f

SIE

f

षरनङ्ग्—शूः। (षन्—हेरु+षञ्चन्

चार्तरा, चार्तरामी, चार्तरमः। चार्तरम्, चार्तरामी, चार्तरमः। चार्तरमा चार्तराच्याम् देखानि। दश्चार्तरः।

পুরুদংশস্ শব্দেরও অনেহস্ শব্দের তুল্য রূপ জ্ঞাতব্য।

কনীয় (ন্) সৃ—পুং। (যুবন বা অল্প + ঈয়ন ্ত্ৰ) (80)

কনীয়ান, কনীয়াংসৌ, কনীয়াংসঃ। কনীয়াংসম্, কনীয়াংসৌ কনীবস:। কনীয়সা, কনীয়োভ্যাম্, কনীয়োভিঃ ইত্যাদি। স্থাপি—কনীয়ার।
শ্রেষ্য (ন্স্) জ্যায়স্ (ন্স্) প্রভৃতি শব্দেরও পূর্ব্বং রূপ জ্ঞাত্য।

⁽৩৯) ছে উশন ইতি—"অসমুদ্ধৌ ইতি নঞোহনিত্যত্বাৎ পক্ষেব্ "ন সমুদ্ধৌ" ইত্যত্রাপি নঞোহনিত্যত্বাৎ পক্ষে নলোপ:। অতএবোজং ব্যাদ্রভূতিনা—"সম্বোধনে তৃশনসন্ত্রিক্লপং সাস্তং তথা নাস্তম্থাপ্যদন্তম্" ইতি। প্রীপতিমতে "বোশনদো ন" ইতি পক্ষে নকার:, "নলোপো নপুং-সকস্তে"তি পক্ষে নকারলোপ:।

⁽৪০) কনীয়ন্দ্ ইতি—অল্লানামতিশয়েন যুবা অল্লো বা ইত্যর্থে যুবন্শকাৎ বা, ঈয়ন্সৌ (ঈয়সৌ) "যুবাল্লয়োঃ কন্" ইতি কনিবদেশে কনীয়সশকাং দিদ্ধঃ।

Digitized by Arya Arya Arya Chennai and eGangotri

ন্ত্রীলিকে ঈ (ঈপ্) প্রভ্যমে 'কনীয়সী' 'শ্রেষসী' 'জ্যায়সী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবৎ রূপ জ্ঞাতব্য।

-

मा,

(60

1:1

मौ-**छ**।

IJI

37

नः

14"

14-

१८र्थ

41-

कनोयम् (न्म्) क्लोरव।

ক্নীয়ং, ক্নীয়দী, কনীয়াংদি। এবং দিতীয়া। পরে পুংবং। শ্রেয়দ্ (ন্দ), জ্যায়দ্ (ন্) প্রভৃতি শ্বেরও ঐ প্রকার রূপ হয়।

জি গ্রিবন্স — পুং। (গ্রম — কন্ম)

(মুগ্ধবোধাদিমতে জ্মিবস্ শব্দ)

कियाना, कियानांरिनी, कियानांशाः। कियानांश्म, कियानांरिनी, कियानांशाम, कियानांरिनी, कियानांशाम, कियाना

मध्यापत- (इ क्रियत्न, (इ क्रियाश्ती (इ क्रियाश्मः।

বিদ্বন [স্]—পুং। [বিদ্+শন্ত ্ড্, তৎস্থানে বন্সু]।

विषान्, विषारत्नो, विषारमः । विषारमम्, विषारमो, विष्यः । विष्या, विष्याम्, विष्याम्, विष्याः, विष्याम्, विष्याः, विष्या

জীলিজে 'বিহুষী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবং রূপ জ্ঞাতব্য।

স্থলিদ্বন্তন্ (দ্)—ক্নী (পোভনো বিদ্বান্ যতা কুলতা তং ইত্যাদি বাক্যে)।

(৪১) বিদ্বানিতি পরত্বাং সংযোগান্তলোপঃ। ইনি (ণিচি, এৌ) বিষয়তীতি "প্রকরণস্থ প্রকরণমেব নিয়ামক"মিতি <mark>স্থায়াং উত্বং ন স্থাং।</mark> CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar স্থবিদ্ধ, স্থবিদ্ধী, স্থবিদাংসি। এবং দিতীয়া। পরে পুংলিক্বং। ই রূপ উপেযিবন্স্ (স্) পেচিবন্স. (স্) প্রভৃতি শব্দেরও রূপ জ্ঞাতব্য।

স্রোতস্—রो। [স্রু তস্]

双

इ

স্রোতঃ, স্রোতগী, স্রোতাংসি। এবং দ্বিতীয়া। স্রোতসা, স্রোত্যে-ভ্যাম ইত্যাদি।

হ্বভোত্য-স্ত্রী, পুং।

(শোভনং স্রোতো যশ্ম যশ্ম বা ইত্যাদি বাক্যে) স্থ্যোতাঃ, স্থ্যোত্তিন, স্থ্যোত্ত্বিন, স্থ্যোত্তিন, স্থ্যোত্তিন, স্থ্যোত্তিন, স্থ্যোত্তিন, স্থ্যোত্তিন, স্থ্যোত্তিন, স্থায়েন, স্থোত্তিন, স্থায়েন, স্থায

অপ্সরস্—ন্ত্রী, বহুবচনান্ত। [অপ্—স্+অস্ত্র্ন্]
অপ্সরস:। অপ্সরস:। অপ্সরোভি:। ইত্যাদি।
জলৌকস্ শব্দেরও এই প্রকার রূপ হয়। (৪২)

উথাস্রস্-পুং। [উথা-স্রন্স্+িরপ্)

উধাস্থ্য, উধাস্রনৌ, উধাস্রদঃ। উধাস্রদম্, উধাস্রদৌ উধাস্রদঃ। উধাস্রদা উধাস্রদ্যাম্, উথাস্রদ্যি: ইত্যাদি। স্থপি—উধাস্থ্য । স্থ্য, ধ্বদ্, পর্ণধ্বদ্ প্রভৃতি শব্বেরও উধাস্থদ্ শব্বের তুদ্য রূপ হয়।

यनम्-क्रो।[यन+ अञ्चर]

মন:, মনসী, মনাংসি। এবং দ্বিতীয়া। মনসা, মনোভ্যাম্, মনোভিঃ ইত্যাদি। স্থপি—মন:স্থ।

(৪২) অপ্সরস্শব্দো বছবচনান্ত: ''ব্রিয়াং বছ্রপ্সরসঃ" ইত্যক্র্যান্তে:। বস্তুতন্ত অমরেণ বামানাচার্য্যাত্তমাপ্রিত্য "বছ্র্" ইত্যুক্রন্
ইহ তুবচনান্তরমপ্রি। তথাচ "বছ্রবদ্যাদেরসংখ্যকাধিকরণ্ডা" ইতি
স্ত্রে শ্রীপতিনা "বা তুজলৌকসঃ সমা অপ্রসঃ" ইত্যুক্তন্।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

সুত্ৰসন্-পুৎ লা স্ত্ৰী (শোভনং মনো যশু বা যশোঃ)
স্থমনাঃ, স্থমনসো, স্থমনসং। স্থমনসম্ ইত্যাদি। হে স্থমনঃ।

मर्शिम्-क्री। [एश + हेम्]

সর্পি:, সর্পিষী, সর্পীংষি। এবং দ্বিতীয়া। সর্পিষা, সর্পির্ভ্যাম্, সর্পির্ভি: ইত্যাদি। স্থাপি = সর্পি:ষ্।

ধনুস্-ক্লী (ধন+উস্)

ধন্ম:, ধনুষী, ধনুংষি। এবং দিভীয়া। ধনুষা, ধনুর্ভ্যাম্ ইত্যাদি। স্থি—ধনুষ্

দোস্-পুং। (দম-ডোস্)

त्नाः, त्नारवो, त्नावः। त्नावम्, त्नारवो, त्नावः, त्नावः। त्नावा, त्नावः। त्नावा, त्नावः। त्न

আশিস্—ন্ত্ৰী। (আ—শাস্+কিপ্)

আশী: আশিষৌ, আশিষঃ। আশিষম্, আশিষৌ, আশিষঃ। আশিষা, আশীঙ্গাম্, আশীঙিঃ। ইত্যাদি। স্থপি—আশীঃবৃ।

^{*}দোষ্ণ ইত্যাদি। "পাদহাদয়—"ইত্যাদিনা পক্ষে দোস্শবস্থ দোষন্ আদেশঃ।

সজুস্—ন্ত্রী। (সহ—জুস্—কিপ্)

সজূ:, সজুযো, সজুয:। সজুযম্, সজুযো, সজুয়:। সজুষা, সজুভাাম্, সজুভি:। ইত্যাদি। স্থপি—সজূঃমু।

অদস্—সর্ববনাম।

9

পूट — चरमो, चम्, जमे। जम्म, जम्, जम्। जम्मा, जम्था, जम् डाम, जमीजिः। जम्देम, चम्डाम, जमीजिः। जम्मार, जम्जः; चम्डाम, जमीजाः। जम्मा, जम्साः, जमीवाम्। जम्मिन्, जम्बः; जम्साः, जमीव्।

ক্রী—আদঃ, অমৃ, অমৃনি। এবং দ্বিতীয়া। পরে পুংলিম্ববং। অত্যাদস্য-পুং স্ত্রী—(অমুমতিক্রান্তঃ—ক্রান্তা বা ইত্যাদি বাক্যে)

অত্যদা:, অত্যদদৌ, অত্যদসঃ। অত্যদসম্, অত্যদসৌ, অত্যদসঃ। অত্যদসা ইত্যাদি বেধস্শস্বং।

অত্যদস্ক্রী (অমুমতিক্রান্তং কুলমিত্যাদি বাক্যে)। অত্যদঃ, অত্যদমী, অত্যদাংদি। এবং দ্বিতীয়া। পরে বেধস্বং।

অক্প্রত্যয়ান্ত অদস্ শব্দ।

পুং—অন্তকঃ, অসকৌ; অমৃকৌ, অমৃকে ইত্যাদি অদস্বং।
ভ্রৌ—অন্তকা, অসকৌ; অমৃকে, অমৃকাঃ ইত্যাদি অদস্বং।
ক্রী—অদকঃ, অমৃকে, অমৃকানি। এবং দ্বিতীয়া। পরে পুংবং।

তুর্গমতে অস্কবং কুলমিতি। (৪৩)

পুমন্স—পুং (পा+ ছুমন্স)

পুমান, পুমাংদৌ, পুমাংস:। পুমাংসম্, পুমাংসৌ, পুংস:। পুংসা, পুংভ্যাম্, পুংভি:। পুংসে, পুংভ্যাম্, পুংভ্য:। পুংস:, পুংভ্যাম্, পুংভ্য:। পুংস:, পুংগো:, পুংসাম্। পুংসি, পুংসো:, পুংস্ক,। হে পুমন্।

সুপুত্রভন্স্—ক্লী। (শোভনঃ পুমান্ যশু কুলশু তং ইত্যাদি বাব্যে)।

चुनूर, खुनूरमो, खुनुमारिम । এवर विजीया । भरत भूरिनक्वर ।

হকারান্ত।

গোছহ — পুং। (গো—ছহ কিপ্)।

গোধুক্, গোধুগ্; গোছহো, গোছহঃ। গোছহম্, গোছহো, গোছহঃ গোছহা, গোধুগ্ভ্যাম্, গোধুগ্ভিঃ ইত্যাদি। স্থপি—গোধুক্। (৪৪)

- (৪০) অস্ক ইতি—"বাদসো নৌৎ দাকঃ দাছচ্চ" ইতি গ্রীপতি-শত্রেণ দাবৌত্বমৃত্রা । তুর্গ: টীকায়ামেবমাহ যথা—বাধিকারমাদ্র্যুক্ত স্প্রেণ প্রেণ দিলোগ্র্য ন স্থাৎ "উত্তমাৎ" ইত্যত্র চকারোহত্নবর্ততে মাচ্চ চকারাদক্তস্মান্ত দকারাদ্র্পি ভবতীতি, তেন অস্কা স্ত্রী অস্কঃ পুমান্ অস্কং কুলমিতি ।
- (৪৪) গোধুণিতি—হকারগ্রহণাদ্ আদিচতুর্পত্বে ক্রতেংপি অক্তব্যাবাৎ "দাদেইশু গঃ" ইতি প্রবর্ত্ততে। ন চ হকারশু দাদিঘাভাবাৎ কথং গছমিতি বাচ্যং "বচনাদেকেন বর্ণেন ব্যবধানমাশ্রীয়তে ন মনেকেন" ইতি গ্রায়াৎ। তর্হি মিত্রগ্রুগিতি ন পিধ্যতীতি চেদ্ দাদিতি সিদ্ধে আদিগ্রহণাৎ বর্ণাভিরেকেংপি শ্রাৎ।

गूर्- पूर, खी। (गूर + किल्)

म्क, मृग, मृह, मृष्हं, मृहं। मृहम, मृहम, मृहः। मृहा, मृग, खाम, मृष्डाम, मृष्डाः, मृष्डाः। मृहः, मृग्डाः, मृह्डाम, मृह्ड

4

C

f

6

9

1

f

₹

জহ, সৃহ্ প্রভৃতি শব্দেরও এই প্রকার রূপ জ্ঞাতব্য।

অনজ্বাহ —পুং। (অনস্—বহ+বিণ্)

অনজ্বন্, অনজ্বহোঁ, অনজ্বহং। অনজ্বহম্, অনজ্বহোঁ, অনজ্হং।
অনজ্হা, অনজ্দ্ভাগম্ ইত্যাদি। স্থপি-—অনজ্ৎস্থ। হে অনজ্ন্।
স্ত্রীলিকেস্প্রনজ্হী' ইত্যাকার শব্দ হয়, নদীবংরপ জ্ঞাতব্য। (৪৫)
স্থল জ্বাত্ত ক্লিক্ত ইত্যাদি বাক্যে)।

अन् । বিল্লাভনোইনড্বান্ যশু কুলশু ইত্যাদি বাক্যে)।
अन् । প্রক্তি স্বন্দ্র স্বন্দ্রী ; স্বনড্বাংহি । এবং ২য়া । পরে পুংবং ।

প্রষ্ঠবাহ — পুং। (প্রষ্ঠ— বহ+ বিণ্)

প্রষ্ঠবাট্, প্রষ্ঠবাড় ; প্রষ্ঠবাহেন, প্রষ্ঠবাহা । প্রষ্ঠবাহন, প্রষ্ঠবাড় । প্রষ্ঠবাড় ভান্য, প্রষ্ঠবাট্ন্য, প্রষ্ঠবাট্ন্য,

⁽ ৪৫) অনজুহীতি—কেচিৎ "অনজাহীমালভেত" ইতি প্রয়োগং দৃষ্ট্রা পক্ষে উত্বং বদন্তি, তন্মতে অনজুহী, অনজাহী ইতি প্রয়োগন্বরম্। কলাপাদিমতে তু উত্বমেব প্রমাণম্। উত্বাভাববৎপ্রয়োগন্ত ভাষায়াং নদৃশ্যতে।

वर्क्वार् — शूर । (वात् — वर + विग्)

বার্কাট্, বার্কাড্, বার্কাহো, বার্কাহঃ। বার্কাহম্, বার্কাহো, বারুহঃ। বারুহা, বার্কাড্ভ্যাম্ ইত্যাদি। স্থপি—বার্কাট্স্থ (ট্ৎস্থ-ঠ্স্থ)। কালীবাহ্, অগ্নিবাহ্ প্রভৃতি শব্দেরও প্রবেৎ রূপ জ্ঞাতব্য । (৪৬)

শেতবাহ — পুং। (শেত—বহ+বিণ্)

খেতবাং, খেতবাহৌ, খেতবাহং। খেতবাহম্, খেতবাহৌ, থেতৌহং। খেতৌহা, খেতবোভাাম্, খেতবোভিং। ইত্যাদি।

এই প্রকার উক্থশংস্, পুরোডাশ্ এবং অব্যাজ্ শব্দেরও ব্যঞ্জনাদি বিভক্তি পরে উক্থশস্ পুরোডস্ এবং অব্যস্ এইরপ রূপ হয়, অতএব

(৪৬) বার্বহতীতি বিণি বার্বাহ্ শব্দ। বারহঃ ইত্যাদি—অঘুট্রবরে "বাহের্বাশব্দস্রাঃ" ইতি ঔতি প্রদন্ধতি "বোহনবর্ণাদোতৃয়ৎ" ইতি শ্রীপতি-স্ত্রেণ উকারঃ। তুর্গমতে অঘুট্রবরিষয়ে অনবর্ণাৎ বহের্বিণ্-প্রতায়াভাবে ধাতৃনামনেকার্থআদ্ বহধাত্বব্রুত্তরহঃ কিপি জলপাত্র-বাচিনা বারহ্-শব্দেন বারহঃ ইত্যাদি প্রয়োগাঃ। বিরামে ব্যঞ্জনাদৌ অঘুট্রবরে চ অবর্ণাদপি বহের্বিণি বার্বাড়িতি সিধ্যতি। ভাষাভ্যাপি মত্তন্মতং । "বাহের্বাশব্দভ্যাঃ" ইতি স্ত্রে ঔকারকরণং কিমর্থম্ ? উত্বমহ্বর্তিতাম্ ? তভক্চ উত্তে বিণো লোপে "প্রত্যন্তলাপলক্ষণ" মাপ্রত্যে "নামিনক্ষোপধায়া লঘোঃ" ইতি শুণে "গুকারে ঔ ঔকারে চ" ইতি ক্তে দিল্লঃ প্রষ্ঠেই ইতি, ন চ অনবর্ণাস্থোপপদে দোষ ইতি বাচ্যম্ অবর্ণান্ধেব বহের্বিণ্ দর্শনাৎ। সত্যমৌকারকরণং জ্ঞাপমতি—অসিদ্ধবদ্ভাবোহত্তীতি। তর্হি কথ্যৌত্যমকারত্য চেদনিত্যতাকল্পনাদিতি। অত্যাবর্ণাদেবেতি টিকাক্ষতঃ তদপ্যঘূট্রবরিষয়মিতি বোহ্নব্যম্।

প্রথমাতে উক্থশাঃ, পুরোডাঃ, অব্যাঃ এবং ভ্যাম্ প্রভৃতি বিভক্তিতে উক্থশোভ্যাম্, পুরোডোভ্যাম্, অব্যোভ্যাম্ ইত্যাদি রূপ হয়। (৪৭)

সংখাধনে—হে শ্বেভবঃ, হে শ্বেভবাঃ; হে উক্পশঃ, হে উক্পশাঃ; হে অবযাঃ ইভি (স্বরাদৌ ঘুটি উক্থশংসৌ ইভ্যাদি)। স্বরাদাবঘুটি উক্থশসঃ উক্থশসা ইভ্যাদি। (৪৮)

তুরাসাহ, —পুং। (তুর – সহ + বিণ্)

ত্রাষাট্, ত্রাষাড্; ত্রাসাহৌ ত্রাসাহঃ। ত্রাসাহয়, ত্রাসাহৌ, ত্রাসাহঃ। ত্রাসাহা, ত্রাষাড্ভায়, ত্রাষাড্ভায়, ত্রাষাড্ভায়, ত্রাষাড্ভায়, ত্রাষাড্ভায়, ত্রাষাড্ভায়। ত্রাসাহঃ, ত্রাষাড্ভায়, ত্রাষাড্ভায়, ত্রাষাত্ভায়। ত্রাসাহয়, ত্রাসাহয়। ত্রাসাহয়, ত্রাষাট্তয়, ত্রাষাট্তয়। ভ্রাষাট্তয়। ভ্রাষাট্তয়। ভ্রাষাট্তয়। ভ্রাষাট্তয়। ভ্রাষাট্তয়।

मत्वाधत- (इ जूताबाह, जूताबाड, (इ जूतामारहो, (इ जूतामाहः।

⁽৪৭) খেতবাং ইতি—"খেতবাহাদেরন্তম্ম তদ্ পদান্তে" ইতি
প্রীপতিস্ত্রেণ সকারাদৌ তকারাদৌ চ বিভক্তৌ খেতবাহাদেরন্তম্ম
স্থানে তদি কতে অন্তাম্বরাদিলোণে খেতবাহ্ স্থানে খেতবস্, উক্থশংস্
স্থানে উক্থশস্ প্রোভাশ, স্থানে পুরোডস্, অব্যাজ্স্থানে অব্যস্ ইতি
শব্দাং সম্পত্তন্ত। "বাহো বৌ পৌ খেতাত্ত্ব বা" ইতি মৃদ্ধবোধস্থত্তে
অঘুট্সরে ঔষং বিকল্লিতম্, কলাপাদিমতে তু খেতৌহা খেতৌহা
ইত্যাজেকৈক্মেব রূপম্। সংঘাধনে চ খেতবাং খেতবং ইতি মৃদ্ধবোধমত

 ^{&#}x27;বিণ্যহ: সহে'রিতি স্ত্রেণ বিরামে ব্যক্তনাদে চ হত্বম।
 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ছर्- पूर, खो। (इर्+ किन्)।

धूक, धूर्ग, इंदरी, इंदर। जाती—धूर्ग, जाम, धूर्ग, जिः। धूर्ग, जाः। खूर्ग, —धूक्

ক্ষান্ত।

1-

विविक्क् - श्रु छो (विक् + मन् + किश्)

বিবিট্, বিবিড্; বিবিক্ষে), বিবিক্ষঃ। বিবিক্ষম্, বিবিক্ষে), বিবিক্ষঃ। বিবিক্ষা, বিবিড্ভ্যাম্ ইভ্যাদি। স্থপ্—বিবিট্স্থ, বিবিট্ৎস্থ।

তক্ষ্—পুং, দ্রী। (তক্ষ, + किপ্)

তট্, তড্; তকৌ, তকঃ। ভ্যাম্—তড্ভ্যাম্। স্বপ্—তট্সু, তট্ৎস্থ।

ত্ৰক্—পুং, স্ত্ৰী (তক্ষ+ ণিচ্ [ঞি, ইন্]+ কিপ্)। তক্, তগ্; তকো, তক্ষঃ। তগ্ভ্যাম্। স্থণ্—তক্ষ্। (৪৮)

গোরক্ — পুং, স্ত্রী (গো十বক+কিপ্)।

গোরট, গোরড্; গোরক্ষৌ, গোরক্ষ:।—গোরড্ভ্যাম্···গোরট্স্ক, গোরটৎস্থ।

কৌম্দী, কলাপ ও ম্থবোধাদিমতে পোরক, গোরগ্ইত্যাদি প্রযোগ হয়।

পোলক্ত্—পুথ (গোরক+ণিচ [ঞি, ইন্]+ কিণ্)।

(৪৮) ণিজন্তাৎ (ইনন্তাৎ, ঞ্যন্তাৎ) কিপি তু ণি (ইন্ ক্রি)-লোপত শানিবদ্ধাবাদ্ নাদিধুটো লোপঃ সংযোগান্তলোপং প্রতি তু স্থানিবদ্ধাবো নাতীতি। ১৪২ শব্দর্মপ-কল্পজ্মঃ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

গোরক, গোরগ্ ত্যাম্ তাম্ তাম্ ।

আংসিপিক্ —পুৎ, স্ত্রী। (মাংস+পচ্+মন্—কিপ্)।

মাংসপিপক্, মাংসপিপগ; মাংসপিপক্ষো, মাংসপিপক্ষা। মাংসপিপক্ষম্, মাংসপিপক্ষো, মাংসপিপক্ষা; মাংসপিপকা, মাংসপিপকা,

ভাাম। মাংস্পিপক্ষ।

विवकः — शूः, खो। (वह + मन् + किश्)
विवकः, विवनःविवनः ।
क्को — विवकः, विवनः ; विवकः । विवकः । वदः २ ॥। भरतः भूःवः।

ক্তিপয় সমাসান্ত বিধি ঃ

নঞ্ স্বত্র্তাঃ প্রজায়ান্ত বছরীহাবসন্ততা। (ক)
মন্দালাভ্যাঞ্চ মেধায়া অমেধা ইতি স্চনম্ ॥ (খ)

(ক) অর্থ ও উদাহরণ—বহুবীহি সমাসে নঞ্, স্থ এবং হুর্শন্দের পরস্থিত প্রজাশন্দের অস্তে অস্ হয়। যথা—ন প্রজা ষশু, অসৌ— অপ্রজাঃ। শোভনা প্রজা যশু, অসৌ—স্প্রজাঃ। হুটা প্রজা যশু, অসৌ—হুপ্রজাঃ। ইহ নঞাদেরব্যবহিতোন্তরত্মপেক্ষিত্রম্। তেন স্কুট্ গুণিনী প্রজা ষশু অসৌ—স্পুণিপ্রজ ইত্যাদৌ অস্ ন শুরাং।

(४) বছরীহি সমাসে নঞ্, স্থ, ত্র, মন্দ এবং অল্পক্ষের পরছিত মেধাশব্দের অস্তে অস্ হয়। যথা—ন বিভততে মেধা হস্ত দুঃ অমেধাং এবং F

रि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तांतिय नामायाः मः आयाक नमः युजः। যথা জ্বরিষ নাদাশ্য জ্বসঃ স্থনদোহপি চ প্রাদেশ্চাপি তথা নিত্যমসংজ্ঞায়ামপি স্মৃতম। প্রগতা নাদিকা যক্ত প্রণসম্লদং মুধম্ । (ঘ) বিশবাদপি খুগ গ্রাঃ স্থার্মতান্তরচোদিতা:। বিথুর্বিগ্রতথা বিগ্রো নাসায়া বিগমাদিতি॥

ছুর্মেধাঃ, স্থমেধাঃ, মন্দমেধাঃ। অত্তাপি পূর্ববং অব্যবহিতোত্তরত্বম্। তেন মন্দা বহুমেধা যক্ত অসৌ—মন্দবহুমেধঃ ইত্যাদৌ ন আং। কেচিত্ত নঞ স্ত্র্ভ্যো মেধায়া অদ্ নিত্যম্, অক্তমাত্র বিভাষয়া ইতি বদন্তি, তেন - यन्तरं भवाः, यन्तरमधः ; अन्नरमधाः, अन्नरमधः।

- (গ) সংজ্ঞা বুঝাইলে বছবীহি সমাসে স্থলভিন্ন শব্দের পরস্থিত নাসিকা [নাসা] শব্দের অন্তে অৎ এবং নাসিকা [নাসা] শব্দস্থানে নস্ আদেশ হইয়া থাকে । যথা—ক্রেরিব নাসিকা যস্য স: ক্রণম: । ("পুর্বাপদাৎ সংজ্ঞান্নামগং" ৮৭৫ কো। পূর্ব্বপদস্থান্নিমিত্তাৎ পরস্য নস্য ণঃ স্যাৎ मःखायाः न जू शकात्रवावधात्न, हेजि वज्रम्।)
- (ম) প্রাদির পরস্থিত নাসিকা [নাসা] শক্তানে সংজ্ঞাতির স্বলেও নদ্ হইয়া থাকে। যথা—প্রগতা নাসিকা যদ্য তৎ প্রণসং মুধম। "উপদর্গাদ্বত্ল" মিত্যনেন ণ্ডম্। উদ্গতা নাসিকা যদ্য তৎ উল্লনং মুধ্ম্,
- (ঙ) বিশব্দের পরস্থিত নাসা [নাসিকা] শব্দস্থানে খু গ্র এবং এ মাদেশ হইয়া থাকে। যথা—বিগতা নাসিকা অদ্য—বিখুং, বিগঃ, বিগ্র:। সিদ্ধান্তকৌমুদীতে "বেগ্রেণ বক্তব্য: খ্যুশ্চ" এই বিধান বারা বিখা: এবং বিগ্র: এই তুইটা পদ হয়। কথং তহি "বিনদা হতবান্ধবা" ইতি ভট্টঃ ? বিগতয়া নাসিক্যা উপলক্ষিতেতি ব্যাখ্যেয়ন্।

8 শব্দরাপ্-কল্পাড়েমঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम वा थूतथवां जां ख थवां: थूवना यथा । (ह) छकार भूर्वभागात्व न वा धर्ममा नास्त्रा। यथा পরমধর্মায়ং यथा পরমধর্মকः। স্যাৎ পরমন্থধর্মোধ্যমগুদ্ধতাদিতি স্মৃতিঃ ম (豆) হরিততৃণলোমভ্যো জন্তা চ স্থাক্ত:। যথা হরিতজ্ঞায়ং স্থজ্জিতি হি স্চনম ॥

(চ) वहबीहि नमारम थूत ७ थत्र भरकत भत्र खिक नामा [नामिका] असरात मम এवः ष्य हम विकल्ला यथा-थन्नत्माव (थना वा) नामा [नामिका] यमा मः-थत्रानाः, अत्रामः, अवर यूत्रानाः, यूत्रामः।

नर

र्य

জা

হয়

প্রগ

नःर

রঘু

निए

যুক্ত

উদ্গ

(छ) छन्द व्यर्था९ (कवन এकটी माज পानत भन्नवर्जी धर्ममन वह्नजीह नमारम नकातां उद्या यथा-श्वरमा धर्मा यमा मः श्वमधर्मा, श्वम-থর্মক:। কপ্রভাষাভাবপক্ষে নাস্ততেতি। এন্থলে সিদ্ধান্তকৌমুদীমতে "ধর্মাদনিচ কেবলাৎ" এই সূত্র প্রযোজ্য। অশুদ্ধত্বনিবন্ধন অর্থাৎ একটীমাত্র পদ পূর্বের না থাকায়—'পরমঃ শোভনো ধর্ম্মো যস্য' এই বাকো 'भवगञ्च धर्यः' এই क्रभ व्यकाता छ इ इ हे । (मि स्विमाधा धर्म हे जाती তু কর্মধারয়পূর্ব্বপদো বহুত্রীহি:। এবস্ত পরমন্বধর্মা ইত্যপি সাধেব। কৌমুদী) অত্র অক্ততসমাসপূর্ব্বপদাৎ পরাদ্ ধর্মাদ্ অনু ইভি বক্তব্যং, তেন পরমহিতো ধর্মো যদ্য সং পরমহিতধর্ম ইত্যাদি ন দ্যাৎ ইতি তুর্গাদাদ।

(क) स्न, रित्रिज, ज्न এवः लामन् मत्मत्र भत्रवर्जी क्षष्ठ मस् व रहवीरि निमादन नकातास रम। निमास्टकोम्नीमत्छ त्नामसात त्नाम शार्वत হয়। "জ্জুস্হরিততৃণদোমেভাঃ"। জ্জুশন্দের অর্থ ভক্ষ্য এবং দৃষ্ট। শোভনো জভোহদ্য, অদৌ—হুজভা। এবং লোমজভা [সোমজভা]। অম্বর, পতিতঙ্গতঃ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri \$8 ৫ দিনি গেইলে ব্ৰণং যক্ত দক্ষিণেশা মুগো ভবেং। (ঝ) সংপ্ৰাভ্যাং জালুনো জ্বজ্ঞা (ঞ) বৃদ্ধাদ্ জ্বঃ ক্যাদ্বিভাষয়া। সংগতে জালুনী যক্ত সংজ্বঃ প্ৰজ্বঃ স উচ্যতে। (ট) নিত্যং জায়ায়া জানিঃ ক্যাদ্বিশিষ্টপদাদ্পি। বধ্জায়া ভবেদ্ যক্ত বধ্জানিঃ ন উচ্যতে। (ঠ) ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ ক্ৰিপ্তিভ্যো গন্ধক্ত ক্তাদিদক্ততা। যথা অগন্ধিক্দণগন্ধি-(ড) ক্ষপমানাদ্ বিভাষয়া।

(ঝ) ব্যাধি (এণ) বুঝাইলে দক্ষিণশব্দের পরস্থিত ঈশ্মশব্দ নকারান্ত হয়। যথা—দক্ষিণে ঈশ্বং যন্ত্র, সং—দক্ষিণেশ্বা মৃগঃ।

11

া

शि

ম-তে

te

का

नो

11

54

हि

1

11

(ঞ) সম্ ও প্রশব্দের পরস্থিত জানুশব্দস্থানে জ্বু এবং জ্ঞ আদেশ হয় বিকল্পে। যথা—সংগতে জানুনী যক্ত সং—সংজ্ঞু:। সংজ্ঞ:। সংগত-জানুকঃ। প্রগতে জানুনী যক্ত সং—প্রজ্ঞু:, প্রজ্ঞঃ, প্রগতজানুকঃ।

(ট) উর্দ্ধন্বের পরস্থিত জানুশবস্থানে বিকল্পে জ্ঞু এবং জ্ঞ আদেশ ইয়। যথা—উদ্ধে জানুনী যশু, সঃ—উর্দ্ধ্যা:। উর্দ্ধৃত্য:। "প্রজ্ঞ; প্রগতজান্থ: শুাং প্রজ্ঞোহপ্যতৈব দৃশুতে। সংজ্ঞা সংহতজানৌ তু ভবেং সংজ্ঞোহপি তত্র হি। উর্দ্ধৃত্যকুর্দ্ধিজান্থ: শুাদ্ উর্দ্ধ্যাহপ্যন্ধ্ জানুক:।"ইতি রঘুনাথচক্রবর্ত্তিধৃতসাহসাল্প:। সিদ্ধান্তকৌমুদীমতে জ্ঞ আদেশ দৃষ্ট হয় না।

(ঠ) অন্তপদের সহিত অসংযুক্ত পদের পরস্থিত জায়াশব্দের স্থানে
নিত্য 'জানি' আদেশ হয় যথা—বধৃঃ জায়া যতা সঃ—বধৃজানিঃ। অসংযুক্ত না হওয়ায় 'উত্তমা বধৃজ্জায়া যতা সঃ" এই বাক্যে—''উত্তমবধৃজায়ঃ"
ইতাকোর শব্দ হইল, জানি আদেশ হইল না।

(ভ) বহুব্রীহি সমাসে স্থ, উৎ, স্বর্মভ এবং পৃতিশব্দের পরস্থিত

গদ্ধশব্দের অন্তে ইৎ হয়। যথা—শোভনো গদ্ধো যশু, সং—স্থগদ্ধিঃ এবং

উন্গদ্ধিঃ, স্বভিগদ্ধিঃ, পৃতিগদ্ধিঃ। 'গদ্ধশ্যেত্বে তদেকান্তগ্রহণম্" একাস্তে

১●—শ্ব CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

১৪৬ Digitized by Arya Samal Foundation Chehnai and eGangotri

উৎপলস্থেব গদ্ধোহস্থোৎপলগদ্ধিঃ স উচ্যতে॥ (ঢ)
অন্নার্থাবগমেহপীহ বিভাষা দৃশুতে বুবৈঃ।
যথা ঘৃতস্থ গদ্ধোহত্র ঘৃতগদ্ধিরপি শ্বতঃ॥ (৭)
তথা স্বাদিভ্য আগস্থো স্থান্ধক স্থান্ধি চ॥ (ত)

একদেশে ইব অবিভাগেন লক্ষ্যাণে ইত্যর্থঃ। স্থান্ধি পূলং সলিলক্ষ্যুতি সিদ্ধান্তকৌমূল্যান্। গুণবাচকাদেব গন্ধাদিৎ ল্লাৎ, ন তু গুণবদ্বাচকাৎ, তেন ইহ ন লাৎ, স্থ শোভনা গন্ধা দ্রব্যাণ্যক্ষ স্থান্ধ আপণিকঃ। গন্ধা ক্ষিতাবেব ইতি তার্কিকাঃ। স চ পূল্পাদৌ সমবায়সম্বন্ধেন বর্ত্ততে। ততশ্ব সমবায়সম্বন্ধেন বন্ধিন্ গন্ধো বর্ত্তে তন্মিন্ বাচ্যে এব গন্ধাদিদ্ ভবতি ন হক্ষমাৎ; অতএব ভট্টো "আঘানি বান্ গন্ধবহঃ স্থান্ধ" ইতি প্রয়োগ ইতি হুর্গাদাসাদয়ঃ। এতমতে "অপাং হি ভূপ্তান্ন ন বারিধারা স্থাত্য স্থান্ধিঃ স্থাত্ত তুবারা" ইতি নৈষ্ধচরিতীয়প্রয়োগঃ। "কন্তুরিকামূগবিমন্দ্র্যান্ধিনিত তুবারা" ইতি নিষ্ধচরিতীয়প্রয়োগঃ। "কন্তুরিকামূগবিমন্দ্র্যান্ধিত ক্ষিতি সামপ্রয়াগ আগন্তে হু স্থাদিভ্য আগন্তে। ইত্যাদিনা। কেচিৎ সমবান্ধসম্বন্ধনিয়মং নান্তিমতে সুস্বানিত্রে বর্ত্তমানাদ্রিপ গন্ধাদিদ্ বা শ্রাদিতি বদন্তি।

श्रा

Catt

অস্ত

हेना

विम्र

रथा-

ने खा

যাৰ

利

हेला

(

- (ঢ) উপমানভূত পদের পরস্থিত গন্ধশব্দের উত্তর বিকল্পে ইৎ হয়। যথা—উৎপলম্ভেব গদ্ধোহস্ত—উৎপলগদ্ধিং, উৎপলগদ্ধঃ; পদ্মশ্রেব গদ্ধোহস্ত—পদ্মদিং, পদ্মগদ্ধঃ।
- (ণ) অল্লার্থ ব্ঝাইলেও গন্ধশব্দের উত্তর বিকল্পে ইং হয়। যথা— মৃতক্ত গন্ধো লেশােহত্র মৃতগন্ধি, মৃতগন্ধান্। এবং স্পর্গন্ধি স্পগন্ধং ভোজন-মিত্যাদি। "গন্ধো গন্ধক আমােদে লেশে সম্বন্ধ্যবােঃ।" ইতি বিশঃ।
- (ত) আগন্তক গন্ধ ব্ঝাইলে স্থ আদি উপদর্গের পরস্থিত গন্ধশব্দের উত্তর বিকল্পে ইৎ হয় যথা—স্থান্ধিঃ, স্থান্ধম।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotr 89

স্থাপাভান্ত দত্ত নিতাং বয়সি দত্ত।

যথা স্থান্ ব্দতীয়ং ছিদংশ্চ ছিদতী তথা। (থ)

যড় দত্তা অক্ত ইতাৰ্থে ষোড়ায়িতি চ সম্মতম্।

বয়সোহত্ত ষড় দত্তঃ (দ) স্ত্রীসংজ্ঞায়াঞ্চ দৃততে।

থণ্ডা দন্তাঃ প্রিয়া ষক্তাঃ সা বৈ থণ্ডদতী স্মৃতা। (ধ)

বাগ্রান্তগুছগুলাহি-বৃষবরাহম্যিকাং।

শিধরারোপক্তাবেজ্যঃ কুট্যলাগ্রদতীতি বা।

আরোকঃ থলু নিদিষ্টঃ স্তাদারোক্দতীতি বা।

কিং লু চৈতেন যত্ত্বন শকা এবেদ্শা অমী। (ন)

⁽ থ) বয়স গম্যমান হইলে স্থ এবং সংখ্যাবাচকের পরস্থিত দন্তশন্ধ-হানে নিত্য দন্ত, আদেশ হয়। যথা—শোভনা দন্তা অশু—স্থদন্। শোভনা দন্তা অশ্যাঃ—স্থদতী। এবং দ্বৌ দন্তৌ অশু—দিদন্, দ্বৌ দন্তৌ অশ্যাঃ—দ্বিদতী ইত্যাদি।

⁽দ) বয়দ গমামান হইলে ষট্ শব্দের পরস্থিত দন্ত শব্দ নিতাই ষোড়ন্ ইত্যাকার হয়। যথা—যড়্ দন্তা অশু— ষোড়ন্। অশুত্র ষড়্দন্ত:। বিদন্ত: করী। স্থদন্তো নট:।

⁽ধ) সংজ্ঞা ব্ঝাইলে জীলিদে দন্তশ্ব স্থানে দন্ত আদেশ হয়।
নিধা—খণ্ডা দন্তা ঘন্তা: সা—খণ্ডদতী। এবং আয়োদতী, ফালদতী।
নিজ্ঞায়া অন্তল্জ—সমদন্তী।

⁽ন) অগ্র, অন্ত, গুল, গুল, অহি, বৃষ, বরাহ, মৃষিক, শিথর, আরোপ, চাব এবং আরোক শব্দের পরস্থিত দন্তশন্ত্মানে বিকল্পে দন্ত, আনেশ । মৃথা—কুট্মলাগ্রদন্, কুটালাগ্রদন্তঃ। কুটালাগ্রদতী, কুটালাগ্রদন্তী ইত্যাদি।

_{স্টীক}-ষ্টুকারক-কারিকা।

ना

शर्म

কৰ্

বহু

প্র

शंप

HC.

या

CE'

গ্ৰা

প্রথ

95

বি

ভগ্নং মারবলং যেন নির্জ্জিতং ভব-পঞ্জরম্।
নির্বাণ-পদমারূচং তং বুদ্ধং প্রণমাম্যহম্ ॥ (ক)
যট্কারকাণি সম্বন্ধ উক্তাকুক্ততয়া দ্বিধা।
বিভক্তিশ্চেতি নিশ্চেয়মবশ্যং যোগমিচ্ছতা॥ ১

'যুবভি: জায়া যদ্য'ইত্যাদি বাক্যে—যুবজানি:। শোভনং হৃদয়ং যশু,
দঃ—হৃহৎ মিত্রম্। ছৃষ্টং হৃদয়ং যশু, দঃ—ছৃহৎ অমিত্রং, "হৃহদুহৃদৌ
মিত্রামিত্রয়োঁ" ইতি নিপাতঃ। অশুত্র স্থান্যঃ, ছুহ্বদয়ঃ,। উলিথিত
দমন্ত স্থলেই বছত্রীহি দমাদ বুঝিতে হইবে। দমাদান্তস্থল ক্ষেক্টীমাত্র
প্রদর্শিত হইল, বিন্তর স্থ ব্যাকরণে অনুসন্দেয়; অশ্রাশ্র দমাদান্ত বিধান অনেক আছে।

টীকা। (ক) গ্রন্থারন্তে বিম্নবিনাশায় ক্রতমিষ্টদেবতানমস্থার্মাদৌ গ্রন্থানি গ্রন্থানি । বেন মারবলং কামদেববীর্যাং, ভগ্নং ভন্মীকৃতং তং বৃদ্ধং (অহং) প্রণমামি। কিন্তুতম্ ? ভবপঞ্জরং নির্জ্জিতং পরাভূতং, নির্ব্বাণপদং মোক্ষপদম্ আরুঢ়ং প্রাপ্তম্ । উভয়্ল যেনেতি পূর্ব্বেণ অয়য়ঃ।

১। ইহায়ং কর্তা বালব্যুৎপত্তয়ে সংক্ষেপতঃ সম্বন্ধপ্রমোজনাভিধানং প্রস্তবন্ধাহ—ষট্কারকাণীতি। অস্তায়মর্থঃ,—যোগং সম্বন্ধমিচ্ছতা ছাত্রেণাবশুমেব ইদং নিশ্চেয়ং নির্মিতো জ্ঞাতব্যমিতি যাবং।
কতমত্তরাহ—ষট্কারকাণি, সম্বন্ধশ্চ উক্তান্মক্তত্মা বিধা; বিভক্তিশ্চেতি।
অয়মভিগ্রায়ঃ,—ষট্কারকাণি কর্ত্-কর্ম-কর্ণ-সম্প্রদানাপাদানাধিক্রণ-

Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangotri নামানি প্রত্যেকমুক্তাহক্ততয়া হিধা হিপ্রকারাণি বর্ত্তন্তে। তথা সম্বন্ধোইপি ছিপ্রকারো বর্ত্ততে। তদ্বথা—উক্তক্তা, অনুক্তক্তা; উক্তকশ্ব, অনুক্তকর্ম; উক্তকরণম্, অনুক্তকরণম্; উক্তসম্প্রদানম্, অনুক্ত-সম্প্রদানম্; উক্তাপাদানম্, অহুক্তাপাদানম্; উক্তাধিকরণম্, অহুক্তাধি-করণম; উক্তনম্বনোংলুক্তসম্বন্ধশ্চেতি। উক্তকর্তা যথা— স্বয়তি বৃদ্ধ-ধর্ম:, জলতি হতাশন: , কর্ত্তরি পরশৈপদম্। এধতে বিধু:, কর্ত্ত্যা-গুনেপদম। কটং করোতি দেবদত্ত:, কুরুতে বা 'ইন্ঞ্যজাদেকভর'মিতি কর্ত্তযুগ্ভয়পদম; কারকো দেবদত্তঃ, 'কর্ত্তরি ক্বত'' ইতি বচনাৎ 'বুণতচা' বিতি কর্ত্তরি বুণ । বৈয়াকরণঃ পুরুষঃ ঔপনিষদিকো বিপ্রঃ, কৃতঃ প্রণামো যেন, স:-কুতপ্রণামো জন ইতি, 'স্থাতাং যদি পদে ছে তু 'ইতি বহুত্রীহিসমাসঃ কর্তুরি। এবামাদিষু আখ্যাতকুত্তদ্বিতপ্রত্যয়ানাং সমাস্ত চ কর্ত্তরি বিহিত্ত্বাহুক্তকর্ত্তেতাচ্যতে। উক্তকর্ত্তরি প্রথমা ইতি ন্যায়াৎ প্রথমাবিভক্তির্লিলার্থবচন ইতি প্রথমা। অনুক্তকর্তা যথা—জীয়তে বৃদ্ধ-ধর্মেণ, জন্যতে হুতাশনেন,এধ্যতে বিধুনা, ক্রিয়তে দেবদত্তেন; আত্মনে-পদানি ভাবকর্মণোরিত্যনেন ভাবে কর্মণি চ আত্মনেপদ্ম। কৃতং দেব-দত্তেন, ভাবকর্মণোঃ কুত্যক্তথনর্থা ইত্যত্র ভাবে নিষ্ঠেতি ক্তপ্রত্যয়:। এব-মাদিষু প্রত্যয়োন কর্তুরি বিহিত ইত্যমুক্তকর্ত্তা উচ্যতে, অমুক্তত্বাৎ কর্তুরি চেতি কর্ত্তরি তৃতীয়া। উক্তকর্ম যথা—ওদন: পচ্যতে, কট: ক্রিয়তে, থামে। গম্যতে; আত্মনেপদানি ভাবকর্মণোরিতি কর্মণ্যাত্মনেপদম্। ছুজ ওদন:, 'ভাবকর্মণোঃ কুত্যক্তথনর্থা' ইত্যত্র কর্মনি নিষ্ঠেতি জ-প্রত্যয়:। শাতিকঃ পট:, আরুঢ়বানরো বৃক্ষ:, এবমাদিষাখ্যাতকুত্তদ্বিত-পতায়ানাং সমাসভা চ কর্মণি বিহিতবাহুজকর্ম ইত্যুচাতে, উক্তকর্মণ প্রথমেবেতি ন্যায়াৎ প্রথমা। অত্যক্তকশ্ম যথা-কটং করোতি, ওদনং পচতি, গ্রামং গচ্ছতি, ওদনং ভুক্তবান্; এবমাদিষু প্রত্যয়ো ন কর্মণি বিহিত ইত্যমুক্তং কর্ম, অমুক্তত্বাং কর্মণি বিতীয়া। উক্তকরণং

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

T,

नो

0

9

18

কু-

5:

ĸ,

1-

-

1

যথা—স্নানীয়ং চূর্ণম্; অয়মর্থঃ,—স্নায়তে অনেন চূর্ণেনেতি স্নানীয়ং চূর্ণম্। 'কুত্যযুটোহন্ত্রাপি চে'তি বচনাৎ করণে অনীয়: এবং ছেদনোহিদ্য, পমনং মনঃ; এবমাদিষু প্রভায়ানাং করণে বিহিতভাত্তকরণিমিত্যচাতে, উক্তবাৎ করণে প্রথমা। অহুক্তকরণং যথা— স্নাতি চূর্ণেন, অসিনা ছিনতি, মনসা গচ্ছতি, অথবা সায়তে চুর্ণেন, অসিনা ছিল্লতে, মনসা গমাতে; এবমাদিষু করণে বিহিতো ন প্রতায় ইতাত্তকরণমূচাতে, অত্তত্ত্বাং করণে তৃতীয়া। উক্তসম্প্রদানং যথা—দানীয়ো বান্ধাং, অরুমর্থং,— দীয়তে যশৈ দ দানীয়ো বাহ্মণঃ, 'ক্বত্যযুটোংগুত্রাপি চে'তি বচনাং मल्लामात व्यनीयः, এবং मिक्किगीया बाक्षिणः, मिक्किणा मीयर् यरेषा म দক্ষিণীয়ো ব্রাহ্মণঃ। ঈয়স্ক হিত ইতি যোগবিভাগাৎ সম্প্রদানে ঈয়ঃ, এবং দত্তভোজনোহতিথিঃ, দত্তং ভোজনং যথৈ অতিথয়ে স দত্তভোজনো-२िणिशः। এবমাদিষ জ্বাৎ সম্প্রদানে প্রথমা। অন্তলসম্প্রদানং যথা— দদাতি ত্রাহ্মণার অথবা দীয়তে ত্রাহ্মণায়; এবমাদিষু প্রত্যার। न मख्यतात विहिच हेजा ब्रक्कमख्यमान म्हारच, व्यक्कार मख्यतात हज्यी। উক্তাপাদানং যথা— ভীমো রাক্ষদঃ, বিভেত্যস্মাদিতি ভীমঃ ভীমাদয়োই-পাদান ইতি ভীভীষিভ্যামক্ ঔণাদিক:। এবম্ৎসন্নজনপদো দেশ:। ममारमारुवाभानात्न, এवमानियुक्कचार व्यभानात्न खथमा। व्यक्ताभानातः ষ্পা—বিভেতি রাক্ষ্সাৎ; নাত্রাপাদানে প্রত্যয়ো বিহিত ইত্যস্কুত্বাৎ অপাদানে পঞ্মী। উক্তাধিকরণং ষ্থা—আসনং পীঠম্; অয়ম্থ:-অভিতে যশ্মিন্ পীঠে তদাসনং পীঠম্ 'করণাধিকরণয়োশ্চে'তি অধিকরণে यूरेপ্রতায়:। এবং বটকিনী পৌর্ণমাসী, প্রায়েণ বটকা ভূজাতে অতাং পৌর্ণমাশ্রাম্ ইত্যর্থে তদ্ধিতো রুঢ়িত ইতীন্। এবং মন্তবহুমাতঙ্গংবনম্; অত্রাধিকরণে সমাসঃ এবমাদিব ক্তত্বাৎ অধিকরণে প্রথমা। অহুকাধি-করণং যথা—আত্তে পীঠে, আশুতে পীঠে, এবমাদিতং পীঠে; তথা গলায়াং ঘোষ:, ভিলেষ্ তৈলং, দিবি দেবা:, অঙ্গল্যগ্রে করিশতম্, এবমা-

যো যত্ৰ প্ৰত্যয়ো জাতঃ সমাসো যত্ৰ বা ভবেৎ। স এনং বক্তি যুঞ্জানস্তস্থ লিঙ্গেন সংখ্যয়া। ২

म्। नः

ত, ভ

te

13

म

•

দিষধিকরণে ন প্রতায়ে বিহিত ইতায়্রজ্বাৎ অধিকরণে দপ্তমী। উজ্সম্বন্ধা যথা—গোমান্ দেবদতঃ; অয়মর্থঃ,—গাবো বিহুত্তে অস্তেতি গোমান্ দেবদতঃ, তদস্যাজীতি মন্তন্তীনিতি সম্বন্ধে মন্তপ্রতায়ঃ। চিত্রগুক্রেদতঃ, সমাদোহত্র সম্বন্ধে, এবমাদিষ্ ক্রপাৎ সম্বন্ধে প্রথমা। অর্জসম্বন্ধে
যথা—গাবো বিহুত্তে দেবদত্তক্র, অথবা গোভির্বিহৃত্তে দেবদত্তক্র, এবং
রাজ্ঞঃ পুরুষঃ, বৃক্ষস্ত শাথা, ঘটস্ত রূপম্, এবমাদিষ স্ক্রত্তাৎ সম্বন্ধে ষষ্ঠী।
উক্তান্থক্তয়োর্দিঙ্মাত্রমিদং দর্শিতম্,প্রপঞ্চন্ধ ষ্থাস্থানম্ভরত্ত দর্শিরিষ্যামঃ।

২। নন্ত কো নাম ষট্কারকং সম্বন্ধং বা বক্তি, যেনোক্তমিতি ভণ্যতে ইত্যাহ—যো যত্র ইত্যাদি। অয়মর্থঃ,—যং প্রতায়ন্ত দিতত্তাদিঃ কুছা যত্রার্থে কারকে সম্বন্ধে বা জাতঃ সমাদো যত্র বা ভবেৎ স প্রত্যায়ঃ, স চ সমাস এনং বক্তি, যত্রার্থে বিহিত্ত্তমর্থং বক্তি। কিন্তৃতো ভবন্ বক্তি, তত্রাহ—যুঞ্জান ইতি, যুঞ্জানঃ অভিসম্বধ্যমানত্তত্ত উক্তত্ত লিঙ্গেল প্রাম্বা—যো য়মর্থম্ অভিদ্বধাতি, স তত্ত্বৈব লিঙ্গমেথাভ্যাং যুক্তো ভবতি। তদ্যথা—কারিকা স্ত্রী, কারকঃ পুক্রমঃ, কারকং কুলং; বৈয়াকরণী স্ত্রী, বৈয়াকরণঃ পুক্রমঃ, বৈয়াকরণং কুলম্। এবং ক্রতপ্রণামা স্ত্রী, কতপ্রণামঃ পুক্রমঃ, কারকাং কুলম্। এবং ক্রতপ্রণামা স্ত্রী, কতপ্রণামঃ পুক্রমঃ, কারকাঃ ক্রিয়ঃ, কারকে পুক্রমঃ, কারকাঃ পুক্রমঃ, কারকে কুলে, কারকাঃ দ্বিয়ঃ, কারকে পুক্রমেণ, কারকাঃ পুক্রমাঃ, কারকে কুলে, কারকাণি কুলানি, এবমত্তে আধ্যাতক্তত্তিত্বত-শ্রমানানাং লিঞ্বসংখ্যানিয়্রমা ভ্রাতব্যাঃ। আধ্যাতিকপ্রত্যমন্ত্র ন লিঙ্গং গ্রহীতৃমুর্হতি। স্বভাবাং উক্তন্ত সংখ্যামাত্রমেবোপাদত্তে, তদ্যথা—ওদনং

পচতি স্পকার:, ওদনং পচত: স্পকারো, ওদনং পচত্তি স্পকারা: ওদনং পচতি ত্রী, ওদনং পচতঃ ত্রিয়ৌ, ওদনং পচন্তি ত্রিয়ঃ; ওদনং পচ্তি কুলং, ওদনং পচতঃ কুলে, ওদনং পচন্তি কুলানি। এবং কটঃ জিয়তে, কটৌ ক্রিয়েতে, কটাঃ ক্রিয়ন্তে দেবদত্তেনেতি, এবং সর্বত্ত। স্বং যুবাং যুয়মিত্যেভির্যোগে পুন্যু ঘদি মধ্যম ইতি মধ্যমঃ পুরুষো ভবতি; তদ্বধা — তং পচসি, যুবাং পচথং, যুষং পচথ। এবং হত্তদে তং দেবদতেন; यूवाः राज्यथ तनवनायान, यूवः राज्यक्ष तनवनायान, अवः मर्काण। অহম্ আবাং বয়মিত্যেভির্যোগে পুনরস্মত্যত্তমঃ ইতি উত্তমঃ পুরুষো ভবতি, তদ্यशा- जरः ज्वामि, जावाः ज्वावः, वयः ज्वामः ; धवः जरः इत्त (मनमाखन, जानाः र्णानाः एकानाः (मनमाखन, न्याः र्णामाः (मनमाखन, जनः সর্বত। অন্তত্ত্বায়ি প্রযুজামানেহিপি প্রথম ইতি প্রথমঃ পুরুষো ভবতি, তদ্যথা—দেবদত্তো ভবতি, দেবদত্তো ভবতঃ, দেবদত্তা ভবস্তি; অভিভৰতি মাং দেবদত্তঃ, জানাতি মাং দেবদত্তঃ; এবং পচ্যতে ওদনস্থমা, ক্রিয়তে কটো ময়া, অয়া ভ্রতে, ময়া স্থীয়তে, এবং সর্বত্ত লিঙ্গ লংখ্যা-নিয়মো জ্ঞাতব্য:। উক্তন্ত প্রথমকারিকায়ামুক্তমেব, তচ্চ দিঙ্মাত্রম্, অন্তরাপি আখ্যাতক্বতি কিতেকক্তম্ অতএব যুক্তিতঃ প্রতিপত্তব্যম্। ষদা তু ভাবে বিহিতঃ প্রত্যয়ন্তদা ন কিঞ্চিদপি উক্তং ভবতি। ভাবে বিহিত আখ্যাতপ্রত্যয়স্ত অকর্মকধাতৃভ্যে। ভবতি, ধাতুভ্যোহপি ভবতি যদি কর্ম ন বিবক্ষ্যতে; প্রয়োগো যথা—ভূমতে দেবদত্তেন, স্থীয়তে আবাভ্যাম্, পচ্যতে যুমাভিং, গম্যতে দেবদত্তেন, ইত্যাদি। ভাবঃ সত্তা, স চাসংখ্যঃ, তস্মিন্নভিধেন্নে ঔৎস্গিকমেক-বচনমেব প্রথমপুক্ষস্থ ভবতি। ভাববিহিতক্ৎপ্রত্যয়ানান্ত প্রয়োগে কর্মকারকমপি বিবক্ষণীয়ম, ভাবেহপি ধাত্র্যক্কতা ব্যাপ্তিরস্তীতি ভাষাং তদ্যধা—গ্রামং গন্তম্ভতঃ, ওদনং ভুক্তা বজতি, এবমন্তবাপূাহনীয়ম্। নতু যতা প্রধানক্রিয়াভিসম্বন্ধাৎ উক্তত্ত্বম্, অনুকৃত্ত্বঞ্চ গৌণক্রিয়াভিসম্বন্ধাৎ,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

লিঙ্গসংখ্যাভিযোগশ্চ প্রায়ো ভবতি দশিতঃ।
বেদাঃ প্রমাণমিত্যাদি প্রয়োগো যেন সম্মতঃ॥ ৩
মুখ্যং কর্ত্তারমাচন্টে প্রত্যয়োহনেককর্তৃকে।
মুখ্যঃ প্রযোজকো জ্ঞেয়ঃ প্রয়ুক্তো নাপরের্যদি॥ ৪

12

11

তাদৃশং সকলমেবাক্তং ভবতীতি নিশ্চিতম্; তেন ওদনঃ পক্ত্বা ভুজাতে ইত্যুক্তবাদোদনে কর্মণি প্রথমৈব। অন্যথাস্কুল্বারেণ বিতীয়াপি স্থাং? সত্যং প্রধানাস্থায়িনো জনব্যবহারাশ্চ ভবন্তি। তত্ম ওদনক্ত কর্মণঃ প্রাধান্তং ভুজিক্রিয়ানিবন্ধনং পচনক্রিয়ানিন্ধনম্ অপ্রাধান্তমপি গৌণ-শক্তিরভিহিতবং প্রকাশতে। ততঃ কুতোহনভিহিতানাং বিতীয়া-দীনামবকাশঃ? তত্ত্তং—প্রধানশক্তাভিধানে গৌণশক্তিরভিহিতবং প্রকাশতে ইতি সাধ্যত্বাং ত্যান্তন্তক্রিয়ায়ঃ প্রাধান্তং গৌণত্বক্ষ ক্রদন্তক্রিয়ায়া গুলিখেন ক্রাণাবিদি তায়ক্ত ভ্রাত্বাহ উল্লেখ্য উল্লেখ্য কর্ত্বির প্রথমৈব ভবতি, ন ক্রাচিদপান্তক্রবারেণ তৃতীয়া। এবমন্ত্রাপি। তথ্যাত্তক্রপ্রভাবের স্বিমন্ত্রাপি। তথ্যাত্তক্রপ্রভাবের সিদ্ধান্তি,—প্রমীয়তে যেন তথ্
প্রমাণ্যিতি ক্রণ্ণাধিক্রব্যায়াংক্তি হাট যেনান্তি,—প্রমীয়তে যেন তথ্

ও। লিশ্বসংখ্যোতি স্থবোধম্। প্রমাণমিতি,—প্রমীয়তে যেন তৎ প্রমাণমিতি করণাধিকরণয়োশ্চেতি যুট্; যথা—বেদা: প্রমাণম্, স্মৃতয়ঃ প্রমাণমিতি।

৪। মৃখ্যমিত্যাদি। অয়মর্থ:,—অনেককর্ত্বে ধাতৌ কর্ত্তরি বিহিত: প্রত্যয়ো মৃখ্যমেব কর্ত্তারমাচষ্টে। মৃখ্য: প্রয়োজকো জ্ঞেরতদৈয়ব প্রয়ন্তব্বাৎ, ন চেদসৌ প্রয়োজকো গুপরৈ: প্রয়ুক্তো ভবেৎ। প্রয়ুক্তত্বে হি অভ এব প্রয়ন্তবানিতি তদৈয়ব প্রাধাভাম; তদ্বথা—দেবদত্ত ওদনং পচতি, কন্চিদভাত্তং প্রয়ুঙ্জে ইতি বাক্যে ধাতোক হেতাবিতীন্ কর্ত্তরি পরদৈমপদম; প্রয়োগো যথা—পাচয়তি ওদনং দেবদত্তেন যক্তক্তঃ।

ত্বহাদেগোঁ পকং কর্ম নীবহাদেঃ প্রধানকম্। ইনত্তে কর্তৃকদৈর্মব অন্যদ্বা বক্তি কর্মজঃ॥ ৫

উজ্বাৎ যজ্ঞদত্তে কর্তুরি প্রথমা, অন্তুজ্বাৎ দেবদত্তে কর্তুরি "কর্তুরি চেডি" তৃতীয়েব। বদা তু দেবদত্তস্থ প্রযোজকো যজ্ঞদত্তো বিষ্ণুমিত্তেণ প্রযুক্ত: সন্ ওদনং পাচয়তি, তদা তথৈব ইনস্তাদপি পুনরিন্, প্রয়োগো ষথা—পাচয়তি ওদনং দেবদন্তেন যজ্ঞদত্তেন বিষ্ণুমিত্ত:। অপ্রধানত্বাৎ উক্তে কর্তুরি বিষ্ণুমিত্তে প্রথমা, অন্তুক্তে কর্তুরি সর্ব্বত্ত তৃতীয়া, ইমন্তু সার্ব্বতিকী রীতি:।

ে। তৃহাদেরিত্যাদি। অস্তায়মর্থ:,—তৃহাদে: কর্মণি জাত: প্রতায়ো গৌণং কর্ম বক্তি ন প্রধানমভিধানাৎ। তত্র ত্হাদয়:,—"তৃহি-যাচি-ক্লধি-প্রচ্ছি-ভিক্ষি-চিঞাম্প্যোগনিমিত্তমপূর্ব্ববিধৌ। গুণেন চ যথ সচতে তদকীর্তিতমাচরিতং কবিনা।" অত চকারেণ জয়তিপ্রভৃতীনামপি গ্রহণম্; প্রয়োগো যথা—ত্ততে গৌ: পয়ো গোপালকেন, যাচ্যতে কম্বলং পৌরবো বটুনা, রুধ্যতে গৌর জং গোপাল-কেন, পৃচ্ছ্যতে ছাত্রঃ পন্থানং পথিকেন, ভিক্ষ্যতে গাং পৌরবো বিষেন, বুক্ষোহৰচীয়তে ফলানি লোকৈ:, উচ্যতে শিষ্যো ধর্মমুপাধ্যায়েন, শিষ্যো-২ন্নিষ্যতে শাল্তং পণ্ডিতেন, এবং গ্রাম: শতং জীয়তে ছাত্রেণ, গর্গাঃ শতং দণ্ডান্তে নৃপেণ, প্রার্থাতে গাং গৃহমেধী দিজেন, মথাতে শ্ব জল-নিধিরমৃতং বাস্থদেবেন; অত্যোগ্যুজামানং প্রঃপ্রভৃতিকং কশ্ম প্রধানম্। অতন্ত নিমিত মিহ গ্ৰাদিকং কৰ্ম অপ্ৰধানং গৌণভাৎ, কৰ্মণি বিহিতেন আত্মনেপদেন উক্তমিত্যুক্তে কর্মণি প্রথমা। অত্তাহকেবারেণ বিতীয়া। নীবহাদে: প্রধানকমিতি। নীবহাদে: কর্মণি জাত: প্রত্যয়: প্রধানং কর্ম বক্তীতি প্রত্যেকমভিদমন্ধ: ; প্রয়োগো যথা—নীয়তে ভারে৷ গ্রামং

গমনাহারবোধার্থশব্দার্থাকর্ম্মধাতুষু। অনিনন্তেযু যঃ কর্ত্তা স্থাদিনন্তেযু কর্ম্ম তৎ ॥ ৬

দেবদত্তেন, উহুতে ভারো গ্রামং বিষ্ণুমিত্রেণ এবং হ্রিয়তে কুন্তো ভারং দেবদত্তেন, অজা গ্রামমারুষ্ততে জনেন; অত্ত ভারাদেনীয়মানস্থ প্রধানস্থ কর্মণ: প্রধানতাৎ কর্মণি বিহিতেন প্রতায়েন ভারাদি: প্রধানং কর্মো-চাতে, ন গ্রামাদিকমিতি। ইনন্তে কর্ত্তকর্মেবাল্লবেতি। অয়মর্থ:,-অনিনত্তে ধাতৌ পূর্বাং কর্তা সন যঃ পশ্চাৎ কণ্ম ভবতি, স কর্মজঃ প্রত্যয়ঃ, তদেব কশ্ব বক্তি। অন্তদ্বা গ্রামাদিকং বক্তি। অয়মভিপ্রায়:,-শিষ্ট-প্রয়োগালুসারেণ ইনন্তে পর্যায়েণ কর্মোক্তং ভবতীতি টীকাকার:; যথা— গ্রামং গম্যতে দেবদতো যজ্ঞদত্তন, গ্রামো দেবদত্মিতি বা; ওদনং ভোজাতে দেবদত্তো যজ্ঞদত্তেন, ওদনো দেবদত্তমিতি বা; বোধ্যতে শিষ্যো ধর্মমুপাধ্যায়েন, ধর্মঃ শিষ্যমিতি বা; মাণবকোহধ্যাপ্যতে বেদ-মুপাধ্যায়েন, বেদো মাণবকমিতি বা; মাসমাশুতে দেবদভো ষ্ঞাদভেন, মাসো দেবদত্তমিতি বা; অকশ্মকাণাং প্রয়োগে "কালাধ্বভাবদেশানাং কর্মসংজ্ঞা সিদৈবেতি" অতো মাস্ত কর্মত্বম। কালাদিভির্যোগে অকর্ম-কাণাম অনিনি যঃ কর্তা স ইনি সতি ব্যাপত্ববিক্ষায়াং কর্মসংজ্ঞো ভবতি। নত্ন যদি পর্যায়োহত্র সম্মতন্তৎ কথমিনন্তে কর্ত্তকর্মেবেত্যে-বকার: ? সত্যং গত্যর্থাদে: কর্তৃকশৈবেতি নিয়মশ্য কেষাঞ্চিদভিমতত্বাৎ প্রায়শ্চনমেব পক্ষমাশ্রিত্য প্রয়োগ: কর্তব্য:, অপরস্ত কর্মতোপপত্তী নিয়ম: কুত:।

৬। গমনাহারেত্যাদি। সর্ব্বানিনি যা কন্তা তস্য ইনি সতি ব্যাপ্যবিবক্ষা কর্মতোপপত্তো নিয়মা কৃতা। গত্যর্থানাং প্রয়োগো যথা—গচ্ছতি গ্রামাং দেবদত্তা, তমন্তা প্রযুক্ত ; গ্রামাং গময়তি দেবদত্তা যজ্জদত্তা। সম্পদং প্রাপ্যেতি চৈত্রা, সম্পদং প্রাপয়তি চৈত্রা নূপা।

ন নীথাতাদিশব্দায়ক্রন্দহ্বাঃ কর্তৃকর্মকাঃ। তথা ভক্ষিরহিংসায়াং বহোহসার্থিকর্তৃকঃ॥ ৭

পত্যর্থানাং গ্রহণে প্রাপ্ত্যর্থানাং গ্রহণমিতি। আহারার্থানাং যথা—ওদনং ভুঙ্জে দেবদত্তঃ, তম্মঃ প্রযুঙ্জে, ভোজয়তি ওদনং দেবদত্তমীশবঃ: পৃষ্ণ পিবতি চাতক:, পৃষ্ণ পায়ুমতি চাতকং জলদ:। বোধার্থানাং যথা---ব্ধাতে ধর্মং শিষ্যঃ, বোধয়তি ধর্মং শিষ্যমূপাধ্যায়ঃ ; পশাতি চৈত্রং বৈত্রঃ, দর্শয়তি চৈত্রং মৈত্রং দেবদত্তঃ। শব্দার্থানাং যথা-পঠতি শাস্ত্রং শিষ্যঃ, পাঠমুতি শান্তঃ শিষ্যমূপাধ্যায়ঃ; আভাৰতে মিত্রং দেবদত্তঃ, আভাষয়তি মিত্রং দেবদত্তং যজ্জদত্তঃ। অকর্মকাণাং যথা—উৎপগতে ঘটঃ, উৎপাদয়তি ঘটং কুস্তকারঃ এবং মাসমাত্তে দেবদত্তঃ, মাসমাসয়তি দেবদত্তং বজ্ঞদত্তঃ; ক্রোশমান্তে ব্রীহিং দেবদত্তঃ, ওদনপাকং স্বপিতি দেবদত্তঃ, ওদনপাকং স্বাপয়তি দেবদত্তং যুজ্জদত্তঃ; কুরন্ স্বপিতি দেবদত্তঃ, কুরন্ স্বাপয়তি দেবদত্তং যজ্ঞদত্তঃ। এবং সর্বত পতার্থাদীনাং কর্মত্বং প্রতিপত্তবাম্। যদা তু গত্যুর্থাদীনাম্ ইনন্তানাম্ অপরহেত্বিবক্ষায়াং পুনরিন্, তদা গ্রামং গময়তি দেবদত্তং যজ্জদত্তেন বিষ্ণুমিত্র ইত্যাদিকমুলেয়ম্। কর্মণি তু গ্রামং গম্যতে দেবদভো যক্তদত্তেন বিষ্ণুনিত্রেণ ইত্যাদিকমুরেয়ম্। অত হি গমিন্-প্রভৃতীনাং ধাতৃনাম্ ইনভানাম্ অপরহেতৃবিবক্ষায়াম্ অথাভরবৃত্তিতয়া গমনাদেরথঁ গুণীভূতত্বাং কুতো যজ্ঞদত্তাদীনাং কর্মত্বস্ ? অতো গমিন্প্রভূতীনাং গত্যর্থলক্ষণঃ কর্ত্তরি জ্বপ্রতায়োন ভবতি। যভেবং গ্রামায় গময়তি দেবদত্তং যজ্ঞদত্ত ইতি বাক্যে গত্যৰ্থলক্ষণা চতুৰ্থী কৰ্মণি ন স্থাৎ, গত্যৰ্থস্থ গুণীভূতত্বাৎ গৌণম্প্যয়োমুপো কার্য্যসম্প্রতায় ইতি ন্তায়াৎ? সভাং গ্রামায় গচ্ছতি দেবদত্ততঃ যজ্ঞদত্তঃ প্রযুঙ্কে ইতি প্রথমত এব গ্রামা-চতুর্থী পশ্চাৎ ইন্ ইতি সর্ক্রমনব্ছমিতি।

শক্রপ্-কর্তুক্মঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

হুকোরপি তথা কর্ত্তা ইনস্তে কর্ম্ম বা ভবেৎ। অভিবাদিদৃশোরেবমাত্মনে বিষয়ে পরম্॥ ৮

৭। ন নীধাদীত্যাদি। নীঞ্খাদ অদি শব্ধায় ক্রন্দ হ্লেঞ্ —এতে ধাতবঃ কর্তৃকর্মকা ন ভবন্তি। কর্ত্তা কর্ম যেষাং তে—কর্তৃকর্মকা:। এষা-মনিনি যঃ কর্ত্তা স ইনি সতি কর্মসংজ্ঞোন ভবতীতি যাবং। তত্ত্ব প্রযোগো যথা—নামমতি ভারং গ্রামং দেবদত্তেন যজ্ঞদত্তঃ, গত্যর্থছাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ। থাদয়তি চুগ্নং পোতেন জননী, আদয়তি বা। আহারার্থবাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ। শবং করোতি ইতার্থে —শ্রুষার্থাতঃ, শ্রুষায়ত কীচকৈমারুতঃ, শ্রুষ্ত্রাৎ কর্মতে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ, ক্রন্ময়তি বালেন চুর্জ্জনঃ, অকর্মত্বাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধ:। দেবদত্তমাহ্বায়য়তি যজ্ঞদত্তেন বিষ্ণুমিত্র:, শব্দার্থতাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ। তথা ভক্ষিরহিংসায়াং ইতি কর্ত্তকর্মকো ন ভবতীতি मद्यः। প্রয়োগো যথা—ভক্ষয়তি পিণ্ডং দেবদভেন বিষ্ণুমিত্রঃ, হিংসায়াং প্রমানায়াং পুনর্বিধিরেব, যথা—ভক্ষতি পতকান পঞ্চিণং পোত:। এবং ভক্ষয়তি শশুং বলীবদান বাহিক:। যশু তচ্ছশুং তদ্ভক্ষণেন পীড়িতো ভবতি স:, ইতি হিংসা গম্যতে। বহোহসারথিকর্ত্ব ইতি, অত্রাপি কর্তৃকর্মকো ন ভবতীতি সম্বন্ধ:। ন বিছতে সার্থি: কর্ত্তা যশু সো২সার্থিকর্ত্তক: অনিমন্ত কর্ত্তক ইত্যর্থ: ; প্রয়োগো ষ্থা —বাহম্বতি ভারং গ্রামং ভৃত্যেন দেবদত্তঃ, সার্থিকর্ভৃকশ্য পুনর্বিধিরেব, যথা—

৮। ক্রক্রোরিত্যাদি। অস্থায়মর্থ:,—ক্রক্রোরপি ধান্বোরনিনি যা কর্ত্তা স ইতি সতি কর্ম বা ভবেৎ, তথেতি ব্যাপ্যত্ববিক্ষয়েত্যর্থ:। ক্ষঞ্দুশোর্গতিবোধার্থতয়া কর্মন্তে প্রাপ্তে বিভাষা, প্রয়োগো যথা— হারয়তি ভারং গ্রামং দেবদত্তং যক্তদত্তঃ, দেবদত্তেন ইতি বা; কারমতি

ন নীথাতাদিশব্দায়ক্রন্দহ্বাঃ কর্তৃকর্মকাঃ। তথা ভক্ষিরহিংসায়াং বহোহসার্থিকর্তৃকঃ॥ ৭

গত্যর্থানাং গ্রহণে প্রাপ্ত্যর্থানাং গ্রহণমিতি। আহারার্থানাং যথা—ওদনং ভূঙ জে দেবদত্তঃ, তম্মুঃ প্রযুঙ্জে, ভোজয়তি ওদনং দেবদত্তমীশরঃ: পুয়ঃ পিবতি চাতক:, পুয়ঃ পায়ুমতি চাতকং জলদ:। বোধার্থানাং যথা---ব্ধ্যতে ধর্মং শিষ্যঃ, বোধয়তি ধর্মং শিষ্যমূপাধ্যায়ঃ ; পশুতি চৈত্রং বৈত্রঃ, দর্শয়তি চৈত্রং সৈত্রং দেবদত্তঃ। শব্দার্থানাং যথা-পঠতি শাস্ত্রং শিষ্যঃ, পাঠমুতি শান্ত্রং শিষ্যমূপাধ্যায়ঃ; আভাবতে মিত্রং দেবদত্তঃ, আভাষয়তি মিত্রং দেবদত্তং যজ্ঞদত্তঃ। অকর্মকাণাং যথা—উৎপদ্মতে ঘটঃ, উৎপাদয়তি ঘটং কুম্ভকারঃ এবং মাসমাত্তে দেবদত্তঃ, মাসমাসয়তি দেবদত্তং বজ্ঞদত্তঃ; ক্রোশমান্তে ব্রীহিং দেবদত্তঃ, ওদনপাকং স্বপিতি দেবদত্তঃ, ওদনপাকং স্বাপয়তি দেবদত্তং যুজ্ঞদত্তঃ; কুরন্ স্বপিতি দেবদত্তঃ, কুরন্ স্বাপয়তি দেবদত্তং যজ্ঞদত্তঃ। এবং সর্বত পত্যর্থাদীনাং কর্মত্বং প্রতিপত্তব্যম্। যদা তু গত্যর্থাদীনাম্ ইনস্তানাম্ অপরহেত্বিবক্ষায়াং পুনরিন্, তদা গ্রামং গময়তি দেবদত্তং যজ্জদত্তেন বিফুমিত্র ইত্যাদিকম্নেয়ম্। কর্মণি তু গ্রামং গ্ন্যতে দেবদত্তো যক্তদত্তেন বিষ্ণুমিত্তেণ ইত্যাদিকমুরেয়ম্। অত হি গমিন্-প্রভৃতীনাং ধাতৃনাম্ ইনভানাম্ অপরহেতৃবিবক্ষায়াম্ অধাভরবৃতিতয়া গমনাদেরথঁ গুণীভূতত্বাং কুতো যজ্ঞদত্তাদীনাং কর্মত্বস্থ অতে৷ গমিন্প্রভূতীনাং গত্যর্থলক্ষণঃ কর্ত্তরি জ্বপ্রতায়োন ভবতি। যুগ্লেবং গ্রামায় গময়তি দেবদত্তং যজ্ঞদত্ত ইতি বাক্যে গত্যৰ্থলক্ষণা চতুৰ্থী কৰ্মণি ন স্থাৎ, গত্যৰ্থস্ গুণীভূততাং গৌণম্ধ্যয়েম্ধে কার্যদশ্রতায় ইতি ন্তায়াৎ? সভাং গ্রামায় গচ্ছতি দেবদত্ততঃ যজ্জদত্তঃ প্রযুঙ্কে ইতি প্রথমত এব গ্রামা-চতুর্থী পশ্চাৎ ইন্ ইতি সর্বামনবভামিতি।

শক্রপ-কর্তুক্মঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

হুকোরপি তথা কর্ত্তা ইনন্তে কর্ম্ম বা ভবেৎ। অভিবাদিদৃশোরেবমাত্মনে বিষয়ে পরম্॥ ৮

१। न नी था नी छा नि । नी ७० था न जिला म स्वाय कन स्व १० – ० एक ধাতবঃ কর্তৃকর্মকা ন ভবন্তি। কর্ত্তা কর্ম যেষাং তে—কর্তৃকর্মকা:। এষা-মনিনি যঃ কর্তা স ইনি সতি কর্মসংজ্ঞোন ভবতীতি যাবং। তত্ত্ব প্রয়োগো যথা—নাম্মতি ভারং গ্রামং দেবদত্তেন যজ্ঞদত্তঃ, গত্যর্থভাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধ:। থাদয়তি চুগ্ধং পোতেন জননী, আদয়তি বা। আহারার্থতাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ। শবং করোতি ইতার্থে —শন্ত্রার্থাতঃ, শন্তায়য়তি কীচকৈম্বিতঃ, শন্তার্থতাৎ কর্মতে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ, ক্রন্ময়তি বালেন চুর্জ্জনঃ, অকর্মত্বাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধ:। দেবদন্তমাহ্বায়য়তি যজ্ঞদত্তেন বিফুমিত্র:, শব্দার্থত্বাৎ কর্মত্বে প্রাপ্তে প্রতিষেধ:। তথা ভক্ষিরহিংসায়াং ইতি কর্ত্তকর্মকো ন ভবতীতি मयसः। প্রয়োগো যথা—ভক্ষয়তি পিতং দেবদভেন বিফুমিত্তঃ, হিংসায়াং প্রমানায়াং পুনর্বিধিরেব, যথা—ভক্ষতি পতলান পঞ্চিণং পোত:। এবং ভক্ষয়তি শশুং বলীবদান বাহিক:। যশু তচ্ছ শুং তদ্ভক্ষণেন পীড়িতো ভবতি দ:, ইতি হিংদা গম্যতে। বহোহদারথিকর্ত্তক ইতি, অতাপি কর্ত্তকর্মকো ন ভবতীতি সম্বন্ধ:। ন বিছতে সার্বাধ: কর্ত্তা যশ্ম সো২সার্থিকর্ত্তক: অনিয়ন্ত কর্ত্তক ইত্যর্থ: ; প্রয়োগো ষ্থা —বাহ্মতি ভারং গ্রামং ভৃত্যেন দেবদত্তঃ, সার্থিকর্ভকশু পুনর্বিধিরেব, যথা—

৮। স্বকোরিত্যাদি। অস্থায়মর্থ:,— স্বকোরপি ধাত্বোরনিনি ষঃ
কর্ত্তা স ইতি সতি কর্ম বা ভবেৎ, তথেতি ব্যাপ্যত্বিবক্ষয়েত্যর্থ:।
ক্ষঞ্ দৃশোর্গতিবোধার্থতয়া কর্মত্বে প্রাপ্তে বিভাষা, প্রয়োগো যথা—
হারমতি ভারং গ্রামং দেবদত্তং যজ্ঞদত্তঃ, দেবদত্তেন ইতি বা; কারমতি

উক্তাদন্যদনুক্তং স্থাচুক্তে স্থাৎ প্রথমৈব হি। অনুক্তে তু ভবন্ত্যকা দ্বিতীয়াতা যথাযথম্ ॥৯॥

Z

वि

T

इ

कछैश (मवनखः यद्धमखः, दनवनत्खन हेकि वा। अखिवानिनृत्नात्त्रत्वि, অত্র অভিবাদীতি বদের্ঘঞ্জাদিন, চৌরাদিকো বা বদিরিত্যেক, এবমভিবাদীতি রূপে স্থিতে পশ্চাৎ পুনর্হেতাবিন্, প্রয়োগো যথা—অভি-বাদয়তে গুরুং তনয়ং জনকঃ, তনয়েন ইতি বা; দর্শয়তে ভৃত্যমাত্মানং রাজা, ভৃত্ত্যেন ইতি বা; আত্মনেপদবিষয় এব অভিবাদিদৃশোরেবেতি নিষমাৎ পরবৈশ্বপদবিষয়ে তু ষথাপ্রাপ্তমেব। প্রয়োগো যথা---অভিবাদয়তি স্বামিনং ভৃত্যেন লোক ইতি, অত্র কর্ত্তরি তৃতীয়ৈব। চৈত্রং দর্শয়তি মৈত্রং বিষ্ণুমিত্রং, দৃশেক্রোধার্থতয়া কর্মসমেব, গত্যথা-দিভ্যো দৃশিপর্যান্তভ্যো ধাতুভ্যোহত্যেবামনিনি যঃ কর্ত্তা স ইনি সতি কর্ত্তৈব ভবতি, ন কর্ম্ম; তদ্যথা—পাচয়তি ওদনং দেবদত্তেন যজ্ঞদতঃ, দোহম্বতি গাং পয়ো গোপালকেন গৃহস্থ:, দাপয়তি দানং দেবদত্তেন বিষ্ণুমিত্র:, এবমন্তেহপি, পৃর্বিক্রৈব রীত্যা সর্বত হেতাবিন্।

৯। উক্তাদক্তকং দ্যাদিতি স্থবোধম্। উক্তান্ত্ক প্রতিপাদনার্থং বিভক্তীনামূপক্রমঃ। উক্তে স্যাৎ প্রথমেব হীতি। এবশব্দোহত্র অব-ধারণে, উক্তে কারকে সম্বন্ধে বা প্রথমৈব বিভক্তির্ভবতীতি প্রথমা বিভক্তি-লিঙ্গার্থবচন ইতি **ন্থা**য়াৎ। নান্থা দিতীয়াভা বিভক্তয় উক্তার্থবাৎ, অয়মভি-প্রায়:-কর্মত্বাতর্থপ্রতিপাদনায় বিতীয়াদয়ে। বিধীয়ন্তে। যত্র কর্মতাদি-প্রতিপাদনমলৈরের কৃতং, তত্র দিতীয়াদয়ো ন ভবস্তীতি; তদ্যথা— দেবদত্তো ভবতি, কট: ক্রিয়তে, স্নানীয়ং চূর্ণম্, দানীয়ো ব্রাহ্মণঃ, উৎসন্নজন-পদে। দেশ:, আসনং পীঠম্, গোমান্ দেবদত্তঃ, এবমক্তেইপামুসর্ভব্যাঃ। উক্তবিভক্তিং প্রতিপাতাত্বক্তবিভক্তিং সামান্তেন প্রতিপাদয়ন্ আহ,—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri কর্ত্ত্ সংজ্ঞে তৃতীয়া স্থাৎ দ্বিতীয়া কর্মকারকে। ত্যোরথ ভবেৎ ষষ্ঠী কৃতি নিষ্ঠাদিবর্জ্জিতে॥ ১০

ষহক্তে বিত্যাদি। অহুক্তে পুন: প্রথমাং বর্জ্বদ্বিত্বা অন্তা বিতীয়াদয়ো বথা-হথং ভবন্তি, যা বিভক্তিবিতীয়াদীনামন্ততমা যত্তার্থে বিহিতা, সা তত্ত্রবার্থে ভবতীতি যথাযথমিত্যক্ত পরিণতোহর্থঃ, অত আরভ্য যথাযথমিত্যনেন-স্চিতমিতি, অতোহকুক্তবিভক্তিনিয়মঃ প্রতিপালতে।

১০। কর্ত্তৃপংজ্ঞে তৃতীয়া স্থাদিতি। কর্তৃসংজ্ঞে কর্তৃকারকে নামি ততীয়া ভবেৎ, কর্ত্তরি চেতি বচনাৎ। यः প্রধানতয়া ক্রিয়াসিদ্ধৌ প্রযত্ত্ব-বান, যং ক্রিয়াং করোতি নিপ্পাদয়তি স কর্তৃসংজ্ঞো ভবতি; তদ্যথা---দেবদত্তঃ কাঠেঃ স্থাল্যামোদনং পচতি। অত হি দেবদত্তঃ কর্ত্তা, অতো দেবদত্তেন প্রয়োজিতঃ কাষ্ঠাদিঃ কারকদম্হো জলনাদিনিজব্যাপার-দারেণ ক্রিয়ামভিনির্বর্তয়তীতি। অতো দেবদত্ত এব প্রয়ত্ববানিতি স এবৈক: প্রধানতয়া কর্ত্তা, নাত্তৎ কাষ্ঠাদিকম্; এবং সর্বত্তি। স চ ৰিবিধ:,—স্বভদ্ৰো হেতু^{*}চ; তত্তোকপ্ৰকারো দেবদত্তাদি: স্বতম্ব:, 'য**়** করোতি স কর্ত্তে'ভানেন অস্ত কর্তৃসংজ্ঞা; যঃ পুনস্তমেব কর্ত্তারং थ्यूड्रिक म প্রযোজকো হেতুঃ, म চ ত্রিবিধঃ,—প্রেষকঃ, অধ্যেষকঃ, পায়কুলাভাগী চ। তত্র য: প্রেষতে প্রভূত্বেন নিযুগ্রন্তে, স প্রেষক:, **७**म्यथा - कात्रवृष्ठि कि: जृटकान (मरमख:, खळ हि (मरमख:, श्रामी कि-করণায় ভূত্যমাজ্ঞাপুর্ব্বকং নিযুদ্ধকে। যঃ পুনরধ্যেষতে সংকারপুর্ব্বকং নিষ্ড্জে, সোহধ্যেষক: কর্ত্তা, যথা—দেবদত্তো গুরুং ভোজয়তি। ष्य দেবদত্ত: কর্ত্তা সংকারপূর্বকং গুরুং ভোক্তং নিযুগুক্তে। যা পুন: প্রােষ্ঠান্ত কর্ত্ত: ক্রিয়াকরণায় আতুক্লামাত্তং ভমতে ন প্রেষতে নাপ্যধ্যেষতে, স আত্মকুল্যভাগী; ষ্থা—স্পুত্রো জনকং হর্ষয়তি। অত্র हि स्भूत्वा জनकन्त्र ट्र्सामयाञ्कूनामावः जलदाव जः नियुक्तन।

অচেতনস্ত প্রযোজকো ভবন্ আরুক্ল্যভাগী পরং ভবতি, ন প্রেষকো নাপ্যধ্যেষকঃ, অচেতনত্বেন প্রেষণাধ্যেষণে কর্ত্রমযোগ্যত্বাং; যথা-কারীবোহধ্যাপয়তি মাণবক্মিতাত্র কারীবো হি নির্বাত-প্রজলিতো বহিং শীতাদিকমপনয়ন্ অধ্যয়নাত্রক্লাং ভদ্ধয়েব তং নিযুঙ্জে, প্রযোজকশু 'কারয়তি যা দ হেতু'শেচতি হেতুসংজ্ঞা, তশু কর্ত্তু-সংজ্ঞা চ, এবম্প্রকার: কর্ত্তা যদি অনুক্তো ভবতি তদা ভূতীয়া; প্রয়োগো যথা—দেবদত্তেন ক্রিয়তে কটঃ, যজ্ঞদত্তেন কার্য্যতে ভৃত্যেন কটঃ, বিষ্ণু-মিত্রেণ ভোজ্যতে ওদনং গুরুঃ, কারীবেণ অধ্যাপ্যতে মাণবকো বেদম, এবং ত্বয়া কৃতং, ময়া ভূক্তম্, এবমক্তেহপি। দ্বিতীয়া কর্মকারক ইতি,— দ্বিতীয়া স্থাদিতি সম্বন্ধ: ; শেষাঃ কর্মকরণসম্প্রদানাপাদানস্বাম্যাছধিকরণে-ষিত্যাদিনা ষৎ ক্রিয়তে তৎ কর্ম ইতি ভায়াৎ। কর্ত্তঃ ক্রিয়য়া যৎ ক্রিয়তে ষদাপ্যতে, ষশ্ত কর্ত্তঃ ক্রিয়য়া ব্যাপ্তির্ভবতি তৎ কারকং কর্মসংজ্ঞং ভব-জীতি। তচ্চ ত্রিবিধং—নির্ব্বত্যম্, বিকার্য্যং প্রাপ্যঞ্চেত ; তত্ত্ব যন্নিৰ্ব্বৰ্ত্তাতে নিষ্পাগতে অবিজমানং ক্ৰব্যেষ্ উৎপন্ততে ভনিৰ্ব্বৰ্তাম্; যথা— কুন্তং করোতি কুলালঃ। অত্রাবিজমানো হি কুন্ডো মৃদা কুলালেনোং-পাছতে, অতঃ কুলালস্ত কর্ত্তঃ করণক্রিয়য়া কুন্তস্ত স্বরূপপ্রতিলন্তো হি यमाजः ব্যাপ্তিক্ষচ্যতে । यद्विकियण यानवाज्यश ক্রিয়তে, তি কার্য্যম্, তচ্চ दिविधम्,—প্রকৃত্যচ্ছেদসন্ত তম্, কিঞ্চিদ্গুণান্তরাধানঞ ; যথা—কাষ্ঠং ভन्म करताि एनवम् छः। अळ हि मरमव हि कार्ष्ठः नारह्माग्रथा कियरण, অতো দেবদত্তত্ত কর্ত্তু দহনক্রিয়য়। কাষ্ঠরণম্চ্ছিততে। গুণান্তরাধানং যথা—স্বর্ণং কুণ্ডলং করোতি দেবদত্ত:। অত হি সত: স্বর্ণপ্ত কুণ্ডল-রূপং গুণান্তরমূৎপাদয়তীতি গুণান্তরাধানমূচ্যতে। যদপূর্বাং নোৎপলতে, নাপ্যক্তথা ক্রিয়তে, অপি তু সদেব বস্তু প্রাপ্যতে বিষয়াক্রিয়তে তং व्याभाग्; यथा—त्वमभी त्व विवाः। ज्ञ विता हि न ज्ञभूकी উৎপান্ততে, নাপ্যন্তথা ক্রিয়তে, অপি তু বিশ্বমান এব অধ্যয়নেন বিষয়ী

0

ব

वि

73

পা

CA

বে

ब्न

रही

প্রয

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri ক্রিয়তে; অতো বিপ্রস্থাকর্ত্তরধায়নক্রিয়য়া বেদে বিষয়তয়া সম্বন্ধো ভবতি, বেদশু সম্বন্ধ এব ব্যাপ্তিরুচ্যতে, তদেবস্প্রকারং কর্ম যদা অন্তক্তং ভবতি তদা ঘিতীয়া বেদিতব্যা; যথা—কুন্তং করোতি কুলালঃ, কাঠং বহুতি দেবদত্তঃ, বেদমধীতে বিপ্রঃ, কটং ক্বতবান্ দেবদত্তঃ, গাং পয়ে। দোধি গোপালক:, এবং দোধা বা ; অজানাম গ্রামশু নামকো দেবদত্তঃ, নেতা বা ; গ্রামস্ত দেবদত্তস্ত গমকো যজ্ঞদত্তঃ, গময়িতা বা ; মাসস্তাসকো মৈত্রত্থ বিষ্ণুমিত্রঃ, আসম্বিতা বা; এবং সর্বত্ত। "তয়োরথ ভবেৎ ষষ্ঠী কৃতি নিষ্ঠাদিবজ্জিতে" ইতি।—তয়োঃ কর্তৃকর্মণোরহুজয়োনিষ্ঠাদি-বৰ্জিতে ক্বংপ্ৰয়োগে ষণ্ঠী ভবতি। কৰ্তৃকৰ্মণোঃ ক্বতি নিত্যমিতি বচনাং, নিষ্ঠাদিপ্রয়োগে কর্ত্তরি তৃতীয়া ভবতি কর্মণি দ্বিতীয়া চ, ন নিষ্ঠাদি-দিতি প্রতিষেধাৎ। কর্ত্তরি,—ভবতঃ শায়িকা, ভবতঃ আদিকা; পর্য্যায়া-হণেষু চেতি বুঞ ভাবে ইত্যমক্তকর্ত্তা, অন্তত্ত্বাৎ কর্ত্তরি ষণ্টা। কর্মনি যথা,—ওদনক্ত পাচকো দেবদত্ত:, পক্তা বা; পুরাং ভেদকো হর:, ভেত্তা বা; অনেককর্মকাণাস্ক প্রয়োগে যাবং কর্মণ্যসুক্তে তাবং ষষ্ঠী ভবতি। ন তু প্রধান এব বিশেষাভাবাৎ; তদ্যথা--গ্রাং দোহকঃ প্যসো গোপালক:, দোগ্ধা বা; অজানাং গ্রামস্ত নায়কো দেবদত্তঃ, নেতাবা; গ্রামশু দেবদত্তশু গমকো যজ্ঞদত্তঃ, গময়িতাবা; মাস্তু চৈত্রস্ত আসকো দেবদত্তঃ, আসম্বিতা বা; এবং সর্বত্ত বিকর্মকেষ্ বোদ্ধব্যম। যত্রাপি কর্মত্রয়ং ভবতি তত্রাপি সর্ববত ষষ্ঠী ভবতি; ক্তস্ত ভারস্ত যজ্ঞদত্তস্ত হারকো দেবদত্তঃ, হারিয়িতা বা; এবং শিষ্যস্ত ধর্মস্ত অধ্যাপকস্ত বাচকো মৈত্রঃ, বাচন্বিতাবা। স্তঞো গতার্থতয়া ক্রঞশ্চ শব্দার্থতাৎ প্রযোজ্যতা কর্ত্তঃ কর্মতম্ এবং সর্বরে। বৃণ্ত্চৌ কর্ত্তরি বিহিতৌ ইতাম্বক্তং কর্ম, ইহ পত্যর্থকর্মণি কুৎপ্রয়োগে ^{ৰ্ম্বী}ন ভবতীতি। কশ্চিদ্ গত্যৰ্থকৰ্মনি চতুৰ্থী বেতি দি**দে** দিতীয়াগ্ৰহণ-প্ৰবৃত্বতো জ্ঞাপয়তি দ্বিতীয়ৈবেতি ন ষ্ঠীতি, তন্মতে গ্ৰামং গস্তা দেবৰজো

S) - 학주 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

১৬২ শব্দরপ-কল্পড়েমঃ। Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri গ্রামায়েতি বা, এবং গ্রামং গময়িতা দেবদত্ত যজ্ঞদতঃ গ্রামায়েতি বা ইত্যাদিকং ভবতি ; অত্র টীকাকারস্থ নচৈবং সম্মতং ভবতি, নাপি শিষ্ট-প্রয়োগো দৃগুতে ইত্যনাদরাদস্মাভিকপেক্ষিত এবায়ং পক্ষ:। ওদনস্থ ভূশং পাচক ইত্যাদৌ ক্রিয়াবিশেষণে কর্মণি কথং ন ষষ্ঠী ? সত্যম ওদনস্ত পাচক: কটং করোতীত্যত্র কটাৎ কথং ন ষষ্ঠী ভবতি ? অধ করোতীতাশু কটং কর্মান ওদনং পাচক ইত্যাশু, কথং কুদন্তশু ধাতোঃ কর্মান বিধীয়মানা ষষ্ঠা কটাৎ ভবিতুমর্হতি ? বত্তেবং ক্রিয়াবিশেষণেহপি ममानः, यठः मर्का हि धार्षशः करताजार्थना जियाश हेजि। गमामान-করোত্যর্থদারেলৈব ক্রিয়াবিশেষণানাং কর্মত্বং নপুংসকত্বম একত্ত্ব। নচৈবং মাসস্যাসক ইতি গ্যামানপ্রাপণক্রিয়ায়া এব মাসঃ কর্মেতি ন ষ্টা প্রাপ্নোতি, ষতন্ততান্তভূতিপ্রাপ্তিক্রিয়াবেবাসনাদিমর্থেষ্ আসিপ্রভৃতয়ে ধাতবো বর্ত্তন্ত । সিদ্ধান্তে তু পুনরাসিক্রিয়ায়া এব মাস: কর্ম ন তু তৎ-ক্রিয়াব্যতিরিক্তন্স ক্রিয়ান্তরন্স গমামানস্তেতি অলমতিজল্পিতেন। ক্বতি নিষ্ঠাদিবজ্জিত' ইতি। তত্র নিষ্ঠাদয়:,— জ:,ক্তবন্তঃ শন্ত ঙ, আনন্,বন্ম:, কিঃ, উদন্তঃ, উকঞ্ অব্যয়ম, থলর্থঃ তুন্। তত্ত ক্তো যথা—গ্রামং গতো দেবদত্তঃ। গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনা কর্ত্তবি ক্তপ্রত্যয়ঃ। এবং গয়ো গৌদ্ধা গোপালকেন, ওদন: পাচিতো দেবদত্তেন যজ্ঞদত্তেন ইতি বা। কৰ্মণো: কৃত্যক্তথলগা ইতি কৰ্মণি ক্তপ্ৰত্যয়:। ক্তৰন্তৰ্যপা—গ্ৰামং গতবান্ দেবদত্তঃ,গাং পয়ো হৃগ্ধবান্ গোপালকঃ,নিষ্ঠেতি বচনাৎ অতীতে সর্বত্র জবস্কঃ। তত্ত্র কর্তুরি কুদিতি বচনাৎ কর্তুরি জবস্তুপ্রত্যায় ভবতি। শস্তু ভানশৌ যথা—ওদনং পচন্ স্থপকার ন্তিষ্ঠতি, গ্রামং গছন্ যজ্ঞদত্তে। ক্ষয়ভি। বর্তমানে শস্তু জানশাবিত্যাদিনা শস্তু জানশো ভবতঃ আনশ্প্রত্যমন্ত ন কেবলং কর্ত্তির, আনোহ্ত্রাত্মন ইতি বচনাৎ ভাব-কর্মণোরপি ভবতি। এবং কন্সুকানৌ পরোক্ষাবচ্চেতি বচনাৎ শন্ত & বং কর্তনি কন্ত্রং, আনশ্বৎ কানন্তিমপি ভবতি। আনেতি আনশ্-কান্

ď

P

0

1

न

শানঙাম্ৎস্টান্তবন্ধানাং গ্রহণং, তত্ত চ কানপ্রত্যয়ো যথা—কটঞ্জাণো দেবদত্তঃ, গাং পয়ো ছত্ত্হানো গোপালক ইতি কর্ত্তরি। কট*চক্রাণো দেবদত্তেন, গৌঃ পয়ো ছছহানা গোপালকেন ইতি কর্মণি, চক্রাণং দেবদত্তেন ইতি ভাবে; আনশ ষ্থা—ওদনং পচ্মানো দেবদত্তে। গায়তি, গ্রামমজাং নয়মানো মানবকঃ ক্লিশুতি ইতি কর্তুরি, স্পকারেণ পচ্যমানো নিজাভতে ওদনঃ, অজা গ্রামং নীয়মানো মানবকেন পলায়তে ইতি কর্মণি। শানঙ্যথা—কবচম্বহমান: ক্তিয়কুমার**ন্তি**ষ্ঠতি, কতীহ মধুলিহানাশ্চিয়ানাঃ সন্তি। শক্তিবয়ন্তাচ্ছীল্য ইতি শানঙ্ কর্ত্তর্য্যের ভবতি, বন্স্বিতি কন্স্-বন্দোগ্রহণম্। কল ব্থা— এদনং পেচিবান্ স্পকার-ন্তিষ্ঠতি, গাং পয়ো ছ্শ্ববান্ গোপালক ইতি কর্তর্যোব ভবতি। বন্ত্র্যথা কটং বিদ্বান্ দেবদভত্তিষ্ঠতি, বেত্তেঃ শন্তর্কস্রিতি শন্ত ঙ্প্রত্যয়স্ত বন্সুরাদেশঃ। কিপ্রভায়ো যথা—কটং চক্রিদেবদত্তঃ, দধিং কটং দেবদত্তঃ, আদ্বর্ণোপধালোপিনাং কিছে চ ইতি কিঃ, কর্ত্তরি দ্বির্বাচনঞ্। উদত্তেতি ষাবত্কারান্তকৃৎপ্রত্যয়ানাং গ্রহণম্; যথা—ক্যাম্ অলম্বরিফুর্দ্বেদত্তঃ, গ্রামং গমরিফুর্দেবদত্তং ষজ্ঞদত্তঃ, পূত্রং জনরিফু: পিতা। ভাষ্কালং ভৃক্তঞ সহীত্যাদিনা তচ্চীলতদ্বর্শ্বতৎসাধুকারিষাকে: ইতি ইম্কুচ কর্ত্তরি ভবতি, —গ্রামং জিফুদেবদত্তঃ, জিভুবোঃ ফুক্। ধনং গৃপ্প দেবদত্তঃ, অসি-ধৃষি-গৃধি-ক্ষিপাং ক্ল:, এবং পটং চিকীষ্ঠিস্কবায়:, ভিক্রোদনং যাচক:; ভচ্ছীলাদিষ্ সনস্তাশংদিভিক্ষামু: কর্ত্তধ্যেব। উকঞ্ যথা—গ্রামং দারুকো জনঃ কল্তাং কামুকো বর:; ভচ্ছীলাদিযু হু কম গম হনেত্যাদিনা উকঞ্ কর্তুর্যোব। তৃন্প্রতায়ো যথা—সর্ক্ং জ্ঞাতা স্থগতঃ, ম্ওয়িতারঃ আবিছায়না বধুম্ঢ়াম্। বেদং জ্ঞাতা বিপ্রঃ, তচ্ছীলাদিষু তৃলিতি বচনাৎ কর্ত্তিয়েব। অব্যয়েতি ক্রামকারাস্তক্তপ্রত্যয়ানাং গ্রহণং; তত্তম্ —জামকারান্ত^{*}চ কুৎ স্বভাবাদসংখ্য ইত্যব্যয় এব তে প্রত্যয়া ভাবে खरहो जिट्टी कि के biblie Bomain. स्थापारा स्वाप्तिमा स्वाप्तिसा स्वाप्तिसा स्वाप्तिसा स्वाप्तिसा स्वाप्तिसा स्व

পয়ো হৃষ্ণ গোপালকো বিক্রীণীতে। এবং ভগবন্তং প্রণম্য স্ক্রেনা গত:। এককর্তৃকয়োঃ পূর্বকালে ক্তাপ্রত্যয়শু সমাসে ভাবিনীত্যাদিনা यवारानाः। মকারাস্তো যথা— কটং কর্ত্তং দেবদত্তিষ্ঠতি, গ্রামমজাং নেতৃম্ উপক্রমতে জনঃ। "বৃণ্তুমৌ ক্রিয়ায়াং ক্রিয়ার্থায়া"মিতি তুম্,এবং ভাবং ভাবং ক্রণমিহ জলব্দ্দা ইব সম্পদো বিপগুল্ভে, "নম্ চাভীক্ষাে দিক —পদ" মিতি ণম্, দ্বির্বাচনঞ্চি । ধলর্থেতি ধল্যুপ্রতায়য়োগ্রহণং, তত্ত্র খল যথা—ঈষৎকরঃ কটো ভবতা হ্যপ্রাপং ধনম্ অব্যবসায়িভিং, স্থলভা বীর্যাবতা সৃষ্দ্ধি:। ঈষদ ঃ স্ব্ কৃচ্ছ । কৃচ্ছ । থেবু ধল্। যুপ্র ভায়ে ষণা— ঈষৎপানঃ দোমো ভবতা, ত্র্যানা অটবী গ্রামিকেণ, স্থদানং ধনমীশবেণ "আড্যো স্বদরিল্রাতে" রিতি যু প্রত্যয়:। এবং হু:শাসনো হুর্গন্থ: পরি-পন্থী পরচক্রেণ, হুঃশাসো বা,"শাস্থ যুধি দৃশি ধৃষি মৃজাং বে"তি বিকরেন যুপ্রত্যয়ঃ ; যুপ্রতায়াদন্তর খল্প্রত্যয়ো ভবতি। অয়মেব দর্শিতো যুপ্রত্যয়ঃ ধলথো জ্ঞাতব্য:। ন পুন্যু ট্ চেত্যাদিনা বিহিতোহপি যুট্প্রতায়ে ভাবকর্মণোর্কিহিত: খলর্থো ভবতি। এবমন্তদপুদাহরণমেষাং ষ্থাস্থানং প্রতিপত্তব্যম্। যদা নিষ্ঠাদিবজ্জিত ইত্যাদিশবস্তু ব্যবস্থাবাচিষাৎ কটং কারকো দেবদত্তো ব্রজ্ভি, ভদনং পাচকো ব্রজ্ভি। ভবিষ্যতি গ্র্মাদয়-ইড্যধিক তা'বুণ্ তুমৌ ক্রিয়ায়াং ক্রিয়ার্থায়া' মিতি ভবিষ্যতি কালে বিহিত্ত ৰুণো গ্ৰহণং ন বুণ্ভচাবিতি বিহিতভঃগ্ৰামং গমী,গ্ৰামমাগামী, ভবিষাতি গম্যাদয়ः', শতং দায়ী, সহ্**শং দায়ী, ''আব**খ্যকাধ্মৰ্যেয়ানিন্।'' এবং প্ৰে নিষ্ঠাদিস্বীকারাৎ ক্নড্যানাং কর্ত্তরি বিকল্পেন ষ্ঠা ভবতি; তদ্যথা—কটঃ কর্ত্তব্যঃ, করণীয়:,কার্য্যঃ; ক্তত্যো বা দেবদত্তেন দেবদত্তস্তেতি বা ; ত্ব্যা-नी स्त्री, अवर्गवाञ्चनान्तार घान, 'कृषिवृषिमृष्णाः दिक काम्', এवः मर्सव। অনেককর্তৃকাপামপি যাবান্ কর্ত্তা অহক্তন্তাবতি কর্ত্তরি বিকল্পেন ^{ষ্ঠী} মস্তব্যা; যথা পাচয়িতব্য ওদনো দেবদত্তক, যজ্ঞদত্তক দেবদভেন ইতি বা প্রাম্ন্রমেষ্ট্রিনিরান. প্রাম্নিরাক্তবান্ত্রমেরিনের মন্ত্রমের ব্রুপ্ত

একদা ভূভয়প্রাপ্তো কর্মণ্যেব ন কর্ত্তরি। অকাকারপ্রয়োগে ভূ ষষ্ঠী স্থাহুভয়োরপি॥ ১১

বিষ্ণুমিত্রস্থা, দেবদন্তেন যজ্ঞদন্তেন বিষ্ণুমিত্রেণ ইন্ডি বা; এবং সর্বত্ত । নম্ব রাজ্ঞামর্চিট্টেল দেবদন্ত ইত্যাদৌ এগ্রুবন্ধেত্যাদিনা বিহিত্স ক্রপ্রত্যাদ স্থাপি কর্ত্তরি ষ্টান প্রাপ্রোতি নিষ্ঠাদিত্বাৎ ? সত্যমিহ কর্ত্তু: সম্বন্ধবিক্ষমা ষ্টাভবতি । যথা ক্রোহধিকরণে ধ্রৌব্যগতিপ্রভাবসানার্থেভ্য ইত্যাদিনাধিকরণে বিহিত্স ক্রপ্রত্যাম্প্রাপি কর্ত্তরি সম্বন্ধ এব ষ্টাজ্ঞাতব্যা। তদ্যথা—তিষ্ঠতি গ্রামেহন্মিন্ দেবদন্তঃ, সংস্থিতো গ্রামো দেবদন্ত্রস্থা, এবং গ্রামো গতো দেবদন্তম্ম; এবমন্যেহপ্যন্ত্রসূর্ত্তব্যাঃ । এবং ভাবে বিহিত্স ক্রপ্রত্যাম্প্রত কর্ত্তরি সম্বন্ধে ষ্টাবা ভবতি; তদ্যথা—ত্মা ক্রত্ম, তব কৃত্ম; ময়া কৃতং, মম কৃত্ম; এবং সর্বত্ত নপুংসকে ভাবে ক্রঃ। অম্বঞ্চ বিশেষঃ প্রায়শঃ ক্রিতা এব' ইত্যাদিনা শ্লোকেন সংগ্রহীষ্যতে ॥

১১। একদা বিত্যাদি। অস্থায়মর্থ:,—একদা পুনরেকমিন্ কালে,
একদা কৃৎপ্রয়োগ ইতি উভয়ো: কর্ত্কর্মণোঃ ষষ্ঠীপ্রাপ্তৌ কর্মণ্যেব ষষ্ঠী
ভবতি ন কর্ত্তরি, ভত্রোভয়প্রাপ্তির্যত্র দ্বে অপি কর্ত্কর্মণী অমুক্তে ভবতঃ;
ভক্ত প্রয়োগ:—পাচয়িতা ভক্তস্ত দেবদত্তেন যজ্ঞদত্তঃ, পাচকো বাঃ সময়িতা
দেবদত্তস্ত যজ্ঞদত্তেন বিফুমিত্রঃ,গমকোবা। এবমাদিখনেককর্মকাণাং কর্মণি
বিহিতঃ প্রত্যয়ো হহাদেগৌণকং কর্মেতি বচনাদেকমেব কর্ম বক্তীত্যুভয়প্রাপ্তিঃ, ততো যাবৎ কর্মণামুক্তে ষষ্ঠী, তাবৎ কর্ত্বগ্যমুক্তে তৃতীয়ৈব;
এতেন "কুত্যানাং কর্ত্তরি চে' ত্যনেন অনেককর্মকেষ্ ন ষষ্ঠী প্রবর্তত ইতি
ক্সচিং মতমাদশিতম্। বয়ন্ত ক্রম:—উভয়প্রাপ্তৌ ক্লত্যে ষষ্ঠী ন ভবভোব, ততেন্চ দোগ্রব্যা গৌঃ পয়ো গোপালকেন, নেতব্যো ভারো গ্রামং
ভূত্যেনেত্যাদিকমেব ভবতি, নতু পূর্বদর্শিত্যনম্ উদাহরণানাং প্রপঞ্চঃ।

t

J

এবঞ্চ সতি 'উবৰ্ণস্থোত্বমাপাত্ব' ইতি স্বত্ৰম্ উবৰ্ণস্থোত্বমাপাদনীয় ইতি এতদ্বিরণঞ্চ উপপন্নং ভবতি, জয়াদিত্যোহপি ক্নত্যানাং কর্ত্তরি বেতাত্ত স্ত্রে এতদেব দর্শয়তি; তদ্যথা উভয়প্রাপ্তৌ ক্তেয় কর্মণি ষষ্ঠ্যা: প্রতিষেধো বক্তব্যঃ; যথা—হর্তব্যো ভারো গ্রামং দেবদত্তেন, নেতব্যা অজা গ্রামং যজ্জদত্তেনেতি স্থিতং, ভাবপ্রত্যয়ে সকর্মকাণাম্ভয়প্রাপ্তাবিতি যাবৎ কর্মণি ষষ্ঠী তাবৎ কর্ত্তরি তৃতীয়ৈব। প্রয়োগো যথা—ওদনস্ত পাंকো দেবদভেন, পচনং বা ; গবাং দোহঃ পয়সো গোপালকেন, দোইনং বা ; নায়ে। ভারত্ত গ্রামত্ত ভৃত্যেন, নয়নং বা। শ্রিনীভৃভ্যোংত্বপদর্গ हैं नियंदिक्। हैनएकिशी, अमनक शांहनः एमनएखन मुळ्याखन, গ্রামশু গমনং চৈত্রশু ষ্জ্রদত্তেন, নায়নং ভারশু বিষ্ণুমিত্রেণ স্বামিনা। এবম্ ইন্দয়েহপি-পাচনং ওদনস্থ দেবদত্তেন যজ্ঞদত্তেন বিষ্ণুমিত্রেণ हेजाि किम्दन्यः, मर्द्यक ভाবে यूष्चरको । এवः इकाि नाम् इनसानाः পক্ষদয়ে রূপং স্থ্রোধ্যেব। নন্তু কথমাশ্চর্য্যং গ্রাং দোহং প্যুদো গোপাল-কস্ত ইতি কর্ত্তরি ষষ্ঠী ? সত্যং কর্ত্তঃ সম্বন্ধবিবক্ষায়াং ষষ্ঠীত্যদোষঃ, আশুর্যাং দোহ: পয়দো গোপালকেন ইতি ভবত্যেব। 'স্মৃত্যর্থকশ্মণী''ত্যত: কর্ম-গ্রহণাত্মবর্ত্তনাৎ কর্ত্তরি ক্বতি নিত্যমিতি সিদ্ধে "কর্ত্তৃকর্মণোঃ ক্বতি নিত্য"-মিতি পুন: কর্মগ্রহণাত্তয়প্রাপ্তো কর্মণ্যেব ষষ্টাতি নিয়মার্থং, তত্তাপীদ-মুক্তস্তবতি। সর্বত্র উভয়প্রাপ্তে কর্মণোবেতি নিয়মে প্রাপ্তে তদ্বৃত্তকর্ম-গ্রহণস্থ বিশেষাম্বরমাহ—অকাকার ইত্যাদি। অকেতি, বৃণ্ব্ঞো-গ্রহিণং, তত্ম ঘ্র্ঝামনাকান্তা ইত্যনেনাকরপতাৎ। অকারেতি অঅঙো-প্রহণম্ এষাং প্রয়োগে কর্ত্তরি কর্মণি চোভয়ত্রাপি ষষ্ঠী ভবতি। যথা-পাচিকা ভক্তস্থ দেবদত্তস্থ, গ্ৰাং দোহিকা প্ৰসো গোপালক্ষ; এবমন্তজাপি যাবং কর্তৃকর্মণোশ্চ ষদ্ঠী বেদিতব্যা। "পর্যাঘার্হণেষু cb" ि हकात्रासारकश्रि व्क्। स्रकादा यथा—हिकौर्वा करेंचे দেবদত্তস্ত, জিহীর্যা ভারস্ত গ্রামস্ত দেবদত্তস্ত, পিপাচ্যিষা ভক্তস্ত

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri প্রোয়শঃ কথিতা এব দৃশ্যন্তে কর্তৃকশ্মণোঃ।

যথাভিধানমন্যাসাং প্রবৃত্তিন নিরাকৃতা ॥ ১২

. 5.

ব্ৰ. গঃ

JI.

क

স্য

19

र्भ

₹,

স্পকারস্থা। এবমিন্ধয়েহপি—পিপাচয়িব। ভক্তস্থা স্পকারস্থা দেবদন্তস্থা বজ্ঞদন্তস্থা, অত্যাপি সর্ব্বত্র ষষ্ঠী, কিং প্রয়োগমালয়েতি সনস্থাং শংসিপ্রত্যাদাং। অঙ্ যথা—ওদনস্থাপচা স্ত্রীণাং, ভিদা করিকুন্তস্থা কেশরিণঃ; "যাত্রবন্ধভিদাদিভাস্বঙ্"—জাগরা ছাত্রস্থা রাত্রেং, 'গুরোশ্চ নিষ্ঠাসেট' ইত্যপ্রত্যয়ঃ। এবমাদিষকারবিধানস্ত্রং প্রতিপাত্য প্রয়োগঃ কর্ত্তব্যঃ। অন্যোদিষকারবিধানস্ত্রং প্রতিপাত্য প্রয়োগঃ কর্ত্তব্যঃ। অন্যোদাং প্রায়োগ কর্ত্তরি বিভাষয়া ষষ্ঠী প্রায়শ্প ইতি বচনাৎ, ষথা বিচিত্রা কৃতিঃ শর্কবর্ম্মণঃ স্ক্রস্থা, শর্কবর্মণেতি বা।

১২। প্রায়শ ইত্যাদি। প্রয়োগবাছলোন যথাযথং কথিতা এব বিভক্তয়: কর্তৃকর্মণোদ্ শিস্তে, অতস্তা এব কথিতাঃ। অক্যাসাং পুন-র্কিভক্তীনাং যথাভিধানং প্রয়োগানতিক্রমেণ প্রবৃত্তিন নিরাক্তা, অক্যা অপি প্রয়োগাল্লসারেণ প্রবর্ত্তস্তামিত্যভিপ্রায়:; তদ্যথা—গত্যর্থকর্মণি দ্বিতীয়াচতুর্থ্যৌ—গ্রামং গচ্ছতি, গ্রামায় গচ্ছতি; গ্রামং গন্তং, গ্রামায় গন্তম্; ইহ গতেঃ সাহচর্য্যাদেককর্মকা এব ধাতবো গ্রহীতব্যাঃ; তেন গ্রামন্ অজাং নয়ভীত্যাদিয়্ দিকর্মকের্ চতুর্থী ন ভবতি। তথা মক্তকর্মণীত্যনেন ন স্বা তৃণং মক্তে, ন স্বা তৃণায় মত্যে ইত্যাদি। তথা স্বত্যর্কর্মণি দিতীয়াম্র্ট্যৌ,—মাতরং স্বরতি, মাতৃঃ স্বরতি; মাতরং স্বর্ত্তম, মাতৃঃ স্বর্ত্তম, প্রধাদকক্ষোপস্ক্রতে, ঝাসয়তি, এবং ব্যবহর্দিবিপণাং, ব্যবহারার্থানাং শক্তম্ম ব্যবহর্তি, শতং ব্যবহর্তি; শতস্য দীব্যতি, শতং দীব্যতি; শতস্থ পণায়তে, শতং পণাস্কতে। এবম্ আশিষি নাথ ইতি সর্পিষে। নাথতে, সর্পিন থিতে; এতেষাং কর্মণি পক্ষে সম্বন্ধবিবক্ষয়া ষষ্ঠী। এবময়্বত্রাপি যথাভিধানং কর্মণি বেদি-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
তৃতীয়া করণে প্রায়শ্চতুর্থী সম্প্রদানতঃ। পঞ্চমী স্থাদপাদানে তথাধারে চ সপ্তমী॥ ১৩

3

3

र्ड

मर

नां

বে

ৰে

र्था

33

FA

13

1

তব্যম। এবং জানাতে: কর্মণি পক্ষে করণ-বিবক্ষয়া তৃতীয়া,—পুত্রেণ
সংজানীতে, পুত্রং বা; এবময়্মত্রাপি। বিবক্ষয়া ক্তস্যেন্বিষয়স্যাধিকরণে সপ্তমী,—অধীতী ব্যাকরণে, অধ্যয়নমধীতং, নপুংসকে ভাবে ক্তঃ।
এবং সর্ব্যা পূর্বাদর্শিতবিভক্তিভেদোহত্র শ্লোকে উহনীয়ঃ॥

১৩। তৃতীয়া করণে প্রায় ইত্যাদি। করণে কারকে প্রায়ন্ত্তীয়া ভবেৎ। শেষাঃ কশ্মকরণেত্যাদিনা। কর্ত্রা ধেন ক্রিয়তে কর্ত্ত্র্যদ্তিশয়েন ক্রিয়াসিদ্ধাব্পকারকত্বেন বিবক্ষিতং তৎ কারকং, যেন ক্রিয়তে তং করণমিত্যনেন করণদংজ্ঞন্তবতি। তচ্চ দিবিধং,—বাহুম্, আভান্তরঞঃ তয়োর্মধ্যে শরীরাশ্রিতং যতদাভান্তরং, ততোহকুদাহ্ম। ততাভান্তরং যথা—মনদা মেকং গচ্ছতি, চকুষা গৃহতে রূপম্। বাহুং যথা—দাত্রেণ ধান্তং লুনাতি, অংখন গম্যতে। প্রায়শ ইতি বচনাদ্যা অপি বিভক্তয়ো যথাভিধানং জ্ঞাতব্যা ইতি স্চিতম্। তদ্যথা—স্তোকানুক্তঃ, অল্পানুকঃ, ক্বচ্ছানুকঃ, কতিপয়ানুকঃ। স্তোকাল্লকুচ্ছুকতিপয়াদসত্ত্বচনস্থাবধিবিব-ক্ষায়াং করণে পঞ্চমী। এবং সর্পিষো জানীতে, জ্ঞোহবিদর্থশু করণে সম্বন্ধবিবক্ষয়া ষ্টা, এবমকাদপি ষ্থাভিধানং জ্ঞাতব্যম্। চতুথী সম্প্রদানত ইতি। স্যাদিতি প্রত্যেকমভিদম্বন্ধঃ, শেষাঃ কর্মকরণ ইত্যাদিনা। পূজামু-গ্রহকাম্যয়া যশৈ দাতৃমিচ্ছতি তৎ কারকম্ যশৈ দিৎসেত্যাদিনা সম্প্রদান-সংজ্ঞন্তবতি। তচ্চ ত্রিবিধম,—অহমন্ত্, অনিরাকর্ত্, প্রেরকঞ্। বদ্দদানী-ज्राटक वरः क्रूटमजारूमनाट जनसमञ्, यथा—खत्रद गाः मनाजि। यत्मशैष्ठि छनिया माणातः लाखार প্রেরমতি তৎ প্রেরকম্; यथा—वर्टे व গাং দদাতি। यन्नाञ्चराज्ञ, নাপি প্রেরম্বতি, কিন্তু ন নিরাকরোতি তৃফীমাতে তদনিরাকত্; যথা—আদিত্যার অর্থাং দদাতি, অতাপি প্রায়শ

ইত্যানেন সম্বন্ধঃ ; যথা—দাস্থা স্থবর্ণং প্রয়েচ্ছতে কাম্কঃ,দাণ সা চেচ্ছতুর্থার্থ ইত্যাত্মনেপদম্। অশিষ্টাচারে সম্প্রদানস্থ করণবিবক্ষায়াং তৃতীয়া এবং যুধাভিধানং বিভক্তিভেদো জ্ঞাতব্য;।

প্রুমী স্থানপাদান ইতি—শেষা: কর্মাকরণ ইত্যাদিনা প্রুমী অপদানে ক্রাদিতি সম্বন্ধঃ। অপায়ং প্রতি অবধিভৃতক্ত সীমারূপেণ বিবক্ষিত্স। যতো-ংপৈতি ইত্যাদিনা অপাদানসংজ্ঞা। তচ্চ দ্বিধ্ম-চল্মচল্ঞ : তত্ত চলং যথা—বৃক্ষাৎ পূৰ্বং পত্তি, অচনং ব্যাঘ্রাং বিভেতি, উপাধ্যাঘ্রাৎ অধীতে ইত্যাদিকমবধিরপং বেদিতব্যম। নতু বৃক্ষদ্য পর্বং পততি ইত্যত্র কথং ষষ্ঠী ? মতাং সম্বন্ধবিবক্ষয়েতি। এতেন বিবক্ষাতো হি কারকাণি ভবস্তীতি দর্শি তম : তদ্যথ।—স্থাল্যাং পচতি,স্থাল্য। পচতি,স্থালী পচতি ইত্যাদৌ একস্ত নানা বিবক্ষা দখতে, যদা পুনৱনায়াদেন ক্রিয়মাণতয়া স্বব্যাপারং কর্মণ্যা-বোপয়তি তদা বিবক্ষা কর্ম কর্তা ভবতি ; তদয়পা—পচ্যতে ওদনঃ সম্ব-মেব, অলাবি কেদার: স্বর্মেব ইত্যাদি কর্মবদ্ভাবাদাত্মনেপদং, তত্মিন यनिति প্রত্যাহৌ এদনাদৌ কর্মকর্ত্যুক্তিত্বাৎ প্রথমা। এবং পচেলিমা-ততুলা: স্বয়মেব, ভিদেলিমা মাধা: স্বয়মেব ইত্যাদি কর্মকর্ত্তরি কেলিম:। বংকরণং স্বাশ্রহার্থং, তেন ভাবেহপি কর্মকর্ত্ত: প্রয়োগো ভব**তি**। ষ্থা পচ্যতে ওদনেন ম্মনেব ইত্যন্মজ্বাৎ কর্ত্তরি তৃতীয়া। ত্যাদিবাৎ ইংপ্রয়োগে কর্মবদভাবো ন ভবতি। তেন কর্মকর্ত্তরি কর্মণি বিহিতঃ ইংপ্রত্যায়া ন ভবতি ; ষথা-কর্ত্তব্যং কটেন স্বয়মেব, ঈষৎকরঃ কটেন ষ্মমেব। এবং কর্মকর্ত্তবিশেষঃ প্রতিপত্তব্য ইতি স্থিতম।

তথাধারে চ সপ্তমীতি—তথেতি স্যাদিতি সম্বন্ধ:। শেষা: কর্মকরণেত্যা দিনা অধিকরণে সপ্তমী ভবতি। ক্রিয়াশ্রমভূত: কর্ত্তা কর্ম বা ম্ব্রাধিমতে,

মূল কর্ত্তৃকর্মণী স্বরূপেণাবতিষ্ঠত: স আধার:। য আধারস্তদধিকরশমিত্যাধারস্যাধিকরণসংজ্ঞা। স চ চতুর্বিধ:—উপক্লেষিক:, অভিব্যাপক:, বৈষ
মিক:, সামীপিকশ্চেতি। ত্রোপশ্লেষ: সংযোগন্তত্ত্ত ভব ইত্যোপশ্লেষিক:;

সন্বন্ধেহথ ভবেৎ ষষ্ঠী নির্ণয়স্তাবদীদৃশঃ। উক্তানুক্তবিচারেণ প্রয়োগস্তেন গম্যতাম্॥ ১৪

ইতি দুর্গসিং হক্তা ষট্কারককারিকা সমাপ্তা

যথা — কটে আন্তে দেবদন্তঃ এবং স্থাল্যামোদনং পচতি দেবদন্তঃ। যমাধারমভিব্যাপ্য তিষ্ঠতি সোহভিব্যাপকঃ; যথা—তিলেষ্ তৈলম্। বিষয়ে হি অনক্সত্র ভাবস্তর ভবো বৈষয়িকঃ; দিবি দেবাঃ সন্তি। সমীপে নিকটে ভবঃ সামীপিকঃ; যথা—গঙ্গায়াং ঘোষস্ভিষ্ঠতি, এবমন্ত্রাপি।

১৪। সম্বন্ধেহ্থ ভবেং ষ্টাতি। শেষাঃ কর্মকরণ ইত্যাদিনা ষ্টা ভবতি ; যথা—রাজ্ঞ: পুরুষ:, যুবয়ো: পুত্র:, অস্মাকং ধনমিত্যাদি। অথ ইং ক্রিয়াকৃতঃ সম্বন্ধঃ, দ চ প্রস্পরাপেক্ষয় উৎপদ্যতে; যথা -রাঞ্জ পুরুষ ইতাত পরিপাল্যপরিপালক ক্রিয়াক্ততোহনয়েঃ সম্বন্ধঃ। রাজা হি পরিপালয়তীতু।ক্তে কিমিতি বিশেষংপেক্ষয়া পুরুষেণ রাজসম্বন্ধা ভবতি। পুরুষঃ পরিপাল্যতে ইত্যুক্তে কেনেতি বিশেষাপেক্ষরা রাজ্ঞা পুরুষসম্বন্ধে ভবতি। এবং দর্বত্র দম্বনো জ্ঞাতব্য:। নত্র পরস্পরাপেক্ষা দম্বন্ধা দ্যোরপ্যন্তীতি রাজন্শকবৎ পুরুষশকাদাবপি ন কথং ষষ্ঠী স্থাৎ? সতাং দেবদত্তঃ কাঠিঃ স্থান্যামেদনং পচতীত্যত্তাপুত্তেন প্রকারেণ পরস্পরা-পেক্ষা দৰ্বত বিগত এব প্রস্প্রাপেক্ষ্পণঃ দ্বন্ধ ইতি কথমিং ন প্রত্যেকং ষ্টা ? স্বথৈবং বক্তবাং যুগুপি প্রত্যেকমন্তি সম্বন্ধন্তথাপি নামৌ বকুমিষ্ট: দেবদত্ত কর্তুন্তদানীং বিব্ফিত্তাং। বাক্যে বিব্ফিতার্থ শব্দত্তৎকারকাভিধায়ী প্রযুক্ষাতে কুত: ষষ্টীপ্রসঙ্গ: ? যভেবমিহাপি প্রতিপাত্তয়া লিঙ্গার্থ: প্রধানমিতি পুরুষশকাৎ প্রথমেব, ন ষ্ট্রী সতোহপি সম্মন্যাবিবক্ষিতত্বাৎ। তথাচোক্তং—"ভেগ্নভেদকয়ো: শ্লিষ্টিং সম্বন্ধেংহতোত্তমিষাতে। বিষ্ঠো যুত্তপি সম্বন্ধ ষষ্ঠাংপত্তিস্ত ভেদকাং।" CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

41

1-

11

ब्रो

ত্তমাদিবক্ষিতে চার্থে তদভিধায়ী শব্ধ: প্রযুদ্ধ্যত ইতি স্থিতম। অতএব বিবক্ষিত হাদিতি ন্থায়ঃ সর্বজাশীয়ত ইতি। সর্ববিভক্তিষেক-শ্মির্থে একবচনং দ্বোর্থয়োদ্বিচনম্, বছ্যু বছ্বচনম্ অন্তর্শাৎ প্রতি-পত্রাম। বিশেষোষ দশুন্তে যা লিছসংখ্যাবিভক্তয়ন্তা এব সমানার্থে বিশেষণে কর্ত্তব্যাঃ, বিশেষণে বিশেষ্যস্তা বিভক্তির্ভবতি লিঙ্গং বচনঞ্চ, এবং সর্বাত্র ক্রায়াদিতি মন্তব্যম; তদ্যথা—বিপুল:—কট: ক্রিয়তে দর্শনীয়: বিপুলঃ ক্রিয়ত ইতি প্রত্যেকমভিদম্বন্ধাৎ প্রথমা এবং সর্বতে লাঘো মন্তব্য:। তদ্বথা-বিপুলৌ কটো ক্রিয়েতে দর্শনীয়ে, কটা: ক্রিয়ন্তে मर्भनीया विश्वनः:, करेंश करवाि मर्भनीयः विश्वनः, रमवमरखन विश्वरनन কুতম, ব্রাহ্মণায় বেদপারগায় ধনং দেহি, মহতো বুক্ষাৎ পূর্ণং প্ততি, খদ্ধস্থ রাজ্ঞ: পুরুষ:, আকাশে ব্যাপিনি শকুনয়: সন্তি, এবং দ্বিচনব্ত-বচনমপি প্রতিপত্তবাম। যছেবং কথং বিংশতিঃ কটাঃ ক্রিয়ন্তে ইত্যক্ত বিংশতেরেকবচনম ? সত্যং স্বভাবাদিংশতিশব্যোহয়মেকবচনান্ত এবেডি বিশেষ্য তা বিভক্তি মাত্রমুপাদতে, ন লিঙ্গং সংখ্যাঞ্চ। এবমক্রদপি জেন্ম। নতু তথাপি ক্রিয়ন্ত ইতি কথং বহুবচনং বিংশতেরেকবচনান্তত্তাৎ ? অথ কটা ইতি বছবচনামুখাদদোধঃ। নমু ভবতু নামৈবং, তথাপি ক্রিয়াপদক্ত প্রত্যেকমভিদম্বোহন্তরন্বতা বিংশতিশব্দমন্বদাদেকবচনমপি প্রাপ্নোতি. ন কেবলং কটা ইতি সম্বন্ধাৰত্বচনমিতি ? সতাং প্ৰধানতাৰিশেষাসংখ্যা-মেৰোপাদত্ত ইতি যথা তন্তব: পট: ক্রিয়ন্ত ইতি প্রধানতাৎ প্রক্রতে: সংখ্যামেবোপাদত ইতি। অতা হি তম্তব: প্রকৃতিভূতা: প্রধানং বিকার-তন্ময়ত্বাং অপ্রধানং পট:। এবং ক্লড্ডিকতসমাদেম্বপি; তদ্যথা – বিংশতি-র্ঘটাঃ কুতাঃ, বিংশতিঃ পুরুষাঃ কুতপ্রণামা ইত্যাদি বিশেষ্যলিক্ষসামানাধি-করণাং বিশেষণে প্রতিপত্তবাম : প্রধানং পুরুষ ইত্যাদৌ তু আবিষ্ট-লিঙ্গবাৎ প্রধানাদয়ো ন বিশেষাতা লিঙ্গং ভজন্তে ইতি, অতএব লিঙ্গ-শংখোত্যাদিকারিকায়াং প্রায় ইত্যক্তমিতি, তদেবমুক্তামুক্তং প্রতিপান্ত CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

বিভক্তিঞ্ দর্শয়িলা নিয়মমাহ—নির্বজ্ঞাবদীদৃশ ইতি। তাবচ্ছকঃ জমা-পেক্ষর। ঈদৃশস্তাবির্বিরঃ, তেন হেতুনা উক্তাহ্মক্তবিচারেণ প্রয়োগ: কর্ত্তব্য:। यथा (नवनरखन करें: कियुक इकाानि क्रमः वाकाः माधामाधननकृतः প্রতিপান্থতাম্ পম্যতাং ক্রিয়তামিতি যাবৎ শিইপ্রতি সম্বন্ধঃ। সম্যতা-মিতীনন্তস্ত রূপমিদং, গম্মানার্থস্ত প্রযোগং প্রতি কামচার:, গম্মানতা-দেব শ্লোকে শিষ্টেরিতি নোক্তম,তদ্ যথা—পর্বত: স্থামক্রণ্ট স্থামকরিত্যেব প্রয়োগ:। তত্ত্র সাধ্যতে ইতি সাধ্যং, ক্রিয়া ধাত্বর্থ: ক্রিয়া চ, যেন সাধ্যতে তৎ সাধনং কারকষট্কং যথোক্তং ক্রিয়ানিমিত্তং কারকং লোকত: সিজং, যেন সম্দায়েন সাধাং সাধনঞ্ প্রতিপাছতে ভদাকাম্। অভএব হি শক্রবহার: প্রবর্ততে তক্তৈব সাকাজ্ফনিরা চাজ্ফত্যা প্রবৃত্তিনিবৃত্তি-হেতৃত্বাৎ; তদ্যথা—অগ্নিহোত্রং জুত্মাৎ স্বৰ্গকাম ইত্যাদি বাক্যং প্রবিতিহেতু:। ত্রাহ্মণো ন হস্তব্যঃ, হুরা ন পেয়া ইত্যাদি নিবৃতিহেতু:। ন চৈবং কেবলস্থা পদস্য প্রবৃত্তিনিবৃত্তিহেতুত্বং কচিদপি শ্রেয়তে ইতাতঃ শব্দবাবহার: ক্রিয়াপেক্ষয়া বছভিরেব পদে: কর্ত্তব্য: ইতি জ্ঞাতাপি পদ্দিদ্ধাবেকৈকশঃ কদাচিল্লন্মভয়ে। বহুপদ্যোজনায়াং সন্দেহিনঃ; অত এবাস্মাকময়ং পরিশ্রম ইতি।

ইতি রভদনন্দিবিরচিতা ষট্কারককারিকাটীক। সমাপ্তা।

গ্রন্থ বাপন্য।

মাতা-পিতৃ-পদাস্তোজধ্যানসহগশালিনা।
পূর্ববন্ধ স্থিত—ধলচ্ছত্রগ্রামনিবাসিনা॥
শুনকারম্বলভেন বিভানিধী ত্যুপাধিনা।
কাব্যতীর্থোপনামা শ্রীপ্তক্ষনাথি দিল্লমনা॥
শব্যুৎপত্তিলিপ্সনামূপক্তত্যে যথামতি।
রমানাথকতং শব্দনিবন্ধমবলদা চ॥
গ্রহঃ সংগৃহতে শব্দরপক্রজ্রত্মো ময়া।
ভিক্ষাস্থেইত চ দৃক্পাত্মদোহৈকদৃশো ব্ধাঃ॥

শিব্যিতি॥

ই তি শব্দরপক্লজ্ঞয়: স্মাপ্ত:। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

সন্ধিত্বন্ত কড়চা



শ্রীমদ্ গুরুনাথ বিছানিধি ভট্টাচার্য্য

সম্পাদিত

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



